द श को ण

द श को गा

(Ten Reader's Digest Books)

'रीडर्स डायजेस्ट' द्वारा सार-
रूप में प्रकाशित संसार की
सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे लोक-
प्रिय दस पुस्तकों का संकलन

अनुवादक
कालिदास कपूर एम० ए०, एल० टी०

एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लि०
बम्बई : कलकत्ता : दिल्ली
१९५८

प्रकाशक :
एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,
आसफ़ अली रोड,
नयी दिल्ली ।

मूल्य : छः रुपये पच्चीस नये पैसे

मुद्रक :
श्री गोपीनाथ सेठ,
नवीन प्रेस,
दिल्ली ।

आभार-प्रदर्शन

इस संकलन में सम्मिलित रचानाओं का अनुवाद करने की अनुमति के लिए प्रकाशक निम्नलिखित लोगों तथा प्रकाशकों के आभारी हैं।

- समुद्र के रहस्य

THE SEA AROUND US *by* Rachel L. Carson

- स्वतन्त्रता का संरक्षक

YANKEE FROM OLYMPUS *by* Catherine Drinker Bowen

- एक आदर्श अमरीकी मज़दूर

LIFE OF AN AMERICAN WORKMAN *by* Walter P. Chrysler

- दीर्घायु का संकल्प

THE WILL TO LIVE *by* Dr. Arnold A. Hutschnecker

- ...बच्चों से गोदी भरी रहे

CHEAPER BY THE DOZEN *by* Frank B. Gilbreth Jr. & Ernestine Gilbreth Carey

परिचय

यह संकलन हिन्दी पुस्तक-प्रकाशन के क्षेत्र में एक नई दिशा का द्योतक है। आज के संसार की गति इतनी तेज हो गई है, जीवन इतना व्यस्त रहने लगा है कि हर आदमी को क़दम-क़दम पर समय के अभाव का अनुभव होता है। कितने ही काम समय के अभाव के कारण अधूरे रह जाते हैं; जीवन के कितने ही सुख स्थगित रखना पड़ते हैं। कितनी ही ऐसी उपयोगी पुस्तकें होती हैं जिन्हें हम समय के अभाव के कारण पढ़ नहीं पाते और जीवन भर हमें इसका खेद रहता है। ज्ञान की कितनी बहुमूल्य निधि से हम इस प्रकार वंचित रह जाते हैं।

इस अभाव को पूरा करने के लिए पहले पुस्तकों के संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित होने लगे और फिर पुस्तकें सार-रूप में प्रकाशित होने लगीं। इस प्रकार की योजनाओं में सबसे सफल और सबसे लोकप्रिय योजना 'रीडर्स डायजेस्ट' की है। 'रीडर्स डायजेस्ट' अंग्रेजी की सबसे अधिक बिकनेवाली पत्रिकाओं में से है। केवल संयुक्त राज्य अमरीका तथा कनाडा में इसके बीस करोड़ से अधिक पाठक हैं। इसके अतिरिक्त वह संसार की १३ दूसरी भाषाओं में प्रकाशित होता है और इसका एक संस्करण अन्धों के लिए ब्रेल लिपि में भी निकलता है। भारत में भी इस पत्रिका की लगभग ७०,००० प्रतियाँ बिकती हैं। 'रीडर्स डायजेस्ट' में नियमित रूप से संसार की सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे लोकप्रिय रचनाएँ सार-रूप में प्रकाशित होती रहती हैं। फिर इनमें से जिन रचनाओं को पाठक सबसे अधिक पसन्द करते हैं वे अलग से वर्ष में

बार बार एक संग्रह के रूप में प्रकाशित की जाती हैं। इन संग्रहों के भी २५ लाख के लगभग स्थायी ग्राहक हैं। इस प्रकार यदि हम यह कहें कि 'रीडर्स डायजेस्ट' द्वारा सार-रूप में प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों को किसी-न-किसी रूप में पाँच करोड़ से अधिक लोग पढ़ते हैं तो यह अतिशयोक्ति न होगी।

इस पुस्तक में जिन रचनाओं का अनुवाद सार-रूप में प्रकाशित किया गया है उनके सजिल्द मूल संस्करणों की प्रतियों की संख्या से आपको इस बात का अनुमान हो जायेगा कि ये पुस्तकें कितनी लोकप्रिय रही हैं। प्रस्तुत संकलन में प्रकाशित कैथरिन मार्शल कृत 'पादरी पीटर की कहानी' ('ए मैन काल्ड पीटर') के सजिल्द संस्करण की १३ लाख से अधिक प्रतियाँ, जार्ज आर्वेल की पुस्तक 'उन्नीस सौ चौरासी' ('नाइन्टीन एटी फोर') की ७½ लाख प्रतियाँ, रैशेल एल० कार्सन की पुस्तक 'समुद्र के रहस्य' ('दि सी एराउंड अस') की १० लाख से अधिक प्रतियाँ, फ्रैंक बी० गिलब्रेथ तथा अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की पुस्तक '...बच्चों से गोदी भरी रहे' ('चीपर बाई दि डज़न') की ५ लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हुई थीं। अन्य पुस्तकों के भी ऐसे ही बड़े-बड़े संस्करण प्रकाशित हुए थे। ये आँकड़े तो इन पुस्तकों के मूल संस्करणों के हैं, और सो भी १९५५ तक के। उसके बाद से इनमें से कई पुस्तकों के नये संस्करण निकल चुके हैं। फिर यदि हम इस बात को ध्यान में रखें कि लाखों प्रतियों की संख्या में इनके सस्ते संस्करण प्रकाशित होते हैं, इनमें से अधिकांश के आधार पर फिल्में बनती हैं और फिल्म के अनुसार इन पुस्तकों के फिल्म-संस्करण प्रकाशित होते हैं, तो हमें अनुमान हो जायेगा कि 'रीडर्स डायजेस्ट' में जो पुस्तकें सार-रूप में प्रकाशित की जाती हैं वे कितनी लोकप्रिय होती हैं।

केवल पाठकों की संख्या की दृष्टि से ही नहीं बल्कि अपनी विषय-वस्तु की दृष्टि से भी ये पुस्तकें हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए इस संकलन में सम्मिलित एक रचना है 'चिकित्सा का

चमत्कार' जो बेट्टी मार्टिन की प्रख्यात पुस्तक 'मिरैकिल ऐट कारविल' का सार-रूप में अनुवाद है। इसमें कुष्ठ-रोग तथा उसकी चिकित्सा की समस्या पर अत्यन्त रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है और समाज में इस रोग के बारे में प्रचलित अन्ध-विश्वासों तथा मिथ्या धारणाओं का खण्डन किया गया है। कुष्ठ-रोग की समस्या हमारे देश के सामने भी अत्यन्त उग्र रूप में मौजूद है और इस रचना को पढ़कर हम इस समस्या के बारे में एक सही रवैया बना सकते हैं और उसको हल करने के उपाय कर सकते हैं। इसी प्रकार रैशेल एल० कार्सन की रचना 'समुद्र के रहस्य' ('दि सी एराउन्ड अस') से हमें बहुमूल्य वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त होती है। कैथरिन ड्रिंकर बोवेन की रचना 'स्वतन्त्रता का संरक्षक' ('यांकी फ्राम ओलम्पस'), जो अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ओलिवर वेंडल होम्स की जीवनी है, हममें जीवन के प्रति उत्साह तथा आशा की भावना का संचार करती है; जब हम ओलिवर वेंडल होम्स को ९० वर्ष की अवस्था में प्लेटो के दर्शन का अध्ययन करते देखते हैं तो हमें वृद्धावस्था में भी जीवन के प्रति उत्साह बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है। डा० आर्नल्ड ए० हुशनेकर की रचना 'दीर्घायु का संकल्प' ('दि विल टु लिव') हर आदमी के लिए एक अत्यन्त उपयोगी रचना है। इसमें डा० हुशनेकर ने अपने वैज्ञानिक अध्ययन और डाक्टरी अनुभव के आधार पर अनेक सच्चे उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि दीर्घायु के लिए शारीरिक स्वास्थ्य से अधिक महत्त्व मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं तथा विचारों के स्वस्थ होने का है; और सबसे बड़ी बात तो यह है कि दीर्घायु प्राप्त करने के लिए हममें दीर्घायु का संकल्प होना चाहिए। जार्ज आर्वेल की पुस्तक 'उन्नीस सौ चौरासी' ('नाइन्टीन एटी फोर') एक अत्यन्त तीखा और प्रभावशाली राजनीतिक व्यंग है, इस रचना की गणना इस युग की सबसे महत्वपूर्ण रचनाओं में की जाती है। मैक्स विक्लर की आत्म-कथा 'रंक से राजा' ('ए पेनी फ्राम हेवेन') और प्रख्यात क्राइसलर मोटरों के निर्माता वाल्टर

पी० क्राइसलर की आत्म-कथा 'एक आदर्श अमरीकी मजदूर' ('लाइफ आफ ऐन अमेरिकन वर्कमैन') ऐसे दो व्यक्तियों की जीवनियाँ हैं जो अपने परिश्रम और सूझ-बूझ के बल पर अवसरों का लाभ उठाकर बहुत निम्न स्तर से जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँच गये। इस संकलन की दो रचनाएँ—एडवर्ड स्ट्रीटर की रचना 'बेटी का ब्याह' ('फादर आफ द ब्राइड') और फ्रैंक बी० गिलब्रेथ तथा अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की रचना '....बच्चों से गोदी भरी रहे' ('चीपर बाई द डज़न')—पढ़कर आपका यथेष्ट मनोरंजन होगा, पर इस मनोरंजन के पीछे आप बहुत गहरा सामाजिक उद्देश्य भी छुपा हुआ पायेंगे, क्योंकि इनमें जीवन के दो ऐसे पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिनका अनुभव हर व्यक्ति को थोड़ा-बहुत अवश्य हुआ होगा।

इस संकलन में दस ऐसी रचनाएँ आपके सामने सार-रूप में प्रस्तुत की जा रही हैं जिन्हें यदि पूरा प्रकाशित किया जाये तो वे कम-से-कम ५,००० पृष्ठ में आयेंगी। परन्तु इनका सार निकालने में मूल के सभी आवश्यक तत्व, उनका पूरा रस और रचनाओं के आधारभूत उद्देश्य पूरी तरह सुरक्षित रखे गए हैं। सही मानों में यह 'गागर में सागर' है। पुस्तकों को सार-रूप में तैयार करने का काम 'रीडर्स डायजेस्ट' के योग्य तथा अनुभवी सम्पादकों ने किया है। इनमें से हर रचना अपने ढंग की निराली रचना है। यह कहना कठिन है कि कौन-सी रचना सबसे उपयोगी, महत्त्वपूर्ण या रोचक है। आप किसी भी रचना को सबसे महत्त्वपूर्ण अथवा रोचक समझकर पढ़ना आरम्भ कर दें, आपका निर्णय ठीक ही साबित होगा।

हमें पूरा विश्वास है कि जिन रचनाओं को अंग्रेजी तथा संसार की दूसरी भाषाओं के करोड़ों पाठकों ने विभिन्न रूपों में पढ़कर सराहा है, उन्हें आप भी रोचक तथा उपयोगी पायेंगे। इसी विश्वास के साथ हम यह संकलन आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

विषय-सूची

रंक से राजा

(मैक्स विकलर की आत्म-कथा 'ए पेनी फ्राम हेवेन' का सार)

मैक्स विंकलर बेलविन इनकार्पोरेटेड नामक संसार की एक प्रमुखतम संगीत-प्रकाशन संस्था के प्रधान हैं। १६१८ में इस संस्था की स्थापना के समय उनके पास आशा, आस्था और बहुत थोड़े धन के अतिरिक्त कोई साधन न थे। १६०७ में जब वह अमरीका आये थे उस समय उनके पास फूटी कौड़ी न थी। उनकी आत्म-कथा 'ए पेनी फ्राम हेवेन' अमरीका में उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों की रोचक कहानी है। यह उस देश के प्रति एक श्रद्धांजलि भी है जहाँ इस प्रकार की सफलताएँ सम्भव हैं।

रंक से राजा

आज उस शुभ दिवस का वार्षिकोत्सव है, जब अमरीका में मैंने प्रवेश किया।

अपने भवन के उपले खण्ड में बैठे हुए मुझे निचले खण्ड की चहल-पहल सुनाई दे रही है, जहाँ मेरी पत्नी क्लारा रसोईघर में भोजन की तैयारी में व्यस्त है। मेरे बच्चे और पोते-पोती यहाँ आज के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए शीघ्र ही पहुँच जायेंगे। बड़ी पुरानी बात है; परन्तु इस समय मुझे वह घटना कल ही की जान पड़ रही है, जब मैं १८ वर्ष का नवयुवक अपने दो हाथ ही लिये सुदूर रूमानिया के जंगलों से अमरीका की पुण्य-भूमि में पहुँचा। आज मेरे अधिकार में एक भारी व्यवसाय है, मैं एक भवन का स्वामी हूँ, एक बड़े परिवार का संरक्षक भी हूँ। सच्चे अमरीकी नागरिक के नाते इस देश में अपने प्रथम दिवस की स्मृति मुझे जितना कृत-कृत्य करती है, उसे देखते हुए उस पुण्य-दिवस के स्मरण के लिए वर्ष में एक ही उत्सव पर्याप्त नहीं है।

पुत्र-पौत्रों की जीवन-चर्या सुसंस्कृत और सुरक्षित रही है, अपनी मोटर में स्कूल जाते-आते हैं, भवन के निकट ही सड़क के कोने पर औषधालय है, जन्मजात स्वतन्त्रता और सुख उनके भाग्य में है, इन्हें ये सब सुख स्वाभाविक ही जँचते हैं, परन्तु मुझे वे भगवान के अपूर्व आशीर्वाद प्रतीत होते हैं। इसीलिए आज अकेले बैठकर मैंने अपने संस्मरण लिखना प्रारम्भ किया है।

मेरी मेज की दराज में अभी तक आस्ट्रिया की सरकार से प्राप्त पासपोर्ट सुरक्षित है। उसकी मैली जिल्द पर आस्ट्रिया का गरुड़ राज्य-चिह्न कुछ धुँधला पड़ गया है। भीतर लिखा है—जन्मभूमि : बुकोविना प्रान्त का रिजका नामक ग्राम; जन्मतिथि : १५ मार्च, १८८८। उस समय रिजका कारपेथिया की पर्वतश्रेणी के मध्य एक छोटा-सा गाँव था, जहाँ न सड़कें थीं, न स्कूल था, न कोई रेलवे स्टेशन ही था। यदि कोई चिट्ठी डाक में छोड़नी हो या एक जोड़ी जूता ही खरीदना हो, तो घोड़ा-गाड़ी से चार घण्टे के सफर के पश्चात् ही कोई कस्बा मिलता था। परन्तु रिजका के निवासियों को शायद ही कभी कोई चिट्ठी भेजने की जरूरत पड़ती हो; और जूतों की कैफ़ियत यह थी कि गर्मियों में तो हम नंगे पैर घूमते, और जाड़ों में छोटे बड़ों की उतरन पहनते।

गाँव में झोंपड़ियों के अतिरिक्त सात ही आठ पक्के घर थे और इनमें हमारे परिवार का घर सबसे अच्छा था। तो भी वह एक ही खण्ड का था और उसमें कोई तहखाना न था। जब शरद में वर्षा होती या वसन्त में बरफ पिघलती तो हमारे कमरों में काई, कंकड़ और असंख्य काले कीड़े लिये जल भर जाता और बढ़िया उतरने पर भी कमरों मे जल भरा रहता। बिस्तरों की जगह हमारे लिए भूसा भरे टाट के गद्दे थे।

हमारे कस्बे में सुख का अभाव अवश्य था, परन्तु उसकी स्थिति बहुत अच्छी थी। चारों ओर मीलों तक पहाड़ों और घाटियों को चीर के घने, ऊंचे, हरे और सुन्दर जंगल ढके हुए थे। मेरे पिता लकड़ी चीरने के एक बड़े कारखाने के संचालक थे, जिसमें पाँच हजार मजदूर लगे हुए थे। इनमें अधिकांश आस-पास के गाँवों के निवासी थे। परन्तु इनमें से कुछ निकट ही डंडों पर सधे खेमों में रहते थे, जो वहाँ 'कोलीबस' कहे जाते थे। सप्ताह में छः दिन और दिन के चौबीस घण्टे काम चालू रहता। यह सब काम दो पालियों में ही होता, एक दिन की और दूसरी रात की।

मेरी माता बहुत नेक और सुशील थीं। उनकी जैसी पतिव्रता नारी मेरे देखने में अभी तक नहीं आई है। मेरे पिता अक्षरशः उनके स्वामी थे। कोई निर्णय वह स्वयं न करतीं, वह हममें से किसी को पिता के पास जंगल में यह पूछने के लिए भी भेज देती थीं कि भोजन के लिए मटर पके कि सेम। मेरे पिता का लौह-शासन अपने हजारों मजदूरों पर ही न था, उनकी पत्नी तथा पाँचों बच्चों ने अपने जीवन में शीघ्र ही परन्तु कष्टमय अनुभव के पश्चात् सीख लिया था कि घर का स्वामी कौन है?

● ● ●

मेरे साधारण जीवन को सौभाग्य-दिवस तब प्राप्त हुआ, जब मेरे पिता ने मुझे एक सारंगी खरीद दी। पचास वर्ष से बहुमूल्य निधि की भाँति यह सारंगी मेरे पास रखी है। मैं उसे अब बजाता नहीं, परन्तु सौभाग्य की प्रतीक के रूप में वह अभी तक मेरे भवन की अंटिया में सुरक्षित है।

जीवन में समयानुसार प्रणय ने भी प्रवेश किया। उसका नाम हुल्दा था। उसके सिर के बाल गहरे सुनहरे थे, और उसे देखते ही मैं उस पर आसक्त हो गया। किशोरावस्था तक पहुँचते ही मैं उससे कहने लगा कि बड़े होने पर हम दोनों का व्याह हो जायेगा।

एक दिन उमंग और उल्लास की लाली अपने गालों पर लिये हुल्दा स्कूल पहुँची और उसने खबर सुनाई कि वह सपरिवार अमरीका जा रही है। मैं नैराश्य में डूब गया।

परन्तु एक आकस्मिक विचार से मैं शीघ्र ही स्फूर्त हुआ। यदि हुल्दा अमरीका जा सकती है तो मैं भी जा सकता हूँ। मेरे पास एक पैसा न था, मुझे यह भी नहीं मालूम था कि अमरीका है कहाँ; परन्तु एकाएक मुझे अपने में असीम विश्वास हो गया।

हुल्दा की विदाई के दो वर्ष पश्चात् जब मैं और मेरा जुड़वां भाई

दवे १६ वर्ष के हो गये, तो पिता ने हमें जंगल में काम शुरू करने का आदेश दिया।

मुझे रूगानिया के तीन सौ ऐसे लकड़हारों से जंगल के पेड़ काट गिराने का काम लेने का दायित्व सौंपा गया, जिनकी शक्ति और नीचता बेमिसाल थी। मेरे प्रति उनकी घृणा असभ्य लोगों जैसी थी। मैं नगर से नया-नया आने के कारण काम लेने में बहुत जल्दी दिखाता था और इनके स्वामी का पुत्र भी था। इसलिए मेरे प्रति इनकी घृणा और भी बढ़ गई थी। इन्होंने मेरे ऊपर "संयोगवश" पेड़ गिराने का षडयन्त्र रचा। मैं कैसे बच गया, इस चमत्कार की याद मुझे अभी तक है। एक बार जत्थे के सबसे अधिक सशक्त और नीच व्यक्ति से मेरी लड़ाई हुई और क्रुद्ध होकर बलपूर्वक मैं उसे सात गज दूर एक हिमानी जलाशय में फेंक आया। इसके बाद मेरा रोब उन पर जम गया। बहुत समय बाद जब इनसे कहीं अधिक सभ्य, सशक्त और नीच प्रवृत्तियों से मुझे सामना करना पड़ा तो मुझे कृतज्ञतापूर्वक उस कठोर प्रशिक्षण की याद आती रही जो मुझे कारपेथिया की पर्वतश्रेणियों में प्राप्त हो चुका था।

मेरे और दवे के वेतन पिताजी अपने ही पास जमा कर लेते थे। शिक्षा और आय-व्यय के सम्बन्ध में उनके कुछ अपने लौह-सिद्धान्त थे, जिनके अनुसार जेब-खर्च के लिए वह हमें प्रति सप्ताह एक क्राउन ही देते थे।

हुल्दा अमरीका से पत्र लिखा करती, जिनमें देश और वहाँ के जीवन का विवरण रहता—आश्चर्यजनक नगर, पहाड़ जैसे ऊँचे भवन और नगर के ऊपर विशाल पुलों पर दौड़नेवाली रेलगाड़ियाँ। ऐसे समृद्ध देश पहुँचने की कल्पना और इच्छा दिन-रात बढ़ती जाती, जहाँ मुझे अपने सौभाग्य की परीक्षा का अवसर प्राप्त करने की आशा थी।

एक दिन मेरी नानी का देहान्त हुआ। उनकी जायदाद का तिहाई मेरी माता को मिला और यह रकम नौ सौ क्रोनेन तक पहुँची। यह रकम मेरे पिता के मासिक वेतन की ढाई गुनी थी। तब तक

बैंक में जमा करने के लिए उनके पास कोई बचत नहीं हुई थी। अकस्मात् इतना धन पाकर वह बहुत प्रफुल्लित हुए और उसके उपयोग की योजनाएँ बनाने लगे। कभी नगर की सैर की चर्चा चलती, कभी नई और बढ़िया पोशाक की बात होती। एक बार ऐसी तम्बाकू खरीदने की भी चर्चा हुई, जिसका स्वाद पिता को एक ही बार मिला था।

परन्तु मेरा विचार दूसरा ही था। जो बात तब तक मेरी पहुँच के बाहर रही थी, वह एकाएक अब मेरी पकड़ में आ गई थी, केवल साहसपूर्वक कहना ही आवश्यक था। अतएव यथाशक्ति विनम्रता और शान्ति से मैंने कहा, 'पापा, मुझे और दवे को आप अमरीका जाने दें। इस विषय में आपका क्या आदेश है ?"

कमरे में अकस्मात् सन्नाटा छा गया। माँ पीली पड़ गईं और भयभीत होकर उन्होंने अपना हाथ मुख पर रख लिया, मानों जो उन्होंने सुना था, उसे वह अनसुना कर देना चाहती हों। पिता भी भौंचक होकर चुप रहे।

आशा और विश्वास बटोरकर मैंने कह डाला, "यदि मुझे और दवे को अमरीका जाना नसीब हुआ, तो पापा, हम सफल अवश्य होंगे; हमें काम मिलेंगे, हम रुपया पैदा करेंगे और तब माँ सहित आपको बुला लेंगे। हम आपको भूलेंगे नहीं, भूल सकते भी नहीं।"

हम सब पिता की ओर देखने लगे। थोड़ी देर वह खामोश रहे, फिर अकस्मात् बोल उठे, "मैं इसका प्रबन्ध करूँगा।"

अगले कुछ दिनों की घटनाएँ मेरी कामना के पक्ष में ही घटीं। पिता ने निर्णय कर लिया था तो उससे सम्बन्धित प्रत्येक बात का दायित्व भी उन्होंने सँभाल लिया था। उन्होंने निर्णय कर लिया कि यदि मेरे साथ दवे जा रहा है तो दो वर्ष छोटे जैक को भी हमारे साथ हो लेना चाहिये। पिता ने एलिक नामक अपने मित्र को यात्रा का प्रबन्ध करने के लिए लिखा। 'एलिक' के अर्थ हैं ईमानदार। इन मित्र के गुण नाम के अर्थ के विपरीत थे। कुछ सप्ताह भीतर टिकट

आ गये। हमें ट्रिएस्ट के बन्दरगाह से 'गेर्टी' नामक जहाज द्वारा सफर करने का आदेश मिला। एलिक का कहना था कि 'गेर्टी' की गणना अटलांटिक महासागर की यात्रा में लगे सर्वोत्तम जहाजों में है।

इस प्रकार सिर से पैर तक सजकर हम तीनों ५ जनवरी, १९०७ को रवाना हुए। सामान में हमारे साथ चार चमड़े के थैले, दो बेंत की टोकरियाँ और खाने के चार बड़े-बड़े बण्डल थे। माता-पिता दोनों छोटे बच्चों और दो कुत्तों को लिये हमारे पीछे दूसरी गाड़ी में सवार हुए।

स्टेशन पहुँचकर पिताजी चुपचाप एक बेंच पर जा बैठे। हम लोग एक सुदूर और विचित्र देश की यात्रा पर जाने को थे, परन्तु वह हमसे कुछ बोले नहीं। हम सोच रहे थे कि क्या कारण है। इतने ही में अकस्मात् उठकर वह हमारे पास आ गये और बोले, "बेटो! मुझे पता है कि बहुत दिनों से तुम मेरी तम्बाकू चुराते रहे हो और घर के पीछे उसकी सिगरटें बनाकर पीते रहे हो।"

हम दोनों घबराकर उठ खड़े हुए। सोचा, क्या पिता के प्रसिद्ध व्याख्यानों का यही सुअवसर है, क्या कहना चाहते हैं। इतने ही में उन्होंने अपनी जेब से सिगरेट की दो डिब्बियाँ निकालीं, और एक-एक मुझे तथा दवे को देकर बोले, "तुम दोनों के लिए मैंने सिगरेट की एक-एक डिब्बी खरीदी है, आओ बैठकर हम सब पियें।"

मैं भूलता नहीं कि मेरी माता की मुखमुद्रा कितनी चमत्कृत हुई, जब उन्होंने अपने दो बड़े बेटों को अपने पिता के सामने बैठकर सिगरेट पीते देखा। जो पिता कहना चाहते थे, सो हम समझ गये। उन्होंने मान लिया था कि हम वयस्क हो गये हैं।

यथासमय रेलगाड़ी आ गई, और पिता के संकेत का महत्व भली प्रकार समझने के पहले ही हम रवाना हो गये। यों हमारी महत्वपूर्ण साहसिक यात्रा प्रारम्भ हुई।

● ● ●

जब हम अन्ततः ट्रिएस्ट पहुँचे तो जिस 'गेर्टी' को अटलाण्टिक महासागर की यात्रा का सर्वोत्तम मुसाफिरी जहाज बताया गया था, वह एक छोटा-सा माल लादनेवाला जहाज ही निकला, जिसके अगले भाग में सामान्य यात्रियों के लिए थोड़े-से कमरे ही थे। पीछे की ओर नीचे का एक भाग बड़ी-सी खुली बारिक में परिवर्तित कर दिया गया था, जहाँ एक सौ बीस नर-नारियों और बच्चों का बेपर्दगी में सोने का प्रबन्ध था।

जहाज पर एक ही छत थी, और उसके दोनों सिरों पर जहाज के धोबी-घर और पाखाने थे। बीच में रसोईघर था, और उसके पीछे करीब बीस मवेशी बँधे हुए थे, जो आवश्यकतानुसार मांस के लिए काटे जाने को थे। छत का वही भाग यात्रियों के काम का था, जो पाखानों, रसोईघर के कूड़े या मवेशियों से बचा हुआ था। उस पर बैठने के लिए न कुर्सियाँ थीं, न बेंचें, पर जगह मिले तो बैठने की मनाही न थी।

जहाज में अत्यधिक भीड़ और गन्दगी थी। गन्दी और खुली थालियों में बहुत ही बुरा खाना कलछियों से हमें परोसा जाता था। गन्दगी बेतरह बढ़ी हुई थी, और जहाज के छोटे होने के कारण यात्रा खतरे से खाली न थी। परन्तु इन सब बातों से हम अधिक क्षुब्ध न हुए। हम योरप से नीले और शान्त सागर पर अमरीका के लिए जा रहे थे, यही क्या कम उमंग की बात थी।

यात्रा में पैंतीस दिन लगे। मैं उन कड़वे दिनों की याद नहीं करना चाहता जब मुसाफिरों में लड़ाई छिड़ जाती और मल्लाहों की मार से ही शांत होती; उन दिनों की भी जब स्त्रियाँ अपने रोगी बच्चों की चिकित्सा के लिए चिल्लातीं और जहाज पर डाक्टर या औषधि का पता न था। उस दिन के संस्मरण भी बड़े कटु हैं जब तूफान उठने पर हम सब एक सौ बीस यात्री जहाज के भीतर कर दिये गये, और सभी द्वार तथा छिद्र कसकर बन्द कर दिये गये। हममें से कुछ तो घुटने टेककर प्रार्थना करते रहे, बाकी अपनी-अपनी खाटों पर ढेर हो गये। बहुत-से तो इतने बीमार हो गये कि भगवान से मौत माँगने लगे।

उस दिन की याद भी महत्त्वपूर्ण है, जब १९०७ के फरवरी मास में हमने पहली बार अमरीकी तट देखा। शीघ्र ही [हमें अपने नये देश की विशालता, शक्ति और महत्व की प्रतीक स्वतन्त्रता की मूर्ति के दर्शन हुए तो अधिकांश यात्री घुटने टेककर ईश्वर को धन्यवाद देने लगे; और जहाज़ की छत पर हास्य, आनन्दपूर्ण अश्रु और पारस्परिक सम्मिलन, चुम्बन और नृत्य की लहरें बढ़ने लगीं। ज्यों ही हमारी चकित और अविश्वस्त आँखों के सामने मैनहाटन अपना अपूर्व महत्व लिये क्षितिज पर प्रकट हुआ तो हमें पहले से भी अधिक विचित्र अनुभव हुआ। हम सबने अकस्मात् नाचना, हँसना, रोना या चूमना बन्द कर दिया। हम सब आश्चर्य से स्तब्ध जैसे होकर खड़े देखते रहे। आनन्द और आश्चर्य ने हमारी वाक्-शक्ति मानों छीन ली थी। वह दिवस और उसकी वह घड़ी स्मरण रखने योग्य है।

● ● ●

१९०७ तक संयुक्त राज्य अमरीका ने आप्रवासियों की वार्षिक संख्या निर्धारित नहीं की थी। आप्रवासियों की वार्षिक संख्या लाखों तक पहुँचती थी। यदि आप्रवासी की आँख में कोई रोग न होता; आप्रवासियों का निरीक्षक पुट्ठों पर हाथ रखकर उनकी पुष्टता का कुछ अनुमान लगा लेता; यदि आप्रवासी साधारण प्रश्नों का, जैसे तुम्हारा नाम क्या है, उत्तर दे पाता; यदि उसके हाथ-पैर साबुत होते; और यदि वह इतना कह भर देता कि अमरीका में उसके कुछ सम्बन्धी हैं और उसकी जेब में पाँच डालर हैं (सौभाग्यवश सम्बन्धियों को सामने लाने या डालरों को दिखाने की जरूरत न थी); तो मृत्यु-लोक के प्रत्यक्ष स्वर्ग में आप्रवासी का प्रवेश संभव हो जाता।

जब सरकारी अफसर हमसे निपट चुके तो हम तट पर उतरे और बैटरी पार्क की एक बेंच पर बैठकर चारों ओर देखने लगे। महान कोलाहलपूर्ण और भयावह नगर मेरी आँखों के सामने था। इसकी

कल्पना हममें से कोई भी न कर सका था। हम कैसे कभी भी इस भयावह और विचित्र संसार के अंग हो सकेंगे; ऐसे लोग जो अकारण इधर-उधर दौड़ते दिखाई देते हैं और जिनकी भाषा हमारी समझ के बाहर है, किस प्रकार और कब हमें अपने घर के जैसे लगेंगे; इन्हीं कल्पनाओं में हम डूबे हुए थे। पहले कभी भी मैंने इतने अकेलेपन का अनुभव नहीं किया था।

पिता ने जो हमें दिया था उसमें केवल बारह डालर और अट्ठारह सेंट हमारे पास बच रहे थे; और हमारे पास मेरी बुआ मिन्नी का पता भी था। परन्तु वहाँ पहुँचें कैसे ?

डंडा घुमाते हुए एक पुलिस का सिपाही हमारी बेंच के सामने आ खड़ा हुआ। हम भय के मारे उठ खड़े हुए, क्योंकि अपने जीवन भर हमें पुलिस के सिपाही से अपनी मुसीबत का सन्देश ही मिला था। हम समझे कि हमसे कोई अपराध हो गया है और राज-दंड हमारे सामने है।

सिपाही ने जर्मन भाषा में हमसे पूछा, "तुम लोग कहाँ जाना चाहते हो ?"

मैं कृतज्ञता की भावना से विभोर हो गया। कितना प्रिय प्रश्न था, और सिपाही यह कैसे जान गया कि हमें अंग्रेजी आती नहीं।

मैंने अपनी छोटी-सी काली जिल्द की कापी निकालकर मिन्नी बुआ का पता उसे दिखाया। उत्तर मिला, "यह तो यहाँ से बहुत दूर है, तुम लोगों के पास १५ सेंट हैं न ?"

हम सब एक-दूसरे के बाद "जी हाँ, जी हाँ" बोल पड़े।

संयुक्त राज्य अमरीका के कई नगरों में कुछ रेलगाड़ियाँ धरती से कई गज ऊपर खम्भों पर बने पुलों पर दौड़ती हैं। उनके स्टेशन भी उतनी ही ऊँचाई पर बने होते हैं। ऐसे ही एक स्टेशन तक सिपाही हमें ले गया और हमें बता दिया कि हम लोग किस गाड़ी को पकड़ें और कहाँ उतरें। गाड़ी गरजती हुई स्टेशन पर रुकी। हम भीड़ चीरते गाड़ी

पर चढ़ गये; तो सिपाही ने नमस्कार करते हुए हमें आशीर्वाद दिया। मैं सोचता रहा कि इस नये महादेश में अनजाने विदेशियों का कितना सुन्दर स्वागत होता है।

मिन्नी बुआ एक छोटे-से किराये के मकान में रहती थीं। उन्होंने बड़े हर्ष से हमें गले लगाया। पड़ोसी इधर-उधर से आ गये, और आधी रात तक बैठे हम सब खाते-पीते और बातें करते रहे। फिर बुआ हम तीनों को एक छोटे कमरे में सोने के लिए पहुँचा आईं। उस रात मुझे बड़ी देर में नींद आई।

सबेरा होते ही हम अपने नये जीवन में गोते लगाने के लिए तैयार हो गये। नीचे के एक दयालु किराएदार ने हमें जर्मन भाषा में प्रकाशित समाचार-पत्र का एक अंक दिया और उसमें वर्गीकृत विज्ञापनों की सूची दिखा दी, जिनकी संख्या अनन्त जान पड़ती थी। बात बहुत सरल-सी मालूम हुई। जाकर काम को छाँटना और पसन्द ही कर लेना था, मानो वे सब हमारी ही प्रतीक्षा कर रहे हों।

रात को थका-हारा घर पहुँचा तो मैं सीख चुका था कि काम पाना उतना सरल नहीं। मेरे जैसे हजारों लोग समाचार-पत्र से विज्ञापन काटकर उसके सहारे एक काम के बाद दूसरे काम के लिए न्यूयार्क की सड़कों का चक्कर लगाते फिरते। जिस काम से इन्कार मिलता उस पर अपने कागज में निशान लगाकर आगे बढ़ते और इस प्रकार अपनी सूची के अन्तिम विज्ञापन में निशान लगाये निराश होकर घर लौटते। मैं लोहे के बर्तनों की दूकान के सामने पहुँचा। काम की तलाश में वहाँ जो लोग खड़े थे, उनमें मेरा नम्बर छब्बीसवाँ था। दूकान के मालिक ने हमारी कतार का चक्कर लगाया, मानो हम बिकनेवाले मवेशी हों। काम के लिए वह प्रार्थी नहीं पसन्द किया गया, जो सबसे पहले पहुँचा था। सत्रहवें नम्बर पर खड़े प्रार्थी के ही भाग्य जागे। किराने की दूकान पर पहुँचा, तो कतार इससे भी अधिक लम्बी थी। एक घंटा चलने के बाद भी तीसरे विज्ञापनदाता

का पता नहीं पा सका। चौथे तक पहुँचा तो सामने संकेत देखा कि जगह भर गई है। इसी प्रकार चलते-चलते दिन बीत गया।

परन्तु दवे घर पहुँच चुका था और हमें यह सुखद समाचार सुनाने की प्रतीक्षा कर रहा था कि उसे काम मिल गया है। यह काम था, किसी फेरीवाले के घोड़े और गाड़ी को सँभालना। दूसरे दिन सवेरे जैक से भी इस आशय का पत्र मिल गया कि उसे पोर्ट जर्विस की एरी रेलवे में मिस्त्री की जगह मिल गई है।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं साढ़े चार बजे ही एक जूते की दूकान के सामने जा खड़ा हुआ। इसलिए कतार में मैं ही पहला प्रार्थी था। मालिक ने कहा, 'तुम जरूरत से ज्यादा बड़े हो, मुझे लड़का चाहिए, मर्द नहीं।" मैं "हुजूर, हुजूर" कहकर गिड़गिड़ाने को हुआ तो "भाग जाओ, भाग जाओ" कहता हुआ वह चला गया।

अब मैंने कतार में खड़े होकर प्रतीक्षा न करने का निश्चय किया, और यों ही पूछते-पूछते कोई काम पाने के प्रयत्न में लगा। एक अंग्रेजी-जर्मन शब्द-कोष खरीदकर मैंने अंग्रेजी शब्द सीखने प्रारम्भ किये; परन्तु कई दिनों की तलाश के बाद मुझे कुछ घंटों का ही काम मिल पाया। यह था, एक अस्तबल का सामान एक जगह से दूसरी जगह रखना, और आधे दर्जन घोड़ों को नहलाना। दवे किराया चुकाता रहा और मिन्नी बुआ मुझे उधार खिलाती रहीं।

• • •

एक दिन प्रातःकाल मुझे बाजा सुनाई दिया। घर के पिछवाड़े कई आदमी अपने-अपने बाजे बजाते जमा थे। अकस्मात् मुझे भी धुन सवार हुई। मैं भागकर अपने कमरे में गया। बक्स का ढकना खोलकर अपनी सारंगी निकाली और इन लोगों में मिलकर स्वयं भी सारंगी बजाने लगा। शीघ्र ही मुझ पर पैसे बरसने लगे। बाजेवालों का जत्था आगे बढ़ा, तो उनका नेता बड़ी सारंगी लिये मुझे कड़ी चेतावनी

दे गया, "यदि तुम फिर कभी मेरे धंधे में दखल दोगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

मैं बेहद थका और दुखी घर वापस आया, परन्तु मुझे अपनी हैट में कोई वस्तु खटकती-सी मालूम हुई। टटोलकर मैंने उसे निकाल लिया। देखा तो एक पेनी ही थी।

विश्वास की मुस्कराहट एकाएक मेरे मुख पर दौड़ गई। मुझे आभास-सा हो गया कि न्यूयार्क का मुझे कुछ और अनुभव करना है, कोई-न-कोई जगह मेरी प्रतीक्षा कर रही है, आकाश से पैसे मुझ पर बरसते हैं, तो चिन्ता की कोई बात नहीं। मैं सिर झुकाकर धूप खाने बैठ गया।

जर्मन समाचार-पत्र का एक विज्ञापन दिखाते हुए एक पड़ोसी ने मुझसे कहा, "तुम सारंगी बजाना जानते हो? लो, यह काम तुम्हारे मतलब का है। एक संगीत-प्रकाशन संस्था को लड़के की जरूरत है, लिखकर अर्जी दो।"

पड़ोस की एक दुकान तक जाकर मैंने अपनी पेनी निकाली, और मन में कहा, "यह पेनी मेरे सौभाग्य का संदेश लायेगी।" दुकान में खड़ी औरत मेरी ओर आश्चर्य से देखने लगी। मैंने उसे पेनी देकर कहा, "मुझे टिकट दे दो, चिट्ठी लिखनी है।"

उसने उत्तर दिया, "एक पेनी में चिट्ठी नहीं जाती।" उसने मेरे चेहरे को उदासी से उतरते देखा, तो बोली, "लो, एक पेनी का पोस्ट-कार्ड ले जाओ।"

मैं यह पोस्टकार्ड लेकर पास ही पड़ी हुई छोटी-सी संगमरमर की मेज के पास बैठ गया। देर तक सोचता रहा तो अपने सीमित ज्ञान के अनुसार बढ़िया-से-बढ़िया शब्द लिखे। गम्भीर मुद्रा में "महोदय" से प्रारम्भ किया, "विनीत" लिखकर समाप्त किया, और बीच में यह बयान दिया कि गवैया हूँ और मुझे जो कोई भी काम दिया जाये उसको करने पर तैयार हूँ। 'कोई' शब्द को रेखांकित भी कर दिया।

फिर ध्यानपूर्वक पता लिखा और कोने में लगे हुए लेटरबाक्स के भीतर पोस्टकार्ड सरका दिया।

इस बार कतार में खड़े होकर प्रतीक्षा करने की बात न थी। कहीं किसी चमाचम दफ्तर में एक संगीत-प्रकाशक कह रहा है, "हमें ऐसे ही आदमी की जरूरत है। मिस क्राफर्ड, मैक्स विक्लर को पत्र लिख दो—"महोदय ? हम बहुत प्रसन्न होंगे यदि—"

तीन दिन बीत गये, डाकिए की प्रतीक्षा में बेकार के तीन दिन। इस डर के मारे घर से बाहर निकलने का साहस न होता कि मेरी अनुपस्थिति में सन्देश आया तो गजब हो जायेगा। मेरी आवारागर्दी से दवे झुँझला गया। मिन्नी बुआ ने मुझसे कुछ कहा नहीं, परन्तु मेरे विरुद्ध उनकी मनोभावना का अनुमान लगाना कठिन न था। पोस्टकार्ड में मेरा विश्वास बच्चों जैसा था, न हटना था न हटा।

इन्हीं दिनों मैं घण्टों अपने कोष को देखता रहा और एक पुस्तिका भी पढ़ डाली, जिसमें बताया गया था कि विदेशी किस प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका का नागरिक हो सकता है। मैंने उसमें पढ़ा कि नागरिकता के अधिकारी होने में पाँच वर्ष लगेंगे। परन्तु मुझे विश्वास हो गया था कि स्वाधीनता की भूमि में निश्चित रूप से भरती होने के लिए पाँच वर्ष का सेवा-काल बहुत अधिक नहीं है।

कई दिन की प्रतीक्षा के बाद डाकिया प्रातःकाल मकान के सामने रुककर पूछने लगा, "यहाँ कोई 'मैक्स विक्लर' रहता है ?"

मेरे हृदय में पताकाएँ फहराने लगीं और विजय के नगाड़े मुझे सड़क भर पर बजते सुनाई देने लगे।

● ● ●

कार्ल फ़िशर की संगीत-प्रकाशन संस्था मेरे घर से थोड़ी ही दूर थी। बीच में दो-तीन ही भवन पड़ते थे। शीशे की खिड़कियों में लगे बाजों को देखने के लिए मैं कई बार दुकान के सामने रुक चुका था। परन्तु

इस बार पहुँचने पर मेरा हृदय धड़कने लगा और धड़कन बन्द होने पर ही मैं भीतर घुसा।

दफ्तर में बैठे एक क्लर्क को मैंने बुलावे का पत्र दे दिया। पत्र लेकर वह गायब हो गया। बीस मिनट तक मैं सामने लगी घड़ी की सुई चलते देखता रहा; तब सुन्दर दाढ़ी रखाये नाटे कद का एक पुष्ट व्यक्ति तेज कदम में चलता हुआ मेरे पास पहुँचा और डपटकर बोला, "तुम्हीं मैक्स विक्लर हो ?"

मैंने काँपते हुए जर्मन में उत्तर दिया, "जी हुजूर।" उसने भी शुद्ध जर्मन में कहा, "बड़ी खुशी हुई कि तुम आ गये। मैं केवल देखना चाहता था कि किस व्यक्ति ने पोस्टकार्ड पर अर्जी देने की धृष्टता की है।" इतना कहकर वह तेजी से वापस होने लगे।

मुझे ऐसा लगा मानों मेरा सिर फट गया हो। मैं चिल्लाया, "एक क्षण रुकिये।" क्लर्क पीछे फिरकर देखने लगे, काम पर आते-जाते लड़के रुक गये और ग्राहक अपनी कुर्सियों से उठ खड़े हुए। दढ़ियल महाशय भी चलते-चलते जम-से गये और पीछे फिरकर मेरी ओर देखा। उनकी जैसी चकित मुद्रा मैंने कभी न देखी थी और न देखी है।

मैंने अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर कह डाला, "मैं आपसे केवल यह कहना चाहता था कि काम के लिए पोस्टकार्ड पर मैंने क्यों अर्जी दी। सीधी-सी बात है, मेरे पास एक ही पेनी थी और पत्र के लिए दो आवश्यक थीं।"

महाशय ने मेरी ओर फिर देखा और बोले, "हमने लड़का माँगा था, मर्द नहीं।" इस बार उनकी बोली में सहानुभूति का किंचित अंश था।

मैंने निश्चय कर लिया था कि जब तक निकाल न दिया जाऊँगा तब तक प्रार्थना करता रहूँगा। बोला, "लड़के का काम मर्द तो कर ही सकता है। मैं यहाँ काम करना चाहता हूँ। मुझे संगीत-प्रकाशन के काम में विशेष रुचि है। महाशय, मुझे मौका तो दीजिये।"

महाशय ने पूछा, "लड़के के वेतन पर काम करने के लिए तैयार हो ?"

"मुझे कोई भी वेतन दीजिये।"

"सोमवार को आओ, तुम्हें काम मिलेगा।"

"मैं सोमवार तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता।"

मैं समझा कि महाशय फिर क्रुद्ध हो जायेंगे। उलटे, उन्होंने हाफ़मैन नामक कर्मचारी को बुलाकर कहा, "यह नया लड़का तुम्हें मिलता है। काम लेना शुरू कर दो। इसे प्रति सप्ताह ६ डालर मिलेंगे।"

● ● ●

मैं हाफ़मैन के पीछे हो लिया और चरचराती सीढ़ियों से उतरकर तहखाने में पहुँचा जहाँ अलमारियों की भूलभुलैयाँ तहखाने का प्रायः सभी भाग घेरे हुए थीं। फिर हम एक कमरे में घुसे जहाँ लकड़ी की बड़ी मेजों पर चार-पाँच व्यक्ति संगीत के पन्ने छाँट रहे थे। हाफ़मैन ने गोज नामक व्यक्ति को मुझे काम पर लगाने के लिए कह दिया।

भूलभुलैया के किसी दूसरे कोने पर पहुँचकर गोज ने मुझे गीतों का एक गड्डा दिखाया, जिसकी सभी प्रतियाँ एक ही प्रसिद्ध गीत की थीं। गोज ने मुझे काम समझा दिया, "प्रत्येक प्रति को गिनकर रखते चलो, भूलना नहीं। शुरू करो।" वह चल दिया। मैंने गीतों की पहली गड्डी उठाई, लिपटा कागज हटाया और तेजी से काम शुरू कर दिया।

पता नहीं, काम करते-करते कितनी देर बाद अकस्मात् हाफ़मैन मुझे दिखाई दिया, क्या बात है ? एक छोटे-से गीत की कुछ हजार प्रतियाँ एक पहर के भीतर नहीं गिन सकते ?"

इतना कहकर वह रुक गया। उसका मुख कुछ गम्भीर हुआ और फिर एक दम जोर से हँसकर गोज से बोला, "देखो तो।"

मैं समझ नहीं पाया कि हँसी की कौन-सी बात थी। मैं घण्टों से बैठा एक साँस से बिना खाये-पिये काम कर रहा था, और लगभग

४० पन्ने मेरे सामने थे। प्रत्येक पर मैंने सुन्दर अक्षरों में गीत का शीर्षक लिखकर प्रति का नम्बर चढ़ा दिया था।

१. तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं।
२. " " "
३. " " "

हाफ़मैन ने जब मुझे बुरी तरह टोका था, तब तक मैं ३०वें पृष्ठ के नीचे लिख चुका था :

२७६३. तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं।

यों संगीत के व्यवसाय में मेरा पहला दिन बीता।

एक ही सप्ताह पश्चात् मैं तहखाने के कर्मचारी-दल का पक्का सदस्य मान लिया गया। इन दिनों लगातार मुझ पर हँसी और गालियों की बौछार पड़ती रही और मैं सहन करता गया। कई साथी तो स्वागत करने के लिए मेरे आते-जाते अपने नथुने बन्द कर लेते, मानो मैं दुर्गन्ध की प्रतिमूर्ति था। हाफ़मैन और गोज मुझसे रात तक इतना भारी काम लेते कि छुट्टी पाने पर तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़ना मुझे दूभर हो जाता। मैं भारी-भारी मेजें हटाता, लम्बे-चौड़े फर्शों पर झाड़ू लगाता, गीतों के हजारों पन्ने गिनकर अलमारियों में चुनता; और पाखाने साफ कराने होते तो यह काम भी मेरे ही सुपुर्द होता—मैं उनका 'किचहड़ा पोलक' जो था।

फ़िलाडेल्फिया नगर में संगीत-प्रकाशन की एक दुकान का काम बन्द हुआ और बुधवार को उस दुकान का सब माल हमारी दुकान के सामने लगा, तो हाफ़मैन ने माल उतारने और पाँच खण्ड ऊँचे गोदाम तक लाद ले जाने का काम मेरे सुपुर्द किया। प्रत्येक बण्डल दो मन के लगभग था। वर्षों से रखे बण्डलों पर गर्द की अच्छी-खासी तह जम गई थी। बण्डल उठाकर ले जाते समय यह गर्द मेरे फेफड़ों में घुसती रहती। तीसरे पहर चार बजे तक मैंने यह काम भी समाप्त किया। मैंने यह सब क्यों किया, मुझे अब याद नहीं। तब तक असहनीय

परिश्रम के पुरस्कार में अपमान ही मिला था परन्तु मैंने निश्चय कर लिया था कि यथाशक्ति काम में चिपका ही रहूँगा, भागूँगा नहीं।

क्रमशः अपमान और आक्रमण का सिलसिला समाप्त हुआ। लोग मुझे 'जम्बो' के नाम से याद करने लगे। मैं हाथी जैसा सशक्त और परिश्रमी जँचा, तो यह सम्बोधन मुझे प्रिय भी लगा। जीवन-यात्रा का सबसे कठिन सप्ताह समाप्त हुआ और मेरी जेब में छः डालर आ गये।

● ● ●

मैंने अपनी काली कापी में हुल्दा का अमरीकी पता लिखकर उसके चारों ओर लाल पेन्सिल से रेखा खींच दी थी, बहुत दिनों तक उसे ढूँढ़ने का साहस नहीं बटोर सका था। परन्तु एक रविवार ऐसा आया जब हुल्दा को ढूँढ़ने का साहस हुआ। मैंने यथासम्भव अपने फटे कपड़े ब्रश से साफ किये और उन्हें सी-सिलाकर दुरुस्त किया और गीत गुन-गुनाते हुल्दा की तलाश में तीसरे पहर निकल पड़ा। सोचता जाता था हुल्दा मेरा स्वागत भी करेगी, इतने वर्ष बाद वह पहले जैसी भली भी लगेगी ? यों ही सोचते-सोचते उसका घर आ गया। सुनहरे परन्तु बिखरे बालोंवाली एक लम्बी-मोटी युवती ने द्वार खोलकर मुझे देखा तो चिल्ला पड़ी, "कौन ? तुम ! अरे, मैं तो समझी थी कि तुम मर चुके हो।" वह हुल्दा थी।

कमरा मेहमानों से भरा था। कोई दावत हो रही थी। हुल्दा मुझे छोड़कर शीघ्र ही चली गई, और किसी ने भी मेरी उपस्थिति की पर-वाह न की। मुझे वहाँ पहुँचने का बहुत खेद हुआ। मैं रसोईघर में जाकर वहाँ दोनों हाथों से अपना मुँह ढके अकेला बैठा नीची गर्दन किये फर्श ताकता रहा।

पैरों की आहट सुनाई दी। गोल और मुस्कराते मुख में मुझे दो स्नेहपूर्ण आँखें दिखाई दीं। लड़की बोली, "आप हुल्दा के पुराने मित्र

हैं ?" खिन्नता से भरा था ही, मन में आया कि हुल्दा की मित्रता से इन्कार कर दूँ, कह दूँ कि भूले से यहाँ पहुँच गया। परन्तु बोलने के पहले ही उसके दर्शन ने मुझे प्रभावित कर दिया था, उत्तर दिया, "जी हाँ!" लड़की ने अपना परिचय दिया, "मैं क्लारा हूँ। निकट ही नीचे को कमरे में रहती हूँ।"

हम दोनों मुस्कराने लगे। मैं हुल्दा को भूल गया और उसके मेहमानों को भी। मैंने अपना परिचय दिया—सुदूर जन्मभूमि और 'गेर्टी' जहाज की बात हुई। जुड़वाँ भाई दवे का नाम भी बात में सम्मिलित हुआ।

वह अकस्मात् पूछ बैठी, "आपकी वास्कट के बटन टूटे हैं, हों तो टाँक दूँ।"

मैं पुलकित हो गया; बोला, "जेब में हैं—ये लीजिये।" क्लारा सुई-डोरा माँग लाई और बटन टाँकने लगी। मैं बैठा रहा, उसका हाथ मेरे हृदय से लगता रहा। क्यों न यहाँ आने के पहले मैंने अपनी वास्कट के दो बटन और तोड़ डाले! इस मधुर स्पर्श का कुछ और देर तक आनन्द मिलता।

मालूम हुआ कि फ़िशर की दुकान होती हुई क्लारा नित्य प्रातःकाल अपने काम पर जाती है। उसने नित्य अपनी झलक दिखाने का मुझे वचन दिया।

मगन होकर सीटी बजाते मार्ग पार करने लगा। मुझे काम मिल गया था, लड़की मिल गई थी, बैंक में बचत जमा होने लगी थी। अब मैं चिन्तामुक्त था।

● ● ●

दवे मोटर बस का कण्डक्टर हो गया। प्रति सोमवार को हम दोनों डाई डाक सेविंग्स बैंक में अपनी बचत जमा करने एक साथ जाते।

मेरा साप्ताहिक वेतन अब साढ़े आठ डालर हो गया था, और मेरे साप्ताहिक व्यय का ब्यौरा इस प्रकार था :

बीमारी का बीमा	...	५ सेंट
किराया और नाश्ता	...	डेढ़ डालर
बुआ मिन्नी के घर रात का खाना	....	ढाई डालर
दोपहर का खाना	....	१८ सेंट
(इतनी कम रकम इस प्रकार—दो सेंट में दो दिन की बासी पाव रोटी का भाग, और एक सेंट में तीन दागी सेब—प्रतिदिन के तीन सेंट)		
सिगरेट	...	१२ सेंट
फुटकर जेब-खर्च	....	२५ सेंट
कुल		४ डालर ६० सेंट

यों प्रति सप्ताह बैंक में जमा करने के लिए १० सेंट कम चार डालर निकल आते। जीवन यथेष्ट सुखी था।

फिशर के तहखाने में महीनों तक कमरतोड़ काम करने पर मुझे पदोन्नति का पहला सुअवसर मिला। मुझे गीतों के परीक्षा-विभाग का काम सुपुर्द हुआ। अब बण्डल उठाने ही का काम न था, उन्हें खोलकर पढ़ने और मिलान करने का काम भी मेरे जिम्मे हुआ।

मेरा काम यह था कि आर्केस्ट्रा-संगीत के बड़े-बड़े बण्डलों में से छाँटकर एक-एक गीत की पूरी स्वर-लिपियों के छोटे-छोटे बण्डल बना दूँ। बड़े बण्डल इस प्रकार बँधे होते थे कि किसी में, उदाहरण के लिए सौसा के प्रसिद्ध फौजी कूच के गीत में टेनोर ट्रांबोन पर बजाये जाने-वाले अंश की ५०० प्रतियाँ होती थीं। दूसरे में पिकोलो वाद्य पर बजाई जानेवाली धुन की ५०० प्रतियाँ होती थीं। काम का ढंग यह था कि एक लम्बी मेज पर विभिन्न स्वर-लिपियाँ सजा दी जाती थीं और मैं मेज का चक्कर लगाकर हर बण्डल में से एक-एक पन्ना

उठाता था। एक चक्कर के पश्चात् पूरे आर्केस्ट्रा की स्वर-लिपि तैयार हो जाती थी—हर बाजे के लिए एक प्रति। यों मेज के चारों ओर प्रातः से सन्ध्या तक ५०० चक्कर लगाने पड़ते, लगभग ३०,००० पन्ने उठाने पड़ते और इसके लिए इतनी ही बार उँगलियाँ गीली करनी होतीं। तरी के लिए मैंने जीभ से काम लिया, और जैसे-जैसे जीभ आगे से पीछे तक सूखती चली जाती, और वैसे-वैसे उँगलियाँ भी और अन्दर तक डालनी पड़तीं। दिन-भर का काम पूरा करने के बाद जीभ सुन्न हो जाती, गला सूख जाता और छाती में गर्द भर जाती।

परन्तु क्रमशः इस पेचीदा संगठन में मुझे रोचकता दिखाई देने लगी, जिससे किसी संगीत-प्रकाशन संस्था का सफल संचालन सम्भव होता है। मेज के चारों ओर चक्कर लगाते मुझे इस व्यवसाय में निहित भारी संभावनाएँ प्रत्यक्ष होने लगीं।

● ● ●

जनवरी १६०८ की एक सन्ध्या को घर लौटा तो उत्तेजित वार्तालाप सुनाई दिया। मिन्नी बुआ के मुख पर उत्तेजना के साथ तमतमाहट भी थी, और दवे हाथ-पैर मारते बातें करता रसोईघर का चक्कर लगा रहा था। उसने मेरे हाथ में एक कागज दे दिया। मैंने पढ़कर बैठने के लिए कुर्सी टटोली। छोटा-सा पर अर्थपूर्ण तार था : **अमरीका पहुँच रहा हूँ। बर्नहर्ड विक्लर।**

तार पर विश्वास न होता था। अपने पत्रों में ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय के सम्बन्ध में कभी भी पिताजी ने संकेत नहीं किया था। किन्तु थोड़े दिनों बाद आप्रवासियों के प्रबन्धक से हमें सूचना मिल गई कि वह एलिस द्वीप पहुँच गये हैं।

पिताजी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उनकी मूँछ में पहले से अधिक ही शौर्य और शक्ति की झलक थी। वह अपने हाथ में वही भारी छड़ी घुमा रहे थे, जिसे देखकर ५,००० लकड़हारे काँप उठते थे।

परन्तु उनके लम्बे बरान कोट और नये जूते में कारपेथिया के पर्वतीय जीवन की दहकानियत का पता न था। उनके विशालकाय व्यक्तित्व से एक भद्र अमरीकी का शील और सौजन्य प्रत्यक्ष होता था।

हमारी वापसी के एक घण्टे भीतर हमारा कमरा उनके दर्शनार्थियों से भर गया। इनमें कई सम्बन्धी और मित्र भी थे, जिनका तब तक हमें कोई पता न था। मैं यहाँ पहुँचा, तब ये सब कहाँ थे ?

जान पड़ता था कि पिता ने यहाँ आने के पहले अमरीकी रहन-सहन के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ लिया था। यहाँ का जीवन किस प्रकार सफल हो—इस पर उनका एक प्रभावपूर्ण व्याख्यान हो गया। जो श्रोता यहाँ जन्मे थे या कई वर्षों से अमरीका के निवासी थे, वे भी मान गये कि जो कुछ वे करते आ रहे थे वह सब गलत था।

जब सब मेहमान पिताजी को सादर नमस्कार करके चले गये तो हम उन्हें घेरकर मेज के चारों ओर बैठ गये। पिता ने पूछा, "तुमने कितना रुपया बचाया है ?"

मैं और दवे उठकर अपनी-अपनी पास-बुकें ले आये। पिताजी ने दोनों को देखा—मेरी किताब में लगभग २०० डालर जमा थे—और टीका-टिप्पणी किये बिना दोनों को अपनी जेब के हवाले किया।

आदेश हुआ, "मिलकर काम करो और बचत बढ़ाओ; अब सोने का समय है।"

थोड़े ही दिनों के भीतर हमारी जीवन-चर्या बदल गई। प्रति सप्ताह वेतन पाने के दिन पिता को हमारे वेतनों के लिफाफे मिल जाते और हमें जेब-खर्च के लिए एक-एक डालर मिल जाता।

एक वर्ष की स्वतन्त्रता के पश्चात् यह परिवर्तन हमें खला अवश्य; परन्तु हमें इतना मानना पड़ा कि पिता के लौह अनुशासन और असीम अधिकार में रहकर हम सेवा के लिए बहुत सुन्दर प्रकार से संगठित हो गये। उन्होंने उसी भवन में बुआ मिन्नी के घर से लगा दूसरा घर किराए पर ले लिया और उसके लिए पुराने माल की दूकानों से टूटा-

फूटा सामान खरीद लाये। जैक ने धृष्टतापूर्वक लिखा कि उसे पोर्ट जर्विस में ही रहना पसन्द है, तो पिता वहाँ गये और २१४ डालर ले आये, जो उस अभागे ने बचाये थे। उससे वचन भी ले आये कि अपने वेतन से प्रति सप्ताह आठ डालर वह भेजेगा। अमरीका पहुँचने के एक सप्ताह पश्चात् अपने तीनों पुत्रों के तीन मस्तिष्क और छः हाथ इस वृद्ध ने अपने अधिकार में कर लिये।

● ● ●

केवल एक छोटी-सी बात पिता के अधिकार के बाहर रह गई थी—और वह थी क्लारा जिससे मेरा प्रणय प्रारम्भ हो गया था। कैसे उनसे कहूँ, कैसे उन्हें समझाऊँ? यही मुसीबत दवे की भी थी। उसकी प्रणयिनी का नाम एन था। हम दोनों ने निश्चय किया कि एक साथ अपनी बात पिता से करेंगे। निश्चय देखने में तो सरल लगा, परन्तु प्रातःकाल नाश्ते पर जब हमारा सामना पिता से हुआ तो हमारा साहस रफूचक्कर हो गया।

तैयार किया हुआ व्याख्यान विस्मृत हो गया, मुख से अटपटी और धृष्ट बात ही निकल गई, "पापा, मैं अब २० वर्ष का हुआ। मुझे अभी ब्याह की आशा नहीं, ब्याह के लिए कदाचित् पाँच वर्ष या आगे तक भी प्रतीक्षा करनी पड़े। आपकी राय क्या है?"

बात पूरी होने के पहले ही पिताजी दाहिने हाथ में अपना बेंत लिये उछल पड़े। एक क्षण समझा कि मैं पिटा। परन्तु तुरन्त ही वह बैठ गये। उनका चेहरा ज़र्द पड़ गया और आवेश में उनकी दाहिनी मूँछ फड़कने लगी। मुझे बहुत दुःख हुआ। अकस्मात् उनके प्रति मेरी श्रद्धा पहले से कहीं अधिक बढ़ गई।

पिता के हृदय को आघात पहुँचाने की बात मेरे मन में कदापि न थी। उनके संस्कार दूसरे ही थे। पिता जिस देश से आये थे वहाँ प्रत्येक सेवक माता के हाथ चूमता, प्रत्येक श्रमिक पिता को देखते ही

हाथ में हैट लेकर नत-मस्तक होता। यहाँ आकर भी उनके संस्कार में परिवर्तन नहीं हुआ था। वह विवश थे। बोले, "मैं कोई ऐसा विद्रोह न सहन कर सकूँगा, जिससे मेरी योजनाओं में बाधा पड़े। तुम्हें चेतावनी देनी है। इस घर में लड़कियाँ न लाना। लाओगे तो मैं उन्हें निकाल बाहर करूँगा। तुम जर्मन समझते हो न, या अपनी मातृ-भाषा भी भूल गये ?"

मैं अपने को रोक न सका, "पापा, आप भूलते हैं। हमारे हृदय में अभी तक आपके प्रति श्रद्धा है। मैंने आपको—माता जी को भी—वचन दे दिया था कि आजीवन आपका आज्ञाकारी रहूँगा। परन्तु मैंने इस लड़की को भी वचन दे दिया है और इस वचन से भी आजीवन मैं टलने का नहीं। यह मेरी सहयोगिनी उस समय बनी जब मैं बिलकुल अकेला ही था। यह उस समय भी मेरी संगिनी रही, जब मैं इतना निर्धन था कि उसे सिनेमा दिखाने के लिए मेरे पास एक पैसा न था। आपने उसे देखा तक नहीं और अस्वीकृत कर दिया। आप कहते हैं कि आप उसे इस घर से निकाल बाहर कर देंगे। यह घर"—मेरी आँखों से आँसू निकल आये—"क्या यह हमारा घर नहीं होनेवाला था ?"

पिताजी अकस्मात् उठकर कमरे के बाहर चले गये। दवे और मैं स्तब्ध होकर जम-से गये। बड़ी देर तक बैठे रहे। फिर रसोईघर में गये। वहाँ पिता एक खिड़की के सहारे खड़े थे। उनका चेहरा बहुत उतरा हुआ था। उनकी आँखें बन्द थीं। वह अस्सी वर्ष के वृद्ध जैसे दिखाई देने लगे।

बोले, "मैं इस विचित्र और भ्रामक स्वप्न-जाल में भटक-सा गया हूँ। काश कि तुम्हारी माँ यहाँ होतीं।"

स्नेह और श्रद्धा से परिपूर्ण होकर मैंने पिता के कंधे स्पर्श किये और कहा, "पापा, उन्हें तुरन्त बुलाइये। उनका किराया देने के लिए आपकी तीनों पास-बुकों में यथेष्ट पैसे हैं।"

"परन्तु खाना-रहना कैसे चलेगा।"

"आप चिन्ता न करें। आपके तीन लड़के हैं। हम सब प्रबन्ध कर लेंगे।"

उन्होंने स्नेह और विश्वास से हमारी ओर देखकर कहा, "अच्छा, तुम कहते हो तो कल ही जहाज के दफ्तर किराया जमा करने जाऊँगा।"

पिता ने पास-बुकें बार-बार खोलकर पढ़ीं और हिसाब लगाते रहे। फिर अपनी जेब में हाथ डाला और बोले, "आज रविवार है। यह लो एक-एक डालर—अपनी प्रेमिकाओं को सिनेमा दिखाने के लिए।"

● ● ●

माताजी अपने बाकी दो बच्चों, रोज और हर्मन को लेकर आ गईं। उनकी जीवन-चर्या पहले जैसी रही—कभी पैसा नहीं छुआ, खरीदारी करने कभी नहीं गईं, घर के बाहर शायद ही कभी निकलीं। खाना पहली ही जैसी लगन से बनाती रहीं; परन्तु सामग्री उन्हें बहुत ही निम्न श्रेणी की मिलती—पहले जैसी नहीं। पिताजी सस्ते-से-सस्ता माँस लाते। सब्जी-मांस के अजीब से शोरबे तथा अन्य खाने बनते और उन्हें हम खाते, स्वाद के लिए नहीं, केवल इसलिए कि भूख शांत करनी थी; खाने के लिए वही चीजें हमारे सामने थीं और पापा का अनुशासन था।

पिताजी का अधिकार पहले जैसा अक्षुण्ण रहा। उनके रवैये से हम सबको भली प्रकार विदित हो गया कि स्थान-परिवर्तन से उनके अधिकार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। गृह-प्रबन्ध में, गृह-सदस्यों पर अनुशासन में, उनका असीम अधिकार बढ़ ही गया था; क्योंकि उनकी जो शक्ति ५,००० लकड़हारों पर अनुशासन में लगी थी, उससे ही अब घर के सात सदस्य अनुशासित हुए—हमें कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक बचाना था।

माता को यहाँ आये एक वर्ष भी न बीता था कि पिता ने किराने की दुकान खोलने के निर्णय की सूचना दी—उस रकम से जो हम तीनों की कमाई से बचाई गई थी। हम चुपचाप बैठे पिता को इस निर्णय के विरुद्ध समझाने की बात सोचते ही रह गये—यद्यपि हमें समझाने का कोई ढंग दिखाई नहीं दे रहा था—कि उन्होंने अकाट्य निश्चय के साथ हमें सूचित कर दिया, "दो सप्ताह के भीतर मैं दुकान खोल लूँगा।"

पिता को किराने का कोई अनुभव नहीं था। दुकान कुछ ही दिन चली। ग्राहकों से बहस करते, व्यापारियों से लड़ते। अधिक दाम देकर नीचे दरजे का माल खरीद लाते। आदि से अन्त तक यह दुकान एक दुःखान्त नाटक ही रही।

हममें से कोई कभी न जान सका कि दुकान में कितनी रकम लगी है, कितना दुकान पर कर्ज है, कितना हमारी पास-बुकों में बचा है। पिता ही खरीदारी करते, बहस करते, रार बढ़ाते और थोड़ा-बहुत बेचते भी। दुकान खुलने के दस महीने बाद महाजनों की पकड़ में आ गये। जब सब समाप्त हो चुका तो माता के पास आड़ू के सात डिब्बे ही रह गये। यही किराने की दुकान की बचत थी।

• • •

दूसरे दिन प्रातःकाल पिता ने हमें हमारी पास-बुकें लौटा दीं। उनके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। तीनों पास-बुकों में बचत का जोड़ १३ डालर ४७ सेंट रह गया था। जिस पास-बुक ने मेरे चार वर्ष से अधिक के परिश्रम के फल हजम कर लिये थे, उसमें मुझे ४ डालर १ सेंट की बचत दिखाई दी, सोचा कदाचित चार डालर के बाद अकेला सेंट मेरे खुलते भाग्य का दूसरा प्रतीक हो। जेब में रखकर अपने काम पर चल दिया।

मुझे थकान-सी मालूम होने लगी। नित्य भारी काम करना पड़ता

और बहुत देर तक; तिस पर सस्ता और अपौष्टिक भोजन खाने को मिलता जिस कारण मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा। प्राण-रक्षा के लिए निरन्तर संघर्षशील रहा था। अब मुझे हार दिखाई देने लगी।

मालूम नहीं, मैं कैसे बच गया, कदाचित् जुटे रहने के दृढ़ निश्चय ने ही मेरी रक्षा की। जब कभी शारीरिक या मानसिक पीड़ा से उद्विग्न होता तो क्लारा के साथ सुखी जीवन की आशा ही मेरी रक्षा करती। किसी दिन भी अपने काम से मैं गैरहाजिर नहीं रहा।

अन्ततः एक दिन फ़िशर के तहखाने की गर्द और अँधेरे की लम्बी अवधि भी समाप्त हुई। एक दिन प्रातः हाफ़मैन सीढ़ी से उतरकर मेरे पास आया और घबराकर बोला, "मिस्टर वाल्टर फ़िशर तुरन्त मिलने के लिए तुम्हें बुला रहे है।" स्वामी के तीनों लड़के अब अपने पिता का व्यवसाय सँभालने लगे थे। उनमें एक था वाल्टर फ़िशर।

सीढ़ी चढ़कर फ़िशर के दफ्तर की ओर बढ़ा, तो मुझे सुदूर अतीत की एक छोटी-सी घटना याद आई, जब झाड़ू लगाने और पाखाने साफ करने के काम मेरे सुपुर्द होते थे। घटना साधारण-सी ही थी, परन्तु इसके स्मरण ने ही सेवा के अन्तिम चार वर्षों में मेरी प्राण-रक्षा की थी। मैं झाड़ू दे रहा था, जब वाल्टर फ़िशर उधर से होकर गुजरे। वह मुस्कराये और सहज-सौहार्द से उन्होंने मुझे नमस्कार किया।

मैं बहुत प्रभावित हुआ। मेरी आँखों में आँसू भर आये। जिस झाड़ू के कारण मेरे जैसे नौसिखिये को देखकर अन्य व्यक्ति दुर्गन्धयुक्त अन्त्यक समझते, उसे इस बड़े व्यवसाय के स्वामी के सुपुत्र ने नमस्कार किया।

मेरा आत्माभिमान कुछ जागृत हुआ। मैं मानव हूँ, मेरा पद निम्न है, तो भी मानवों के मध्य मानवता में मेरा सबके समान पद है। यह समानता मेरी जन्मभूमि में सम्भव न थी, जहाँ भंगी हाथ में हैट लिये

स्वामी के सुपुत्र के मार्ग से निकल जाने की प्रतीक्षा करते। यह दूसरी ही दुनिया थी।

बहुत दिनों बाद, जीवन-मार्ग की अब से कठिन मंजिल पर, मुझे यह घटना फिर याद आई, और वाल्टर फ़िशर की मुस्कराती आँखें भी, क्योंकि तब भी आगे हाथ बढ़ाकर उन्होंने मुझे सहायता दी। इस दूसरे अवसर पर वह मेरे स्वामी न होकर मेरे मित्र हुए। परन्तु यह दूर की बात अभी भविष्य के गर्भ में ही थी।

हाँ, ज्यों ही मैं दफ्तर में घुसा उन्होंने मुझे बैठ जाने को कहा। संक्षेप में उन्होंने मुझे तहखाने से मुख्य फर्श पर मेरी पदोन्नति का आदेश दिया और आर्केस्ट्रा विभाग का प्रकाशन-भण्डार मुझे सुपुर्द हुआ। पहले मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। परन्तु शीघ्र ही सुचित्त होकर मैंने अटपटाते शब्दों में उन्हें धन्यवाद दिया। उस समय यह कम ही समझ में आया कि निचली काल-कोठरी की लम्बी अवधि अब सदैव के लिए समाप्त हो गई है।

क्रमशः ही मुझे बीती बात का महत्व प्रत्यक्ष हुआ। जो कुछ मैंने कूड़े के ढेरों के मध्य, स्वर-लिपियों के कमरतोड़ बोझ उठाकर, और संकलन के लिए मेज के असंख्य चक्कर लगाकर सीखा था, उसका महत्व मेरे सामने आया।

खबर सुनते ही तहखाने के कर्मचारी स्तब्ध हो गये। मैंने अपना उल्लास छिपाने का भरसक प्रयत्न किया। अक्सर बहस होती रहती और मेरी महत्वाकांक्षा की हँसी उड़ाई जाती। जो भी काम मुझे मिले, उसे यदि मैं दिल लगाकर और सही करूँ तो परिश्रम और कर्तव्यपरता का पुरस्कार मुझे अवश्य मिलेगा। मेरे इस अटूट विश्वास को साथी मेरा खब्त समझते। वे स्वामी को दोष देते, सभी कुछ उनकी दृष्टि में दोषपूर्ण रहता, केवल अपनी ओर वे न देखते। मेरी सादी-सी धारणा थी कि यदि मुझे तहखाने से निकलना है, तो मुझे यथेष्ट मात्रा में वह सब काम भी जानना है, जो तहखाने में नहीं होता। वे कहते, "तुम

कभी सफल न होगे।" मैं उनकी बात न मानता और अब मेरी सफलता उन्हें प्रत्यक्ष हुई।

तहखाने में मैंने फ़िशर-प्रकाशन-सूची का प्रत्येक अंक याद कर लिया था। मुख्य फर्श पर पहुँचकर अपनी जानकारी का प्रयोग मैंने संगीत के अन्य प्रकाशनों के जानने के लिए किया। मेरा प्रशिक्षण बहुत पक्का हुआ था। और शीघ्र ही इसका आशा से अधिक प्रसाद मुझे मिलना था।

● ● ●

अमरीकी मनोरंजन का सबसे बड़ा और समृद्ध युग १९१२ से प्रारम्भ हुआ। संगीत के छपे पन्ने विशाल संख्या में बिकने लगे। चल-चित्र चुप चलते थे, तो मृतक ही मालूम पड़ते थे। उनमें जीवन-संचार के लिए संगीत का सहयोग आवश्यक हुआ। बड़े नगरों के सिनेमाघरों में बड़े-बड़े आर्केस्ट्रा बिठाये गये, तो छोटे कस्बों में अरगन या पियानो बजानेवाले ही नियुक्त हुए। चलचित्र से संगीत का सहयोग सरल न था। चित्र बदलते जाते और दर्शकों की भावनाएँ उनके साथ बदलतीं तो इन भावनाओं को मूर्त करने के लिए संगीत आवश्यक होता और गीत भी चित्र के साथ-साथ बदलने आवश्यक थे। परन्तु बाजेवालों को चित्र के अनुकूल वाद्य-गति बदलने के साधन उपलब्ध न थे। चिन्तित संचालकों के सामने जो धुनें आतीं उन्हीं को वे किसी प्रकार बिठाते जाते।

थियेटर संचालक उपयुक्त सुझावों की ताबड़तोड़ माँग करने लगे। ऐसे प्रश्न पूछने लगे, जैसे ऐसे दृश्य में जहाँ मालगुजारी के गुमाश्ते ह्विस्की फेंक रहे हों, किस गति का संगीत होना चाहिये; चार्ली चैप-लिन की साँड़ से लड़ाई के दृश्य में कौन संगीत उपयुक्त होगा? हमारा व्यवसाय इन प्रश्नों और उनके उत्तरों से खूब चमका। परन्तु भविष्य के लिए मेरी कल्पना इससे अधिक चमत्कारपूर्ण थी।

एक रात मुझे नींद नहीं आई। सैकड़ों-हजारों गीतों की टेकें और उनकी स्वर-लिपियों की विशाल सूचियाँ मेरे मस्तिष्क में चक्कर मारती रहीं। यदि हम बाजेवालों को बता पायें कि दृश्य के अनुकूल हमारे पास कौन-कौन स्वर-लिपियाँ है, तो मनों नहीं, गाड़ियों भर अपने प्रकाशन इनके हाथ बेच सकते हैं।

बिजली की भाँति तुरन्त ही उपयुक्त योजना मेरे मस्तिष्क में बन गई। रोशनी खोलकर मैंने कागज का एक ताव निकाला और काल्पनिक दृश्यों के अनुकूल स्वर-लिपियों की सूची घसीट डाली।

अगले दिन मैंने यूनीवर्सल फिल्म कम्पनी को अपनी बनाई सूची उपयुक्त स्वर-लिपियों सहित भेज दी, और उन्हें बता दिया कि जितने भी फिल्म प्रकाशित हों तो दृश्यों के अनुकूल स्वर-लिपियाँ हमारी संस्था स्थानीय थियेटरों को तमाशे के पहले ही भेज सकती है।

दो दिन पश्चात् यूनीवर्सल के संचालक पाल गुलिक ने मुझे अपने दफ्तर बुलाया और पूछा, "आप ऐसा क्यों समझते हैं कि चित्रों के अनुकूल स्वर-लिपियाँ आप दे सकते है?" मैंने कहा, "मौका देकर परीक्षा कर लीजिये।"

आवश्यक मौका शीघ्र ही उन्होंने मुझे दिया। सात बजे संध्या से आधी रात तक १६ मेल के चलचित्र उन्होंने मुझे दिखा दिये। छोटे-छोटे प्रहसन, खबरें, पश्चिमी जीवन के दृश्य—सभी इस सूची में सम्मिलित थे। मेरे सामने एक छोटी-सी मेज रख दी गई। मुझे एक घड़ी दे दी गई जिसे मैं जब चाहता तब रोक सकता था; और मेज पर कागज तथा पेंसिलों की गड्डी ढेर कर दी गई। चित्र परदे पर चलते जाते और फ़िशर द्वारा प्रकाशित निधि से उपयुक्त स्वर-लिपियाँ मेरी आँखों के सामने आती जातीं। सामने चित्र में ऊँटों का काफिला रेगिस्तान पार करता दिखता है, तो अपनी कल्पना में मुझे उपयुक्त संगीत ही नहीं सुनाई देता, अपने स्टाक का वह ढेर भी दिखाई देता है, जहाँ रूसी संगीतकार चैकोवस्की के 'अरब नृत्य' की प्रतियाँ बँधी रखी हैं।

अपना काम समाप्त कर चुका तो भी मेरी थकी आँखों के सामने दृश्य चक्कर लगाते रहे। गुलिक ने मेरे लिखे ताव ले लिये और जम्हाई लेते हुए कहा, "हम आपको सूचना देंगे—नमस्कार।"

दूसरे दिन चार सप्ताह की स्वर-लिपियाँ तैयार करने का काम मुझे सुपर्द किया गया। प्रति मंगल की रात को दृश्य के अनुसार स्वर-लिपियाँ मुझे तैयार करनी थीं और एक सूची के ३० डालर मुझे मिलने थे।

जब फ़िशर की दुकान पर मुझे इस नये काम का आदेश पहुँचा, तो मैं तहखाने में पहुँचकर तंग मार्गों के चक्कर लगाता उस छोटी मेज पर पहुँचा जहाँ अपने काम के पहले दिन मैंने "तुम्हारी सुन्दर आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं" की २७६३ प्रतियाँ गिनी थीं। मैं बैठ गया। दोनों हाथों से मुँह ढक लिया, और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के आँसू मेरी आँखों से बहने लगे। लगन और परिश्रम का फल मुझे मिलने लगा था।

● ● ●

हास्य, भीषण हत्या और तीव्र भय या करुणा से भरे जितने चलचित्र मैंने अगले सप्ताहों में देखे उतने कदाचित् ही किसी मानव को देखने पड़े हों। परन्तु मुझे जो आनन्द आया वह कदाचित् ही किसी को प्राप्त हुआ हो। यूनीवर्सल में मेरा रात्रिकालीन परिश्रम ज्यों ही समाप्त होता कि मेरी टेढ़ी-मेढ़ी लिखी हुई स्वर-लिपियाँ तुरन्त ही छपने चली जातीं, और दूसरे दिन हजारों प्रतियाँ अमरीका के सिनेमाघरों के संगीत-कारों को बँटने रवाना हो जातीं। माँग को पूरा करना कठिन हो गया। स्वर-लिपियों के लिए चारों ओर से प्रार्थनाएँ यूनीवर्सल के दफ्तर में ढेर होने लगीं। गुलिक ने मुझसे बृहस्पतिवार की रात को भी आने के लिए कहा और मेरा पारिश्रमिक बढ़ाकर ४० डालर कर दिया।

आयरिश स्वीपस्टेक्स नामक लाटरी की बहुत प्रसिद्धि है। सर्वोच्च

पुरस्कार की मात्रा बहुत अधिक होती है। जब कभी समाचार-पत्रों में पुरस्कृतों के चित्रों में उनकी घबराहट का आभास मिलता है तो मुझे उनकी आन्तरिक भावना का पता लग जाता है। ये भावनाएँ वही होती हैं, जिनका अनुभव मुझे ४० डालर का पहला चेक पाने पर हुआ।

मैंने कोई लाटरी नहीं जीती थी, परन्तु अपनी काल्पनिक शक्ति के उपयोग से मैंने अपनी साप्ताहिक आय दूनी से अधिक कर ली थी। मुझे बताया गया था कि अमरीका अवसर का देश है। अवसर ने मेरा द्वार खटखटाया तो मैंने सुनते ही द्वार खोल दिया, और उसे भीतर बुला लिया। आनन्द और गर्व से अब मैं परिपूर्ण था।

● ● ●

एक दिन ब्रुकलिन की जिला कचहरी से मेरे नाम पत्र आया। उसमें मुझे आदेश मिला कि अगले बुधवार को दस बजे कचहरी पहुँचकर अपने नागरिकता-सम्बन्धी कागज ले जाओ। नागरिकता प्राप्त करने का शुभ दिन आने पर क्लारा ने और मैंने अपने सर्वोत्तम कपड़े पहने। रास्ते में मैंने अपनी सब बात उससे कहना उचित समझा और अन्त में उसे बता दिया, "बैंक में मेरी बचत अब तुम्हारे और मेरे संयुक्त नामों से जमा है।"

"मैक्स, क्या कह रहे हो ?"

"क्लारा, अब हमारा विवाह हो जाना चाहिये।"

एक घण्टे बाद मैंने हाथ उठाकर सौगन्ध के शब्दों का उच्चारण किया, और क्लर्क ने अमरीकी नागरिकता का दस्तावेज मेरे हाथ में दिया, जिसमें मेरा नाम बड़े और सुन्दर अक्षरों में लिखा था। यों मैं अमरीकी नागरिक बन गया।

उसी रात को मैंने अपने सब कागजात पिताजी को दिखाये। मेरे अमरीकी अधिकार-पत्र को वह देर तक देखते रहे। अन्त में शान्त समादर की भावना से उन्होंने पत्र को चूम लिया।

फिर मैंने माता-पिता से क्लारा के साथ विवाह की बात कही। पहले मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। माताजी अपने स्वभाव के अनुसार पिताजी के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगीं। अपना पुराना डर मुझे याद आया—क्या पिताजी मेरे जीवन-मार्ग पर फिर अपना निर्णय थोप देंगे? मैंने निश्चय कर लिया था कि अब इस सम्बन्ध में मुझसे उनका आज्ञा-पालन न हो सकेगा।

पिताजी ने कहा, "मैं जरूरत से ज्यादा फैसले कर चुका और वे गलत निकले। अब कोई फैसला मुझे नहीं करना, तो तुम्हारे मामलों में मुझे दखल भी नहीं देना। तुम्हारा निर्णय मुझे और तुम्हारी माँ को मान्य होगा।"

जिस व्यक्ति को परामर्श सुनना भी असहनीय रहा था, उससे मुझे ऐसा उत्तर मिला। मैं स्तब्ध हो गया।

अगले दिन प्रातःकाल संसार में सर्वत्र मुझे वसन्त की प्रफुल्लता ही दिखाई देने लगी। न्यूयार्क में रेलगाड़ियाँ आकाश में दौड़ती हैं तो पाताल में भी। ऐसे ही पाताली रेल-मार्ग से चला तो ऐसा लगा, मानो मैं निनेवा की स्वप्निल वाटिकाओं में भ्रमण कर रहा हूँ। फ़िशर के दफ्तर पहुँचा तो बात करते सभी पर मुस्कराहट बिखेरता रहा। क्लारा का दफ्तर थर्ड ऐवेन्यू नामक सड़क पर था। लंच की छुट्टी होते ही मैं क्लारा से मिलने चला तो मार्ग गुलाब की सुगन्ध से परिपूर्ण लगा। पिताजी की बात मैंने क्लारा को सुनाई।

"खूब, मैक्स, बहुत खुशी हुई।"

"अवश्य, अब आनन्द ही आनन्द के दिन सामने हैं।"

"मैक्स! एक परेशानी है। हम रहेंगे कहाँ?"

मैंने कहा, "चिन्ता की बात नहीं। हल बिलकुल सरल है—हम एक मकान मोल ले लेंगे।"

"मजाक न करो, मैक्स! हमारे पास पाँवदान खरीदने तक के लिए तो पैसा है नहीं।"

"मैं मजाक बिलकुल नहीं कर रहा। मकान अवश्य खरीदेंगे।"

निजी घर की समस्या मेरे सामने कभी नहीं आई थी। कुछ ही सप्ताह पहले मकान मोल लेने की बात मन में आनी असम्भव होती। अब अकस्मात् मुझे सब सम्भव दिखाई देने लगा। विवाह का निश्चय हो चुका था, माता-पिता की सेवा भी करनी थी। दो घरों का किराया देना मेरे लिए असम्भव था। पूरे परिवार की परवरिश मेरे जिम्मे थी। तो मकान खरीदना आवश्यक हो गया।

जब मैंने पिताजी को अपनी योजना बताई, तो उनकी आँखें चमक उठीं। बोले, "मकान मालिक साहब, आपके पास रकम कितनी है?"

"बैंक में २६५ डालर जमा हैं, मुझे विश्वास है कि बाकी मैं उधार—"

"तुम्हें किसी से उधार माँगने की जरूरत न होगी।"

मैं चिल्ला पड़ा, "तो घर का मूल्य कौन चुकायेगा?"

पिताजी बोले, "मैं।"

चकित चुप्पी साधे हम दोनों, माँ-बेटे, पिताजी की ओर देखने लगे। पिताजी का पूरा नाम था—हर ववल्टिर बर्नार्ड विंक्लर। रूमानिया के जंगलात से अपनी रकम सीधी करके हाल ही में लौटे थे। अपनी पुरानी अलमारी खोलकर उन्होंने तीन पास-बुकें निकालीं। मैं साँस रोके इनके पृष्ठ पलटने लगा।

रकम का जोड़ ५८७ डालर तक पहुँचता था।

पिताजी बोले, "मैंने किराने की दुकान बन्द होने के पहले कुछ बचा लिया था। फिर तुम्हारी माँ के लिए खरीदारी करने निकलता था तो कतर-ब्योंत करके एक-दो डालर बचा लेता। लो, यह सब अब तुम्हारा है।"

● ● ●

हमने ब्रुकलिन में दो परिवारों के रहने योग्य एक घर मोल लिया। ५०० डालर नकद देने पड़े और दो किस्तों में बाकी रकम की अदायगी की रेहन लिख दी। कमरों में बिजली का प्रबन्ध न था। उन्हें गरम रखने की व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी थी। परदों के होते हुए भी पड़ोस के दोनों घरों से काफी बेपर्दगी थी। वहाँ कहवा पिसता तो हमें सुनाई देता। पड़ोसियों की खाँसी और खर्राटे भी हमें सुनाई देते। तो भी छोटे-से घर को अपना समझने पर हम लखपती जैसे सुखी हुए।

२४ नवम्बर, १९१२ को क्लारा से मेरा विवाह हुआ। उसके बाद से घर की बिलकुल काया ही पलट गई। अब क्लारा ही उस घर में सब कुछ थी। जो कुछ मैं करता, उसकी प्रेरणा मुझे क्लारा से मिलती। मेरा आना-जाना, मेरे कर्म और विचार—सभी क्लारा के व्यक्तित्व से प्रभावित रहते। मैं अब बूढ़ा हूँ, परन्तु उस घर में अपने प्रथम वर्ष का स्मरण करके मुझमें यौवन की स्फूर्ति आ जाती है।

१९१४ के वसन्त में हमारी पहली सन्तान एथेल का जन्म हुआ। अब मेरी आय प्रति सप्ताह ६५ डालर थी। परन्तु घर के रेहन की अदायगी और सामान की किश्तें देकर बचत प्रायः नहीं के बराबर रहती। एक दिन पिताजी ने मुझे बुला भेजा। वह सदैव आत्मविश्वासी और गर्वीले रहे थे। आज उनकी आँखों में आँसू थे। धीरे से उन्होंने कहा, "तुम्हारी माँ बहुत बीमार हैं।"

मैं धक् से रह गया। पूछा, "आपने डाक्टर को बुलाया ?"

"नहीं, जानता हूँ कि आपरेशन जरूरी है और यह भी जानता हूँ कि हमारे पास उसके लिए रुपया नहीं। क्या करें, मैक्स ?"

क्लारा ने सहज निश्चय से कहा, "जो करना है सो हम अवश्य करेंगे।" आनन्द के अतिरेक में मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

डॉक्टर ने माता के रोग की जाँच की और बताया कि भीतरी

फोड़ा बन रहा है। बोले, "खून का प्राण-घातक बहाव जारी है। ऑपरेशन के अतिरिक्त कोई चारा नहीं। अस्पताल में पहले सप्ताह का किराया पेशगी देना होगा। सर्जन की फीस ३०० डालर होगी, २५० डालर और रख लो—नर्सों, औषधि तथा ऑपरेशन के फुटकर खर्च के लिए; फीस मुझे बाद को दे देना।"

डॉक्टर के जाने के पश्चात् मैं चिन्ता-मग्न हो गया। मैंने हाल ही में लगभग ७०० डालर निकालने का वचन दिया था। मेरी समझ में नहीं आया कि अन्य खर्च बहुत दूर, अस्पताल के किराए के ६० डालर तो तुरन्त देने हैं—यह रकम कहाँ से आयेगी। परन्तु क्लारा का विश्वास अटल रहा और उसे निराश करना मैं जानता नहीं था।

आजीवन मुझे यह अनुभव होता रहा कि जब मेरा दम घोंटने के लिए छः रस्सियाँ लाई गईं, तो पता लगा कि सात होनी चाहिये। और ऐसा कुछ हुआ कि सातवीं रस्सी आ न सकी और मैं बच गया। मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे ऑपरेशन के लिए खर्च करना है, चाहे इसके लिए मुझे आमरण परिश्रम करना पड़े।

अगले प्रातःकाल यूनीवर्सल के पास जाकर मैंने ८० डालर पेशगी माँगे। कोई प्रश्न नहीं, माँग तुरन्त पूरी की गई। मैं किराए की मोटर में माँ को अस्पताल पहुँचा आया और कमरे का किराया अदा कर दिया। तीन दिन बाद सफल ऑपरेशन भी हो गया। परन्तु जब मैं अपने काम पर पहुँचा, तभी मुझे अपनी परिस्थिति का पूरा अनुमान हुआ। तो भी चमत्कारों में मेरा विश्वास रहा ही। अब मेरी आँख दफ्तर के द्वार से हटती न थी। मैं इसी द्वार से किसी ऐसे सुहृद् व्यक्ति के भीतर आने की आशा में लगा, जो मुझे अकस्मात् आर्थिक कष्ट की भँवर से उबार ले, जो मेरी पहली चामत्कारिक पेनी फिर मेरे हाथ में रखे।

तीसरे पहर साढ़े चार बजे किसी थियेटर का संचालक उसी द्वार से मेरे सामने पेश हुआ।

आते ही उसने सूचित किया, "मैंने हाल ही में 'कारमेन' नामक नृत्य पर आधारित फिल्म दिखाने का ठेका ले लिया है। हम यथासंभव उसके साथ बिज़े का मौलिक संगीत चाहते हैं। परन्तु ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो संगीत का चलचित्र से साम्य कर सके।"

मेरा वाक्-चातुर्य मालूम नहीं कहाँ से उभर आया। मैंने उसे भली भाँति समझा दिया कि इस मेल का काम मैं बहुत दिनों से यूनीवर्सल के लिए कर रहा हूँ। अभ्यागत ध्यानपूर्वक सुनता रहा और रात का चलचित्र देखने के लिए उसने मुझे निमन्त्रण दिया। बोला, "आप इस काम के लिए लेंगे क्या?"

मैं उत्तर क्या देता। मेरे उलझे मस्तिष्क में नर्स, सर्जन और अस्पताल के खज़ांची जो चक्कर मार रहे थे। मैं चुप रहा।

अभ्यागत मेरी उलझन भाँप नहीं पाया। उसने शान्तिपूर्वक मेरी ओर देखकर कहा, "देश का एक प्रमुख विशेषज्ञ एक हजार डालर पर यह काम करने के लिए तैयार है। परन्तु एक महीने तक उसे फ़ुरसत नहीं और चलचित्र का प्रदर्शन तीन सप्ताह समाप्त होते ही प्रारम्भ होना है।"

एक क्षण तक मुझे अपने दोनों हाथों को मेज़ का सहारा देना पड़ा। हर्षातिरेक में मेरा सिर चक्कर खाने लगा। एक हजार डालर। मैं सोच रहा था कि सौ ही कहूँगा तो भाग जायेगा। भाग्य का चमत्कार इसको कहते हैं।

मेरा ध्यान कहीं और था, परन्तु तो भी कह ही गया, "मुझे पहले चित्र देख लेने दीजिये। दाम की बात बाद में हो जायेगी।"

उसी रात मैं उस कमरे में घड़ी, पेंसिलें और कागज लेकर बैठ गया, जहाँ से चलचित्र का संचालन होने को था। एकाग्र ध्यान से मैंने अपना काम प्रारम्भ किया। तीन घंटे में मैंने चलचित्र के सब दृश्यों की अवधि नोट कर ली। अँधेरा करके फिर चित्र देखने की जरूरत नहीं मालूम हुई।

मैंने कहा, "मेरा विश्वास है, मैं आपका काम कर सकता हूँ। चित्र-प्रदर्शन के पहले स्वर-लिपियाँ पूरी करके मैं आपको दे दूँगा।"

प्रबन्धक ने कहा, "बहुत खूब ! अब बताइये, आप लेंगे क्या ?"

मैंने कहा, 'इसके लिए कुछ नहीं कहना। इसे आप ही तय करें। क्योंकि आप देखें, यह काम इस समय मेरे लिए अत्यधिक आवश्यक है।"

मैंने अपनी मुसीबत बयान करनी शुरू की, पिछले सप्ताह मुझ पर क्या गुज़री और किस आशा तथा प्रार्थना से मैंने उस देवदूत की प्रतीक्षा की जो अब मेरे सामने था। मैंने सब सत्य ही कहा। वह बड़े आश्चर्य से मुझे देखता रहा। अन्त में मैंने यह भी कह दिया कि रकम के लिए तीन सप्ताह तक मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

कहीं उसने मुझे टोका नहीं, चुपचाप बैठा मेरी आँख की ओर देखता रहा।

एक क्षण पश्चात् उसने कहा, "ऐसी बात मैंने आजन्म कभी नहीं सुनी। विश्वास नहीं होता, परन्तु आप पर मुझे विश्वास करना है। मैं आपको ७५० डालर दे दूँगा, यदि आप तीन सप्ताह के भीतर अपना काम पूरा करने का वचन दें। प्रातःकाल उठने पर आपकी चेक बनाना मेरा पहला काम होगा।"

मुझे सदैव सर्वद्रष्टा सर्वज्ञ परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रहा। अब मेरा विश्वास प्रत्यक्ष भी हुआ। रात की पाताल गाड़ी से लौटते समय आँखें बन्द किये भगवान को उसकी अनुकम्पा के लिए धन्यवाद देता रहा।

कुछ दिनों बाद डेट्रायट से मुझे तार मिला—**कारमेन संगीत और चित्र की भारी सफलता। मिलूँगा अगले कामों के लिए तैयार हो जाओ।**

मैं आकाश की ओर देर तक देखता रहा।

• • •

इसके बाद कई वर्षों तक यह कैफियत रही कि दफ्तर से आकर वर्ष के अधिकांश दिनों बाहर जाकर चलचित्रों की जाँच करता और स्वर-लिपियाँ तैयार करता। अधिकांश लिपियाँ फ़िशर-सूची से ही ली जातीं। इसलिए फ़िशर के प्रकाशनों की बिक्री अपूर्व बढ़ी, तो मेरी सेवा से स्वामी की हित-रक्षा भी हुई। पहली बार मुझे भी रुपया पैदा करने का अनुभव होने लगा।

परन्तु एक दिन जुलाई १९१८ में कार्ल फ़िशर साहब ने मुझे बुला भेजा। बूढ़े का मिजाज बिगड़ा हुआ था, "सुना है, तुम फिल्म-कम्पनियों का काम करते हो। मुझसे वेतन लेते हो और उनसे रुपया बनाते हो। यह नहीं होने का। इधर रहो या उधर।"

बहस का मौका न था। वह चाहते थे कि उनसे जो मुझे २१ डालर प्रति सप्ताह मिलते थे उसके बदले में फिल्म-कम्पनियों से जो १२५ डालर बनाता था, उन्हें मैं त्याग दूँ। मुझे उनकी अन्तिम धमकी से दबना था या नौकरी छोड़नी थी।

मैं बाहर निकल आया। उलझन और नैराश्य अवश्य था, परन्तु उत्साह में कमी न थी। अपना जीवन-मार्ग बदलने का निर्णय करने की समस्या अकस्मात् मेरे सामने आ गई। सोचने लगा—क्या मैं इसके लिए तैयार हूँ? बँधा वेतन भी मिलता है। जाना-बूझा और प्रिय काम है, संयमित जीवन है। क्या यह सब त्यागने के लिए मैं तैयार हूँ? फिर करूँगा क्या? रवैया बदलना सम्भव न था, यदि संभव भी होता तो क्या उचित भी होगा?

यह स्थान और वहाँ के लोग मेरे जीवन के अंग हो गये थे। यहाँ मैं नौसिखिया ही आया था, यहीं कष्ट और संघर्ष के पश्चात् सफल हुआ। अब यह क्या! समस्या का कोई हल भी है?

मुझे कोई हल दिखाई नहीं दिया। बूढ़ा घड़ी का पाबन्द सेवक चाहता था, और मुझे समझ में आया कि अब मैं घड़ी का पाबन्द नहीं रह गया। यों मुझे यह भयानक निर्णय करना पड़ा कि मैं संगीत-

प्रकाशन का धंधा स्वयं प्रारम्भ करूँ। अब से मेरा काम अपना ही काम होगा।

मैंने बूढ़े को अपना निर्णय नहीं बताया। उनसे मिलकर उनके पुत्र वाल्टर फ़िशर से मिला। वह कई वर्ष से मेरा निकटस्थ अफसर ही नहीं था, बल्कि जब से मुझे नमस्कार करके उसने मुझे तहखाने की कैद से निकाला था, तभी से मेरे हृदय में उसके प्रति असीम श्रद्धा थी और मुझे उससे प्रोत्साहन मिलता रहा था। मेरी उसके प्रति हार्दिक स्नेह और कृतज्ञता की भावना थी।

वाल्टर फ़िशर ने सुहृद मुस्कान से मेरी बात सुनी। उसने मुझसे हाथ मिलाकर कहा, "यदि कभी भी कोई कठिनाई सामने आवे, तो मेरे पास अवश्य आना।"

थोड़े ही समय के पश्चात् मुझे इस वचन के याद करने की जरूरत पड़ी।

● ● ●

प्रकाशन का धन्धा शुरू करने पर मैंने एस० एम० बर्ग नामक एक व्यक्ति से साझा किया क्योंकि फिल्मों के लिए स्वर-लिपि बनाने की कला में वह मेरे प्रारम्भिक अनुगामियों में रहा था। हमारी दुकान शीघ्र ही चलने लगी और काम भली प्रकार जम गया। परन्तु कुछ समय पश्चात् मेरी समझ में आया कि बर्ग से मेरा सहयोग निभने का नहीं। हमारे पारस्परिक मतभेद बढ़ने लगे और साझा समाप्त करने में ही मतभेद का हल हमें दिखाई दिया। अन्ततः हम दोनों ने यह तय किया कि हम में से कोई अपना हिस्सा दूसरे के हाथ १०,००० डालर में बेच दे, और रकम ३० दिन के भीतर अदा कर दी जाये।

प्रातःकाल मैं वाल्टर फिशर से मिला, "आपने कहा था कि कठिनाई सामने आने पर मिलना। कठिनाई सामने है। आप से १०,००० डालर उधार माँगने हैं।"

कुर्सी की पीठ पर सहारा देकर उन्होंने छत की ओर देखते हुए निश्चयात्मक भाव से पूछा, "रकम चाहते हो किस लिए ?"

मैंने फ़िशर का काम छोड़ने के बाद का पूरा अनुभव उन्हें बताया, और वह ध्यानपूर्वक सुनते रहे। सुहृदय मुस्कान के साथ बोले, "व्यवसाय में मैं तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी हूँ। कभी किसी और ने अपने प्रतिद्वन्द्वी से आर्थिक सहायता की प्रार्थना नहीं की। तो भी, जमानत की बात कहो।"

मैंने कहा, "मेरे पास जमानत कहाँ ?" परन्तु एक घण्टे बाद, वापस होने के पहले १०,००० डालर मुझे मिल गये। मैंने ५,००० डालर पर अपने धन्धे का ४६ प्रतिशत उनके हाथ बेच दिया था, और मेरे ही विश्वास पर उन्होंने मुझे बाकी ५,००० डालर उधार दे दिये थे।

फिशर साहब ने जो कुछ मेरे लिए किया, उस पर अफसोस करने का मौका मैंने उन्हें नहीं दिया। वर्षों तक तो जो लाभ मैं उन्हें बाँटता रहा उसका जोड़ उनकी लागत का कम-से-कम पन्द्रह गुना पहुँचा और जब १९४६ में उनकी मृत्यु के पश्चात् मैंने उनके शेयर वापस लिये तो एक बड़ी अतिरिक्त रकम मैंने उनके उत्तराधिकारियों को अदा की।

● ● ●

आज मेरी प्रकाशन-संस्था का संगीत-क्षेत्र में एक स्वतन्त्र महत्व है। हम दोनों—क्लारा और मैं—धन से सम्पन्न हैं। हमारे बच्चों को अच्छी शिक्षा मिली है। उनके वैवाहिक जीवन सुखी हैं, उनके अपने बच्चे हैं, अपने-अपने घर भी हैं।

परन्तु भौतिक सफलता, शारीरिक सुख और बाहरी तड़क-भड़क का कोई महत्व नहीं यदि साथ ही हार्दिक और मानसिक आनन्द न हों और आध्यात्मिक शान्ति का अभाव हो। क्लारा से विवाहित होकर मुझे हार्दिक आनन्द मिला है और संयमित जीवन तथा स्वर्गीय माता-पिता के पावन स्मरण में मुझे आध्यात्मिक शान्ति मिलती है।

ब्रुकलिन के वाशिंगटन कब्रिस्तान मे एक दूसरे को स्पर्श करते दो विशाल प्रस्तर-स्मारक है। एक पर अंकित है—तुम अभी तक वर्नार्ड विक्लर की धर्मपत्नी हो। और दूसरे के शब्द इस प्रकार है—मै अभी तक फैनी विक्लर का पति हूँ।

कारपेथिया के पर्वतीय प्रदेश से यहा और आज तक का मार्ग (देश और काल के नाते) बहुत लम्बा रहा। परन्तु इस मार्ग मे मैने जो कुछ कष्ट पाये या जो भी मेरी परीक्षाएँ हुई, तो उनका पुरस्कार भी मुझे मिला। मेरी जीवन-यात्रा कठिन रही, तो आनन्दमय भी रही। आज पुण्य-दिवस के प्रातःकाल जब अपने अतीत का स्मरण करता हूँ तो मुझे विश्वास होता है कि जो अतीत मेरा रहा, वह प्रत्येक अमरीकी नागरिक के लिए सम्भव था, है और रहेगा। संसार का कोई अन्य देश कठिन परिश्रम का इतना भारी पुरस्कार नही देता।

चिकित्सा का चमत्कार
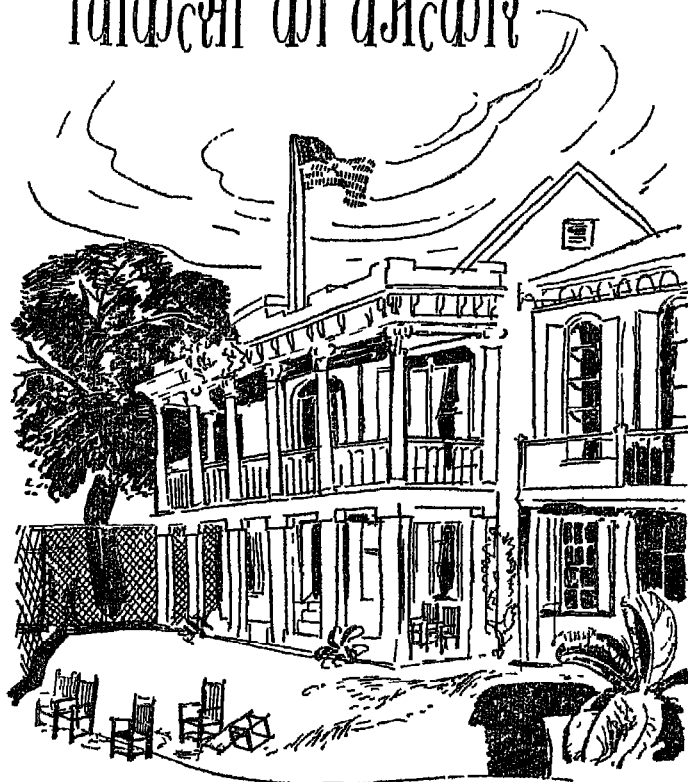
(बेट्टी मार्टिन की पुस्तक 'मिरैकिल ऐट कारविल' का सार)

लेखिका को १६ वर्ष की अवस्था में जब मालूम हुआ कि उन्हें कुष्ठ-रोग है तो उन पर वज्र-सा गिर पड़ा। पर सराहनीय साहस के साथ वह निराशा और उन बर्बरतापूर्ण पूर्वाग्रहों के विरुद्ध लड़ीं जो चारों ओर से उन्हें घेरे हुए थे। इस पुस्तक के बारे में न्यूयार्क 'टाइम्स' ने लिखा था : "यह मनुष्य की आशाओं, अस्थायी विफलताओं, नैराश्य और उसकी विजय की मर्मस्पर्शी तथा रोमांचकारी कहानी है।"

चिकित्सा का चमत्कार

अमरीका की विशाल मिसिसिपी नदी के मुहाने के निकट न्यू ऑर्लियंस नामक नगर है। यहीं मेरे १६ वर्ष के होने पर बड़े दिन के समारोह से मेरी आत्मकथा प्रारम्भ होती है। इस बड़े दिन का उत्सव मुझे सबसे अधिक उल्लासपूर्ण लगा, क्योंकि मुझे पहली बार एक सुहृद युवक के प्रणय का अपूर्व आनन्द प्राप्त हुआ। युवक का नाम था राबर्ट। वह उस समय मेडिकल कॉलेज का विद्यार्थी था। उससे मेरी सगाई हो चुकी थी। इसलिए वह हमारे पारिवारिक भोज में सम्मिलित था और सगाई के पश्चात् यह प्रथम सहभोज था, अतएव रौनक भी विशेष मात्रा में थी। भोजन के पश्चात् हम लोगों ने बड़े दिन पर गाये जानेवाले प्राचीन गीत गाये। फिर अपने-अपने धन्धों की बातें करने या ताश खेलने के लिए पुरुष एक ओर हुए और बच्चे पटाखे छुटाने घर के बाहर निकल गये। हम दोनों—राबर्ट और मैं—मर्डी ग्रास में होने-वाले अपने विवाह की बातें करने लगे।

एक ही घटना छाया जैसी मेरे ऊपर से निकल गई। पियरे चाचा डॉक्टर थे। वह आये, परन्तु माँ से टूटे-फूटे शब्दों में क्षमा-याचना की, मेरा विशेष रूप से चुम्बन किया और तुरन्त ही चले गये। उसी संध्या को उन्होंने पिता को फोन किया कि आकर हमसे मिलो। पिता को हम सब एक स्वर से मना भी करते रहे, परन्तु वह तुरन्त चल दिये और रात को बहुत देर में लौटे। कई वर्षों बाद माँ ने मुझे बताया कि जब

वह घर लौटे, तब मेरी माँ से लिपटकर रोने के अतिरिक्त वह कुछ कह न सके। कहती थीं कि उनकी दो दिन और दो रातें बराबर रोते ही बीतीं।

मैं एक सप्ताह पहले थोड़ी देर के लिए एक डॉक्टर से मिलने गई थी। कई महीनों से जाँघ के पिछले भाग में कुछ हलके गुलाबी धब्बों से मैं परेशान थी। बहुत सफाई-पसन्द रही थी और शरीर पर किसी प्रकार के धब्बे मुझे कभी देखने में नहीं आये थे। इसलिए त्वचा के विशेषज्ञ डॉक्टर फैरे से मैं मिली। उन्होंने मुझे एक रक्त-निरीक्षक के पास भेजा। मैंने अपने धब्बे उन्हें दिखाये। उन्होंने वहाँ से रक्त की एक-दो बूँदें अपने शीशे के प्लेट पर लीं। फिर कान के निचले भाग में हलका-सा नश्तर किया। मुझे कुछ आश्चर्य हुआ।

उन्होंने पूछा, "इधर इसमें खुजली तो नहीं मालूम हुई?"

मुझे याद आया कि कभी-कभी अनजाने ही मैंने कान इतना खुजला डाला था कि उसमें खून छलछला आया।

नश्तर के पश्चात् जब डाक्टर ने भीतरी भाग खुरचना प्रारम्भ किया, तो बड़ी चतुराई से बोले, "या तो तुम बहुत सहनशील हो या खुरचने से तुम्हें कोई कष्ट नहीं हो रहा।" जब मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मुझे कोई कष्ट नहीं मालूम होता तो अपने अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे मेरे रक्त से प्राप्त जिन कीटाणुओं को वह देख चुके थे, उनके विषय में उनका मत पक्का हो गया। परन्तु डाक्टर साहब की मुख-मुद्रा में कोई फर्क नहीं आया। विदा होते समय उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और साधारण ढंग से कह दिया कि डाक्टर फैरे को रिपोर्ट भेज दूँगा। बड़े दिन पर चाचा पियरे के विचार-व्यवहार का सम्बन्ध मैं इन घटनाओं से नहीं जोड़ सकी।

कई वर्षों पश्चात् मुझे पता लगा कि डाक्टर फैरे ने पियरे चाचा को कितना कठिन और दुखद निर्णय सुनाया था। उनका आदेश हुआ

कि लड़की को तुरन्त न्यू आर्लियंस के बाहर ले जाओ, नहीं तो रोग की छूत सारे नगर में फैल जायेगी।

मुझे अपने दुर्भाग्य का पता न था। राबर्ट ही अन्ततः मुझे उसकी सूचना देने के लिए प्रस्तुत हुआ। वह मुझे आर्लियंस क्लब के एक नृत्य में ले गया, जिसमें केवल उस क्लब के सदस्य ही भाग ले सकते थे। मुझे याद है कि नृत्य के लिए मैंने अपनी आदत के अनुसार किनारी टँका छोटा ही फ्राक पहना और राबर्ट ने गुलाबी फूलों से मुझे सजाकर कहा कि तुम बहुत सुन्दर लगती हो। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देखने में मैं बहुत ही स्वस्थ लगती थी। नृत्य के पश्चात् बाजार जाकर जलपान करना हम लोगों की आदत थी। सो न करके मोटर पर सीधे हम घर पहुँचे।

घर में शान्ति थी। माता-पिता सोने चले गये थे। बैठक में हलकी रोशनी हो रही थी। राबर्ट ने अपनी बाँहें मेरे गले में डाल दीं। मैं समझ गई कि कुछ कहने को है। वह बड़े धैर्य से बोला, "प्रिये, तुम्हें कुष्ठ हो गया है।" बात करते-करते उसका मुख बेतरह उतर गया था।

उसे मुझे सँभालना पड़ा। पूर्ण रूप से मैं बेहोश नहीं हुई। क्या कहा—कुष्ठ? ऐसा लगा मानो धब्बे मेरे मस्तिष्क में फैल गये हों। नहीं, नहीं, कुष्ठ रोग भारत में होता हो या चीन में, परन्तु इस देश में और मुझे—नहीं।

इस उलझन में राबर्ट बराबर मुझे भयभीत दृष्टि से निहारता रहा। वह डाक्टरी का विद्यार्थी था ही, परन्तु जब मुझे उसने साँस लेते देखा तो डाक्टरी लहजा छोड़कर वह शीघ्रता से कह गया, "प्रिये, तुम्हें बाहर जाना है, थोड़े ही दिनों में तुम चंगी हो जाओगी; तब आ जाना।" उसने मुझे कसकर छाती से लगा लिया और बोला, "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूँगा।"

राबर्ट के जाने के पश्चात् हलके पैरों अंधेरा घर पार करके मैं अपने कमरे में पहुँची और पलंग पर लेट गई। चैतन्यता प्राप्त हुई

और परिस्थिति का ज्ञान हुआ, तो शरीर की नस-नस में ऐंठन होने लगी। समझ में कुछ आता न था। भय से पराभूत मैं एक काँपती गठरी-सी हो गई। मुझे कोढ़ की कोई जानकारी न थी। किसी का पता भी न था जो मुझे उसके विषय में बता सके। अपनी बाइबिल की याद आई जहाँ फटे कपड़े पहने, घण्टी बजाकर आस-पास के लोगों को सचेत करते, रोगग्रस्त यात्रियों का विवरण है। वे कहते कि हम अस्वच्छ हैं—हमसे बचो। तो क्या मैं अस्वच्छ हूँ। मैं तो नित्य गरम जल में देर तक स्नान करती थी और घण्टों अपने नाखूनों तथा बालों को सँवारा करती थी। स्वजन तो मुझे अपनी सजी गुड़िया जैसा चाहते रहे।

रात-भर नींद नहीं आई। रोती और काँपती रही। रह-रहकर मैं अपने से यही पुराने प्रश्न पूछती रहती। यह रोग कैसे हुआ और मुझे ही क्यों हुआ? मैंने अपने १६ वर्ष के सुखमय जीवन में कौन-सा ऐसा पाप किया जो मैं अन्धकारमय अतीत के इस नरक में ठेल दी गई? अपने जीवन-मार्ग की याद करती, और मुझे कोई स्थान या समय याद न आता जब यह दुष्ट छूत आगे बढ़कर मेरे गले लगी।

● ● ●

न्यू आर्लियंस से कई मील दूर मिसिसिपी नदी के किनारे एक निर्जन स्थान पर बैटन रूज के नीचे कुष्ठ-रोगियों के लिए कारविल का राष्ट्रीय चिकित्सालय है। १५ जनवरी, १९२८ को इस चिकित्सालय में अलग रहकर चिकित्सा के लिए मेरी यात्रा प्रारम्भ हुई। धूप खिली हुई थी, माँ मुझे ले जा रही थीं और राबर्ट हम दोनों के साथ था। मैंने कभी कारविल का नाम भी नहीं सुना था, नाम ही से मैं डरी हुई थी। परन्तु अपने सगे-सम्बन्धियों से अलग होने के लिए मैं आतुर थी, क्योंकि मुझे अपने रोग से उनकी रक्षा करनी थी।

हमारी यात्रा गुप्त रखी गई। मेरे रोग से समाज की दृष्टि में हमारा पूरा परिवार पतित हो जाता। अतएव परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त परिवार के अन्य अभिन्न मित्र राबर्ट को ही मेरा पता रहा। अन्य हितैषियों को यही बताया गया कि यक्ष्मा के सन्देह के कारण ही मैं बाहर स्वास्थ्य-सुधार के लिए भेज दी गई हूँ। मेरी एक चाची संयुक्त राज्य अमरीका के अन्य प्रदेश में रहती थी। मेरा पता सबको उन्हीं की मारफत बताया गया। मेरे नाम की चिट्ठियाँ उन्हें पहुँचतीं और वह उन्हें मुझे भेज देतीं।

यों उस कपट-जाल का सिलसिला चला जिसके भीतर मुझे अपने जीवन के बहुत से दुखद वर्ष बिताने पड़े।

कारविल की यात्रा काफी लम्बी थी। सड़क पर खाँचों की कमी न थी। मोटर उछलती चलती तो राबर्ट अपनी बाँह का सहारा मुझे देता चलता, जिससे मुझे असीम सुख का अनुभव होता। समुद्रतट पर मिसिसिपी का जल-त्रिकोण किसी समय समृद्ध रहा था। नदी के किनारे जमींदारों के विशाल भवन बने थे। इनमें अधिकांश उजड़ गये थे। नदी तट के साथ-साथ घूमती सड़क से उजड़े भवनों के दृश्य मुझे बहुत भले लगते थे। परन्तु इस समय हृदय में अन्धकार के कारण मैंने कुछ देखा नहीं। सड़क भयानक मालूम होती और भावी दण्ड की कल्पना से क्षीण होती विमूढ़ दृष्टि से मैं अपने भावी कारागार की प्रतीक्षा में आगे की ओर ताकती ही रही।

नदी के किनारे-किनारे लगभग ८० मील की यात्रा के पश्चात् एक सुन्दर मोड़ पार करने पर हमें कुष्ठ रोग का राष्ट्रीय चिकित्सालय दिखाई पड़ा। शानदार बाँझ के पेड़ों से घिरे पुराने ढंग के विशाल भवन में चिकित्सालय है। इस चिकित्सालय के चारों ओर लकड़ी की इधर-उधर बिखरी कुटियाँ और दो गिर्जाघर हैं, और ये सब इमारतें पग-डंडियों द्वारा चिकित्सालय से सम्बन्धित हैं। एक चहारदीवारी इन्हें घेरे है, और दीवार के ऊपर भी काँटेदार तार का जाल है, जिससे रोगी

आसानी से भाग न निकलें। मिसिसिपी के एक घुमाव में बसी इस छोटी-सी दुनिया का नाम कारविल है।

चिकित्सालय के शासन-विभाग में नर्सों की अध्यक्षा सिस्टर कैथरिन ने हमारा स्वागत किया। इन्होंने मुझे छाती से लगाया और बड़ी कोमलता से चूमा, फिर उन्होंने मुझे गिर्जाघर चलने को कहा, जहाँ मैंने उन्हें प्रार्थना करते सुना कि मैं शीघ्र चंगी हो जाऊँ। उनके साथ हम भी चुपचाप प्रार्थना करते रहे। मुझे जो कुटी दी गई, उसकी एक कोठरी में मैंने असबाब रख दिया और माँ तथा राबर्ट को विदाई का नमस्कार किया। मैंने वचन दिया कि मैं अपना मिज़ाज ठीक रखूँगी, आदेशों का पालन करूँगी, और चंगी होते ही घर वापस आ जाऊँगी। हम 'थोड़े ही दिनों के लिए' एक-दूसरे से अलग हुए।

दोनों को मोटर पर विदा होते देखने के लिए मैं पगडंडी पर आगे बढ़कर अकेली खड़ी हो गई। इसके बाद आँखों में आँसू भरे अपनी कुटी को लौट आई। प्रत्येक कुटी में १२ रोगियों के रहने की व्यवस्था थी, और मैंने देखा कि कुटी के आगे सदर दरवाजे पर पहले मेरी कुछ ही संगिनियाँ इकट्ठी हुई थीं। सो अब बाकी भी वहाँ पहुँच गई थीं। मैंने संगिनियों की ओर देखा, जिनके साथ मुझे कारविल में जीवन व्यतीत करना था और पहली बार मुझे बिगड़े चेहरों की झलक मिली। छोटी ही सी बात थी, परन्तु मेरे होश उड़ गये, और मैं बैठक से दौड़ती हुई अपने कमरे में जा बैठी।

एक औरत मेरे पीछे-पीछे थी, और मेरे साथ ही घर के भीतर चली आई। मैं उसकी ओर ध्यानपूर्वक न देख सकी, परन्तु उसकी दशा मुझसे छिपी न थी। रोग से उसकी दृष्टि और बोली में फर्क आ गया था और उसने काँपते स्वर में कहा, "मैं जब यहाँ आई थी तो तुम्हारी जैसी थी और अब मेरी हालत देखो।"

उस रात दुःस्वप्न से घिरी मेरी दृष्टि से इस स्त्री का बिगड़ा मुख हटता नहीं दिखता था और उसका अन्तिम वाक्य बराबर मेरे कान में

गूँजता रहा, 'अब मेरी हालत देखो !' जब से मुझे अपने रोग का पता लगा था तभी से एक रात भी मुझे नींद नहीं आई थी। भावना की उलझनों ने जब मुझे भली-भाँति थका दिया, तब मुझे एकाएक गहरी नींद आ गई। कदाचित् मेरी सहनशक्ति तब तक समाप्त हो चुकी थी।

● ● ●

प्रातःकाल साढ़े छः बजे यह दृढ़ निश्चय लेकर उठी कि मैं चंगी हो जाऊँगी और कारविल की घृणात्मक कठिनाइयाँ मुझे थोड़े ही समय तक सहनी हैं—किसी ने कह दिया था कि अधिक-से-अधिक छः महीने। मैंने निश्चय कर लिया कि नियमों की पाबन्दी करूँगी, चिकित्सा मन लगाकर कराऊँगी, और प्रार्थना का सर्वोपरि महत्त्व मानूँगी।

नित्यकर्म का सब सामान लेकर मैं स्नानघर की ओर गई। दिन के प्रकाश में कुटी मुझे गन्दी और बदबूदार जान पड़ी। सफाई का काम एक नौकरानी के सुपुर्द था, परन्तु उसका रोग बहुत बढ़ गया था, जिस कारण उसका काम पूरा होने से रह जाता था। मैं सोचने लगी, कब तक इतनी गन्दगी मैं सहन कर सकूँगी।

सात बजे नाश्ते की घण्टी बजी और हम भोजनालय की ओर चले। पहली बार रोगी मुझे बड़ी संख्या में दिखाई पड़े। किसी के चेहरे बिगड़ गये थे, किसी के कान विकृत हो गये थे, कुछ की दृष्टि लोप हो रही थी, कुछ की उँगलियाँ गल चुकी थीं और बहुतों के हाथ टेढ़े पड़ गये थे—और ये सब रोग के प्रत्यक्ष और नियमित लक्षण थे। जिन रोगियों की हालत बहुत बुरी थी, जो अन्धे थे या पलंग से उठने योग्य न थे, उन्हें भोजन उनके स्थान ही पर पहुँचाया जाता था। मुझे कुछ सन्तोष हुआ कि जिस भयावह दशा की मैंने कल्पना की थी, उतनी मुझे दिखाई नहीं दी। परन्तु इतना तो कष्टमय आभास मुझे हुआ ही कि सब लोग मुझे ही देख रहे हैं। अतएव वहाँ भोजन करना मैं सहन

न कर सकी। अपना भोजन लेकर मैं कमरे में चली आई जहाँ अकेले भोजन करना मेरे लिए सम्भव था।

एक घण्टे बाद अपने रोग का ब्यौरा देने के लिए मुझे दफ्तर जाना पड़ा। सिस्टर लौरा ब्यौरा लिखने के काम पर नियुक्त थी। देखकर ही मैं उसके प्रति आकृष्ट हुई। वह अभी नवयौवना ही थी और उसकी सुन्दर नीली आँखें वैसी ही आत्मा की परिचायक थीं। उसने मेरा नाम पूछा तो अपरिचित 'बेट्टी पार्कर' मेरे मुख से अटपटा निकला। परिवार ने निर्णय किया था कि मैं इसी नाम से कारविल में रहूँ। उसने कोई सन्देह प्रकट नहीं किया, यद्यपि समझ तो वह गई ही। न्यू आर्लियन्स के एक डाक्टर के पते को अपना पता बताया। उन्होंने मुझे अनुमति दे दी थी, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि मेरे दुर्भाग्य से मेरा परिवार किसी प्रकार कलंकित हो। आरम्भ हा से मेरा निश्चय था कि किसी को मेरा पता न लगे।

सो मेरे विषय में जो बातें मेरे ब्यौरे में गईं वे असत्य थीं। यही कैफ़ियत अन्य रोगियों की भी थी।

इसके बाद मुझे प्रबन्धक से मिलना पड़ा। यह थे डॉक्टर फ्रेडरिक ऐन्ड्र जो हैंसन जो आगे चलकर मेरे परम हितैषी हुए। उस समय तो मैंने यही जाना कि डॉक्टर 'जो' निजी तौर पर मेरी कुशल कामना करते हैं, जिससे उन पर मुझे पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने देखा कि मैं बहुत भयभीत हूँ तो उन्होंने सहानुभूतिपूर्वक कहा, "कोई बात परेशानी की नहीं।" ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के पश्चात् उन्होंने सप्ताह में दो बार मेरे लिए चालमूगरा तेल की सुई लिख दी, क्योंकि उस समय चिकित्सा-शास्त्र में रोग का कोई और इलाज न था। भोजन के साथ इस तेल की कुछ बूँदें भी मेरे लिए लिखी गईं।

जब ११ बजे भोजन की घण्टी बजी तो प्रतीक्षा में खड़ी कई महिलाओं से मैं बात करने लग गई। एक ने टिप्पणी की, "भोजन कमरे में ले जाकर खाना मुझे कुछ बेढंगा-सा मालूम होता है।" मुझसे

कोई उत्तर नहीं बना तो यह कहकर टाल दिया कि डॉक्टर ने मुझे कह दिया है कि मुझे यहाँ छः महीने से अधिक नहीं रहना।

उनकी आँखें एक साथ चमकीं जब एक ने कहा, "यह तो डॉक्टर सदैव ही कहते हैं।"

मैंने पूछा, "यहाँ आप कब से हैं?" उनका उत्तर पाने के पहले ही अपनी अन्तर्दृष्टि से मैं समझ गई कि यह महिला वहाँ कम-से-कम बीस वर्ष से अर्थात् मेरे जन्म के पहले से हैं। उनके बाल सफ़ेद हो गये थे और उनके मुँह पर मुहाँसे जैसे दाग थे।

परन्तु अपने कमरे में जाकर मैं अपने को समझाने लगी कि इतना समय मुझे नहीं लगने का क्योंकि मैं तो भगवान् की शरण में हूँ। मैं मन लगाकर चिकित्सा कराऊँगी और प्रत्येक आज्ञा का हृदय से पालन करूँगी। विशेष रूप से शांत रहूँगी, भोजन में संयम बरतूँगी और उस शरीर के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाऊँगी जिसने मुझे धोखा दिया है। राबर्ट को चिट्ठी लिखने बैठी। यह उसके नाम मेरा पहला पत्र था। मैंने अपना हृदय खोलकर उसके सामने रख दिया। लिखा, मेरा शरीर ही कारविल में है, हृदय नहीं।

● ● ●

कारविल में मेरा प्रथम मास कष्टदायक ही रहा और वहाँ की जीवन-चर्या में मैं भली प्रकार खप नहीं सकी। मैं प्रत्येक आदेश का अक्षरशः पालन करती। मैंने कुष्ठ के विषय में बहुत कुछ पढ़ा। इस रोग का आधुनिक और वैज्ञानिक नाम है—"हैंसन" अन्वेषित रोग। मुझे यह पढ़कर आश्चर्य हुआ कि इस रोग की छूत बहुत जल्दी नहीं फैल पाती। १४५ से अधिक व्यक्तियों के रोग-कीटाणुओं की सुइयाँ लगीं, परन्तु किसी को यह रोग नहीं हुआ। कारविल के किसी चिकित्सक या परिचारिका को कभी भी इस रोग की छूत नहीं लग पाई। वयस्कों की अपेक्षा बच्चों को छूत अधिक शीघ्र लग जाती है। विशेषज्ञों का

विश्वास है कि बचपन में किसी रोगी के सम्पर्क में बहुत अधिक रहने पर रोग की छूत लग जाती है।

जब प्रति मास रक्त की जाँच होने पर लगातार बारह परीक्षाओं में रोग के कीटाणु न मिलें तो रोगी चंगे मान लिये जाते हैं।

डॉक्टर जो मुझसे बोले, "तुम भाग्यशालिनी हो, तुम्हारा रोग प्रारम्भिक अवस्था में ही है। परीक्षा का नकारात्मक फल कदाचित् शीघ्र ही मिलने लगे। परीक्षाएँ आम तौर से एक वर्ष तक चिकित्सा करने के पश्चात् प्रारम्भ होती हैं। तुम्हारी परीक्षा छः महीने की चिकित्सा के पश्चात् ही प्रारम्भ कर दी जायेगी।"

डॉक्टर जो प्रसन्न दिखाई दिये। अपनी समझ से उन्होंने मुझे बहुत प्रिय खबर सुनाई; परन्तु यदि उनकी आशानुसार ही चिकित्सा का प्रभाव हो, तो भी कारविल में डेढ वर्ष लगेगा ही। सगाई के पश्चात् इतनी लम्बी प्रतीक्षा बहुत हुई।

मैं यह सुनकर प्रोत्साहित हुई कि श्रीमती ब्लेक नामक एक रोगिणी, जिनसे मैं मिल चुकी थी, चंगी होकर कारविल-निवास से मुक्त की जा रही हैं। वह सुशील और कुशाग्र बुद्धि थीं और कारविल के रोगी बच्चों को पढ़ाती थीं। सिस्टर मर्था के जिम्मे रोगियों को धंधे से लगाने का काम था। मैं चकित हुई जब उन्होंने मुझे बच्चों को पढ़ाने का काम लेने के लिए कहा। कुछ हिचकिचाहट के पश्चात् मैंने स्वीकार कर लिया। अकस्मात् मैं मास्टरनी हो गई और रोज प्रातःकाल दो घंटे पढ़ाने के मुझे २५ डालर प्रतिमास मिलने लगे।

क्रमशः दैनिक चर्या की अभ्यस्त हो गई। राबर्ट के पत्र मैं बार-बार पढ़ती और घर को पत्र लिखती तो वे भी आशापूर्ण होते। शिक्षण-कार्य मुझे रोचक लगा, दिन में यथेष्ट लेटती और पढ़ती, या अपने से बड़ी एक रोगिणी से बातें करने चली जाती। यह न्यू आर्लियंस की थीं और मेरी माता की सहपाठिना रह चुकी थीं; इस कारण मेरी उनसे घनिष्ठता बढ़ गई थी। न्यू आर्लियन्स में उनके मित्रों का विश्वास

था कि वह योरप की सैर कर रही हैं, यद्यपि थीं वह मेरे साथ। अधिकांश रोगी पुराने चलचित्र देखने जाते जो सप्ताह में तीन बार गंदे और झींगुरों से भरे मनोरंजन-भवन में दिखाये जाते थे। मैं इन्हें देखने नहीं जाती थी। अक्सर नाच होते तो उनमें भी मैं न जाती, यद्यपि नाचघर के पास होकर जब गुजरती और बाजे सुनती तो मेरे पैर नृत्य के लिए मचलने लगते। परन्तु फिर सोचती कि कारविल में कौन है जिसके साथ मैं नाचूँ।

इस समय तक मुझे पता लग गया था कि जो ऊँची चहारदीवारी संसार से कारविल को अलग किये हुए थी, वह अपने भीतर परनिन्दा और प्रणय के पचड़े भी घेरे हुए थी। कारविल के भीतर प्रणय चलता रहता, प्रेमियों की जोड़ियाँ कभी-कभी रात के समय मुझे सामने से निकलते दिखाई देतीं और मैं लड़कियों के कौमार्य और लोकाचार की रक्षा के अभाव के विरुद्ध होंठ दबाकर अपनी भावना व्यक्त करती। थोड़े समय पश्चात् मेरी समझ परिष्कृत हुई तो दोष देना कम हुआ।

● ● ●

कारविल के अप्राकृतिक वातावरण में समय बीतता गया। बसन्त आया, बड़े-बड़े पेड़ों में कोंपलें चमकने लगीं, और वायु चमेली तथा मेगनोलिया से सुगन्धित हुई, टेनिस और विभिन्न खेलों जैसे नये-नये मनोरंजनों में रोगी नर-नारी व्यस्त रहने लगे; परन्तु मैंने इनमें कोई भाग नहीं लिया।

जून का अन्तिम सप्ताह आया, उमस के कारण पसीना बहने लगा, और उत्साह भंग होने लगा, अस्पताल वहाँ है जहाँ पहले एक दलदल था और मिसिसिपी नदी उसे तीन ओर से घेरे हुए है। इस कारण वहाँ नमी बहुत रहती है। मुझे लम्बे और गरम दिन बहुत बुरे लगते थे। कोई भी भोजन सामने आता तो अरुचि के कारण मुझसे खाते न बनता। और चालमूगरा तेल से तो इतनी घृणा हो

गई कि वह कठिनाई से मेरे गले से उतरता। मैं रात-दिन अपने पारिवारिक जीवन की याद करती और अकेले में बहुत कुछ रोती भी।

बड़े दिन पर मुझे एक सप्ताह की छुट्टी दी गई। कारविल के रोगियों को किसी विशेष कारणवश ही (जैसे घर में बीमारी या मृत्यु) छुट्टी दी जाती, रोगी के साथ अस्पताल का चौकीदार रहता और उसका व्यय रोगी को देना पड़ता। मैं कारविल के उन थोड़े से रोगियों में थी, जिनके साथ छुट्टी की रियायत की गई।

राबर्ट मुझे लेने आया, क्योंकि किसी ऐसी गाड़ी से सफर करना मेरे लिए वर्जित था जिसमें सभी मुसाफिर बैठ सकते हों। वह हाल ही में डॉक्टर हो गया था और मेरे रोग से वह भयभीत न था। हम दोनों मोटर पर बैठे चिड़ियों की भाँति चहचहाते और गाते न्यू आर्लियंस पहुँचे। इस लम्बी यात्रा में हम दोनों को नैसर्गिक आनन्द प्राप्त हुआ। यही मुझे अब याद आता है। जब अन्ततः हमारी मोटर वहाँ पहुँची तो हमें दक्षिणी वाटिका से घिरा अपना पुराना घर संसार में सर्वोत्तम दिखाई दिया। छोटे बच्चों को मेरे रोग की बात नहीं बताई गई थी, तो मुझसे चिपटकर वे मुझे इतने दिन तक बाहर रहने का उलाहना देने लगे। उनका दुलार करने के लिए बहुत आतुर होकर भी उनसे अलग रहने पर मैं विवश हुई। मैंने उनसे बात बनाई, "तुम्हारी बहन के जुकाम हुआ है! प्यारे बच्चो, मुझे अभी चूमो नहीं।" इसके बाद जो थोड़ी देर तक शांति रही, तो मुझे जान पड़ा कि घर पर मुझे अपने पिछले जीवन का सुख वापस मिलना अब असम्भव है।

यद्यपि रोग बहुत संक्रामक नहीं होता, परन्तु सावधानी की मैंने हद कर दी। मैं जिस कमरे में सोती थी उसमें मेरी बहन 'सू' भी सोती थी, मैंने उसमें सोने से इन्कार कर दिया और एक छोटे-से कमरे में अकेली सोने लगी। जो तश्तरी मैं छूती उसे पानी में उबालकर शुद्ध करती। स्नानघर जब भी जाती तो उसके बाद उसे औषधि से शुद्ध करती। इतना सब करने पर भी मुझे शान्ति न होती।

इस प्रकार मेरी तपस्या का एक सप्ताह बीता। माता-पिता ने सगे-सम्बन्धियों से आनन्दमय पुनर्मिलन की योजना बनाई थी, परन्तु मुझे झूठ बोलना न आता था और मुझसे टेक्साज राज्य की सैर के प्रश्न पूछे जाने तो मैं क्या उत्तर देती ? इस प्रकार जब उनकी योजनाएँ मैंने खण्डित होती देखीं, तो उनके साथ मेरा भी आनन्द समाप्त हुआ और मैं भाग निकलने की प्रतीक्षा करने लगी। जब मैं कारविल पहुँची तो संस्था के परिचित भवन मुझे जितने बुरे पहली बार लगे थे उतने अब नहीं लगे।

● ● ●

अगले बड़े दिन तक घृणित चालमूगरा का प्रभाव मुझ पर प्रत्यक्ष होने लगा। मासिक परीक्षाएँ तब तक रोग का अस्तित्व बताती रहीं, परन्तु गुलाबी धब्बे बिलकुल गायब हो गये थे, और मुझे पूर्ण आशा हुई कि मैं रोगमुक्त हो जाऊँगी।

परन्तु थोड़े ही सप्ताह पश्चात् मेरे वैरी कीटाणु फिर अपनी विजय प्रत्यक्ष करने लगे, मेरी टाँगें खुजलाने लगीं और कुछ ही घण्टों के भीतर त्वचा के नीचे गरम फफोले जैसे प्रत्यक्ष होने लगे।

डाक्टर जी ने मुझे विश्वास दिलाया, "घबराओ नहीं, ये सब गायब हो जायेंगे।" परन्तु वह मुझे विफल जैसे दिखाई दिये। अपना उत्साह और रोग से लड़ते रहने का दृढ़ निश्चय बनाये रखने के अतिरिक्त मेरे सामने कोई चारा न था।

कारविल में मेरे तीसरे वर्ष का वसन्त समाप्त होने को था, जब रोगियों को धन्धे से लगानेवाली सिस्टर मर्था ने मुझे फिर बुलाया। उसने मुझे बताया कि अनुसन्धान का काम बढ़ाने की योजना है, जिस कारण अनुसन्धानालय में मेरे लिए एक नया काम आ गया है। उसने आशा प्रकट की कि काम मेरे योग्य होगा, और मैं उसे पसन्द करूँगी। जितना समय मैं नित्य पढ़ाई के काम को देती थी, उसका दूना समय

मुझे देना पड़ेगा, परन्तु वेतन में पाँच डालर ही बढ़ेंगे अर्थात् वेतन २५ डालर से ३० डालर प्रतिमास हो जायेगा। परन्तु यह सोचकर कि मुझे अपने वैरी के विषय में सीखने और समझदारी से स्वयं उसके विरुद्ध लड़ने का मौका मिलेगा, मैंने यह नया काम करना स्वीकार कर लिया।

अनुसन्धान में औषधियों की विशेषज्ञ सिस्टर हिलारी ने मुझे काम सिखाना प्रारम्भ किया। उनकी वैज्ञानिक सूझ बहुत अच्छी थी और मैं उनके आदेश मन लगाकर सुनने लगी। सबसे पहले उन्होंने वह सब बताया जिसकी तब तक हैंसन रोग के विषय में जानकारी हो चुकी थी।

योरप के नार्वे देश में गेरहार्ड हेनरिक आर्मर हैंसन नामक वैज्ञानिक ने १८७३ में पहली बार उस कीटाणु का पता लगाया जो कुष्ठ नामक रोग का कारण है। अणुवीक्षण यन्त्र से देखने पर यह गुलाबी रंग का डंडेनुमा दिखाई देता है, और यक्ष्मा के कीटाणु से इतना मिलता-जुलता है कि एक का दूसरे से भेद बताना बहुत कठिन हो जाता है। संसार के विभिन्न भागों में इस कीटाणु को किसी अप्राकृतिक माध्यम में बढ़ाने के सैकड़ों प्रयोग हुए, परन्तु अभी तक सभी विफल हुए हैं। पशुओं पर इस कीटाणु के टीके लगाये गये तो वे भी सब विफल हुए।

इस रोग के विषय में एक विशेषज्ञ का कहना है कि यह छिपे-छिपे बढ़ता है, उमड़ता है और अपनी अवधि पूरी करके समाप्त हो जाता है। रोगी आप ही आप अच्छा हो जाता है। यदि रोगी की अन्य व्याधियों से रक्षा की जा सके तो उसका चंगा हो जाना बहुत कुछ सम्भव है। कारविल में जो रोगी मरते हैं, वे एक प्रतिशत से कम संख्या में कुष्ठ-रोग से मरते हैं। शारीरिक शक्ति के घटने पर कोई न कोई नई व्याधि उठ खड़ी होती है, गुर्दे की हो, हृदय की हो या फेफड़े की या कोई और ही उपद्रव हो जाये।

आतशक रोग की पहचान के लिए एक रक्त-परीक्षा होती है, जो आविष्कारक वासरमैन के नाम से प्रसिद्ध है। कुष्ठ-रोग के विषय में मुसीबत की बात यह है कि रक्त-परीक्षा होने पर चिकित्सक को आतशक का धोखा हो जाता है और आतशक की चिकित्सा प्रारम्भ हो जाती है तो कुष्ठ-रोग और भी उग्र हो जाता है। कभी-कभी दस वर्ष तक गलत इलाज होता है। कोई चिकित्सक वास्तविक रोग की पहचान कर भी लेता है तो पुराना पड़ने पर रोग असाध्य ही हो जाता है।

रक्त प्रवाह में चूने का अंश घटने लगता है और हड्डी में चूने के अंश की ही विशेष मात्रा रहती है। अतएव रोग के परिणामस्वरूप हड्डियाँ गलने लगती हैं। जनता में यह अन्ध धारणा है कि इस रोग में हाथ-पैर की उँगलियों की हड्डियों के गल जाने से वे सिकुड़ जाती हैं।

चिकित्सा के लिए एक यन्त्र होता है जिसके प्रकाश में शरीर की हड्डियाँ साफ दिखाई देने लगती हैं। सिस्टर हिलारी ने ऐसे ही यन्त्र द्वारा मुझे अपने हाथों और पैरों की हड्डियों को देखने का अवसर दिया, ऊपर से मेरे हाथ और पैर बिलकुल ठीक थे, परन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी हड्डियों में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था। मुझे बताया गया कि लक्षण के प्रत्यक्ष होने में दस वर्ष लगें या इससे भी अधिक और मुझे आशा थी कि तब तक विज्ञान मेरी रक्षा करने में सफल हो जायेगा। सिस्टर हिलारी के प्रशिक्षण में मैंने चिकित्सा सम्बन्धी परीक्षण के कई काम सीख लिये—जैसे अनुवीक्षण यन्त्र के लिए शीशे के प्लेट पर रक्त के एक दो बूँद लेना, मूत्र परीक्षा, रक्त में लाल और श्वेत जीवाणुओं को गिनना, वासरमैन परीक्षा, यक्ष्मा के लिए बलगम की परीक्षा। अनुसन्धानालय का काम मुझे उत्तेजक जान पड़ा और रोचक भी। जब मैं अपने इस काम में खो गई, तो मुझे कारविल की मानवीय समस्याओं में भी रुचि होने लगी। मैं सब रोगियों को जान गई और प्रत्येक की हार्दिक व्यथा का मुझे पता था। कारविल में जब मेरा जीवन प्रारम्भ हुआ, तब मैं न्यू आलियंस से आई हुई एक

गर्वीली और शर्मीली लड़की ही मानी जाती थी। अब मैं सब की प्रिय हो गई और आदरणीय भी।

इन सब में मैं हैरी मार्टिन नामक रोगी की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुई। यह बीस वर्ष का लम्बा और हृष्ट-पुष्ट पुरुष मेरे कारविल पहुँचने के कुछ ही महीने पहले यहाँ आया था। अपने दुर्भाग्य के प्रति उसका विद्रोह उतना ही प्रत्यक्ष था जितना कि मेरा। प्रतिमास उसके रक्त की परीक्षा होने पर जब उसमें कीटाणु दिखाई देते रहते, तो इस सशक्त और सुन्दर युवक की उदासी देखकर मैं भी दुःखी होती। क्रमशः पता लगा कि कारविल में वह सबका प्यारा है।

उसने मुझे अपने विषय में कुछ नहीं बताया, परन्तु मुझे पता लग गया कि उसके पास पैसा नहीं और सप्ताह में छः दिन उसे अपना पूरा समय शरीरक्रिया-सम्बन्धी चिकित्सा को देना पड़ता है। इतना पौरुष पाकर भी पंगु या दृष्टिहीन रोगी के प्रति उसकी सुशील नारी जैसी करुणा रहती। भोजनालय के सजाने और रोगियों के प्रति सहभोजों का प्रबन्ध करने के लिए वह सदैव तत्पर रहता। अधिकांश रोगियों की भाँति वह रोगिनियों के घरों के चक्कर न लगाता, और समान भाव से सबके प्रति उसकी सहानुभूति रहती। उसके प्रति मेरे आदर और सम्मान की भावना बढ़ने लगी।

● ● ●

बड़े दिन की तीसरी छुट्टी में जब मैं अपने घर गई तो मेरे हृदय को एक भारी धक्का लगा। मैं लम्बे और उत्साहपूर्ण पत्र राबर्ट को लिखा करती थी, जिनमें अक्सर अनुसन्धानालय से सम्बन्धित बातें रहतीं, परन्तु उसके उत्तर उलझे-से रहते और उसका मेरे घर आना-जाना भी कम हो गया था। माँ ने मुझे लिखा कि राबर्ट पर काम का भार बहुत है, इसीलिए वह कम आता-जाता है। परन्तु मुझे तो सही बात मालूम करनी थी। अतएव न्यू आर्लियंस में अपने अल्प प्रवास के अन्तिम दिन

मैंने उससे पूछा, "क्या अभी तक तुम मुझसे प्रेम करते हो ?" राबर्ट ने साफ-साफ परन्तु भटकी-सी भावना से उत्तर दिया, "नहीं ! मैं चाहता हूँ कि मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति बना रहे, परन्तु विवश हूँ !"

मैंने सोच रखा था कि मुझे ऐसे उत्तर के लिए तैयार रहना चाहिए। परन्तु उत्तर मिलने पर मेरे हृदय को भारी धक्का पहुँचा। मैंने उसे उलाहना दिया कि उसने पहले मुझसे क्यों नहीं कहा। परन्तु उस पर क्रोध करना मेरे लिए असम्भव था। जब दो वर्ष से और पहले उसने सदैव प्रतीक्षा करने का वचन दिया था, तब उसका वचन हार्दिक ही था। यदि उसका हृदय-परिवर्तन हो चुका था, तो यह एक ऐसी बात थी जिसके लिए हम दोनों विवश थे।

वह मेरा पहला प्रेमी था और एक लड़की की भाँति मैंने उसे अपना प्रणय-दान किया। जब मेरा दुर्भाग्य सामने आया तो बराबर वह मेरा विश्वासपात्र और सहायक रहा। मैं हृदय से उसकी कृतज्ञ रही, और सदैव रहूँगी।

राबर्ट से जो मुझे अनुभव प्राप्त हुआ, वही प्राय: प्रत्येक कारविल के रोगी का रहा, वह विवाहित हो या अकेला। प्यारों से विछोह हर हालत में हुआ। रोगी, नर या नारी, आकर मुझसे अपनी हार्दिक व्यथा सुनाते। बाहर पति है या पत्नी और सम्बन्ध-विच्छेद के लिए रोगी के पास सन्देश आता है। कितनी ही बार मुझे अपने सहयोगी या सह-योगिनी को सान्त्वना देने के लिए शब्द ढूँढने पड़े। मुझे भली प्रकार मालूम था कि जो प्रेम काँटेदार तारों के पीछे अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया हो, उससे चिपके रहना सरल नहीं है। कुष्ठ-रोगियों को अपराधियों की भाँति समाज से अलग कर देने की जो निर्दय प्रथा है, उसके परिणामस्वरूप अधिकांश का पारिवारिक जीवन नष्ट ही हो जाता है।

अब मुझे भली प्रकार मालूम हो गया कि मेरा स्थान कहाँ है।

मेरा स्थान था कारविल की इकत्तीसवीं कुटी में, जहाँ मेरी संगिनियों को वही दुःख, दर्द और दया प्राप्त थी जो मेरे भाग्य में थी।

• • •

अब हैरी मार्टिन के साथ मैं अक्सर संध्या के समय टहलने निकल जाती। हमें पता लगा कि हम दोनों को एक ही सी वस्तुएँ पसन्द हैं और हमारी कामनाएँ भी एक-सी हैं। कभी-कभी जब कारविल से होती कोई मोटरकार निकल जाती तो उसके धुएँ की गन्ध सूँघते हम दोनों खड़े हो जाते। एक-दूसरे को देखते और आहें भरकर कहते कि कब हमारा इसी भाँति छुटकारा होगा और हम भाग निकलेंगे।

हैरी कहता, "किसी दिन मेरे पास भी कार होगी।"

और हम बहस करते कि किस मेल की कार होगी, उसके दाम क्या होंगे और पहली बार घुमाने वह मुझे कहाँ ले जायेगा। बातें फिजूल ही थीं। परन्तु हमारा वार्तालाप हार्दिक ही होता।

जब हमारा साथ बढ़ा तो हैरी को अपनी बीती सुनाने की भी इच्छा हुई। उसने मुझे सुनाना प्रारम्भ किया कि कैसे उसे यह रोग हो गया, जिसे वह असम्भव समझे हुआ था। उसकी दुःख-गाथा से मेरा भी हृदय दुखने लगा।

अमरीका में लुइसियाना राज्य और उसका गैरीविल नामक कस्बा कुष्ठ-रोग के लिए सबसे अधिक बदनाम है। हैरी का जन्म यहीं हुआ। अपने हाई स्कूल में उसकी गिनती सर्वोच्च खिलाड़ियों में रही, और वह फुटबाल टीम का कप्तान रहा। दर्द-भरे शब्दों में उसने कहा, "खेलों में भाग लेना मुझे सबसे अधिक प्रिय रहा।"

लुइसियाना विश्वविद्यालय में सैनिक अफसरों की भरती के लिए कठिन शारीरिक परीक्षा होती थी। वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, परन्तु कुछ समय पहले उसे अपनी जाँघ में एक छोटा-सा धब्बा दिखाई देने लगा था, और वह अच्छा होने नहीं आ रहा था। जिस विशेषज्ञ

डॉक्टर फैरे ने मेरी परीक्षा की थी, उसने ही सबसे पहले हैरी का रोग भी पहचाना।

हैरी ने उदास होकर कहा, "डॉक्टर का निर्णय सुनने पर पिताजी की मुखमुद्रा जिस प्रकार बदली, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता।"

हैरी के पिता एक छोटी-सी दुकान रखे हुए थे। पुत्र को कारविल पहुँचा चुके तब आर्थिक हानि उठाते हुए भी अपना घर-बार बेचकर न्यू आर्लियन्स में बस गये। यदि पुत्र के रोग का पता चल जाता, तो पिता सपरिवार समाज के बाहर हो जाते और उनकी दुकान का बहिष्कार होता। छः सदस्यों के परिवार का पोषण उनके जिम्मे था। हैरी ने पाँच हजार डालर पर अपना बीमा करा लिया था, जिसमें एक शर्त यह भी थी कि यदि वह किसी कारणवश अपाहिज हो जाये तो बीमे का रुपया मिल सकता है। कुष्ठ की गणना ऐसे रोगों में है जिनसे ग्रस्त व्यक्ति पूर्ण रूप से अपाहिज माना जाता है। पिता अपने पुत्र के रोग की सूचना देकर बीमे की रकम वसूल कर सकते थे, परन्तु लम्बे वाद-विवाद के पश्चात् पिता-पुत्र का निर्णय हुआ कि बीमे का रुपया वसूल करने की अपेक्षा समाज में परिवार का मान बनाये रखना बेहतर होगा।

मेरी भाँति यथाशक्ति हैरी भी आत्म-निर्भर था। अपने व्यय के लिए उसे अपने परिश्रम का ही सहारा था। शरीरक्रिया-सम्बन्धी चिकित्सा में उसके काम का अनुसन्धानालय में मेरे काम से घनिष्ठ सम्पर्क था। यों दिन में कई बार रोगियों, उनकी चिकित्सा और अपने प्रयोगों से सम्बन्धित अन्य बातों के लिए हम एक-दूसरे से मिलते रहते। कारविल में हम दोनों बहुत कुछ कर रहे थे, इसलिए हमें समय अधिक तेजी से बीतता जान पड़ने लगा।

● ● ●

१६३१ के वसन्त में हमारे मध्य स्टैनले-स्टाइन नामक एक असाधारण रोगी आया, जिसकी सेवाओं से कारविल का कायापलट हो गया। मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि उसके आने के पहले हममें से कोई जानता भी न था कि जीवन-शक्ति का कितना महत्व हो सकता है। कई वर्षों तक वह हमें प्रेरणा देनेवाला अपूर्व मित्र रहा। जब कभी मैंने उससे बात की या उसके साथ काम किया तो उसकी उपस्थिति से मैं अवश्य प्रभावित हुई। उसका रोग बहुत तेजी से बढ़ा और इसके परिणाम उसके लिए बहुत कष्टदायक हुए। परन्तु इनके बावजूद स्टैनले ने कारविल में क्रान्तिकारी परिवर्तन कराये। उसके प्रभाव से हमें कारविल का जीवन सुन्दर बनाने की सम्भावनाएँ दिखाई देने लगीं, और हम सबकी निहित शक्तियों को प्रत्यक्ष होने का मौका मिला। वह अपने घर शौकिया नाटकों में क्रियाशील रह चुका था। इसलिए यहाँ आने के एक महीने के भीतर ही वह साधु मण्डली का नाट्य अभिनय कराने में सफल हुआ। ग्रीष्म ऋतु के मध्य तक उसने कारविल में एक नाट्यशाला स्थापित करा दी। हमारा पहला अभिनय आशा से अधिक सफल हुआ, और तत्पश्चात् हम अभिनय की तैयारी करने में पागल से दिखने लगे।

परन्तु स्टैनले की सबसे बड़ी और स्थायी प्रभावशाली देन रही, कारविल से ही 'स्टार' नामक समाचारपत्र का प्रकाशन। पहले यह एक छोटे-से साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें स्थानीय खबरें ही रहती थीं, और जिसकी प्रतियाँ साइक्लोस्टाइल से निकाली जाती थीं। उसके पाठक पहले तो कारविल के रोगी और कर्मचारी ही रहें। फिर यह पत्र दूर-दूर के हितैषियों और डाक्टरों तक पहुँचने लगा। छोटा होकर भी उसने बड़े समाचारपत्र की तरह अपना प्रभाव प्रत्यक्ष कर दिया, जब कारविल की जीवन-चर्या का सुधार-आन्दोलन सफल होने लगा। शीघ्र ही कारविल में सहकारिता की भावना का

चमत्कारी विकास होने लगा और रोगी अपने पत्र, अपने समाज और कारविल के भीतर अपनी सफलताओं पर गर्व करने लगे।

स्टैनले के पहले नाटक में हम दोनों—हैरी और मैं—नायक और नायिका बने। दो महीने तक तैयारी करते रहे, जिस कारण हमारा पारस्परिक सम्पर्क और भी बढ़ा। सप्ताह में दो-तीन बार सन्ध्या का समय हम दोनों एक साथ बिताते।

हैरी के भक्तों में एक स्पेनी रोगी था जो शल्य-चिकित्सालय में चपरासी के काम पर नियुक्त था। उसका नाम जुआन था, परन्तु वह 'मिस्टर सावे' के नाम से प्रसिद्ध था। वह जितना अंग्रेजी से अपरिचित था उतना ही उदार-हृदय था, परन्तु वह किसी के सामने अपना अज्ञान स्वीकार न करता। उस वर्ष के ग्रीष्म में उसने हैरी के सहयोग से अस्पताल से लगे जंगल के पीछे एक छोटी-सी झोपड़ी बनाई जिसका उन्होंने नामकरण किया 'लकी विला' (भाग्यशाली कुटीर)। जंगल में शिकार खेलना मना था, परन्तु शौकीन खेलते ही थे। सो हैरी और मिस्टर सावे भी अक्सर शिकार मार लाते और हम तीनों विला में शिकार पकाकर बड़े मजे में खाते।

हम दोनों—हैरी और मैं—एक-दूसरे के सुख-दुःख में बहुत दूर तक सम्मिलित थे। हम दोनों ही के काम रोचक थे। समान मित्र थे, मनोरंजनों में एक-दूसरे के साथ रहते और गहरी मित्रता थी ही। परन्तु हमारी समझ में आने लगा कि इतना सब यथेष्ट न था।

एक दिन मैं अनुसन्धानालय में हैरी की रक्त-परीक्षा कर रही थी, कि वह भीतर आ गया। हमने उसके प्लेट को अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे रखा, और आनन्द के मारे मेरी तो साँस ही रुक गई, जब मुझे हैरी के रक्त में कुष्ठ-कीटाणु नहीं दिखाई दिया। हमें अपनी आँखों पर विश्वास करते न बना। परीक्षा नकारात्मक घोषित हुई। कारविल में इसके अर्थ रोगी के लिए आशाजनक थे। हम दोनों फूले न समाये।

दूसरे महीने परीक्षा फिर नकारात्मक घोषित हुई, और जब तीसरी

परीक्षा भी नकारात्मक निकली, तो हैरी को यह बात कहने का साहस हुआ, जो पहले उसके मुख से सम्भव न थी। मुझे याद है, कितने अटपटे शब्दों में पहली बार उसने मुझसे प्रेम, विवाह और पारिवारिक जीवन की बात कही। परन्तु मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा चलने लगी। वह समझा कि उसके प्रस्ताव से मैं बुरा मान गई। मैं बहुत दिनों से जानती थी कि उसका मेरे प्रति प्रेम है। मैं भी उससे प्रेम करती थी, परन्तु हमें एक-दूसरे से प्रेम करने का अधिकार क्या था।

हम दोनों का विवाहित होना अनुचित था। हम दोनों रोगी थे, तो सन्तति को जन्म देना मेरे लिए असहनीय होता। या तो अपनी सन्तान मैं किसी दूसरे के हवाले करती या स्वार्थवश हम दोनों बच्चे को अपने साथ रखते और बड़े होने पर वह भी इस रोग का शिकार होता।

विवाह-रहित प्रणय और सन्तति-रहित विवाह—दोनों मेरी कल्पना के बाहर थे। हम लोग ईसाई धर्म के कैथोलिक मत के अनुयायी हैं। हमारे मत में सन्तति-निरोध वर्जित है। अपने धर्म में विश्वास मेरे हृदय में इतना गहरा अंकित था, मानो वह मेरे हृदय की गति का अंग हो। इसलिए मैं जानती थी कि धर्म से विचलित होने पर मेरे भगवान् मुझसे रूठ जायँगे, और यह अपराध मुझसे न हो सकेगा।

टूटे-फूटे शब्दों में मैंने अपनी भावना हैरी को समझाई। वह कैथोलिक न था, परन्तु मुझे ऐसा लगा कि वह मेरी बात समझ गया। प्रतीक्षा के अतिरिक्त कोई चारा न था। कारविल से मुक्ति के लिए लगातार बारह मासिक परीक्षाओं का नकारात्मक निकलना आवश्यक था। शीघ्र ही हैरी के नकारात्मक परीक्षा-फल नौ तक पहुँचे, और मेरे ऐसे ही दो तक पहुँचे। हमें विश्वास हो गया कि उसके बारह तक पहुँच जायँगे; उसके पीछे-पीछे थोड़े ही महीनों के अन्तर से मैं भी बारह की सीमा पार कर लूँगी और तब हम दोनों स्वतन्त्र हो जायेंगे।

● ● ●

इतनी भारी आशा बँधने के पश्चात् दसवीं परीक्षा में कुष्ठ-कीटाणु फिर दिखाई दिये। हमारी आशाओं पर वज्रपात हो गया। थोड़ी देर तक तो हम दोनों से बोलते भी न बना। कई दिनों तक हैरी के मुख पर अपने काम के समय भी उदासी छाई रही। जब वह मेरे पास आया, तो अपने विषय में निर्णय करके उसने कहा, "मैं अभी जवान हूँ शरीर बिगड़ा भी नहीं है, तो कारविल छोड़कर किसी धंधे में लगने का मेरे लिए यही समय है। इस परीक्षा से मेरे छुटकारे की अवधि कम-से-कम एक वर्ष और बढ़ गई। कुष्ठ के विशेषज्ञ चालमूगरा तेल को बेकार मानते हैं। कारविल के बाहर किसी भी अत्तार की दुकान पर यह खरीदा जा सकता है और कारविल में इस तेल के अतिरिक्त कोई और चिकित्सा नहीं। चाहता हूँ, तुम भी मेरे साथ निकल चलो।"

मैं कोई उत्तर न दे सकी।

जब हम लोग नये-नये आये थे, तो जो रोगी कारविल से मुक्त होते थे, उनके प्रति हमारी श्रद्धा होती थी; और नियम के प्रतिकूल निकल भागने के हम विरुद्ध थे। पर बहुत दिनों से हमारी ये भावनाएँ समाप्त हो चुकी थीं। तो भी अब हम जानते थे कि कारविल से मुक्त होना बहुत से रोग-मुक्त व्यक्तियों के लिए निरर्थक था। मुक्त रोगी इतने बूढ़े या अपाहिज हो चुके होते थे कि बाहर जाकर रोजी कमाना उनके लिए कठिन हो जाता था। बहुत से रोगी इतने वर्ष तक कारविल में बन्द रहे थे कि बाहर उनका कोई नहीं रह गया था। इसलिए वे सब प्रकार से निराश और अपाहिज होकर आमरण कारविल में ही रहने का निश्चय कर लेते थे। ये दुःखी और परित्यक्त व्यक्ति स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करके भी अपने जीवन-सुख से हाथ धो बैठे थे। कारविल की बस्ती का यही सबसे अधिक करुणाजनक दृश्य था। हम दोनों—हैरी और मैं—इस बस्ती के उपर्युक्त दुःखान्त दृश्य में सम्मिलित होने से बचना चाहते थे।

यह विचार हमारे सामने आया कि भाग निकलने पर समाचार-

पत्रों में उत्तेजनात्मक शीर्षकों के नीचे कदाचित् घटना की चर्चा हो। मुझे यह भी मालूम था कि कुछ स्थानीय अधिकारी अपराधियों की भाँति भाग निकले रोगियों को ढूँढ़ते थे, और गोली मारने की धमकी देकर उन्हें कारविल में फिर बन्द करा देते थे। परन्तु हैरी को और मुझे ढूँढ़े जाकर पकड़ जाने की विशेष चिन्ता न थी, क्योंकि कारविल आकर हम दोनों ने जाली नाम और पते लिखवाये थे, और हमारे हुलिये तथा पते का कोई लेखा कारविल में न था। हमें अपने दायित्व से बचने का कोई खयाल न था, क्योंकि हम जानते थे कि यथेष्ट संयम करने पर हमारे जैसे सच्चे व्यक्ति दूसरों को अपने खतरे से बचा सकते थे। ये संयम ऐसे थे, जैसे एक ही थाली पर अपने अतिरिक्त अन्य व्यक्ति को न बैठने देना, स्नानघर के हौज की शुद्धि करते रहना।

यों हमारे बाहर रहने पर समाज की कोई हानि सम्भव न थी। अमरीका के कुछ राज्यों में कुष्ठ-रोगी अछूत नहीं माने जाते थे। उदाहरणतया न्यूयार्क में कुष्ठ-रोगी स्वतन्त्र हैं। मुझे ऐसा लगा कि अब मेरा धैर्य समाप्त हो चुका, मेरा रोग संक्रामक नहीं रह गया और भाग निकलने पर अपने अतिरिक्त किसी और को हानि पहुँचाना मेरे लिए असम्भव था।

कुछ समय पश्चात् मुझे वास्तविक हिचकिचाहट मालूम हुई। हैरी ने जब मुझे बताया कि अगले जून मास में उसने भाग निकलने की योजना बना ली है, तो मैंने अपने माता-पिता को लिखा। लौटती डाक से मेरे पास चिट्ठी आ गई,"तुम भी आ जाओ।" अब मेरा निश्चय पक्का हो गया, और भाग निकलने की तैयारी मैंने भी प्रारम्भ कर दी।

डॉक्टर जो और कारविल के अन्य मित्रों के नाम अपने पत्र कमरे में छोड़कर रात के निश्चित समय हैरी और मैं गोल्फ का मैदान पार करके काँटेदार तार की सीमा तक पहुँचे। मिस्टर साबे ने अपने प्लास से तार काट दिये। हम दोनों छेद से किसी प्रकार निकले, चुपके-से कारविल को विदाई का नमस्कार किया, और शीघ्रता से सड़क पार

करके प्रतीक्षा में खड़ी मोटरकार तक पहुँच गये। कार में हम दोनों के पिता थे, और जब कार घर की ओर रवाना हुई तो हमें अपने किये पर सन्तोष था।

• • •

निःसन्देह हम वास्तविक स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त कर सके थे। हमें बराबर यह डर रहा कि हमें कोई ऐसा व्यक्ति न मिल जाये, जिसने कारविल में मुझे देखा हो। ऐसे व्यक्ति अकसर मिल ही जाते हैं।

तो भी, घर पहुँचकर मैं अपने बिछुड़े स्वजनों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुई। माता-पिता के साथ नाश्ता करने और खुली खिड़कियों से सुगंधित फूलों से झरती वायु में मुझे अवर्णनीय आनन्द प्राप्त हुआ।

हैरी एक व्यावसायिक कालेज चलाने लगा और मुझे स्टेनोग्राफर का काम मिल गया। जब मैं काम पर पहुँची तो दुकान के मालिक मेरे स्वास्थ्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी तारीफ से मैं प्रोत्साहित हुई, क्योंकि मैं वास्तव में चंगी जान पड़ती थी। मेरे शरीर पर रोग का कहीं कोई लक्षण न था। अपनी त्वचा में मुझे कोई धब्बा नहीं दीखता था। अपने कानों को कोंचकर और जाँघों को भली-भाँति देख-कर मुझे सन्तोष हो गया था कि कुष्ठ के कोई बाहरी लक्षण मेरे शरीर पर नहीं रह गये थे।

एक दिन कैनाल स्ट्रीट की एक दुकान पर कारविल की एक परि-चारिका से मेरा सामना हो गया। वह एक क्षण तक उलझी-सी रही परन्तु शीघ्र ही चल दी। उसने मुझे पहचानकर दया का निर्णय कर लिया हो, या शृङ्गार में भेद हो जाने पर मुझमें वह रूप न पहचान पाई हो जिससे कारविल में वह परिचित थी। बात यहीं समाप्त हुई।

इसके बाद मैं सदैव के लिए सतर्क हो गई। जब कभी मैं कारविल के किसी डॉक्टर, कर्मचारी या मुक्ति-प्राप्त रोगी को देखती तो मैं अपना मुँह फेरकर तेजी से निकल जाती। भाग निकलने का कलंक

सदैव मेरे सामने रहा। एक बार न्यू आर्लियंस की एक प्रमुख समाज-सेविका से एक मित्र ने मेरा परिचय कराया। वह बड़ी सहानुभूति से और शान्तिपूर्वक मुझसे मिली। कारविल में उसके दो सम्बन्धी रहते थे, जिनसे मिलने वह अकसर जाती थी। यों मैं उससे कई बार मिल चुकी थी। परन्तु इसका उसने कोई संकेत नहीं होने दिया। मेरी भाँति वह भी भयग्रस्त थी, क्योंकि वह यह नहीं प्रकट होने देना चाहती थी कि उसके परिवार का कोई सदस्य कुष्ठ-रोगी हो गया था। भेद खुलने पर उसके परिवार की भी बदनामी होती।

एक दिन हमारे दफ्तर के चपरासी ने एक रोग का जिक्र किया जिसमें पैर पहलवान के जैसे दिखाई देते है; बोला, "हमारे पड़ोस में एक लड़के का पैर इतना फूला हुआ है कि सब लोग उसे कोढ़ी समझने लगे है।" उसने जिस लहजे में 'कोढ़ी' शब्द का उच्चारण किया उससे ऐसा लगा मानो कोढ़ी शारीरिक और नैतिक पतन की प्रतिमूर्ति हो। वह कलंक आजीवन मेरे पीछे भी लगा था, क्योंकि मेरे बारे में यह बताया जाता रहा कि मुझे एक प्रकार का त्वचा का रोग है।

कारविल से भाग निकलने के एक वर्ष के भीतर हैरी के चंगे होने की सब आशाएँ समाप्त हो गईं। अपने पिता की सहायता से उसने लोहे-लंगड़ की एक छोटी-सी दुकान खोल ली थी। पहले ही दिन से उसकी दुकान चलने लगी, परन्तु उसकी सफलता कुष्ठ-कीटाणुओं को हैरी की आँखों पर हमला करने से न रोक सकी। पहले तो उसकी आँखें कुछ सूजी और लाल-सी रहीं, परन्तु उसकी पलकें रोग की प्रगति के अनुकूल फूलते देखकर मैं भयभीत हुई। एक कान भी प्रत्यक्ष रूप में फूलने लगा। वह अपना साहस बनाये रखता, और उसकी मुख-मुद्रा में प्रसन्नता दिखाई देती, परन्तु उसके आन्तरिक संघर्ष का अनुमान करके उसके प्रति प्रेम और तरस से मैं विह्वल होती।

मैं समझ गई कि उसके रोग की प्रगति उसको अन्धा करके ही छोड़ेगी, और जब कभी वह मुझे छोड़कर अपने घर मोटर पर जाता,

तो मैं उस भावी की कल्पना करके बहुत त्रस्त होती, जब हैरी दृष्टिहीन हो जायेगा। मैंने कारविल में ऐसे बहुत से अभागे अपनी कुर्सियों पर विवश पड़े देखे थे। जब वह समय आयेगा, तब उसे एक सहायिका और संरक्षिका की बहुत आवश्यकता होगी। यदि मैं उसके निकट नहीं होऊँगी तो और कौन होगा।

कारविल से लौटने के लगभग चार वर्ष बाद एक रात भगवान् ने मेरी पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना सुन ली। मुझे अकस्मात् ज्ञान हुआ कि ईश्वर का भरोसा करके मैं सत्य-मार्ग ग्रहण करूँ। मैंने हैरी को अपना निश्चय बताया कि हम दोनों का विवाह हो जाना चाहिए।

अब उसे अपनी ओर से उज्र करने का मौका था। प्रकट रूप से मैं चंगी थी, और वह अस्वस्थ था। अपने स्तर तक मुझे गिराना उसे मंजूर न था। बहस चलती रही जिसका अन्त मैंने यह कहकर किया कि उसे मेरे साथ विवाह करना होगा। अब सुशील हैरी उस स्थिति में आ गया, जिसमें इन्कार करना उसके लिए असम्भव हो गया।

जब मैंने अपने पादरी से सन्तति की समस्या पर बात की, तो उसने मुझे बताया कि रोग होते हुए भी अप्राकृतिक सन्तति-निरोध वर्जित है। मासिक धर्म के पश्चात् कुछ ऐसे दिन होते हैं, जब सम्भोग से बचने पर सन्तति-निरोध सम्भव होता है। ऐसे ही निरोध की अनुमति मुझे अपने पादरी से मिल सकी।

वसन्त में हम दोनों की शादी हुई और विवाह में हम दोनों के निकटस्थ सम्बन्धियों की ही उपस्थिति थी। दोनों के एक सूत्र में बँधने पर मुझे अन्तरतम तथा स्थायी स्नेह का अनुभव हुआ, और हमारे जीवन का उद्देश्य पहली बार स्थिर हुआ। सुख-दुःख में एक-दूसरे के लिए अब हम जीने लगे। अपनी जीवन-यात्रा में हम दोनों ने नया तथा एक ही मार्ग ग्रहण किया।

● ● ●

हमारा निवास-कक्ष छोटा ही था, परन्तु हमारी दृष्टि में वह महल के समान था। अपना ही घर प्राप्त करने का यह हम दोनों का अपूर्व अनुभव था और हम खुश थे, उतने ही जितना भावी शंका में खुश रहने का हम साहस कर सकते थे।

हैरी के साथ दुकान पर काम करने के लिए मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी। हमें देर तक काम में लगे रहना पड़ता तथा सामाजिक मनोरंजन हमें नसीब न था। हम केवल अपने माता-पिता से ही मिलने जाते। सप्ताह में एक बार चलचित्र देखने भी चले जाते। रोग के बाहरी लक्षण हैरी पर जितने प्रत्यक्ष होते गये, उतनी ही बाहरी लोगों की उपस्थिति हमें बुरी मालूम होने लगी। हम तभी थोड़े-बहुत प्रसन्न रहते जब अकेले एक-दूसरे के साथ होते।

हम कभी कारविल की बात न करते, परन्तु उसकी याद हमें सदैव आती रहती। हैरी बराबर उस डॉक्टर से मिलने जाता जिसे उसके रोग की पहचान हो गई थी और वह यथाशक्ति सेवा भी करता। परन्तु दयालु होकर भी वह हैरी को प्रोत्साहित नहीं कर पाता था। इतना ही कहता रहता कि हालत क्रमशः और भी बुरी होगी।

उस वर्ष का ग्रीष्म न्यू आर्लियंस में विशेष रूप से गर्म रहा। हमारे निवास-कक्ष में नमी बहुत थी, और दुकान का काम भी हम दोनों को थका डालता था। ग्राहकों को हैरी का 'चर्मरोग' प्रत्यक्ष होने लगा और उनके प्रश्नों के उत्तर देने में उसे मानसिक पीड़ा का अनुभव होता। कुछ महीने पश्चात् उसके दाँतों की हड्डियाँ गलने लगीं। इस नये उपद्रव की उसने अपने डॉक्टर से चर्चा की। उसने यही आशा दिलाई कि स्वास्थ्य-सुधार होने पर यह उपद्रव भी शान्त हो जायेगा।

जब हैरी के कई दाँत पोले पड़ गये और उनका भरा जाना आवश्यक हो गया तो डॉक्टर ने अपने दाँत-साज को बुलाया, हैरी के रोग की बात उसे बताई और चिकित्सा का समय उससे नियत किया। परन्तु जब हैरी वहाँ पहुँचा, तो दाँत-साज ने सेवा से इन्कार किया।

उसने कहा—सेवा करूँगा तो अन्य रोगियों के प्रति अन्याय होगा।

वह कदाचित् यह नहीं समझ पाया कि उसके इन्कार से हैरी का दिल कितना टूट गया। घर वापस आने पर हैरी की हालत वह थी, मानो उस पर कोड़े पड़े हों।

उसने एकदम निश्चय कर लिया कि उसे कारविल वापस जाना है। उसके निर्णय से मैं चिन्तित-सी हो गई।

हम दोनों के पारिवारिक सदस्यों ने मुझे उसके साथ जाने से मना किया। उन्होंने मुझे समझाया कि मैं न्यू आर्लियंस में रहकर दुकान चलाती और बढ़ाती रहूँ, जिससे वापसी पर उसे चालू दुकान मिले। हैरी स्वयं भी नहीं चाहता था कि मैं उसका साथ दूँ।

परन्तु मैंने भी अपना निर्णय कर लिया था। मै जानती थी कि हैरी को वहाँ जाकर घुलना है। कदाचित् घुलकर मरना भी है, क्योंकि कारविल में मरण के अतिरिक्त कुछ मिलने का नहीं। मेरे हृदय में कारविल लौटने का कितना भी डर समाया हो, परन्तु मुझे विश्वास था कि हैरी के साथ एकान्तवास मुझे उसके बिना संसार की सब निधि से अधिक सुखकर होगा।

हमारी यात्रा की बात फिर उसी कपट से छिपाई गई। मेरी पहली यात्रा के ग्यारह वर्ष पश्चात् इस बार पिता हमें कारविल ले गये। फाटक पर खड़ा चौकीदार हमें तुरन्त पहचान गया कि यही दोनों रोगी वर्षों पहले भाग निकले थे। फाटक खोलते ही उसने कहा, "वापस आ गये।"

डॉक्टर जो से हमें तिरस्कार का एक शब्द भी नहीं मिला। हमने लिख दिया था कि हम वापस आ रहे हैं और हमें सस्नेह स्वागत का उत्तर मिल गया था। पुराना झूठ मेरे गले को कुछ देर पकड़े रहा, जब मेरा नाम पूछा गया। साढ़े पाँच वर्ष हम कारविल के बाहर अपने वास्तविक नाम से रहे थे। साहस करके मैंने अपना नाम बेट्टी मार्टिन लिखवाया। मुझे अपने पति को हैरी के नाम से याद करने का निश्चय

करना पड़ा—यद्यपि विवाह के पश्चात् मैंने उसे इस नाम से नहीं पुकारा था—और मेरे नाम के पहले शब्द से उसे मुझे याद करना था। दोनों नाम हम दोनों को कड़े और अपरिचित जंचे।

हम अस्पताल में शारीरिक परीक्षा के लिए भरती किये गये और सन्ध्या के समय कर्मचारियों और रोगियों में वे सब मिलने आये, जिनसे मैत्री हो गई थी। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

परन्तु हमने संस्था के नियम तोड़े थे। अतएव दण्ड मिलना ही था। एक दिन पश्चात् हमारी शारीरिक परीक्षा समाप्त हुई, और नियम के अनुसार हमें दण्ड दिया गया। अस्पताल के पास एक छोटे-से कारागार में हैरी बन्द हुआ और मैं सींकचे लगी एक कुटी में बन्द की गई, जिसके अधिकांश में मस्तिष्क रोगी बन्द थे। यहाँ हम ३० दिन तक एक-दूसरे से अलग रखे गये, यद्यपि जल-चिकित्सा के लिए अस्पताल की दैनिक यात्रा में रोज प्रातःकाल एक को दूसरे के दर्शन हो जाते थे।

हमारी अनुपस्थिति में कारविल ने आश्चर्यजनक उन्नति कर ली थी। पुराने अस्पताल की जगह अब एक सुन्दर और विशाल भवन खड़ा था। उसकी खपरैल की छत फूलों के गमलों से सजी थी। भवन में रोगियों के लिए ६५ कमरे थे। शरीरक्रिया-सम्बन्धी तथा जल-चिकित्सा के लिए विविध भेदों के अलग कमरे थे। मैं अनुसन्धानालय में काम कर चुकी थी। सो आधुनिक प्रणाली पर बना हुआ नया अनुसन्धानालय देखकर तो मैं सबसे अधिक प्रभावित हुई। जिन कुटी जैसे अनुसन्धानालयों में हम दोनों पहले काम करते थे, उनसे यह भवन कहीं अधिक सुन्दर और बड़ा था। जो भवन हमें दिखाई दिये, उनसे भी बड़े भवनों की योजनाएँ चालू थीं, क्योंकि पुरानी कुटियों की जगह पर दो खण्ड के विशाल भवन बनने थे, और चालीस लाख डालर का एक मनोरंजन-केन्द्र बनना था। अस्पताल के भीतर और बाहर अमरीकी सैनिकों के कई वर्ष तक निरन्तर उद्योग करने पर कारविल के विकास का अधिकांश सम्पन्न हुआ था। सन् १९३१ में उन रोगियों

ने जो सैनिक रह चुके थे, अपने ही मध्य एक पद का निर्माण किया। कई वर्ष तक स्टैनले स्टाइन इस पद पर अकेले काम करता रहा, और उसने अमरीकी सेना के बड़े-बड़े नेताओं को अस्पताल के निरीक्षण के लिए निमन्त्रित किया। वे उसके व्यक्तित्व से तो प्रभावित हुए ही, उन सुधारों से भी प्रभावित हुए जिनके लिए उसका प्रयत्न चल रहा था। उनकी दिलचस्पी से कारविल बहुत लाभान्वित हुआ।

नई-नई उन्नतियों में कुछ तो छोटी ही थीं, परन्तु रोगियों के लिए बहुमूल्य थीं। उदाहरणतया एक बाहरी सैनिक ने भोजन-गृह में रोगियों के लिए एक टेलीफोन लगवा दिया जिससे वे दूरस्थ मित्रों तथा सम्बन्धियों से बात कर सकें। अनिश्चित काल तक अपने सगे-सम्बन्धियों से बिछुड़े रोगी ही उस सुख का अनुमान कर सके जो उन्हें फोन पर अपने प्यारों की बोली सुनकर प्राप्त हुआ।

परन्तु कुछ परिवर्तन ऐसे भी थे जिनसे किसी को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। जो रोगी बहुत पुराने हो गये थे, उनकी दशा देखकर हम दोनों दुःखी होते थे। बहुतों की हालत बिगड़ती जा रही थी, बहुतों का रोग अधिक बढ़ गया था। बहुत से अंधे हो गये थे। प्रातःकाल जब जल-चिकित्सा के लिए हम एक-दूसरे से मिलते, तो दोनों में कोई व्यथित स्वर में पूछ लेता, "तुमने अमुक को देखा है ?"

स्टैनले अपनी प्रकृति के अनुकूल प्रसन्नचित्त दिखाई देता था, परन्तु आँखों में महीनों पीड़ा के पश्चात् वह अब दृष्टिहीन हो गया था। हम लोगों की अनुपस्थिति में एक बालक और एक नवयुवती ही रोग-मुक्त होकर कारविल छोड़ चुके थे। बाकी लड़के-लड़कियाँ मर चुके थे, या उनके रोग बढ़ गये थे।

हैरी ने पूछा, "ऐसा हुआ क्यों ?" उसे पता लगा कि सन् १९३५ में वहाँ मलेरिया का भारी प्रकोप फैला था, जिस कारण कुष्ठ के कीटाणुओं को रोगियों पर हावी होने का मौका मिल गया था। जो रोगी कारविल में थे, उनकी अपेक्षा हैरी की हालत अच्छी थी। हमने

भगवान् को धन्यवाद ही दिया कि हम कारविल से निकल भागे थे।

कारागार की अवधि पूरी होने पर मुझे पहले की कुटी नम्बर ३१ मिली और हैरी को २०० गज के फासले पर पुरुष रोगियों की कुटी में रहने भेजा गया। मिस्टर सावे चंगा होकर मुक्त हो चुका था, परन्तु वह शल्य-चिकित्सालय में चपरासी का काम करता रहा और उसने हम दोनों को "लकी विला" में अपने साथ रहने के लिए निमन्त्रित किया। वह उन थोड़े से रोगियों में था जिनकी दशा हमारी अनुपस्थिति में सुधरी थी। जब चिकित्सा के लिए वह आया था तब उसका रोग बहुत बढ़ा हुआ था। अच्छा होकर अब वह नये रोगियों को अपनी रोग-मुक्ति बताकर प्रोत्साहित करने लगा। उसकी कुटी में हम यथेष्ट समय बिताते और प्रति संध्या मैं तीनों के लिए खाना पकाती। हम दोनों की दिनचर्या का यह भाग हमें सबसे अधिक भला लगता, क्योंकि ऐसे ही समय हम गार्हस्थ्य सुख का थोड़ा-बहुत अनुभव कर लेते।

परन्तु अब हम दोनों का रोग बढ़ने लगा। पहला ग्रीष्म बीतता जाता और हम दोनों अपनी निराशा और चिन्ता एक-दूसरे से छिपाते। एक बार ऐसी ही स्थिति में मैं समझी कि मुझे गर्भ रह गया है। हम दोनों अत्यन्त ही दुखी हुए और भगवान् से प्रार्थना करने लगे कि हमें इस स्थिति में संतान न प्राप्त हो, क्योंकि वह जन्म से ही हमारी भाँति समाज से बहिष्कृत होगी। गर्भ का भय मुझ पर दो सप्ताह तक सवार रहा। फिर मालूम हुआ कि गर्भ का धोखा ही था। यों एक भारी चिन्ता से हम मुक्त हुए। रात के दस बजे थे। मैंने चिट्ठी लिखकर हैरी को बुला लिया। हम दोनों ने भगवान को हार्दिक धन्यवाद दिया।

हैरी बच्चों का प्रेमी था। उसने कहा, "हमारी स्थिति कितनी अभागी है कि लोग सन्तति के लिए प्रार्थना करते हैं और हम अपने प्रणय के परिणाम से बचना चाहते हैं।"

● ● ●

एक दिन हैरी ने मुझसे कहा, "प्रिये, मेरे पैर का अँगूठा तो देखो।" मैंने देखा कि उसका रंग गहरा बैंजनी हो गया था। ऐसे ही अन्य बैंजनी धब्बे उसकी टाँगों में प्रकट होने लगे थे। ऐसा जान पड़ता था कि कुष्ठ-कीटाणुओं का रक्त की बाहरी नसों पर आक्रमण प्रारम्भ हो गया था। इसके आगे पुट्ठों के फटने और उनसे खून बहने की बारी थी।

हैरी बहुत निर्बल हो गया और घाव खुले ही रहे, तत्पश्चात् उसके मुँह में इतने घाव हो गये कि मुलायम रोटी भी चबाना उसके लिए कठिन हो गया। उसके होंठ सूजकर तिगुने हो गये और उसके कान भी इसी प्रकार सूज गये। उसके हाथ सूज गये तो स्पर्श से उसे पीड़ा मालूम होने लगी। उसकी टाँगों में घाव-ही-घाव हो गये। मैं इन्हें भली प्रकार धोकर इन पर दवा लगाती और पट्टी बाँधती, परन्तु कोई घाव भरता नहीं था। उसके नथुने बन्द हो गये, मानो उसे जोर का जुकाम हो गया हो। उसका चेहरा मोटा हो गया, जिससे उसकी सूरत—जैसा कि आम तौर से इस रोग में होता है—सिंह जैसी हो गई। जिस मुख को देखकर मैं सुखी होती थी, उसकी इतनी दुर्गति देखकर मुझे पीड़ा होती। मैं अपना दुःख छिपा न पाती तो हैरी भी मेरे दुःख को देखकर निरुत्साह होता जाता, और अपने को कोसने लगता।

कुष्ठ-रोग की सल्फानिलामाइड (Sulfanilamide) नामक एक दवा नई-नई निकली थी। तीन महीने तक नौ रोगियों पर उसके प्रयोग का निश्चय हुआ। इन नौ में से एक हैरी भी था, जिस कारण कुछ समय के लिए आशा बँधी। कारविल के डाक्टरों ने कुष्ठ-रोग की चिकित्सा के बहुत-से प्रयोग किये थे, जिसमें एक प्रयोग ज्वर उभारकर चंगा करने का था। यह प्रसिद्ध किया गया था कि इस प्रयोग से सभी प्रकार के रोगी चंगे किये जा सकेंगे। इस प्रयोग का खब्त समाप्त हो गया था, तो अब सल्फा औषधियों के प्रयोग की बारी आई और डाक्टर जो इस प्रयोग के लिए बहुत उत्सुक थे।

मैं डरी हुई थी, क्योंकि मैं जानती थी कि सल्फा औषधियाँ कुछ

जहरीली और खतरनाक भी होती हैं। परन्तु हैरी हठ पकड़े रहा और बोला, "मुझे किसी औषधि से लाभ की थोड़ी ही आशा हो तो भी मुझे प्रयोग करना है।"

मेरी आशंका के अनुसार मुझे चिकित्सा के दुष्परिणाम दिखाई देने लगे। हैरी के स्नायु बहुत उत्तेजित हो गये, और हुल्लड़ से वह घबराने लगा। तो भी उसके मुख और नाक की दशा बहुत कुछ सुधरी। कुछ सप्ताह पश्चात् उसकी आँखें लाल हो गईं, उनमें कठिन पीड़ा होने लगी और उसे ज्वर भी चढ़ आया। यह सब औषधि के उपद्रव थे। वह अस्पताल में भरती हुआ। इसी प्रकार जिन नौ पर प्रयोग चल रहा था उनमें छः और भी अस्पताल में भरती हुए। जब औषधि का विषैला प्रभाव इतना भारी दिखाई दिया कि लम्बी अवधि तक उसका प्रयोग असम्भव माना गया, तब इस औषधि का प्रयोग बन्द हुआ।

जब औषधि देनी बन्द हुई तो आँख का कष्ट समाप्त हुआ। परन्तु मुख और नाक की दशा में जो सुधार हुआ था, वह भी समाप्त हुआ। क्रमशः उसकी दशा पहले जैसी हो गई।

● ● ●

जब हैरी कुछ अच्छा होने लगा तो हम फिर अपने विभिन्न मनोरंजनों में यथासम्भव भाग लेने लगे। हम चलचित्र देखने जाते, गोष्ठियों में सम्मिलित होते, और अन्य रोगियों से मिलने जाते। हैरी कोई काम नहीं कर सकता था, तो दस डालर मासिक वेतन पर वह रोगी-संघ का मन्त्री बना दिया गया और मैं अनुपस्थित कर्मचारियों की एवजी करके थोड़े से डालर प्रतिमास बना लेती। यों हम दोनों मिलकर अपना काम चला लेते। सीमेंट, पत्थर की रोड़ी और लोहे की सहायता से नये मकान बन रहे थे। जब ऐसा ही एक मकान बन गया, तो हैरी के मना करने पर भी मैंने उसके उपरले खण्ड पर पन्द्रह डालर प्रतिमास के

हिसाब से नौकरानी का काम करना स्वीकार कर लिया, और वहीं रहने भी लगी।

"लकी विला" में हमें शरण मिलती रही। उसके पड़ोस ही में "विट्स एण्ड" नाम से स्टैनले ने एक कुटी बना ली थी, तो उससे मिलने भी हम अक़सर चले जाते थे। जब स्टैनले दृष्टिहीन जीवनचर्या का आदी हो गया, तो रोगियों की स्थिति सुधारने की ओर उसके विचार केन्द्रित हुए। उसने कुष्ठ के प्रसिद्ध विशेषज्ञों के वे सब लेख जमा किये, जिनमें इस रोग के संक्रमण की निर्बलता पर जोर दिया गया था। उसने बहुत से प्रामाणिक विवरण भी इकट्ठे किये, जिनमें गोली से मारने की धमकी देकर जंजीरों में बंधे रोगी कारविल लाये गये या जिनके साथ अपने ही सार्वजनिक अस्पतालों में ऐसा व्यवहार किया गया, मानो वे पागल कुत्ते हों। हम निरन्तर ऐसे ही प्रश्नों पर वाद-विवाद करते रहते—जैसे रोग में खराबी क्या है, रोग से अधिक भीषण उसका कलंक है, तो इस कलंक के शिकार हम क्यों बनाये जाते हैं।

अन्ततः स्टैनले अपना धैर्य बनाये न रख सका। इस कलंक से लड़ने का एक ही मार्ग था, और वह था उसके विरुद्ध व्यापक प्रचार। उसके रोग के कारण 'स्टार' नामक पत्र का निकलना बन्द हो गया था। उसने इस पत्र को फिर निकालने का निश्चय किया। वह आँखों से वंचित था और हाथों से भी, परन्तु असीम उत्साह से वह अपने काम में जुट गया।

सितम्बर १९४१ में 'स्टार' का नया संस्करण निकला। नाम के नीचे शीर्षक था, "हैंसन रोग पर सत्य के प्रकाश का प्रकाशक।" इस बार वह कारविल के रोगियों के लिए ही नहीं प्रकाशित हुआ। प्रकाशन में स्टैनले का यह प्रयत्न निहित था कि रोग के प्रति भय का जो आवरण परम्परा से चला आ रहा था, उसका निराकरण हो, और वह पुराने रोगों की सूची में सम्मिलित किया जाये, जहाँ उसे वास्तव में रहना चाहिए।

यह एक नया संघर्ष था, जिसके थोड़े ही संचालक थे, जिनमें अधिकांश बीमार रहकर भी अस्पताल के कामों में लगे हुए थे। सम्भवतः स्टैनले को ही यह पता था कि उसका संघर्ष कहाँ तक सफल होगा।

● ● ●

हैरी की टाँगें अब इतनी सूज गई थीं और उनमें घाव इतने बढ़ गये थे कि चिकित्सा के लिए अपनी कुटी से अस्पताल तक चलकर जाना उसके लिए असम्भव हो गया। परन्तु इससे भी भारी धक्का मुझे तब लगा, जब मैं अचानक उसके कमरे में पहुँच गई, और उसे अपनी बाँह खोले हुए एक नये धब्बे पर ग़ौर करते देखा। यह उसी बैंजनी रंग का भद्दा-सा धब्बा था, जो पहले उसके पैर में प्रकट हो चुका था। मैं समझ गई कि कुछ ही समय में उसकी बाँहें भी इसी प्रकार पक जायेंगी। वह मुझसे कुछ बोले कि मैं मानसिक पीड़ा से विह्वल होकर रोती हुई भागी और अपने कमरे में जा छिपी।

मैं एक लम्बे समय से आशा-ही-आशा में जी रही थी, परन्तु अब मेरी आशाएँ टूट गईं। रोते-रोते मैं प्रार्थना के शब्द ढूँढ़ने लगी। मैंने प्रार्थना की कि मुझे अपना अन्धकारमय भविष्य अब दिखाई देने लगा है, मुझे यथेष्ट सहन-शक्ति दो।

मेरी भी दशा अब बिगड़ती जा रही थी, मेरे मस्तक और ठोढ़ी पर गुलाबी धब्बे प्रत्यक्ष होने लगे थे। जब कभी हमारे परिवार के सदस्य आते तो आशा और प्रसन्नता की मुद्रा बनाये रखने का प्रयत्न मैं बढ़ाती रहती, पाउडर लगाकर मैं अपने धब्बे छिपाती और कठिन-से-कठिन ग्रीष्म में लम्बी आस्तीन की कमीज पहनकर हैरी अपना बढ़ता रोग छिपाने का प्रयत्न करता। माता-पिता को यह आभास होने देना मैं सहन न कर पाती कि हमारा लम्बा संघर्ष अब जीवन के साथ समाप्ति के निकट है।

चामत्कारिक औषधियों की झूठी आशाएँ एक-एक करके मुरझा

चुकी थीं। मुझे डर था कि जब तक वास्तव में कोई चामत्कारिक औषधि आयेगी, उसके पहले ही हैरी चिकित्सा के योग्य न रह जायेगा। परन्तु डॉक्टर जो को एक और सुझाव दिखाई दिया। उन्होंने कहा, "प्रोमिन (Promin) का प्रयोग बाकी रह गया है।" इस प्रकार अक्तूबर १६४१ से नित्य हैरी को प्रोमिन की सुइयाँ लगने लगीं।

बड़े दिन तक औषधि का कोई प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं हुआ। परन्तु वर्ष की अन्तिम संध्या से उसकी आँखें लाल हो गईं और उनमें कठिन पीड़ा होने लगी, जिस कारण वह पलंग ही पर लेटा रहा। मैं आधी रात तक उसके कमरे में रही। उसके शरीर का ताप बढ़ता गया और वह बहुत शिथिल दिखाई देने लगा। बहुत से रोगी पुराने वर्ष को भगाने के लिए नये नाच-घर में नाच रहे थे। नृत्य-वाद्य के स्वर हमें सुनाई दे रहे थे और मुझे याद है कि मन में निराशा तथा भय के कारण आनन्द-दायक स्वर भी कितने दुःखदायी लग रहे थे।

प्रातःकाल मैं जल्दी ही उठी और भागकर उसके पास पहुँची। उसका चेहरा बहुत लाल होकर लगभग दूना सूज गया था और उसके शरीर का ताप १०४ डिग्री तक पहुँच गया था। डॉक्टर जो ने प्रोमिन बन्द कर दिया और सल्फाथियाज़ोल (Sulfathiazole) की टिकियाँ लिखीं। मैंने बड़े ध्यान से औषधि की खुराकें उसे खिलाईं और कई घण्टे तक बैठी हैरी के चेहरे की सूजन और लाली बढ़ती देखती रही, यहाँ तक कि उसे पहचानना असम्भव हो गया। उसके परिवार का कोई भी सदस्य इस हालत में उसे पहचान नहीं सकता था।

मैं आदेश के अनुसार खुराक-पर-खुराक देती चली गई और भगवान् से प्रार्थना करती रही। अन्ततः मैंने लाली और सूजन को कम होते देखा। औषधि के प्रभाव की भयानकता रुक गई और हैरी का सूजा चेहरा फिर मानव जैसा दिखाई देने लगा।

एक सप्ताह के भीतर हैरी पलंग से उठकर चलने-फिरने लगा। उसकी टाँगें काँपती अवश्य थीं, परन्तु कई महीनों तक जो उसकी

दशा रही थी उसमें प्रत्यक्ष आशाजनक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। जब औषधि के प्रभाव से उत्पन्न सूजन समाप्त हो चुकी, तो हमें दिखाई दिया कि जो बड़े-बड़े घाव बहुत दिनों से खुले हुए थे, वे भी अब भरने लगे हैं।

सल्फोन प्रोमिन (Sulfone Promin) शुरू करने के दो महीने बाद ही हैरी में यह परिवर्तन प्रत्यक्ष हुआ।

तब हमें पता लगा कि जिस चमत्कार की हम आशा लगाये थे, वह हमें प्राप्त हो गया है।

● ● ●

हैरी पूर्ण रूप से रोग-मुक्त न हो पाया था कि डाक्टरों ने उसे चपरासियों का जमादार नियुक्त कर दिया। इस काम पर उसे नित्य तीन-चार घंटे हाजिरी देनी पड़ती थी और सत्तर नौकरों के काम की निगरानी के लिए उस पर दिन के चौबीसों घंटों की जिम्मेदारी थी। मैंने मना किया, क्योंकि मैं चाहती थी कि वह आराम करे। परन्तु हैरी को काम की फिक्र थी और डाक्टर काम के लिए हैरी को पसन्द करते थे। यों मेरे प्रतिवाद की किसी ओर से सुनवाई नहीं हुई। हैरी तथा अन्य रोगियों पर प्रोमिन के प्रयोग की सफलता देखकर डाक्टर जो इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मुझे भी इस चिकित्सा के पक्ष में परामर्श दिया। मेरे शरीर पर नये धब्बे प्रत्यक्ष हो गये थे, और रक्त की जाँच करने पर पता लगा कि उसमें कुष्ठ के कीटाणु पहले से अधिक हैं। यों प्रतिदिन अर्थात् सप्ताह में छः बार मुझे सुइयाँ लगने लगीं। हमारे मध्य जिन-जिन पर प्रोमिन का प्रयोग हुआ, उन सबको चामत्कारिक लाभ हुआ—कुछ को दो-तीन महीने के भीतर, बाकी को छः महीने के भीतर। हममें नये जीवन का संचार हुआ। अब हम विवश होकर काम न करते, काम करने में हमें उमंग जैसी जान पड़ने लगी।

थोड़े ही दिनों के भीतर लड़ाई के एक कारखाने में काम पाने पर

मिस्टर साबे ने कारविल छोड़ दिया और 'लकी विला' के भाग्यशाली स्वामी हम दोनों हो गये। महासमर में विजय के उपलक्ष में अस्पताल के भीतर जगह-जगह वाटिकाएँ बनने लगी थीं। दिन का काम समाप्त करके हैरी अपनी वाटिका की सेवा से मन बहलाने लगा। वाटिका से निकलीं सब्जियाँ स्वाद में हमें बेजोड़ लगतीं और ग्रीष्म के संध्याकाल मैं विला के छोटे रसोईघर में टमाटर, मकई और सेम डिब्बों में भरकर बन्द करती।

हैरी का वेतन अब ५० डालर मासिक हो गया था और कारविल के रोगियों का यह सर्वोच्च वेतन था। तुरन्त ही हम साढ़े सैंतीस डालर बचाकर प्रतिमास 'वार-बांड' खरीदने लगे। उस समय की यह बहुत ही छोटी सेवा रही। अन्य रोगी भी वार-बाँड खरीदने लगे और इनका जोड़ प्रतिमास ३००० डालर तक पहुँचा।

जब हैरी की चाल में लचक और फुर्ती आने लगी और मैं उसे मुस्कराते देखती, तो बहुत ही प्रफुल्लित होती। उसका स्वास्थ्य उन्नति कर रहा था, और मैं भी चंगी हो रही थी। सुरक्षित जंगल की सीमा पर हम जो वाटिका बनाये हुए थे, वह अपनी न थी; परन्तु यहाँ हमें वह आनन्द मिला जो पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था। भगवान के प्रति मेरी असीम कृतज्ञता की भावना उमड़ती रही। उसकी देन से उऋण होना मैं असम्भव मानने लगी।

अभी हम पूर्ण रूप से रोगमुक्त नहीं हुए थे। परन्तु जब से हम रोग-ग्रस्त हुए थे, तब से पहली बार हमें यह जान पड़ने लगा था कि हम चंगे हो रहे हैं। सो पहली बार उस भावी की योजना भी बनाने लगे, जब रोगमुक्त होकर हम स्वतन्त्र हो जायेंगे।

अब हमें जान पड़ा कि सुखी जीवन के लिए हमें क्या चाहिए था। हम अकसर एक-दूसरे से आशापूर्वक कहते थे कि यदि हमें ऐसी ही कोई भूमि मिल जाये जहाँ हम अपने फल और सब्जियाँ पैदा कर सकें तो हम कितने सुखी हों। हम पत्रिकाओं से ऐसे छोटे घरों के चित्र काट

लेते जिनके नमूने पर हमें अपना भावी घर बनाना था। अपने स्वप्नों को चरितार्थ करने के लिए ही हम पैसे बचाते और बाँड खरीदते।

● ● ●

कारविल में हमारे अगले थोड़े से वर्ष यथेष्ट व्यस्त और आशापूर्ण रहे। स्थिति दिन-प्रतिदिन सुधरती गई। सल्फा-चिकित्सा प्राप्त करने पर रोग-मुक्ति की संख्या बढ़ने लगी। इधर रोग की चिकित्सा में सफलता बढ़ने लगी, तो उधर देश में स्टैनले-संचालित 'स्टार' पत्र द्वारा लगातार प्रचार से कुष्ठ-रोग के विषय में अन्धविश्वास कम होने लगा और हम दोनों स्टैनले की सेवा में सहयोग देते रहे। किसी अंक का एक लेख इस प्रकार समाप्त हुआ—यह पत्र और यहाँ की डाक अस्पताल से निकलने के पहले दवा से शुद्ध कर लिये जाते हैं। यह अंध-विश्वासियों की भावना की रक्षा के लिए ही किया जाता था, यद्यपि यहाँ छूत की कोई बात न थी और वैज्ञानिक दृष्टि से इसकी कोई आवश्यकता न थी।

चिकित्सा-सम्बन्धी लेखों से अपने उद्देश्य के अनुकूल अंश स्टैनले 'स्टार' में उद्धृत कराता। इनमें एक लेख अमरीका के प्रसिद्ध मेयो चिकित्सालय के डाक्टर एफ० सी० लेंड्रम का लिखा हुआ था, जिसमें "कुष्ठ-रोग का दुःखदायक नाम" शीर्षक देकर, उन्होंने इस रोग का उल्लेख सरकारी विज्ञप्तियों में 'हैंसन रोग' के नाम से करने की हिमायत की थी। लेख का आवश्यक अंश इस प्रकार था : "हमारे मेयो चिकित्सालय में डाक्टर रोगियों से कैंसर, यक्ष्मा और आतशक जैसे रोगों की बात करते नहीं हिचकिचाते, परन्तु 'कुष्ठ' शब्द का उनसे उच्चारण नहीं करते बनता। नाम से जितने भय का संचार होता है, उसके देखते रोग की भीषणता चिकित्सा की दृष्टि से बहुत कम है, क्योंकि संक्रामक रोगों में यह सबसे कम संक्रामक है। किसी भी साधारण चिकित्सालय में इसकी चिकित्सा संभव है। नाम से लोग भयभीत अवश्य होते हैं, परन्तु यक्ष्मा जैसे रोग से यह कहीं कम संक्रामक है।

"इस समय संयुक्त राज्य अमरीका में जितने कुष्ठ-रोगी अस्पतालों में चिकित्सा करा रहे हैं, उनके दूने अपना रोग छिपाये स्वतन्त्रता से घूमा करते हैं। इस दुर्व्यवस्था का कारण रोग का भयावह नाम ही है। समाज से वहिष्कृत होने के भय से रोगी अपनी दशा छिपाये रहते हैं। उन्हें समाज से मुँह छिपाना मंजूर है, बहिष्कृत होना नहीं।"

एक ओर प्रोमिन अपना प्रभाव हम पर कर रही थी और दूसरी ओर 'स्टार' द्वारा हमें समाज-सेवा का सन्तोष था। इस प्रकार हम चंगे हो रहे थे, और अपना आत्माभिमान भी हमें वापस मिल रहा था। इसके अतिरिक्त अपने प्रचार के फल भी हमें प्रत्यक्ष होने लगे थे। हजारों डाक्टर, परिचारिकाएँ, पादरी, विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और बहुत से साधारण व्यक्ति भी प्रतिवर्ष हमारा अस्पताल देखने आने लगे। प्रसिद्ध गवैये और तमाशे वाले भी आकर हमारा मनोरंजन करने लगे।

● ● ●

सन् १९४५ में हैरी की रक्त-परीक्षाएँ नकारात्मक होने लगीं और हमारे हृदयों में आशा का संचार फिर होने लगा। प्रतिमास धड़कते हृदय से परीक्षा के फल की प्रतीक्षा होती, और उत्तर सुनने के पहले मुख सूख जाता। छः परीक्षाएँ लगातार नकारात्मक निकलीं, परन्तु सातवीं में थोड़े से कीटाणु दिखाई दे गये, जिसके अर्थ हुए कि अब हैरी को नये सिरे से लगातार १२ नकारात्मक परीक्षा-फल मिलने चाहिए थे।

अब हमें कारविल में भरती हुए १७ वर्ष से अधिक हो गए थे।

अगले महीने जनवरी १९४६ में हैरी का परीक्षाफल फिर नकारात्मक निकला, और मार्च में मेरी रक्त-परीक्षा भी नकारात्मक दिखाई दी। यों नकारात्मक परीक्षाफल में हम दोनों की उत्तेजक दौड़ प्रारम्भ हुई, हैरी दो फल आगे और मैं उसके पीछे। हम दोनों एक-दूसरे की जीत की आशाएँ बाँधने लगे। कुष्ठ-रोग के प्रत्यक्ष लक्षण से हम दोनों मुक्त हो चुके थे।

परन्तु हम अपनी वैयक्तिक समस्याएँ भूल गये, जब एक ऐसी घटना घटी जिससे वह सब भलाई खतरे में आ गई, जो स्टैनले अपने 'स्टार' द्वारा सम्पन्न कर चुका था। समाचारपत्रों में यह सूचना प्रकाशित हुई कि मेजर हैंस जार्ज हार्नबास्टेल की पत्नी गेट्रूयूड हार्नबास्टेल को फिलीपीन्स में कुष्ठ-रोग हो गया है। वह कारविल भेजी जा रही हैं, और उनके पति ने यह सूचना दे दी थी कि अपनी पत्नी के साथ वह भी आजीवन कारविल के बन्दी रहेंगे।

वर्षों से इतनी सनसनी पैदा करनेवाली खबर नहीं प्रकाशित हुई थी। देश के समाचारपत्रों में और रेडियो द्वारा भी कुष्ठ और कारविल के सम्बन्ध में बहुत-सी अनाप-शनाप बातें प्रकाशित और प्रसारित होने लगीं। 'स्टार' के दफ्तर में देश भर के समाचारपत्रों से कुष्ठ सम्बन्धित लेखांश ढेर होने लगे, यद्यपि इनमें अधिकांश भारी अज्ञान से भरे थे। उदाहरणतया सैन-फ्रांसिस्को का एक डॉक्टर यह कहते सुना गया था कि श्रीमती हार्नबास्टेल के रोगमुक्त होने की आशा उतनी ही की जा सकती है, जितनी नरक की व्यापक जलन में हिम की आशा हो। रोग से मुक्ति तो सम्भव नहीं, केवल उपद्रवों से कुछ रक्षा हो जाती है। यदि मेजर हार्नबास्टेल अपनी पत्नी के साथ रहते हैं, तो उनके भी छूत लगने की शत-प्रतिशत सम्भावना है।

स्टैनले के नेतृत्व में कई सप्ताह तक हम रात-दिन इस दुष्प्रचार के खण्डन की चेष्टा में लगे रहे।

स्टैनले ने देखा कि कुष्ठ-रोग के सम्बन्ध में सत्य के प्रचार करने का यह सुवर्ण अवसर है। इसलिए उसने एसोसियेटेड प्रेस से एक लेखक और फोटोग्राफर कारविल का निरीक्षण करने के लिए भेजने का आग्रह किया। जब एसोसियेटेड प्रेस के भेजे हुए प्रतिनिधि यहाँ आये, तो सब-कुछ देखकर बहुत चकित और प्रसन्न हुए। इनके निरीक्षण के परिणामस्वरूप एक सुन्दर तथा सचित्र लेखमाला प्रकाशित हुई, जिसमें रोगियों के चित्र ऐसे ढंग से छपे कि वे पहचाने न जा सकें।

हार्नबास्टेल के कारण चर्चा फैली तो संयुक्त राज्य अमरीका के स्वास्थ्य विभाग से भी पत्रों में रोग के विषय में सच्ची जानकारी देने के लिए कई लेख प्रकाशित हुए। इस प्रकार कारविल में हमारे लिए ये दिन बहुत व्यस्त और उमंगपूर्ण रहे।

हार्नबास्टेल दम्पति को जो देखता सो उनसे प्रेम करने लगता। श्रीमती हार्नबास्टेल स्वस्थ तथा प्रसन्नवदन दिखाई देती थीं और बात करते मुस्कराती थीं। प्रशिक्षित दृष्टि से ध्यानपूर्वक देखने के पश्चात् ही उन पर रोग का प्रभाव दिखाई दे सकता था। उनकी निष्कपटता उनके बहुत काम आई, क्योंकि ज्यों ही उन्हें अपने रोग का पता लगा वह कारविल आवश्यक चिकित्सा के लिए आ गईं। और वह ऐसे अच्छे समय पहुँचीं, जब एक नया प्रयोग चालू होने को था।

पेनिसिलीन (Penicillin) नामक एक कीटाणु-नाशक औषधि का प्रयोग कारविल के सात रोगियों पर किया गया था। परन्तु कोई लाभ नहीं दिखाई दिया था। आँख की पीड़ाजनक लाली जो बहुत से रोगियों को हो जाती थी, इस औषधि से अवश्य रोकी जा सकी, और यों रोगी अंधे होने से बच सके। अब कारविल के चिकित्सक स्ट्रेप्टोमाइसीन (Streptomycin) नामक दूसरी कीटाणु-नाशक औषधि का प्रयोग प्रारम्भ करने की तैयारी में लगे थे। श्रीमती हार्नबास्टेल सहित १० रोगी इस औषधि के प्रयोग के लिए चुने गये। परन्तु शीघ्र अच्छा फल प्राप्त करने की आशा से इस औषधि के साथ डायासोन (Diasone) नामक औषधि का भी प्रयोग चालू किया गया, जो प्रोमिन के समान एक सल्फा-औषधि है।

श्रीमती हार्नबास्टेल की शक्ति को इस प्रयोग के दौरान में कोई हानि नहीं पहुँची। उन्होंने 'स्टार' पत्र की सेवा करना तुरंत प्रारम्भ कर दिया। वह भली प्रकार जानती थीं कि वह एक शिक्षाप्रद प्रचार की केन्द्रीय पात्र हैं। इसलिए वह कुष्ठ-रोग के संबन्ध में सत्य का प्रकाश फैलाने के उद्योग में अपना सहयोग देने के लिए प्रस्तुत हुईं। उनके

पति को लिखने और विज्ञापन का अनुभव रह चुका था। अस्पताल से एक मील दूर उन्होंने एक कमरा किराये पर ले लिया। परन्तु प्रतिदिन प्रातःकाल सात बजे वह अस्पताल आते और हम लोगों के साथ रात होने तक काम करते।

हार्नबास्टेल दंपति के व्यक्तित्व से कारविल की जीवनचर्या में चाव और उमंग की मात्रा बढ़ गई। श्रीमती हार्नबास्टेल को नित्य पत्रकारों से लेखों की प्रार्थना के लिये ढेरों पत्र मिलते। उनके आकर्षण से कारविल के दर्शकों की संख्या बढ़ गई। जो रोगी दर्शकों से मिलते झेंपते थे, वे भी परिवर्तित वातावरण से प्रभावित होकर अतिथियों को निमन्त्रण देकर उनका स्वागत करने लगे। कारविल-निरीक्षण की योजना कार्यान्वित हुई। कभी कोई दर्शक पथप्रदर्शिका से पूछ बैठता, "क्या आप यहाँ काम करते डरती नहीं?" तो प्रदर्शिका कहती, "मैं स्वयं रोगग्रस्त हूँ।"

इस प्रकार हार्नबास्टेल दंपति हमारे उद्योग के वरदान होकर हमें प्रत्यक्ष हुए। उनके साहस और उसके फलस्वरूप सार्वजनिक चर्चा के प्रसार से हमारे संघर्ष को सफलता का मोड़ मिला। मेरे लिखते समय (१६५० में) गेर्ट्रयूड हार्नबास्टेल रोगमुक्त हो चुकी हैं, परन्तु कुष्ठ-रोग की सच्ची जानकारी के प्रचार में वह लगी हुई हैं।

न्यूयार्क के "टाइम्स" समाचारपत्र में उनका एक पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने कारविल मैरीन अस्पताल के वर्गीकरण और प्रबन्ध-विषयक असंगतियों की आलोचना की। इस पत्र पर १६ नवम्बर, १६४६ के अंक में "असत्य का स्थायित्व" शीर्षक से एक संपादकीय लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें और बातों के अतिरिक्त कहा गया :

कारविल को जिस अपमान का वातावरण प्राप्त है और इस वातावरण में जिस प्रकार वहाँ के अधिकारियों और कर्मचारियों को सेवा करनी पड़ रही है, वह किसी और रोग के चिकित्सालय में असहनीय होती। रोग की भीषणता और छूत के असत्य का भंडाफोड़ हो चुका है। कारविल चिकित्सालय को स्थापित हुए ५३ वर्ष हो चुके हैं।

इतने वर्षों के भीतर उसके किसी भी कर्मचारी को रोग की छूत नहीं लग सकी है। वैज्ञानिक आधार पर तुरंत ही सुधार होना चाहिए। छूत के हौवे के कारण रोग, रोगी और चिकित्सालय के विषय में जो नियम पुराने समय से बने हुए हैं उनका तुरंत संशोधन होना चाहिये। रोग साध्य है, तो इसकी चिकित्सा अंधविश्वास के आधार पर नहीं, वैज्ञानिक आधार पर होनी चाहिए।

हम दोनों के परीक्षाफल फिर नकारात्मक होने लगे, तो भविष्य के विषय में हमारी चेतना और चिन्ता बढ़ने लगी, क्योंकि हम जानते थे कि नकारात्मक परीक्षा-फलों का एक वर्ष पूरा होने पर रोगमुक्त के सामने नई और अकसर उतनी ही कठिन समस्याएँ आ जाती हैं। हम अपनी मौलिक आवश्यकताओं के सम्बन्ध में अधिकाधिक चिंतित होने लगे। सबसे पहले हमें एक मोटर की आवश्यकता थी, जिस पर बैठकर हम रहने का कोई ऐसा स्थान ढूँढ़ लें, जहाँ का जलवायु अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ हो, और जहाँ हमें रोजी का सहारा भी मिल जाये। मैंने एक छोटी-सी तुकबंदी में हैरी से ऐसे स्थान पर बसने की आकांक्षा प्रकट की थी, जो पेड़ों से आच्छादित किसी जलधारा के निकट हो। हैरी मुझसे सहमत था।

हम चाहते थे कि वह स्थान ऐसा हो जिसे हम अपना ही कह सकें। हमारे जीवन के बहुत से वर्ष बेकार बीत चुके थे, तो हम चाहते थे कि हमें कितना ही छोटा काम करना पड़े, हम उसमें सफल होने का प्रयत्न करें। हम परिश्रम के लिए आतुर थे और यही आशा लगाये थे कि कोई ऐसा धन्धा मिल जाये, जिसमें हम दोनों एक-दूसरे के साथ रहकर काम कर सकें। हम एक-दूसरे के साथ थोड़े से नियत घण्टों के लिए ही नहीं रहना चाहते थे, हमारी आकांक्षा तो प्रतिदिन के चौबीसों घण्टे एक-दूसरे के साथ रहने की थी।

हमारे दैनिक जीवन के वे क्षण हमें सर्वांग सुन्दर लगते, जिनमें हम अपने भविष्य के विषय में बातें करते, योजना बनाते और एक-दूसरे का मुख देखते। अपनी योजनाओं के लिए सामग्री इकट्ठी करने के फेर

में हम दोनों प्राय: प्रतिदिन कोई नई पुस्तक, समाचार की कतरन या लेख सम्मिलन के अवसर पर एक-दूसरे को दिखाने के लिए जमा करते रहते। मिस्टर सावे के 'लकी विला' में ललिता-मारविन दम्पति रहने लगे थे। हम दोनों थोड़ी देर के लिए एक-दूसरे से इसी विला में मिलते, और बड़ी उमंग से अपनी योजनाओं पर बातें करते। ललिता और मारविन नवदम्पति ही थे। हम दोनों बहुत दिनों के ब्याहे थे और अधेड़ हो चुके थे; दोनों हमारी सनक भरी बातों को स्नेहपूर्वक सुनकर मुस्कराते रहते।

स्टैनले बहुत दिनों से कुष्ठ-रोग पर एक राष्ट्रीय परामर्श समिति की नियुक्ति का हार्दिक प्रयत्न कर रहा था। इन्हीं दिनों उसकी मुराद पूरी हुई। सर्जन-जनरल टामस परन ने प्रसिद्ध डाक्टरों, स्वास्थ्याधिकारियों और जनता के प्रतिनिधियों की एक समिति रोगियों से संबंधित पुराने नियमों के संशोधन के लिए नियुक्त की।

जब राष्ट्रीय परामर्श समिति ने हमारी राय प्राप्त करने के लिए कारविल यात्रा के विचार की सूचना दी, तो रोगियों की संयुक्त समिति सुधारों के विषय में परामर्श की योजना बनाने बैठी। कुष्ठ-रोगियों के प्रति बर्ताव के सम्बन्ध में जब हमारी बैठकों में विचार हुआ, तो मैंने यह सुझाव दिया कि ऐसे रोगियों को समाज से अलग कर देने का नियम हट जाना चाहिए। इस विषय पर मेरा विचार गहरा था और दृढ़ भी। क्योंकि कारविल के अर्ध-शतीय लेखे की झलक से ही सिद्ध हो जाता है कि छूत का नियम असफल रहा है। जो रोगी कारविल में भरती हुए उनमें अधिकांश रोग की पहचान होने से कम-से-कम चार वर्ष पहले से रोग-ग्रस्त रहे थे। इस प्रकार रोग की छूत फैलती होती तो छूत फैलाने का प्रत्येक को यथेष्ट अवसर था। कई रोगी तो वर्षों तक डाक्टरों और चिकित्सा से बचते रहे, क्योंकि उन्हें कारविल में बन्द किये जाने का भय रहा।

जो लोग छूत के रूढ़िग्रस्त नियम की रक्षा का हठ करते हैं, उन

पर एक भारी नैतिक दायित्व आता है। जबरदस्ती कारविल में बन्द किये गये मानव अपने जीवन संगी-संगिनियों, बच्चों तथा मित्रों से छूट जाते हैं, उनका समाज में वर्षों के परिश्रम से प्राप्त सम्मान और आर्थिक स्तर इस प्रकार नष्ट कर दिया जाता है और वे कहीं के नहीं रहते; तो इस अमानवीय नियम के समर्थक नियम के परिणामस्वरूप पाप के भागी होते हैं। छूत से बचाने के बेहतर ढंग भी हो सकते हैं। एक ढंग यह है कि जहाँ रोग का प्रकोप बना रहता हो, वहाँ उसकी चिकित्सा का भी यथेष्ट प्रबन्ध हो।

यथेष्ट वाद-विवाद के पश्चात् हमने जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किये, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—सरकारी लिखा-पढ़ी में 'कुष्ठ' शब्द के पहले 'हैंसन' का प्रयोग हो। कुष्ठ-रोगियों के लिए ऐसी सवारियाँ वर्जित हैं जिनमें सभी लोग सफर करने के अधिकारी हों। जहाँ-जहाँ ये नियम हों, वहाँ से वे काट दिये जायें। चिकित्सा के लिए अस्पताल खोले जायें। जो रोगी प्रचलित नियम के अनुसार कारविल में बन्द है, उनके आश्रितों की परवरिश का प्रबन्ध किया जाये। विवाहित रोगियों को जोड़े सहित रहने योग्य निवास-कक्षों का प्रबन्ध हो। ऐसे सर्जन की नियुक्ति हो, जो प्लास्टिक सामग्री की सहायता से अंगहीनों की प्रकट में अंग-पूर्ति कर सके। रोग के विषय में खोज की योजना बढ़ाई जाये।

राष्ट्रीय परामर्श समिति को हमारे प्रतिवेदनों की रूप-रेखा युक्तिपूर्ण लगी। कुछ प्रतिवेदनों को कार्यान्वित करने के लिए भी समिति तत्पर हुई। हमें अपनी योजना की सफलता की आशा कुछ तात्कालिक सुधारों से प्रत्यक्ष हुई, जो इस प्रकार थे—अस्पताल के काम में लगे रोगियों के वेतन बढ़ा दिये गये। रोगियों से मतदान का अधिकार छीन लिया गया था, बहुत दिनों से इस पर असन्तोष था, सो यह अधिकार उन्हें वापस मिला। कारविल में स्वास्थ्य-सेवी परिचारिकाओं का प्रशिक्षण भी चालू हुआ।

इस युद्ध में स्टैनले की विजय प्रारम्भ हो गई। यह दृढ़-संकल्प

पुरुष रोगी और दृष्टिहीन होने के बावजूद एक नाम के चारों और रूढ़ि और अन्धविश्वास से बने छः हजार वर्ष पुराने कोट के गिराने के विजय-युद्ध का नेतृत्व कर रहा था। इस युद्ध में हमारा भी एक छोटा-सा भाग था, और दिन-प्रतिदिन स्टैनले का विजय-मार्ग प्रशस्त होते देख हम आनन्द से विभोर होते।

• • •

सन् १९४६ में अस्पताल के रोगियों की मृत्यु-संख्या स्थापना-काल मे निम्नतम रही और रोग-मुक्तों की संख्या, अर्थात् ३६, इसी प्रकार अपने उच्चतम स्तर पर पहुंची। यह संख्या प्रोमिन डायासोन (Promin Diasone) के प्रयोग के पहले वर्षो की अपेक्षा चौगुनी थी। जिन रोगियों को जवाब मिल चुका था, वे भी रोग-मुक्त होने की आशा करने लगे।

दूसरी दिसम्बर को हैरी अपनी बारहवीं और अन्तिम नकारात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। जो असम्भव माना जाता था, वही १९ वर्ष बाद चरितार्थ हुआ। हैरी रोगमुक्त होकर अब कारविल छोड़ सकता था।

रोग से निरन्तर २० वर्ष तक लड़ते रहने के परिणामस्वरूप शरीर पर समर-स्मारक तो रह जाने ही थे। उसके हाथों की कुछ पेशियाँ नष्ट हो चुकी थीं, जिस कारण वे किंचित् स्पर्शशून्य हो गये थे। कठिन परिश्रम करना अब उसके लिए असम्भव था। परन्तु सन्तोषजनक धन्धा ढूँढ़ने के लिए हमने एक वर्ष के लिए यथेष्ट पैसा बचा लिया था।

जब तक मैं कारविल छोड़ने योग्य न होऊँ, तब तक हैरी को अलग होना मंजूर न था, और मेरे सामने दो परीक्षाएँ और थीं, अर्थात् दो महीने, जिनमें हमारी चिन्ता बढ़ती ही जाती थी। इसलिए वह अपने जमादारी के काम पर जमा रहा। इधर हम दोनों में किसी ने भी अपने परिवारों के किसी भी सदस्य को अपनी परीक्षाओं के नकारात्मक होते रहने का शुभ समाचार नहीं भेजा। हम दोनों के स्वप्न पिछले

बीस वर्षों के भीतर इतनी बार भंग हो चुके थे कि अपने दुःख के साथ सम्बन्धियों को लपेटने का जुआ हमें मंजूर न था।

परन्तु मेरी ग्यारहवीं परीक्षा नकारात्मक निकली, और किसी प्रकार एक महीने तक अन्तिम परीक्षा के लिए जीवित रही।

तीसरी फरवरी सन् १९४७ को बारहवीं परीक्षा के लिए मैं अनुसन्धानालय गई। विशेषज्ञ ने दो प्लेटों पर मेरे रक्त की बूँदें लीं, और मैंने अपने मुख पर किसी प्रकार की चिन्ता व्यक्त नहीं होने दी। मैं दिन-भर 'स्टार' के दफ्तर में काम करती रही, क्योंकि मैं जानती थी कि काम में लगे रहने से मैं चिन्तामुक्त रह सकूँगी। परन्तु हैरी अनुसन्धानालय का चक्कर लगाता रहा, जब तक रक्त की परीक्षा होकर उसकी रिपोर्ट उसे न मिल गई। रिपोर्ट मिलते ही वह मेरे पास दौड़ता आया। उसके बोलने के पहले ही उसके प्रसन्नमुख से मुझे सूचना मिल गई कि अन्तिम परीक्षा में भी मैं उत्तीर्ण हो गई हूँ।

इस प्रकार कष्ट-कथा के समाप्त होने पर मैंने ईश्वर को हार्दिक धन्यवाद दिया। पहली बार मुझे आभास हुआ कि मैं सदेह स्वतन्त्र हूं। काँपते करों से मैंने अपना शृङ्गारदान निकालकर नाक पर पाउडर लगाया और मुख पर हाथ फेरा। जो रोग अपना जाल मेरे सारे शरीर पर २० वर्ष फैलाये रहा था, उसका एक चिह्न भी कहीं बाकी नहीं रह गया था। परन्तु जीवन-यात्रा के अधिकांश में जो यातनाएँ मुझे भुगतनी पड़ी थीं—अपने या अपने जीवनसंगी के रोग के कारण—उनका प्रतिबिम्ब तो मुखाकृति पर था ही। मैंने कारविल में बहुत-सी जीवन-लीलाएँ अन्त होते देखी थीं। ये लीलाएँ कभी मृत्यु से अन्त प्राप्त करतीं, कभी दूसरे प्रकार भी। हे ईश्वर, मानव-जीवन के कितने नाटक सुखान्त होते, मानव-मान की कितनी रक्षा सम्भव होती, यदि पहले ही सल्फोन औषधियों का आविष्कार हो जाता!

कारविल-निवास के बाकी थोड़े से सप्ताह बहुत आनन्दप्रद रहे। मित्रों ने हमारी रोग-मुक्ति के उपलक्ष्य में बहुत से सहभोज किये।

हमारे पत्र पाकर हमारे घर के लोग बहुत प्रफुल्लित हुए और उन्होंने हमें अपने पास रहने के लिए बुलाया भी। मित्रों के निमन्त्रण भी ढेर होने लगे। इनमें बहुत से ऐसे थे जो 'स्टार' से सम्बन्धित पत्र-व्यवहार के कारण अपने साथी हो गये थे। हमसे उन्हें समझाते न बनता था कि अपने परों के कटने पर हम कितने भी निर्बल हो गये हों, परन्तु हमें अपने ही पैरों के बल खड़े होना और चलना है।

हम जानते थे कि 'स्टार' और उसके शक्तिशाली प्रचार से हमारा सम्बन्ध-विच्छेद होना है। परन्तु हम दोनों प्रसन्न थे, क्योंकि जनता को वास्तविकता का ज्ञान होने लगा था। हम उन दिनों से बहुत दूर निकल आये थे, जब हमारे ही लुइसियाना राज्य में कुष्ठ-ग्रस्त रोगी को शरण देना भी दण्डनीय था—शरणार्थी रोगी, शरणदाता का माता, पिता, पति, पत्नी या आत्मज जैसा निकटस्थ सम्बन्धी ही क्यों न हो। हम समकालीन और भावी रोगियों की ओर से भी निश्चिन्त थे, क्योंकि वैज्ञानिकों ने उन औषधियों का आविष्कार कर लिया था जो इस निर्दय रोग से उन्हें मुक्त करने में समर्थ हैं।

कारविल जीवन के अन्तिम सप्ताहों में हम यह सुनकर और भी आह्लादित हुए कि राष्ट्रीय परामर्श समिति ने हमारे सुझावों के अनुकूल कई सुधारों के लिए सिफ़ारिश कर दी है—कारविल में शरीरक्रिया-सम्बन्धी चिकित्सकों की संख्या बढ़ाई जाये, एक प्लास्टिक सर्जन की नियुक्ति हो, रोगियों को जोड़े सहित रहने की सुविधा मिले, रोगियों को कम अन्तर से छुट्टियाँ मिलें, उनके परिवारों के भरण-पोषण की व्यवस्था हो और कुष्ठ-रोग की जाँच तथा चिकित्सा के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर चिकित्सा-केन्द्र खुलें।

हमने मोटरकार के लिए यथेष्ट पैसे बचा लिये थे, परन्तु इसके आगे हमारी योजनाएँ अनिश्चित ही थीं। तो भी विवाहित जीवन के प्रवेश-द्वार पर खड़े युवती-युवक प्रेमियों के समान स्वतन्त्र जीवन के दैनिक धन्धे भी हर्षप्रद जान पड़े। नगर के सबसे बढ़िया बाजार में हम

अपनी नई गृहस्थी के लिए कौन कौन खरीदारियाँ करेंगे; कितने प्रकार की खाने-पीने की चीजें मोल लेंगे, और इनमें बर्फ में जमाये हुए खाने भी होंगे जिनके विषय में हमने पढ़ा अवश्य था परन्तु जिन्हें देखा न था। दुकानों-दुकानों जाकर खरीदारी में कितना आनन्द आयेगा, कितनी नई-नई वस्तुएँ हम देखेंगे, कितनों की याद वापस आयेगी, और इस प्रकार हमारे जीवन का कोई दिन भी फालतू न रहेगा।

विदा के एक दिन पहले हम दोनों ने एक साथ बस्ती का चक्कर लगाया, और सहरोगियों, परिचारिकाओं तथा डाक्टरों से विदाई लेते चले। फिर संध्या होने पर हम दोनों गिर्जाघर पहुँचे। शान्तिपूर्वक ईश्वर को उसकी असीम अनुकम्पा के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और यह प्रार्थना की कि अस्पताल के संरक्षित जीवन के बाहर जीवन-यात्रा में हमें उसका सहारा सदैव मिलता रहे।

हमने अपनी विदाई का समय किसी को नहीं बताया था। परन्तु मेरी कुटी की संगिनियाँ प्रातःकाल होते ही सावधान हो गईं, ज्यों ही उन्होंने बड़े कमरे में हैरी के पैरों की आहट सुनी। हमारे बाहर निकलते ही हमें विदाई देने के लिए वे द्वार पर इकट्ठी हो गईं।

डाक्टर जो सपत्नीक फाटक पर पहुँच गये और अपनी वाटिका के गुलाबों का सुन्दर गुलदस्ता भेंट करके उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया।

जब हम स्वतन्त्र परन्तु अनिश्चित संसार की ओर बढ़े तो हमने आँसू भरे नेत्रों से काँटेदार तार से घिरे उन भवनों और पेड़ों को नमस्कार किया, जिनके मध्य हम दोनों के जीवन का बहुत बड़ा भाग बीता था। संघर्ष और कष्ट से भरे पिछले बीस वर्ष हमें अब छोटे ही मालूम होने लगे, क्योंकि इनके कठिन अनुभव से हमें मानसिक और आध्यात्मिक निधि प्रचुर मात्रा में मिल गई थी।

हैरी, आँखें सामने किये, मोटर मोड़कर नदी की तटवर्ती सड़क पर घर की ओर जा रहा था।
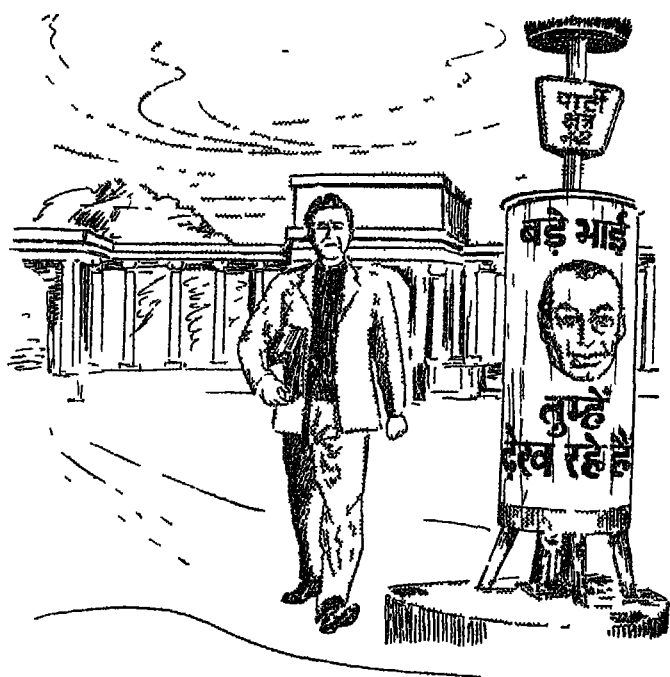
उन्नीस सौ चौरासी

(जार्ज आर्वेल की पुस्तक का सार)

"...*उन्नीस सौ चौरासी* हमारे युग की सबसे उल्लेखनीय पुस्तकों मे से है।...आर्वेल ने...आज के खतरों को परिणति तक ही पहुँचाया है।

"विद्रोह की भावना से...उपन्यास का नायक अपनी डायरी में लिखता है : 'यह कहने की स्वतन्त्रता ही कि दो और दो चार होते हैं, सच्ची स्वतन्त्रता है।' यदि सभी लोग...सत्य का सम्मान करें...तो आर्वेल का १९८४ का पापमय जगत कभी सम्भव न हो सकेगा।"

—"*लाइफ़*" पत्रिका के सम्पादकीय से

उन्नीस सौ चौरासी

अप्रैल का महीना है, सर्दी पड़ रही है, धूप चारों ओर फैली है, दिन के एक बजे हैं। विंस्टन स्मिथ, दुष्ट वायु से बचने के प्रयत्न में, अपनी ठोढ़ी छाती से सटाये 'विजय भवन' के शीशे के दरवाजों से अन्दर जाता दिखाई देता है।

दालान में उबली बन्द गोभी और पुराने चीथड़ों की दरियों की गंध आ रही है। दालान के दूसरे छोर पर दीवार पर एक बड़ा परन्तु रंगीन इश्तिहार लगा हुआ है। इसमें लगभग पैंतालीस वर्ष के एक पुरुष का एक गज से अधिक चौड़े मुख का चित्र है। घनी काली मूँछें हैं और चेहरे की बनावट सुन्दर तथा शक्ति-द्योतक है। विंस्टन सीढ़ियों की तरफ़ बढ़ा क्योंकि लिफ़्ट की उम्मीद करना बेकार था। यों भी लिफ़्ट शायद ही कभी काम करती हो और इस समय तो 'घृणा सप्ताह' की तैयारी में, बचत के सिलसिले में दिन के समय बिजली बन्द रहती थी।

विंस्टन का निवासकक्ष भवन के सातवें खण्ड पर है। उसकी अवस्था ३९ वर्ष है। परन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं। इसलिए वह धीरे-धीरे और कई बार रुककर चढ़ता है। प्रत्येक मंजिल पर दीवार से इश्तिहार का विशाल मुख उसकी ओर निहारता दिखाई देता है। यह चित्र इस प्रकार बना हुआ है कि कोई जहाँ कहीं भी हो, चित्र की आँखें उसका पीछा करती दिखाई देती हैं। इश्तिहार के नीचे छपा है—बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं।

विंस्टन के कमरे में एक यन्त्र लगा है जिसे 'टेलीस्क्रीन' कहते हैं। इस यन्त्र से निकली आवाज और इसके चलते चित्र धीमे तो किये जा सकते हैं, परन्तु यह यन्त्र बन्द नहीं किया जा सकता। निवासकक्ष की दाहिनी दीवार में लगी हुई दूधिया शीशे जैसी धातु की एक आयताकार तख्ती से सरस परन्तु तेज आवाज में शुद्ध लोहे के उत्पादन के आंकड़े सुनाये जा रहे हैं। विंस्टन ने यन्त्र की चाभी घुमाई जिससे आवाज धीमी अवश्य पड़ गई, परन्तु बन्द नहीं हुई। विंस्टन नाटा है तथा निर्बल भी। वह खिड़की की ओर बढ़ा तो उसके ढीले और लम्बे चोगे में उसकी क्षीणता और भी प्रत्यक्ष हो गई। यह नीला चोग़ा उसकी पार्टी की पोशाक है, (अर्थात् बाहरी पार्टी की; भीतरी पार्टी के सदस्यों को अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं और वे काला चोग़ा पहनते हैं।)

खिड़की के बाहर निर्मल आकाश में सूर्य अपनी स्वाभाविक तेजी से चमक रहा था, परन्तु हर जगह चिपके इश्तिहारों के अतिरिक्त दृश्य में कोई रंगीनी नहीं दिखाई देती। सब ओर व्यापक ठण्ड और सन्नाटा था। काली मूँछों वाला मुख प्रत्येक ऊँचे कोने से नीचे घूरता दिखाई देता था। सामनेवाले मकान पर भी इश्तिहार लगा हुआ था, उस पर भी वही शीर्षक था—बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं; और उसकी काली आँखें विंस्टन की आँखों में आँखें डालकर मानो उसे घूर रही थीं। नीचे सड़क के बाजू में, एक कोने से फटा एक और इश्तिहार हवा में फड़फड़ा रहा था जिससे उस पर अंकित एक ही शब्द कभी खुल जाता था और कभी बन्द हो जाता था। यह शब्द "इंगलिश सोशलिज्म" (अंग्रेजी समाजवाद) का संक्षिप्त रूप 'इंगसोश' था। दूर पर एक हेलीकाप्टर छतों के मध्य तेजी से नीचे उतरता था, कुछ देर नीली मक्खी की भाँति मँडराता था और फिर तीर की तरह दूर की ओर निकल जाता था। यह गश्ती पुलिस थी जो नगर-निवासियों की खिड़कियों में भेद लेने के लिए झाँकती फिरती थी। इन पहरेदारों की विंस्टन को

कोई चिन्ता नहीं थी, उसे चिन्ता केवल उस पुलिस की थी जो विचारों के भेद की तलाश में रहती थी।

विंस्टन स्मिथ के पीछे टेलीस्क्रीन की आवाज़ अभी तक लोहे के उत्पादन और नवीं त्रिवर्षीय योजना की लक्ष्य से अधिक पूर्ति के आँकड़े तेजी से सुनाती जा रही थी। कानाफूसी से अधिक ऊँची कोई भी आवाज़ विंस्टन के मुँह से निकलती तो टेलीस्क्रीन उसे बाहर पहुँचा सकता था और जब तक वह कहीं ऐसे स्थान पर रहता जहाँ से टेली-स्क्रीन की तख्ती उसे देख सकती तो यह यन्त्र उसे देखता भी रहता और सुनता भी। यह जानने का कोई उपाय न था कि किस समय किस पर निगरानी रखी जा रही है। कितने बार और किस यन्त्र द्वारा विचारों पर पहरा रखनेवाली पुलिस किसी व्यक्ति पर टेलीस्क्रीन द्वारा पहरा लगा देती है, इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता था। यह भी सम्भव था कि वे हर समय सब पर कड़ी नजर रखते हों। परन्तु यह निश्चित था कि वे जब चाहें तब किसी के कमरे में लगे टेलीस्क्रीन द्वारा उस पर निगरानी बिठा सकते हैं। इसलिए स्वभावतः हर आदमी को यह मान लेना पड़ता था कि उसके मुँह से जो भी आवाज़ निकलेगी और प्रकाश में उसकी जो भी हरकत होगी वह देखी और सुनी जा सकती है। लोग इसी प्रकार जीवन व्यतीत करते थे यहाँ तक कि यह आदत उनका सहज स्वभाव बन जाती थी।

विंस्टन टेलीस्क्रीन की ओर अपनी पीठ किये रहा। इससे उसकी कुछ बचत रही, यद्यपि वह जानता था कि पीठ भी भेद की बात बता सकी है। घर से प्रायः एक मील दूर काले और गंदे वातावरण के मध्य "सत्य मन्त्रालय" की विशाल और श्वेत इमारत गर्व से अपना मस्तक ऊँचा किये खड़ी थी, यहीं वह काम करने जाता था। इंगलिस्तान अब ओशियानिया नामक विशाल राष्ट्र का एक प्रान्त मात्र रह गया था और इसका नाम हवाई अड्डा नम्बर एक था। मन्त्रालय को देखकर अस्पष्ट अरुचि के साथ उसने लन्दन को इस नये प्रान्त का प्रधान नगर

मान लिया। बीसवीं शती के तीसरे चतुर्थांश में जो क्रान्तियाँ हुई थीं उनके परिणामस्वरूप रूस ने योरप को हजम कर लिया था और अमरीका ने ब्रिटिश साम्राज्य को। इस प्रकार संसार तीन विशाल राष्ट्रों में बँट गया—यूरेशिया, ईस्टेशिया, और ओशियानिया। तब से निरन्तर तीनों के बीच छोटी-बड़ी लड़ाइयाँ होती रहती थीं। विंस्टन को अपने बाल्यकाल में कुछ महीनों तक लन्दन की सड़कों पर होनेवाली लड़ाई की अस्पष्ट-सी याद थी; परन्तु इसके आगे उसे कोई पता न था कि यह सब कुछ कैसे हो गया।

अपने बाल्यकाल के कुछ टूटे-फूटे संस्मरणों की सहायता से विंस्टन यह मालूम करने का प्रयत्न कर रहा था कि क्या लन्दन सदैव ही ऐसा रहा था। क्या हमेशा से चारों ओर उन्नीसवीं शती के यही सड़े हुए घर थे जिनकी दीवारों को रोकने के लिए बल्लियाँ लगी हुई हैं, जिनकी खिड़कियों में शीशों की जगह दफ्तियाँ लगी है, छतें लहरदार टीन से ढकी हैं और वाटिकाओं की चहारदीवारियाँ सब ओर गिरती दिखाई देती हैं। जहाँ-जहाँ बम गिरे थे, वहाँ टूटी ईंटों के ढेरों पर जंगली घास और बेलें चढ़ गई थीं। जहाँ इन ढेरों को हटाकर जमीन चौरस की गई थी, वहाँ मुर्गियों की ढाबलियों के समान लकड़ी के घरों की गन्दी बस्तियाँ बन गई थीं। परन्तु उसे अपने बाल्यकाल के कुछ असंबद्ध चित्र ही याद आये।

अब ब्रिटेन जिस विशाल ओशियानिया का प्रान्त मात्र है वहाँ की सरकारी भाषा न्यूस्पीक (नई बोली) के नाम से प्रसिद्ध थी। इस बोली में सत्य मन्त्रालय का नाम था 'मिनीट्रू'। अन्य दृश्यों से इस मन्त्रालय की अस्वाभाविक भिन्नता हमें चौंका देती है। चमकती हुई सफेद सीमेंट का यह विशाल शुण्डाकार भवन खण्ड-ऊपर-खण्ड एक हजार फुट की ऊँचाई तक चला गया था। जहाँ से खड़ा विंस्टन उसे देख रहा था वहाँ से उसे अपने शासक दल के तीन नारे सुन्दर अक्षरों में इस भवन के श्वेत मुख पर साफ-साफ अंकित दिखाई दे रहे थे :

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

कहा जाता था कि इस सत्य मन्त्रालय में तीन हजार कमरे तो भूमि के ऊपर थे और कमरों का ऐसा ही जाल जमीन के नीचे था। इसी मेल के और इतने ही बड़े तीन और भवन लन्दन के विभिन्न भागों में थे। चारों ओर की इमारतें इनके सामने इतनी छोटी थीं कि विजय-भवन की छत से चारों इमारतें एक साथ दिखाई पड़ती थीं। शासन का पूरा संगठन इन्हीं चार मन्त्रालय भवनों में सन्निहित था। मिनीट्रू का क्षेत्र था समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और ललित-कला। शान्ति मन्त्रालय का संक्षिप्त नाम 'मिनीपैक्स' था और इसका कार्यक्षेत्र युद्ध था। प्रेम मन्त्रालय का नाम था 'मिनीलव' और इसका कार्यक्षेत्र आंतरिक सुव्यवस्था स्थापित रखना था। समृद्धि मन्त्रालय का नाम 'मिनी-प्लेंटी' था और शासन के आर्थिक विषय इस मन्त्रालय के जिम्मे थे।

इन मन्त्रालयों में सचमुच भयानक प्रेम मन्त्रालय ही था। विंस्टन कभी उसके निकट भी नहीं गया था। इसमें खिड़कियाँ नहीं थीं, सरकारी काम के बिना इसमें घुसना असम्भव था और तब भी काँटे-दार तारों की भूलभुलैयों, इस्पात के दरवाजों और छिपी मशीनगनों के बीच से होकर भीतर जाना होता था। उन सड़कों पर भी, जो इस भवन की बाहरी चौहद्दी तक जाती थीं, बन्दर-मुँहे काली वर्दी पहने सिपाहियों का पहरा रहता था।

विंस्टन सहसा पीछे मुड़ा। वह अपने मुख पर शान्त आशा की झलक ले आया, क्योंकि टेलीस्क्रीन के सामने आते समय ऐसी मुखमुद्रा बनाये रहना उचित था। कमरा पार करके वह अपनी छोटी-सी रसोई में पहुँचा। मंत्रालय को छोड़कर यदि विंस्टन अपने घर न आता तो मंत्रालय के कैंटीन में ही उसे अपना खाना मिल जाता। परन्तु अपनी रसोई में उसे बदरंग पाव रोटी के एक बड़े टुकड़े के अतिरिक्त

कोई और खाने की चीज नहीं दिखाई दी, जिसे आगामी प्रातःकाल के नाश्ते में लिए बचाना आवश्यक था। इसलिए उसने पानी जैसे द्रव से भरी एक बोतल अलमारी मे उठाई जिस पर 'विक्टरी जिन' (विजय-मदिरा) की चिप्पी लगी हुई थी। इस द्रव में तेल जैसी मतली लानेवाली गंध आती थी, परन्तु विंस्टन को तो किसी प्रकार अपनी क्षुधा शान्त करनी थी। उसने बोतल से इस द्रव को एक प्याले में उंडेला, मदिरापान का धक्का बर्दाश्त करने के लिए तैयार हुआ और एक ही घूंट में उसे पी गया।

पीते ही उसका चेहरा लाल हो गया। यह द्रव शोरे के तेजाब जैसा तेज था और गले में उसके उतरने पर ऐसा मालूम होता था जैसे सिर के पीछे किसी ने रबड़ की गदा मार दी हो। परन्तु क्षणमात्र में उसके पेट की जलन समाप्त हो गई और संसार उसे अधिक प्रफुल्लित दिखाई देने लगा। एक मिंजी हुई डिब्बी से, जिस पर 'विजय सिगरेट' नाम की चिप्पी लगी थी, उसने एक सिगरेट निकाली; असावधानी में उसने सिगरेट को सीधा खड़ा कर दिया और सारी तम्बाकू फर्श पर बिखर गई। दूसरी सिगरेट के सम्बन्ध में इतनी गड़बड़ नहीं हुई। वह अपने कमरे की ओर वापस गया और टेलीस्क्रीन के बायीं ओर एक छोटे-से ताक में रखी मेज के सामने कुर्सी पर बैठ गया। मेज की दराज से उसने कलम, दावात और एक मोटी परन्तु छोटी और सुन्दर लाल जिल्दवाली नोटबुक निकाली जिसके सब पन्ने कोरे थे।

ताक किताबों की अलमारियों के लिए था। टेलीस्क्रीन की पहुँच इस ताक तक नहीं थी। भली भाँति पीछे हटकर बैठने पर विंस्टन टेलीस्क्रीन की पहुँच के बिलकुल बाहर हो गया था। उसकी बात तो सुनी जा सकती थी परन्तु जब तक वह अपनी इस जगह पर बैठा रहता, उसे देखा नहीं जा सकता था।

जो नोटबुक उसने दराज से निकाली वह विशेष रूप से सुन्दर थी। उसका चिकना मक्खनी कागज, पुराना होने के कारण पीला हो गया

था; पिछले चालीस वर्ष से ऐसा कागज नहीं बना था। उसने इस नोट-बुक को श्रमिकों की गन्दी बस्ती के एक गन्दे-से छोटे कबाड़खाने की खिड़की में देखा था और देखते ही इसे खरीद लेने की प्रबल इच्छा हुई थी। साधारण दुकानों से खरीदारी करना दल के सदस्यों के लिए वर्जित था। साधारण दुकानें 'खुले बाजार' के नाम से वर्जित थीं, परन्तु इस नियम की पूरी पाबन्दी नहीं हो पाती थी क्योंकि जूते के फीते और ब्लेड जैसी चीजें खुले बाजार में ही प्राप्य थीं। इसलिए चुपके से दुकान में घुसकर उसने ढाई डालर में नोटबुक खरीदी और थैले में छिपाकर घर ले आया। नोटबुक कोरी होने पर भी विंस्टन के पास उसका होना उसके विरुद्ध सन्देह का कारण हो सकता था।

अब वह इस नोटबुक पर अपना रोजनामचा प्रारम्भ करने जा रहा था। यह कोई गैरकानूनी बात नहीं थी (क्योंकि अब कोई कानून ही नहीं था)। परन्तु यदि इसका पता लग जाता तो यह निश्चित था कि अपराधी को मृत्यु-दण्ड मिले या कम-से-कम पच्चीस वर्ष तक उसे बेगार करनी पड़े। कलम और निब अब नुमाइश की वस्तुएँ रह गई थीं, क्योंकि हस्ताक्षर करने के लिए भी उन्हें शायद ही कभी इस्तेमाल किया जाता था। पेंसिल से छोटे-छोटे वाक्यांशों के अतिरिक्ति हाथ से लिखने का अब चलन नहीं रह गया था। 'स्पीकराइट' नामक एक यन्त्र का चलन था जिसके सामने बोल देने से छपा-छपाया सामने आ जाता था। ऐसे वातावरण में कलम और निब का प्रबन्ध करने में विंस्टन को कुछ कठिनाई पड़ी थी। उसने कलम में निब लगाई, उसे स्याही में डुबोया और छोटे भद्दे अक्षरों में लिखा :

४ अप्रैल, १९८४

इतना लिखकर ही कुर्सी की पीठ का सहारा लगाये वह विचारमग्न हो गया। जो उसने निश्चय किया था उसकी पूर्ति में अपनी असमर्थता का उसे पूरा आभास अब हो गया। यह सोचा था कि उसकी डायरी

आनेवाली पीढ़ियों के काम आयेगी। परन्तु भावी मे वह अपना सम्पर्क किस प्रकार स्थापित करे? यदि भविष्य वर्तमान जैसा होता तो वह उसकी सुनेगा नहीं, या यदि भविष्य वर्तमान से भिन्न होगा तो उसकी शंकाएँ भावी संतति के लिए निरर्थक होंगी। क्या जो कुछ वह करने का प्रयत्न कर रहा है, वह स्वभावत: ही असम्भव नहीं है? थोड़ी देर तक वह विमूढ़ दृष्टि से कागज की ओर देखता रहा। फिर जो विचार उसके मन ही मन में मथ रहे थे, उन्हें लेखनीबद्ध करने के लिए उसने अकस्मात् लिखना प्रारम्भ किया :

४ अप्रैल, १९८४ : रात सिनेमा देखने गया। सब चलचित्र युद्ध से ही सम्बन्धित। एक बढ़िया चलचित्र में भूमध्य सागर के मध्य शरणार्थियों से भरे एक जहाज पर बमबारी हो रही थी। एक हेलीकाप्टर गोलियों से एक मोटे आदमी का पीछा कर रहा था जो तैरकर अपनी रक्षा करना चाहता था। दर्शक इस दृश्य से बहुत प्रफुल्लित हुए। पहले तो वह जल में सूँस की भांति डूबता-उतराता दिखाई दिया, फिर दर्शकों ने इसे हेलीकाप्टर की बन्दूक का निशाना बनते देखा। इसके बाद उसके शरीर में छेद हो गये और चारों ओर का जल गुलाबी हो गया। उसके डूबने पर दर्शकों ने अपने आनन्द और मनोरंजन का प्रदर्शन जोरो से हँसकर किया।

इसके बाद बच्चों से भरी एक प्राण-रक्षक नाव दिखाई दी, जिसके ऊपर एक हेलीकाप्टर चक्कर काट रहा था, अगले भाग में एक अधेड़ औरत लगभग तीन वर्ष के बच्चे को गोद में लिये बैठी थी। बच्चा डर के मारे चिल्ला रहा था और उसकी छातियों के बीच अपना सिर छिपाये हुए था। स्त्री स्वयं डर के मारे नीली हुई जा रही थी, तो भी वह बच्चे को सान्त्वना दे रही थी और अपनी बाँहों में उसे छिपाये हुए थी, मानों ये बाहें बच्चे की गोलियों से रक्षा कर सकेंगी। इतने ही में हेलीकाप्टर ने इन बच्चों के बीच एक बम गिरा दिया, भयानक लपट दिखाई दी और नाव दियासलाई की भाँति जल गई। एक बच्चे की बाँह उसके शरीर से अलग होकर आकाश में उड़ गई। किसी हेलीकाप्टर ने अपने कैमरा से इस भयानक दृश्य का फोटो लिया होगा जिसे देखकर दर्शकों के मध्य बैठे पार्टी के सदस्यों ने जोर से तालियाँ बजाई।

इतना लिखते-लिखते विंस्टन रुक गया और सोचने लगा कि क्यों उसने ये अनावश्यक बातें लिख डालीं और अकस्मात् इससे बिल्कुल ही

भिन्न एक घटना की स्मृति ने उसे घेर लिया जो आज ही सवेरे मंत्रा-लय में घटी थी।

दफ्तर के जिस मिसिल विभाग में विंस्टन काम करता था वहाँ लगभग ११ बजे अपने-अपने कमरों से कुर्सियाँ निकालकर 'दो मिनट की घृणा' सुनने और देखने के लिए कर्मचारीगण बड़े टेलीस्क्रीन के सामने जमा हो गये थे। बीच की पंक्तियों में विंस्टन बैठ ही रहा था कि गल्प विभाग से एक नवयुवती वहाँ आ गई। वह कभी उससे बोला न था और उसका नाम तक भी नहीं जानता था। परन्तु उसने कभी-कभी इस नवयुवती को तेल से सने हाथों में एक रिंच लिये देखा था। इसलिए उसका अनुमान था कि वह गल्प लिखनेवाली किसी मशीन पर काम करती है। वह लगभग सत्ताईस वर्ष की एक चंचल नवयुवती थी; उसके बाल घने काले रंग के थे और चेहरे पर चित्तियाँ पड़ी थीं तथा तेज चाल के कारण वह कसरतिन मालूम पड़ती थी। विंस्टन पहले ही से उसे नापसन्द करता था। उसका ख्याल था कि स्त्रियाँ, और इनमें भी विशेष रूप से नवयुवतियाँ, दल की सबसे कट्टर अनुयायिनी होती थीं; उन कट्टर विचारों से जरा भी हटकर सोचनेवालों पर जासूसी करना और चुगली खाना उनका शौकिया काम था। एक बार कमरे के बाहर दालान में जाते हुए उसने विंस्टन को तेज और चुभती हुई दृष्टि से घूरा था, जिस कारण विंस्टन एक क्षण के लिए बहुत भयभीत हो गया था। उसको यह भी आभास हुआ था कि कदाचित् वह विचारों का भेद लेनेवाली पुलिस की ओर से नियुक्त हो।

ऐसे ही समय आन्तरिक दल का एक सदस्य कमरे में आ गया था और नवयुवती की भाँति विंस्टन से थोड़ी ही दूर पर बैठ गया था। वह काला चोगा पहने हुए था। उसके आते ही सब जान गये कि वह आन्तरिक दल का कोई ऊँचा अधिकारी है। इसलिए प्रतीक्षा करने-वाले सभी लोग थोड़ी देर के लिए बिलकुल स्तब्ध हो गये।

दूसरे ही क्षण एक भयानक चीख की ध्वनि बड़े टेलीस्क्रीन से निकली जो कमरे के सिरे पर रखा हुआ था। यह चीख ऐसी थी मानो कोई बहुत बड़ी मशीन तेल के बगैर चल रही हो। यह ऐसी ध्वनि थी जिसके सुनते ही श्रोताओं के दांत भिच गये और उनकी गुद्दी के बाल खड़े हो गये। इस प्रकार 'घृणा' का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

पहले की भाँति "जनता के दुश्मन" इमैनुअल गोल्डस्टाइन के मुख का चलचित्र टेलीस्क्रीन पर आ गया। दर्शकों के मुख से धिक्कारात्मक ध्वनियां निकलने लगीं। किसी समय गोल्डस्टाइन की गिनती दल के प्रमुख सदस्यों में थी और उसका पद बड़े भाई के पद के प्रायः बराबर था। पर ऐसे ही समय उसने क्रान्ति के विरुद्ध कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी थीं, जिस कारण उसे मृत्यु-दण्ड मिला था। परन्तु दण्डित होने के पहले ही वह किसी प्रकार छिपकर निकल भागा था। दो मिनट का घृणासूचक कार्यक्रम प्रतिदिन बदलता रहता था परन्तु गोल्ड-स्टाइन हमेशा इसमें घृणा का प्रमुख पात्र रहता था। दल के विरुद्ध जितने अपराध, विश्वासघात, विनाशकारी षड्यन्त्र और पाप होते थे, वे सब उसके ही बहकाने पर होते थे। जीवित रहकर वह कहीं-न-कहीं से कोई-न-कोई षड्यन्त्र रचता ही रहता था।

गोल्डस्टाइन का चेहरा देखते ही विंस्टन का आँतें ऐंठ गई। दुबले यहूदी मुख के चारों ओर श्वेत बालों की अस्पष्ट आभा और ठोढ़ी के नीचे एक छोटी-सी दाढ़ी के कारण वह चतुर अवश्य मालूम होता था; तो भी किसी कारणवश वह जन्म ही से घृणा का पात्र मालूम होता था। उसका मुख तो भेड़ से मिलता ही था पर उसकी बोली भी भेड़ की जैसी ही थी। पहले की भाँति दल के विरुद्ध वह जहर उगलने लगा। उसने इस दल की तानाशाही की निन्दा की, बड़े भाई को गालियाँ दीं और यूरेशिया से तुरन्त सन्धि करने की माँग की। गोल्ड-स्टाइन के हुल्लड़ से किसी के मन में कोई शंका न उत्पन्न होने पाये इसलिए टेलीस्क्रीन पर लगातार यूरेशियन सेना की पल्टनें एक-दूसरे के

पीछे जाती हुई दिखाई जा रही थीं। सब सैनिकों के एशियाई मुखों से जहाँ उनकी मजबूरी प्रत्यक्ष होती थी तो भावनाहीनता भी। एक ओर गोल्डस्टाइन की गालियों की मिमियाती ध्वनि थी तो उसकी पृष्ठभूमि में सिपाहियों के फौजी जूतों की चाप एक विशेष लय लिये सुनाई दे रही थी।

घृणा के कार्यक्रम को शुरू हुए अभी आधा मिनट भी न हुआ था कि कमरे में बैठे आधे श्रोताओं के मुख से अनियन्त्रित क्रोध के शब्द निकलने लगे। स्क्रीन पर एक ओर भेड़ जैसे मुख से सन्तोष की भावना और इसके पीछे यूरेशियन सेना की भयावनी शक्ति, ये दोनों दृश्य दर्शकों के लिए असहनीय थे। एक बात यह भी थी कि गोल्डस्टाइन को देखना क्या, उसका ध्यान आते ही स्वभावतः भय और क्रोध की भावनाएँ जाग्रत होती थीं। यूरेशियनों से मिल जाने के अतिरिक्त कुछ व्यक्तियों ने उसके नियन्त्रण में संगठित होकर गुप्त षड्यन्त्रों के विशाल जाल द्वारा ओशियानिया राज्य को उलट देने के निमित्त अपने को अर्पित कर दिया था। इस संगठन का नाम 'भ्रातृ संघ' बताया जाता था, यद्यपि यह सब अफ़वाह की ही बात थी क्योंकि दल के सभी सदस्य यथासम्भव इस बात का उल्लेख करने से कतराते थे।

घृणा के कार्यक्रम के दूसरे मिनट में उपस्थितजनों का उन्माद बढ़ गया। दर्शकगण परदे से निकलती मिमियाती आवाज को डुबो देने के लिए उछलने-कूदने और चिल्लाने लगे। काले बालोंवाली नवयुवती पहले तो "सुअर! सुअर! सुअर!" कहकर चिल्लाई और फिर अकस्मात् 'न्यूस्पीक' भाषा के कोष की एक भारी-सी प्रति उठाकर उसने परदे पर फेंकी। विंस्टन भी उन्माद के व्यापक वातावरण में उन्मत्त हो गया। होश में आने पर उसे मालूम हुआ कि वह भी अन्य लोगों के साथ चिल्ला रहा था और अपनी कुरसी के डण्डे पर बड़े जोर से ठोकरें मार रहा था। 'दो मिनट की घृणा' के कार्यक्रम की सबसे बुरी बात यह न थी कि हर आदमी को मजबूर होकर घृणा का दिखावा करना

पड़ता था बल्कि यह कि उससे बचना असम्भव था। आधे मिनट के भीतर क्रोध-प्रदर्शन का दिखावा करना बिलकुल अनावश्यक हो जाता था। भय, बदला लेने की भावना, मारने, कष्ट देने, हथौड़े से मुख तोड़ने जैसी भावनाएँ बिजली की धारा के समान सभी दर्शकों में व्याप्त हो जाती थीं और वे विवश होकर पागलों की भाँति चीख़ने-चिल्लाने लगते थे।

घृणा के अपनी चरम सीमा तक पहुँचने पर गोल्डस्टाइन की बोली भेड़ की बोली के समान हो गई और एक क्षण के लिए उसका मुख भेड़ की सूरत में परिवर्तित भी हो गया। तुरन्त ही वह दृश्य विलीन होकर एक यूरेशियन सिपाही के चित्र में बदल गया, जो विशाल और भयानक रूप में अपनी मशीनगन से गोलियाँ बरसाते हुए स्क्रीन की सतह से उछलकर बाहर निकलता मालूम होने लगा। परन्तु उसी समय यह चित्र बड़े भाई के मुख जैसा हो गया, जिसकी शक्ति और अवर्णनीय शान्ति से परदा करीब-करीब पूरा भर गया और दर्शकों में सभी ने मुक्त कण्ठ से गहरी साँस ली। बड़े भाई क्या कह रहे थे, यह किसी ने नहीं सुना। ये कुछ ऐसे ही शब्द थे जो लड़ाई के हुल्लड़ में सिपाहियों का उत्साह बढ़ाने के लिए कहे जाते हैं, जो किसी व्यक्ति की समझ में नहीं आते, परन्तु जिनके बोलने मात्र से सैनिक आश्वस्त हो जाते हैं। इसके बाद बड़े भाई का मुख धीरे-धीरे विलुप्त हुआ और दल के तीनों नारे बड़े-बड़े अक्षरों में प्रत्यक्ष हुए :

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

इन नारों के प्रत्यक्ष होते ही सभी दर्शक गहरी परन्तु मन्द लय से बार-बार 'बड़े भाई, बड़े भाई, बड़े भाई' का गीत जैसा गाने लगे। यह दृश्य कुछ ऐसा ही था, मानो जंगली लोग अपने नंगे पैरों की ताल और नगाड़ों की लय पर गा रहे हों।

विंस्टन को अपनी आँतें ठंडी होती मालूम हुईं। दो मिनट के घृणा कार्यक्रम के व्यापक उन्माद में वह भी सम्मिलित होने से न बच सका था। परन्तु 'बड़े भाई, बड़े भाई' के जंगली गीत से वह सदैव भय-भीत हो जाता था, यद्यपि सबके साथ स्वयं भी गाता रहा क्योंकि अलग रहना असम्भव था। अपने भावों को छिपाना, अपनी आकृति को अपने वश में रखना, वही करना जो और सब कर रहे हों, यह सब स्वाभाविक है। परन्तु हो सकता है कि, एक क्षण के ही लिए सही, उसकी आँखें उसकी आंतरिक भावनाओं को छिपाये रखने में असफल रही हों। यदि उसकी आँखें एक क्षण के लिए भी असावधान रह गई हों तो उसके विनाश का चिट्ठा बन गया है।

पहले पहर की घटना के उपर्युक्त संस्मरण से मुक्त होते ही विंस्टन की आँखें फिर अपनी डायरी के पहले सफे पर पहुँच गईं। देखता क्या है कि जिस समय वह अपनी असहायावस्था में विचारमग्न था, उसी समय उसका हाथ मस्तिष्क से स्वतन्त्र होकर बड़े और साफ अक्षरों में बार-बार लिखता जा रहा था: 'बड़े भाई का नाश हो।'

थोड़ी देर के लिए वह भय की पीड़ा से तड़प उठा। फिर इस भय की निरर्थकता भी उसकी समझ में आ गई, क्योंकि डायरी लिखना शुरू करने का प्रारम्भिक काम उतना ही खतरनाक था जितना कि इन विशेष शब्दों का लेखनी से निकलना। परन्तु एक क्षण के लिए उसके मन में यह विचार भी आया कि वह नोटबुक के लिखे हुए पृष्ठों को फाड़कर डायरी लिखना बन्द कर दे।

तो भी उसने यह कुछ नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि यह सब बेकार है, वह 'बड़े भाई का नाश हो' लिखे या ऐसा वाक्य लिखने से बाज रहे, उसकी सरकार की दृष्टि में कोई फर्क न पड़ेगा, विचारों का भेद लेनेवाली पुलिस की पकड़ में वह आ ही जायेगा। यदि उसने लेखनी को कागज पर कभी रखा भी न होता, तो भी इस पुलिस की दृष्टि में वह उस मौलिक अपराध का भागी तो था ही जिसका नाम

मानसिक अपराध था। यह मानसिक अपराध ऐसा नहीं जो सदैव छिपाये रखा जा सके। कुछ समय तक, कुछ वर्षों तक भी, सफलतापूर्वक इस पुलिस को धोखा दिया जा सकता था। परन्तु कभी-न-कभी तो उसकी पकड़ में आ ही जाना था।

विंस्टन सोचने लगा कि गिरफ्तारियाँ आम तौर से रात के समय ही की जाती हैं। अभियुक्त सो रहा है। पुलिस का एक जत्था बिजली की टार्चें लिए उसका बिस्तर घेर लेता है, कोई बेदर्दी से उसका कंधा हिलाकर उसे जगा देता है और सिपाही अपनी टार्चों की रोशनी उनके मुख पर फेंकते हैं। आम तौर से न गिरफ्तारी की सूचना प्रकाशित होती है और न कोई मुकदमा होता है। अभियुक्त केवल लापता हो जाते हैं। उनका नाम दल के रजिस्टरों से काट दिया जाता है और उनके अस्तित्व का जो कुछ भी लेखा रहा हो, वह नष्ट कर दिया जाता है। अभियुक्त *का नाम-निशान मिटा दिया जाता है; इसे भाप बनाकर उड़ा* देना कहा जाता है।

इस प्रकार का विचार करते-करते वह अपनी कुर्सी के पीछे विमूढ़ दशा में कलम मेज पर रखकर लेट-सा गया। इतने में किसी ने दरवाजा खटखटाया।

अरे, इतनी जल्दी! विंस्टन इस व्यर्थ आशा में चूहे की भाँति दुबककर बैठ गया कि जो होगा चला जायेगा। परन्तु खटखटाहट जारी रही। उसने सोचा कि देर करूँगा तो और भी दुर्गति होगी। उसका हृदय नगाड़े की भाँति धड़क रहा था, परन्तु आदत के अनुसार वह अपने मुख पर शांति की भावना बनाये रहा। उसने किसी प्रकार दरवाजे तक पहुँचकर उसे खोला। तुरन्त ही भय से उसकी मुक्ति हो गई। एक मुर्झाये हुए, बेरंग चेहरेवाली स्त्री उसके सामने खड़ी थी जिसके बाल बिखरे हुए थे, मुख पर झुर्रियाँ थीं और जो चिन्ताओं के बोझ से लदी हुई मालूम पड़ती थी।

रुआँसी और भारी-सी बोली में उसने अपनी बात प्रारम्भ की,

"कामरेड, मैने तुम्हे भीतर आते सुना, इसलिए आई हूँ। जरा चलकर रसोईघर का हौज तो देख लो; मालूम होता है कि कोई चीज अड़ गई है और—"

जिस सत्य मंत्रालय में विस्टन काम करता था उसी मे मोटा परन्तु फुर्तीला तथा बुद्धू प्रकृति का पार्सन्स नामक एक व्यक्ति काम करता था। यह उसी की पत्नी थी, जो उसी मंजिल पर पड़ोस में रहती थी। इसकी अवस्था तीस के लगभग थी, परन्तु देखने मे अधिक मालूम होती थी। इसके पति के बुद्धूपन से विस्टन परेशान था, इतना मेहनती और आज्ञाकारी था वह। दल की शक्ति जितनी विचारो के भेदियों पर निर्भर थी, उससे अधिक वह पार्सन्स जैसे भोले अंध-भक्त कर्मचारियों के परिश्रम पर भी टिकी थी।

विस्टन श्रीमती पार्सन्स के साथ हो लिया। बेगार के मरम्मती काम तो विजय-भवन के रहनेवालों को नित्य ही तंग किया करते थे। इस भवन के निवासकक्ष लगभग सन् १६३० में बने थे, परन्तु नियमानुकूल मरम्मत न होने के कारण गिराऊ हो गये थे। दीवारों और छतों से पलस्तर गिरा करता था। जब भी बर्फ गिरती तो छतें चूने लगती। नलों में या तो किफायत के लिए भाप पहुँचाई ही नही जाती थी, या फिर आधी ही पहुँचाई जाती थी। मरम्मत का काम स्वयं करो और यदि खिड़की के शीशे की मरम्मत जैसे छोटे काम के लिए मंजूरी की अर्जी दो तो सुदूर समितियों की मंजूरी आने में कम-से-कम दो वर्ष लगते थे।

पार्सन्स का निवासकक्ष विंस्टन के निवासकक्ष से बड़ा था और एक प्रकार से गंदा भी। मालूम होता था जैसे किसी जंगली पशु ने वहाँ चारों ओर तोड़-फोड़ कर दी हो। हाकी स्टिकें, मुक्केबाजी के दस्ताने, फटा फुटबाल, पसीने से मैला जाँघिया—ऐसा सब खेल का सामान फर्श पर पड़ा था। दीवार पर एक ओर युवक संघ और भेदियों के लाल झण्डे लगे थे और दूसरी ओर बड़े भाई का बड़ा इश्तिहार। पूरी इमा-

रत की तरह यहाँ भी, उबली बंद गोभी की गंध बसी हुई थी। अंदर के एक कमरे में टेलीस्क्रीन लगा हुआ था जिससे सैनिक संगीत की ध्वनि आ रही थी और कोई कंघी तथा पतले कागज की मदद से टेलीस्क्रीन से निकले सैनिक संगीत की ताल-से-ताल मिला रहा है।

सन्देह की भावना से द्वार की ओर देखकर श्रीमती पार्सन्स बोलीं, "बच्चे ही हैं, आज घर के बाहर नहीं निकले; और वास्तव में—"

वह अपनी आदत के अनुसार बीच में ही रुक गई। रसोईघर का हौज ऊपर तक गंदे बदबूदार और हरे पानी से भरा था। अपने हाथों काम करना और झुकना विंस्टन को नापसंद था, क्योंकि ऐसा करने से उसे खाँसी आने लगती थी।

परन्तु इस समय विवश होकर वह झुका, और नल के जोड़ पर लगी ढिबरी को टटोलकर ढूँढ़ा। पूछा, "तुम्हारे पास रिंच है?"

बेचारी को पता नहीं था, बोली, "मुझे मालूम नहीं, रिंच कहीं होगा तो। शायद बच्चों ने—"

बूटों की खटखट के साथ कंधे पर फिर किसी ने ताल दी और बच्चों ने सोने के कमरे पर धावा बोल दिया। श्रीमती पार्सन्स दूसरे कमरे में जाकर थोड़ी देर में रिंच ले आईं। इससे विंस्टन ने जोड़ खोल दिया और उसमें फँसे बालों की गाँठ निकाल देने पर हौज का सब पानी बह गया। इस गंदे काम से मुक्त होकर उसने नल के ठण्डे पानी में किसी प्रकार अपनी उँगलियाँ साफ कीं और अपनी बैठक की ओर मुड़ा।

इतने ही में एक जंगली आवाज में उसे हुक्म मिला, "अपने दोनों हाथ उठाओ!"

खेल का एक पिस्तौल लिए लगभग नौ वर्ष के एक सुन्दर और पुष्ट बालक ने मेज के पीछे से उचककर इस प्रकार उसको हुक्म दिया और उससे दो वर्ष छोटी उसकी बहन ने वैसा ही संकेत लकड़ी का एक टुकड़ा हाथ में लेकर किया। दोनों भेदियों के वेष में नीले जाँघिये और

भूरी कमीजें पहने थे तथा रूमाल गले में बाँधे थे। विंस्टन ने स्वभावानुकूल अपने दोनों हाथ सीधे ऊपर उठा दिये।

अकस्मात् दोनों बच्चे उसे घेरकर उचकने लगे, "विद्रोही है, मानसिक विद्रोही है!" ऐसी ही गालियाँ दोनों उच्च स्वर से उसे सुनाने लगे और भाई का पूरा अनुकरण बहन ने किया। श्रीमती पार्सन्स घबराई हुई कभी विंस्टन की ओर देखतीं तो कभी अपने बच्चों की ओर।

क्षमायाचना की मुद्रा में वह बोलीं, "ये बच्चे बहुत शोर करते हैं; कुछ निराश-से हैं, क्योंकि इन्हें आज फाँसी का दृश्य देखने जाने को नहीं मिला। यही बात है और कोई नहीं। मुझे इतना काम रहा कि मैं इन्हें ले नहीं जा सकी और टाम समय पर अपने काम से लौटते नहीं।"

विंस्टन को याद आया कि युद्धकाल के कुछ यूरेशियन अपराधी आज संध्या के समय नगर की सार्वजनिक वाटिका में लटकाये जाने को थे। ऐसा प्रायः प्रतिमास एक बार हुआ करता था। जनता बड़े चाव से यह तमाशा देखती थी और बच्चे तो सदैव यह तमाशा देखने के लिए हुल्लड़ मचाते थे। इस प्रकार अपना मन समझाकर विंस्टन श्रीमती पार्सन्स से विदा हुआ। परन्तु वह दालान में कुछ ही कदम आगे बढ़ा होगा कि गर्दन के पीछे उसे एक बड़ी पीड़ाजनक चोट लगी। घूमकर देखता क्या है कि श्रीमती पार्सन्स का पुत्र गुलेल अपनी जेब में डाल रहा है और उसकी माँ उसे घसीटकर अपने द्वार के भीतर ले जा रही है।

द्वार बंद होते-होते लड़के की गरजती आवाज उसे सुनाई दी, "गोल्डस्टाइन!" विंस्टन को लड़के की करतूत से अधिक आश्चर्य उसकी निरीह माता की भयभीत मुखमुद्रा पर हुआ। डर के मारे उसका मुख बिल्कुल पीला पड़ गया था।

गर्दन सहलाते-सहलाते अपने कमरे के टेलीस्क्रीन की दृष्टि से शीघ्र अलग होकर विंस्टन फिर अपनी मेज पर पहुँच गया। सोचने लगा

इन बच्चों के कारण तो इस बेचारी स्त्री का जीवन भय से ही भरा रहेगा। एक-दो वर्ष में ये बच्चे रात-दिन इसी खोज में रहेंगे कि कहाँ पर वह निर्धारित पथ से हटती है। अब तो प्रायः सभी बच्चे खतरनाक हो गये हैं। भेदिया संस्था के प्रशिक्षण में ये अनियंत्रित जंगलियों में परिवर्तित हो जाते हैं। तीस वर्ष से ऊपर की अवस्था के प्रायः सब नर-नारी अब अपने ही बच्चे से डरने लगे हैं; और उनकी यह भावना ठीक ही है, क्योंकि प्रायः प्रति सप्ताह 'टाइम्स्' नामक दैनिक पत्र में किसी वीर बालक की यशोगाथा प्रकाशित हो जाती है— किस प्रकार यह बाल-वीर अपने माता-पिता के अनुदार विचारों को सुन लेता है और विचार के भेदियों को उनके विरुद्ध सूचना दे देता है।

टेलीस्क्रीन की आवाज एक क्षण के लिए रुक गई। कमरे की बंद वायु में एक दुन्दुभी की साफ और सुन्दर आवाज गूंज उठी और एक लड़खड़ाती आवाज में सुनाई दिया, "सावधान! मलाबार के मोर्चे से अभी यह खबर आई है कि दक्षिण भारत में हमारी सेनाओं ने एक भारी विजय प्राप्त की है।"

विंस्टन सोचने लगा कि अब कोई बुरी खबर आने को है और उसका अनुमान सही निकला क्योंकि पहले तो यूरेशियन सेना के विनाश का खूनी बयान आया और मारे जानेवालों तथा कैदियों की संख्या के भारी आँकड़े सुनाये गये। फिर यह सूचना प्रसारित की गई कि अगले सप्ताह से चाकलेट का राशन तीस माशे से घटकर बीस माशे कर दिया गया है।

टेलीस्क्रीन की ओर पीठ किये हुए विंस्टन खिड़की की ओर चला गया। अभी तक ठंड थी और आकाश भी निर्मल था। कहीं दूर पर एक स्वचालित (राकेट) बम के गिरकर फटने की धीमी गूँजती हुई गर्जना उसे सुनाई दी। इन दिनों लंदन पर प्रति सप्ताह बीस-तीस ऐसे बम गिरकर फटा करते थे।

नीचे गली के मोड़ पर एक कोने से फटा इश्तिहार पहले की भाँति

हवा के झोंके के साथ उड़ रहा था, जिससे उस पर लिखा हुआ 'इंगसोश' शब्द कभी ढक जाता और कभी खुल जाता था। इंगसोश के पवित्र सिद्धान्त! विंस्टन को ऐसा मालूम हुआ जैसे वह गहरे समुद्र की तह के जंगलों में घूमता-फिरता हिंसक जीवों के बीच भटक गया हो। वह अपने को बिलकुल अकेला अनुभव करने लगा। अतीत मिट चुका था और भविष्य की कल्पना असम्भव थी। उसे विश्वास नहीं था कि कोई भी जीवित मानव अब उसकी ओर है। किस प्रकार वह मालूम करे कि दल का प्रभुत्व कभी समाप्त भी होगा कि नहीं। उत्तर के रूप में सत्य-मन्त्रालय की श्वेत इमारत के सामने अंकित तीनों नारे उसके सामने आ गये :

समर ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

अपनी जेब से उसने २५ सेंट का एक सिक्का निकाला, उसमें भी एक ओर छोटे और साफ अक्षरों में यही तीनों नारे अंकित थे और सिक्के की दूसरी ओर बड़े भाई की शक्ल बनी थी। उनकी आँखें सिक्के से भी पीछा करती दिखाई देती थीं। सिक्कों पर, टिकटों पर, पुस्तकों पर, झंडों पर, इश्तिहारों में, सिगरेट की डिब्बी तक पर—हर जगह यही आँखें थीं। ये आँखें सब पर हर समय नजर रखती थीं और इन नजरों की ध्वनि चारों ओर गूँजती रहती थी। सोते-जागते, काम पर, खाते समय, भीतर-बाहर, कहीं भी इनसे बचाव न था।

टेलीस्क्रीन पर दो बजे। दस मिनट के भीतर उसे अपना घर छोड़ देना था और काम पर ढाई बजे पहुँच जाना था। अकस्मात् देखता क्या है कि उसके दाहिने हाथ की पहली दो उँगलियों में कुछ स्याही लगी है। अरे, ऐसी ही साधारण बात से तो गल्प विभाग में काम करनेवाली नवयुवती जैसी भेद का सुराग पाने की खोज में रहने-वाली औरत को वह संकेत मिल सकता है जो उसकी आन्तरिक

भावनाओं का पर्दाफाश कर सकता है। तुरन्त स्नानघर में जाकर उसने एक मटीली साबुन से स्याही को भली प्रकार छुड़ाया। तभी वह अपना निवासकक्ष छोड़कर मिसिल विभाग में अपने काम की ओर तेजी से रवाना हुआ।

● ● ●

प्रातःकाल के सवा सात बजे कर्मचारियों के उठने का समय था। टेलीस्क्रीन से आधे मिनट तक एक तेज सीटी बजती रही। विंस्टन स्मिथ विवश होकर अपने बिस्तर से उठा। वह बिलकुल नंगा सोया था क्योंकि बाहरी दल के सदस्य को प्रतिवर्ष वस्त्र के लिए केवल तीन हजार कूपन मिलते थे और एक पैजामा बनने में ही छः सौ कूपन कट जाते थे। लपककर उसने एक मैली बनियाइन और जाँघिया लिया। तीन मिनट में ही व्यायाम प्रारम्भ होनेवाला था, परन्तु इतने में ही वह खांसी के दौरे से दोहरा हो गया; और यह खांसी उसे नित्य उठते ही आती थी।

एक तेज जनानी आवाज झटके के साथ बोली, "तीस से चालीस वर्ष के, तीस से चालीस वर्ष के सब लोग, अपनी-अपनी जगहों पर खड़े हो जायें! तीस से चालीस, तीस से चालीस!" टेलीस्क्रीन के सामने विंस्टन सावधान होकर खड़ा हो गया। तब तक एक जवान और दुबली परन्तु पुष्ट पुट्ठों वाली स्त्री कमीज और व्यायाम के उपयुक्त जूते पहने टेलीस्क्रीन के परदे पर दिखाई दी।

वह स्त्री कड़ककर आदेश देने लगी, "बाँहें मोड़ो और फैलाओ, एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! शाबाश कामरेडो, कुछ और दिल से—एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार!..."

विंस्टन मशीन की भाँति अपनी बाँहें आगे-पीछे करता रहा। व्यायाम के समय गम्भीर प्रसन्नता की जो मुखमुद्रा आवश्यक मानी जाती थी उसका भी वह दिखावा करता रहा, परन्तु उसके मस्तिष्क

में विचारों की जो हलचल मची रहती थी, उसका सिलसिला कसरत के दौरान में भी नहीं टूटा। वह प्रार्थना करता रहा कि उसे बाल्य-काल के धुँधले दृश्यों की कुछ याद आ जाये, परन्तु १९५६-५९ के पहले की कोई बात उसे याद ही नहीं आई। इतना ही वह जानता था कि तब का जीवन अब से बिलकुल भिन्न था, देशों के नाम और नक्शे पर उनकी सीमाएँ भी तब बिल्कुल भिन्न थीं।

विंस्टन को किसी ऐसे समय की याद नहीं थी जब उसके देश की किसी से लड़ाई न चल रही हो। यद्यपि सही बात यह है कि लड़ाई के प्रतिपक्षी बदलते रहे थे। परन्तु इस समय शक्तियों का जो संयोजन था उसके अलावा किसी दूसरे संयोजन का न कोई लेखा था न कहीं जिक्र था। इसलिए इस पूरे काल का इतिहास बताना और यह कह सकना बिलकुल असम्भव था कि कब किससे लड़ाई रही। उदाहरण के लिए, १९८४ में ओशियानिया का ईस्टेशिया से मेल, और यूरेशिया से लड़ाई थी। न किसी सार्वजनिक भाषण में और न पारस्परिक बातचीत में ही, कभी इस बात को माना जाता था कि ये तीनों शक्तियाँ कभी किसी दूसरे प्रकार भी एक-दूसरे से सम्बन्धित थीं। विंस्टन अच्छी तरह जानता था कि वास्तव में चार वर्ष पहले ही ओशियानिया और यूरेशिया मिलकर ईस्टेशिया से लड़ाई ठाने हुए थे। परन्तु विंस्टन की स्मरण-शक्ति अच्छी तरह नियंत्रित नहीं हुई थी, जिस कारण यह जानकारी चोरी से उसके दिमाग में रह गई थी। दल के पक्के सदस्य बिना अपनी शंका प्रकट किये उन झूठों को मान लेते थे जो दल की ओर से उन पर लाद दिये जाते थे। सादी-सी बात यह थी कि हर आदमी स्वयं अपनी स्मरण-शक्ति पर बराबर विजय प्राप्त करता रहे। इसे "वास्तविकता का नियन्त्रण" कहा जाता था; नई बोली में इसके लिए जो शब्द था उसका अर्थ होता है "कपट-विचार"।

शिक्षिका कसरत करनेवालों को फिर सावधान कर रही थी। उसने उत्साह के साथ कहा, "अब देखना है कि हम में से कौन अपने

पैर के अँगूठे छू सकते हैं। कामरेडो, कमर झुकाकर एक, दो! एक, दो!"

विस्टन को इस कसरत से नफ़रत थी क्योंकि इससे उसके शरीर में कठिन पीड़ा होने लगती थी और अकसर खाँसी का दौरा भी आ जाता था। इसलिए उसकी मधुर कल्पनाएँ समाप्त हो जाती थीं। उसकी समझ में आता था कि अतीत बदला ही नहीं गया है। उदाहरणतः, दल के इतिहास में क्रांति के जन्मकाल से ही बड़े भाई उसके नेता और संरक्षक माने जाते थे। कब से वह दल के नेता हुए इसकी तिथि पीछे बराबर हटाई जाती रही, यहाँ तक कि यह तिथि इस शती के पाँचवें और चौथे दशक के सुदूर अतीत तक पहुँच गई। कोई नहीं कह सकता कि इस कहानी में कितना अंश सही था और कितना बनाया हुआ। विंस्टन को यह भी याद नहीं था कि दल का अस्तित्व कब से था। १९६० के पहले 'इंगसोश' शब्द सुनने की उसे याद नहीं थी, परन्तु यह सम्भव है कि पुरानी बोली में, अर्थात् 'इंगलिश-सोशलिज्म' के रूप में, वह इससे पहले भी चालू रहा हो। हर बात धुंध में विलीन थी। कभी-कभी कोई असत्य पकड़ में आ जाता था, जैसे, दल के इतिहास की पुस्तकों में जो यह दावा किया जाता था कि वायुयान का आविष्कार दल ने किया था वह सही नहीं था क्योंकि उसे अपने सुदूर बाल्य-काल से वायुयानों की याद थी। परन्तु किसी बात को साबित करना असम्भव था, क्योंकि कभी कोई प्रमाण ही न मिलता था।

विचारमग्न विंस्टन को टेलीस्क्रीन से कड़कदार डाँट का धक्का लगा: "स्मिथ! नम्बर ६०७९ स्मिथ डबल! हाँ तुम कुछ और झुको, कोशिश नहीं करते, बेहतर कर सकते हो, और नीचे।"

विस्टन के सारे शरीर से गर्म पसीना निकलने लगा। मुख पर भय या क्रोध का भाव न आने दो; यदि तुम्हारी आँखें नियंत्रित नहीं रहतीं तो वे तुम्हारी भावनाओं को प्रकट करके तुम्हें धोखा दे सकती हैं। इसलिए उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आई; वह जोर लगाकर

झुका और घुटना मोड़े बिना अपने पैर के अँगूठे को छूने में सफल हो गया।

● ● ●

विंस्टन अपने दफ्तर पहुँचा। टेलीस्क्रीन के निकट होते हुए भी काम शुरू होने के पहले उसके मुख से एक गहरी आह निकल गई। 'स्पीक-राइट' नामक यन्त्र उसने अपनी ओर घसीट लिया और उसके चोंगे से गर्द झाड़कर उसने ऐनक चढ़ा ली। इसके पश्चात् उसने वे छोटे-छोटे काग़ज़ के लिपटे हुए टुकड़े खोले जो हवाई-यन्त्र द्वारा उसकी मेज़ पर ढेर हो गये थे।

मेज के पास में तीन छेद थे। 'स्पीक-राइट' के दाहिने ओर एक हवाई नल था जहाँ से लिखे आदेश निकलते थे। बाईं ओर का छेद कुछ बड़ा था और वह समाचारपत्रों के लिए था। निकट ही दीवार की बगल में तार के चौकोर जाल से ढकी एक दरार थी जो बेकार काग़ज़ों के लिए थी। ऐसी ही दरारें हज़ारों की संख्या में इमारत के भीतर प्रत्येक कमरे ही में नहीं, थोड़े-थोड़े फ़ासले पर बरामदे भर में थी। किसी कारणवश इन्हें स्मरण-छिद्र कहा जाता था, यद्यपि वे थे विस्मृति-छिद्र ही। जब किसी लेख के नष्ट किये जाने की बारी आती तो स्वभावतः निकटवर्ती स्मरण-छिद्र का ढक्कन उठाकर वह काग़ज़ छेद के भीतर डाल दिया जाता। भवन के भीतर कहीं बड़ी-बड़ी भट्ठियाँ जलती रहती थीं; वहीं वह काग़ज़ जलने के लिए पहुँच जाता था।

विंस्टन ने काग़ज़ के उन टुकड़ों को पढ़ा जो उसने खोलकर रखे थे। प्रत्येक में एक या दो पंक्तियों का आदेश था। भाषा नई बोली की भी नहीं है, उसमें नई बोली के कुछ शब्दों का संग्रह मात्र थी, जिनका प्रयोग इस मन्त्रालय में होता थी। दो उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं:

टाइम्स १७-३-८४ ब० भा० भाषण दुःसूचित अफ्रीका शुद्धार्थ।

टाइम्स १४-२-८४ मिनीप्लेंटी दुःउद्धरित चाकलेट शुद्धार्थ।

विंस्टन ने टेलीस्क्रीन पर लगे चक्र को 'टाइम्स' नामक समाचार-पत्र के उपयुक्त अंकों के लिए घुमाया और कुछ मिनटों के भीतर हवाई-नल से आवश्यक अंक मेज पर आ गये। जो आदेश उसे मिले थे, वे उन लेखों या खबरों को बदलने के थे, जिनकी शुद्धि सरकारी दृष्टि से आवश्यक हो गई थी। उदाहरणतः १७ मार्च के 'टाइम्स' में उससे पिछले दिन का बड़े भाई का वक्तव्य छपा था, जिसमें भविष्यवाणी की गई थी कि दक्षिणी भारत में शान्ति रहेगी, परन्तु उत्तरी अफ्रीका में यूरेशिया के विरुद्ध शीघ्र ही युद्ध छेड़ दिया जायेगा। हुआ यह कि यूरेशिया के सेनापति ने दक्षिणी भारत पर आक्रमण कर दिया और उत्तरी अफ्रीका को शांत रहने दिया। इसलिए बड़े भाई का वक्तव्य इस प्रकार संशोधित होना आवश्यक हो गया, जिससे उनकी भविष्यवाणी वास्तविक घटना के अनुकूल हो जाये। दूसरे आदेश में एक बहुत छोटी भूल का संकेत था जो दो मिनट के भीतर ठीक की जा सकती थी। समृद्धि-मन्त्रालय ने हाल ही के फरवरी मास में यह वादा (सरकारी शब्दों में 'स्पष्ट-प्रण') किया था कि १९८४ में चाकलेट का राशन घटाया नहीं जायेगा। वास्तव में वह तीस माशे से घटाकर बीस माशे कर दिया गया था। इतना ही आवश्यक था कि पिछले वादे की जगह एक चेतावनी दे दी जाती कि कदाचित् अप्रैल में किसी समय राशन का घटाना आवश्यक हो जाये।

सब आदेशों का पालन करने के बाद स्पीकराइट यन्त्र द्वारा तैयार किये हुए शुद्धि-पत्र 'टाइम्स' के आवश्यक अंकों के लिए उसने हवाई नल में डाल दिये। इसके बाद जो आदेश उसे मिले थे और जो छोटे-मोटे लेख उसने स्वयं लिखे थे, स्वभाव और नियम के अनुकूल उन सबको उसने तोड़-मरोड़कर भट्ठियों में जलने के लिए स्मरण-छिद्र में डाल दिया।

हवाई नलों की अदृश्य भूलभुलैया पार करने पर स्वनिर्मित संशोधनों का क्या उपयोग होता है, इसकी विंस्टन को मामूली जानकारी

ही थी। जब 'टाइम्स' के अंक विशेष के सब आवश्यक संशोधन इकट्ठे हो जाते, तो पूरा अंक फिर छापा जाता, पिछली प्रतिलिपि नष्ट कर दी जाती और फ़ाइल में उसकी जगह संशोधित प्रतिलिपि रख दी जाती। संशोधन का निरन्तर प्रयोग समाचारपत्रों पर ही नहीं होता, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, इश्तिहार, फिल्में, ग्रामोफोन रेकार्ड, व्यंग-चित्र, फोटो इत्यादि साहित्य या सरकारी लेख के सभी अंश जिनका कोई भी राजनीतिक या विचारात्मक महत्व होता, उन सबका इसी प्रकार संशोधन होता रहता, अतीत की सभी घटनाएँ निरन्तर संशोधित होती हुई वर्तमान की आवश्यकतानुकूल सरकारी मिसिल में दाखिल होती रहतीं। परिणाम यह होता था कि दल की ओर से जो भी भविष्यवाणी होती थी, वह सरकारी मिसिल की गवाही से सही साबित कर दी जाती थी। कोई भी खबर, कोई भी राय, जो तत्कालीन आवश्यकता के विरुद्ध होती, सरकारी मिसिल में रहने ही नहीं पाती थी। 'टाइम्स' के अंक विशेष की तिथि नहीं बदली जाती थी; राजनीतिक सम्बन्धों के बदलने या बड़े भाई की भविष्यवाणी में भूल होने के कारण अंक का संशोधन एक दर्जन बार क्यों न हो जाये, पर फाइल में अंक की तिथि वही रहती थी; और इस अंक के किसी भी अमान्य संस्करण की प्रतिलिपि का अस्तित्व कहीं रहने नहीं पाता था, क्योंकि ये सब प्रतिलिपियां बाकयदा जमा करके नष्ट कर दी जाती थीं।

विंस्टन के दफ्तर में छोटी-छोटी काबुकों की लम्बी और दोहरी कतार में बैठे विंस्टन जैसे दर्जनों क्लर्क इसी मेल का काम किया करते थे। विंस्टन इनमें बहुत थोड़े सहयोगियों के नाम जानता था, यद्यपि वह नित्य-प्रति उन्हें बरामदों में चक्कर लगाते या दो मिनट वाली घृणा में अपने हाव-भाव करते देखता था।

वह जानता था कि उसके पड़ोस ही के कैबिन में बैठी सूखे-रूखे बालोंवाली छोटी-सी औरत नित्य-प्रति ऐसे व्यक्तियों के नामों को ढूँढ़-कर छपे कागजों से काटने में लगी रहती थी जो नष्ट किये जा चुके थे

और जिस कारण यह मान लिया जाता था कि उनका अस्तित्व कभी था ही नहीं। उसके इस काम में कुछ औचित्य ही था, क्योंकि दो वर्ष पहले उसका पति भी इसी प्रकार नष्ट किया जा चुका था।

कुछ ही कैबिनों के फासले पर ऐम्पुलफोर्थ नामक एक नम्र प्रकृति, प्रभाव-हीन और तन्द्रालु व्यक्ति अपने कानों के बाल बढ़ाये उन कविताओं के भ्रष्ट संस्करण तैयार करने में लगा रहता था जिनका चालू विचारधारा के विपरीत होते हुए भी काव्य-संग्रह में बना रहना आवश्यक माना जाता था। इस काम में वह निपुण माना जाता था क्योंकि उसमें पदों और मात्राओं के साथ खिलवाड़ करने की अद्भुत क्षमता थी।

मिसिल-विभाग के जिस बड़े कमरे में विंस्टन लगभग पचास सहयोगियों के साथ काम करता था, वह इस विभाग के पेचीदा संगठन का एक छोटा-सा ही अंग था। आगे, ऊपर, नीचे बहुत-से कार्यकर्ता विभिन्न प्रकार के कामों में लगे हुए थे। छपाई के बहुत-से कारखाने थे जिनमें बहुत-से उप-सम्पादक, छपाई के विशेषज्ञ और उपयुक्त यन्त्रों से लैस स्टूडियो में फोटो-चित्रों को बदलनेवाले नियुक्त थे। टेलीविजन का कार्यक्रम प्रकाशित करने के लिए विभाग का एक अलग अंग था, जिसमें इंजीनियर, निर्माता और बोली के नक्काल अभिनेता लगे हुए थे। साथ ही बहुत बड़ी संख्या ऐसे क्लर्कों की भी थी, जिनका काम केवल उन पुस्तकों और पत्रिकाओं की सूची बनाना था, जिनका संशोधन होना या नष्ट किया जाना अब आवश्यक समझा जाता था। भवन के किसी गुप्त भाग में कुछ गुमनाम अधिकारी भी बैठे थे; जो पूरे प्रयत्न का समन्वय करते हुए यह निश्चय करते रहते थे कि अतीत के किस अंश की रक्षा की जाये, किसका रूप बदल दिया जाये और कौन नष्ट कर दिया जाये।

मिसिल-विभाग सत्य-मन्त्रालय की एक छोटी-सी शाखा ही था जिसका मुख्य काम अतीत का संशोधन करना नहीं बल्कि ओशियानिया

के नागरिकों को समाचारपत्र, फिल्म, पाठ्य-पुस्तकें, टेलीस्क्रीन कार्यक्रम, नाटक, उपन्यास इत्यादि, मूर्ति से नारे तक, गीत-काव्य से जीव-विज्ञान तक, और बाल-बोध से नई बोली के कोष तक, सभी मेल की सूचना और ज्ञानार्जन अथवा मनोरंजन की सामग्री पहुँचाना था। इस मन्त्रालय को दल की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति तो करनी ही होती थी। श्रमिकों के हित के लिए, निम्न स्तर पर वे सब कार्यवाहियाँ भी दोहरानी पड़ती थीं, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है।

ओशियानिया के श्रमिक-वर्ग की संख्या पूरी जनसंख्या की ८५ प्रतिशत तक पहुँचती थी। इन तिरस्कृतों की भीड़ में दल प्रचार नहीं करता था। विचारों पर निगरानी रखनेवाली पुलिस के कुछ कार्यकर्ता इन श्रमिकों में चक्कर लगाया करते थे और पीछा करके उन थोड़े-से व्यक्तियों को पकड़ लेते थे, जिन्हें वे खतरनाक समझते थे। परन्तु दल की विचारधारा का उनमें प्रचार करने का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता था, उनसे केवल एक दकियानूसी ढंग की देशभक्ति की ही आशा की जाती थी ताकि वे कम राशन पर ज्यादा घण्टे काम करने के लिए राजी किये जा सकें। इनमें अधिकांश के घरों में टेलीस्क्रीन भी नहीं था।

तो भी इन श्रमिकों की बिलकुल उपेक्षा नहीं की जाती थी। विभागों की पूरी एक शृङ्खला थी जिसमें श्रमिकों के लिए ही साहित्य, संगीत, नाटक और मनोरंजन के अन्य साधन तैयार किये जाते थे। यहाँ से रद्दी किस्म के समाचारपत्र निकाले जाते थे, जिनमें खेल-कूद, अनाचार और भविष्यवाणियों के अतिरिक्त कुछ और पाठ्य-सामग्री नहीं होती थी। सस्ते और सनसनीखेज उपन्यास, कामोत्तेजक फिल्में, कला-हीन तथा अश्लील गीत और निम्न स्तर का अन्य साहित्य इन श्रमिकों के मनोरंजन के लिए सत्य-मन्त्रालय के इन विभागों से प्रकाशित होता रहता था।

दफ्तर का अधिकांश काम लकीर की फकीरी ही था, परन्तु कुछ

काम ऐसे भी थे जो कर्मचारियों को अपनी कठिनाई और पेचीदगी से चक्कर में डाल देते थे। जालसाजी के कुछ काम ऐसे भी होते थे, जिन्हें कलात्मक ढंग से करना पड़ता था; 'इंगसोश' के सिद्धान्तों तथा दल की आवश्यकताओं के अनुमान का ही सहारा रहता था। विंस्टन ऐसे काम करने में यथेष्ट चतुर था। कभी-कभी 'टाइम्स' के सम्पादकीय लेखों के संशोधन का कार्य भी उसके सुपुर्द होता था। उसे आदेश नई बोली में ही मिलते थे। एक आदेश का नमूना इस प्रकार है :

टाइम्स ३-१२-८३ ब० भा०
दिनादेश प्रदोह्रा, अनच्छा
उल्लेख अव्यक्ति पुनर्लेख पूर्णशः
मसपेश पूर्व-फाइल

साधारण भाषा में इसका अर्थ यह है—'टाइम्स' के ३ दिसम्बर, १९८३ वाले अंक में बड़े भाई का दैनिक आदेश जिस रूप में छपा है, वह अत्यन्त अशुद्ध है। उसमें ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख है जिनका अस्तित्व ही नहीं है। फिर से लिखो और फाइल में दाखिल करने के पहले मसविदे की मंजूरी अपने अफसर से करा लो।

आदेश पाते ही विंस्टन ने नियमानुसार 'टाइम्स' का उपर्युक्त अंक मँगवाकर आपत्तिजनक लेख पढ़ा। बड़े भाई ने अपने दैनिक आदेश में एक संस्था की तारीफ की थी जो जंगी जहाजों के नाविकों को सिगरेट-जैसी सुविधाओं की पूर्ति किया करती थी। दल के आंतरिक अंग का कामरेड विदर्स नामक एक प्रमुख सदस्य था। वक्तव्य में उसकी विशेष प्रशंसा के पश्चात् उसे पुरस्कृत करने की बात भी कही गई थी।

तीन महीने बाद प्रशंसित संस्था एकदम तोड़ दी गई और तोड़ देने का कारण भी नहीं बताया गया। अनुमान यह किया गया कि विदर्स और उसके साथी पदच्युत कर दिये गये थे परंतु इसकी कोई सूचना प्रकाशित नहीं हुई थी। ऐसा ही होता आया था, क्योंकि जिन व्यक्तियों के प्रति दल की नाराजगी होती थी, वे नष्ट कर दिये

जाते थे। विंस्टन को मालूम नहीं था कि विदर्स को पदच्युत क्यों किया गया था। विदर्स के भाग्य की कुंजी उसे, आदेश के 'उल्लेख अव्यक्ति' शब्दों में ही मिलती थी, जिससे वह समझ गया कि विदर्स मर चुका है। अव्यक्ति होने के कारण उसका अस्तित्व न है न कभी था। विंस्टन ने फैसला किया कि बड़े भाई के वक्तव्य के रुख को पलट देने से काम न चलेगा, मौलिक विषय से बिल्कुल विपरीत एक कहानी गढ़कर उस की जगह पर चस्पाँ करनी होगी।

विश्वासघातकों और विचारापराधियों की बुराई इतनी साधारण बात हो गई थी कि उसे चस्पाँ करने में जाल की कलई खुल सकती थी। समर में विजय या नवीं त्रिवर्षीय योजना में उत्पादन के आगे बढ़ने की सूचना भी अनुपयुक्त होती, क्योंकि मिसिलों का सिलसिला ऐसे जाल से बहुत अधिक बिगड़ जाता। इसलिए एक बिलकुल काल्पनिक कहानी ही चस्पाँ होनी चाहिए। अकस्मात् उसके मस्तिष्क में कामरेड ओगिलवी नामक व्यक्ति का चित्र आया जो हाल ही में वीर-गति को प्राप्त हुआ था। कभी-कभी बड़े भाई अपने दैनिक आदेश में दल के किसी साधारण सदस्य की महिमा का बखान करते थे और उसके जीवन तथा मृत्यु का आदर्श जनता के सामने रखते थे। इसलिए विंस्टन ने अब बड़े भाई द्वारा कामरेड ओगिलवी की यशो-गाथा गढ़ी। सच तो यह था कि कामरेड ओगिलवी नाम का कभी कोई व्यक्ति था ही नहीं परंतु छापे की थोड़ी-सी पंक्तियों और दो नकली फोटो-चित्रों से उसका अस्तित्व प्रमाणित किया जा सकता था। विंस्टन ने एक क्षण सोचकर स्पीकराइट को अपनी तरफ घसीट लिया और बड़े भाई की चिरपरिचित दंभपूर्ण शैली में बोलना शुरू कर दिया।

तीन वर्ष की अवस्था में कामरेड ओगिलवी ने ढोल, छोटी मशीन-गन और हेलीकाप्टर के अतिरिक्त और सब खिलौने नापसंद किये; सात वर्ष की अवस्था से पहले बालक गुप्तचर भर्ती नहीं किये जाते थे; परंतु

खास रियायत करके यह छः वर्ष की ही अवस्था में गुप्तचर में भरती कर लिये गये; नौ वर्ष की अवस्था में यह अपनी टुकड़ी के नेता बना दिये गये; ग्यारह वर्ष की अवस्था में अपने चाचा के मुख से एक आपत्ति-जनक वार्तालाप सुनने पर इन्होंने विचार पर निगरानी रखनेवाली पुलिस को अपने चाचा के विरुद्ध सूचना दे दी; उन्नीस वर्ष की अवस्था में वह एक दस्ती बम बनाने में सफल हुए, जो शांति-मन्त्रालय द्वारा मान्य हुआ और जिसके पहले प्रयोग में ३१ यूरेशियन कैदी मार दिये गये; २३ वर्ष की अवस्था में वह वीर-गति को प्राप्त हुए । महत्वपूर्ण आदेश लिये हुए वह हिंद महासागर के ऊपर उड़ रहे थे कि शत्रु के हवाई जहाजों ने उनका पीछा करना प्रारम्भ कर दिया; अतएव आदेश-पत्रों की रक्षा के लिए अपने शरीर में मशीनगन और आदेश-पत्र बाँधकर वह हेलीकाप्टर से कूदकर सागर में डूब गये। ऐसी वीर-गति की जितनी भी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है।

इस प्रकार बड़े भाई का वक्तव्य तैयार करके विंस्टन ने उसे 'टाइम्स' के उपर्युक्त अंक के लिये नियमानुसार रवाना कर दिया। जिस कामरेड ओगिलवी की एक घंटा पहले कल्पना तक न थी, वह अब एक वास्तविक व्यक्ति हो गया। वर्तमान में जिसका अस्तित्व न था उसका अतीत में अस्तित्व स्थापित कर दिया गया, उसी प्रामाणिकता के साथ जिससे शार्लमेन या जूलियस सीजर जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों का अस्तित्व मान्य है।

● ● ●

दफ़्तर के नीचे नीची छत के तहखाने में कर्मचारियों को दोपहर का भोजन देने की व्यवस्था थी। कमरा अभी से भर गया था और हुल्लड़ इतना था कि कान-धरी आवाज सुनाई न देती थी। एक ओर उबले मांस-मछली की खट्टी गन्ध आ रही थी और दूसरी ओर विजय-मदिरा से निकला धुआँ इस गंध को दबाये देता था। कमरे में एक ओर

उबला मांस खिलाने का प्रबन्ध था और दूसरी ओर मदिरा पिलाने का, जिसकी यथेष्ट मात्रा दस सेंट में मिल सकती थी। लोग लाइन बनाये एक-दूसरे के पीछे खड़े थे। इनमें विंस्टन भी था।

पीछे से आवाज़ आई, "मैं तुम्हें ही ढूँढ़ रहा था।"

सुनते ही विंस्टन पीछे मुड़ा, तो उसे अन्वेषण-विभाग में काम करनेवाला अपना मित्र साइम दिखाई दिया। कदाचित् 'मित्र' कहना सही नहीं है, क्योंकि आजकल मित्र होते ही नहीं थे, सब 'कामरेड' ही थे; हाँ, कुछ साथी ऐसे जरूर होते थे, जिनकी संगत अन्य की अपेक्षा अधिक प्रिय होती थी। साइम भाषा-विज्ञान का पंडित था, नई बोली का विशेषज्ञ था।

"मुझे पूछना था कि तुम्हारे पास कोई ब्लेड तो नहीं है।"

विंस्टन ने अपने पास दो नये ब्लेड जोड़ रखे थे। सत्य छिपाना था; सो तुरन्त ही कह गया, "एक भी नहीं, मैंने सब दुकानें छान डालीं, कहीं एक भी नहीं है। जिसे देखो वह रेजर ब्लेड माँगता फिरता है। अक्सर ऐसा होता है कि कोई-न-कोई जरूरी चीज़ का स्टाक दल से नियुक्त दुकानों में चुक जाता है; कभी बटन चुक जाते हैं; कभी बुनने का ऊन और कभी जूते के फीते। आजकल रेजर ब्लेड का टोटा है।"

अपना झूठ पुष्ट करने के लिए विंस्टन ने कहा, "मैं छः सप्ताह से एक ही ब्लेड काम में ला रहा हूँ।"

खाना लेनेवालों की लाइन आगे बढ़ी। दोनों ने सामने के ढेर से अपनी-अपनी थालियाँ उठा लीं, जिनकी चिकनाई साफ नहीं की गई थी। साइम ने पूछा, "कल तुमने कैदियों की फाँसी का दृश्य देखा?"

विंस्टन को ऐसे दृश्य का कोई चाव न था, बोला, "मैं अपने काम में व्यस्त था, सिनेमा में ही देख लूँगा।"

साइम का स्वभाव दूसरा था; उसने कहा, "सिनेमा में वह मज़ा कहाँ?" और वह विंस्टन के मुँह की ओर तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा, मानो उसकी आँखें कह रही हों—मैं तुम्हें जानता हूँ, मुझे तुम्हारे

आन्तरिक भावों का पता है, मुझे भली भाँति मालूम है कि तुम कैदियों की फाँसी देखने क्यों नहीं गये। साइम के मस्तिष्क में विषैली कट्टरता थी; उसे विचार के अपराधियों को पकड़ने की दौड़ में और फाँसी जैसे दृश्यों को देखने में अस्वाभाविक आनन्द आता था। दृश्य का स्मरण करते हुए उसने कहा, "फाँसी का दृश्य अच्छा रहा; कैदियों के पैर बाँध दिये गए थे, इससे मज़ा कुछ किरकिरा हो गया। मुझे तो लटकते कैदी को अपने पैर फेंकते देखने में मज़ा आता है।"

इतने में सफ़ेद एप्रन पहने रसोइया हाथ में कलछी लिये चिल्लाया, "थाली सामने लाओ।"

विंस्टन और साइम ने अपनी-अपनी थालियाँ सामने कर दीं। प्रत्येक पर नियमानुकूल खाना परोस दिया गया : प्रत्येक को गिलास-भर बदरंग शोरबा, एक टुकड़ा पाव रोटी, एक लौंज पनीर, एक प्याला बिना दूध का क़हवा और एक टिकिया सैकरीन (शक्कर नहीं)। मदिरालय के सामने पहुंचकर दोनों ने अपने-अपने लिए मदिरा से भरे चीनी के कटोरे ले लिये और भीड़ चीरते हुए टेलीस्क्रीन के नीचे धातु की मेज़ के पास कुर्सी लगाकर भोजन के लिए बैठ गये।

साइम आजकल नई बोली के कोष के नये संस्करण पर काम कर रहा था। इसलिए वह बड़े जोश से उसके विषय में बातें करने लगा।

बड़े सन्तोष से बोला, "हम प्रतिदिन सैकड़ों पुराने शब्दों की हत्या कर डालते हैं।" बदरंग रोटी का एक टुकड़ा मुँह में डालकर उसने समझाना शुरू किया।

"विचार के क्षेत्र को संकीर्ण करना ही नई बोली का प्रमुख उद्देश्य है। अन्ततः हम विचार के अपराध अक्षरशः असम्भव कर देंगे, क्योंकि इन्हें प्रकट करने के लिए कोई शब्द ही न रह जायेंगे। अधिक-से-अधिक सन् २०५० तक कोई ऐसा मनुष्य न रह जायेगा, जो उस वार्तालाप को समझ सके जो हम इस समय कर रहे हैं। अतीत का सब साहित्य तब तक नष्ट कर दिया जायेगा। चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन

और बाइरन जैसे कवियों के काव्य नई बोली में ही प्रकाशित होंगे। ये संस्करण केवल भिन्न ही नहीं होंगे, अपने वर्तमान रूप के विपरीत भी होंगे। दल का साहित्य और उसके नारे, सभी बदल जायेंगे। एक नारा है, 'स्वतन्त्रता ही दासता है; तो यह नारा कैसे सम्भव होगा, जब स्वतन्त्रता का विचार ही खत्म हो जायेगा। विचार का वातावरण भी विपरीत होगा। सच पूछो तो विचार होगा ही नहीं, उस अर्थ में जो इस समय मान्य है। ये सब बड़े भाई के ही मौलिक विचार हैं।

बड़े भाई का नाम सुनते ही एक प्रकार की फीकी उत्सुकता विंस्टन के मुँह पर दौड़ गई। साइम दल का बहुत उग्र समर्थक था, फिर भी विंस्टन को सहसा विश्वास हो गया कि किसी दिन साइम भी उड़ा दिया जायेगा, क्योंकि वह जरूरत से ज्यादा प्रतिभाशाली था। उसे जरूरत से ज्यादा दिखाई देता था, और उतनी ही सफाई से वह बोलता था। दल में ऐसे लोग पसन्द नहीं किये जाते थे। एक दिन साइम को भी अन्तर्धान होना था, यह उसके भाग्य में लिखा था।

विंस्टन ने अपनी रोटी और पनीर समाप्त की, फिर अपनी कुरसी पर एक ओर को मुड़कर कहवा पीने लगा। उसके बाईं ओर एक व्यक्ति निःशंक होकर बातें करने लगा। एक नवयुवती, जो कदाचित् उसकी सचिव थी, विंस्टन के पीछे बैठी हुई उसकी बात सुन रह थी और बड़ी उत्सुकता से उसकी सराहना करती मालूम पड़ती थी। यह व्यक्ति विंस्टन का देखा हुआ था, यद्यपि वह इसके बारे में इससे अधिक कुछ नहीं जानता था कि वह कहानी-विभाग में किसी ऊँचे पद पर था। वह लगभग तीस वर्ष का था। गले के पुट्ठे मजबूत दिखाई पड़ते थे; मुख बड़ा तथा चंचल था, सिर कुछ पीछे की ओर झुका था, और जिस कोण पर वह बैठा था, उससे उसकी ऐनक पर जब रोशनी पड़ती थी, तो विंस्टन को आँखों की जगह दो सादी तख्तियाँ दिखाई देतीं थीं। कुछ भयावह बात यह थी कि उसकी धारा-प्रवाह वाचालता में

किसी शब्द को समझ लेना प्राय: असम्भव था। सिर्फ एक बार विंस्टन एक वाक्यांश पकड़ पाया, "गोल्डस्टाइन मत का पूर्ण और अन्तिम बहिष्कार।" यह वाक्यांश इतनी तेजी के साथ उसके मुख से निकला मानो उसके सब अक्षर एक ही ढांचे में ढले हों। इसके अतिरिक्त उसका वक्तव्य बत्तख की बोली के समान ही था। उसकी कोई बात समझ में नहीं आती थी, परन्तु बात के रुख से कोई सन्देह नहीं रह जाता था कि वह गोल्डस्टाइन की बुराई और विचार के अपराधियों तथा षड्यन्त्रकारियों के विरुद्ध कठिन दण्ड की माँग कर रहा था। वह यूरेशियन सेना के अत्याचारों के प्रति अपने क्रोध का प्रदर्शन करे या बड़े भाई तथा मलाबार के मोर्चे पर वीरों की तारीफ करे—सुनने में ये सब बातें एक-सी लगती थीं। जो कुछ भी वह कह रहा हो, इतना निश्चित था कि प्रत्येक शब्द शुद्ध 'इंगसोश' की कट्टरता से भरा था। इस दृष्टिहीन मुख के जबड़े को तेजी से ऊपर-नीचे हिलते देखकर विंस्टन कल्पना करने लगा कि यह कोई मानव नहीं, किसी मेल का पुतला है, उसकी बोली में दिमाग का काम नहीं, गले ही का काम है। उसके मुख से जो निकल रहा है उसमें शब्द जरूर हैं, परन्तु उनके कोई अर्थ नहीं, मानो कोई बेहोशी में हुल्लड़ मचा रहा हो, अथवा कोई बत्तख बोल रही हो।

साइम चुपचाप शोरबे में अपने चम्मच से कुछ चित्र जैसे बना रहा था। परन्तु इस बत्तख जैसे व्यक्ति के व्याख्यान में कोई रुकावट नहीं थी और उसकी आवाज इस हुल्लड़ में भी सुनाई दे रही थी।

साइम को बोलने का मौका मिला, "तुम जानते नहीं, नई बोली में एक शब्द है 'डक-स्पीक' अर्थात् बत्तख के समान टर्राना। इस रोचक शब्द के दो विपरीत अर्थ होते हैं। विरोधी के लिए कहिये तो गाली है, समर्थक के लिए कहिये तो प्रशंसा है।"

निगाह ऊँची करके वह बोला, "यह देखो, पार्संस आ रहा है।"

तोंदल पेट, मँझोला कद और हलके बालों से ढका मेंढक जैसा

मुस्न लिये जो व्यक्ति उनकी ओर आ रहा था, उसका नाम था पार्सेस, वही जो विजय-भवन में विंस्टन का पड़ोसी किराएदार था। आते ही विंस्टन का हार्दिक स्वागत करते हुए उसने कहना शुरू किया, "बताऊँ, मैं तुम्हारा पीछा क्यों कर रहा हूँ। तुम मुझे चन्दा देना भूल गये।"

विंस्टन अपनी जेब टटोलने लगा, "चन्दा कौन-सा ?" असंख्य चन्दों की याद रखना कितना कठिन था।

"अजी, घृणा सप्ताह के लिए। घर-घर से चन्दा जमा करना है। मैं अपने ब्लाक का खजांची हूँ। दिलोजान से लगा हूँ। बहुत बढ़िया सजावट दिखानी है। यदि सड़क-भर पर पताकाओं की सबसे बढ़िया सजावट विजय-भवन पर न हो तो मेरा नाम नहीं। तुमने दो डालर का वादा किया था।"

विंस्टन ने चुपचाप वह रकम उसके हाथ में थमा दी।

पार्सेस को अपने लड़के की शैतानी की याद आई, "सुना, कल लौंडे ने तुम्हारे पीछे गुलेल झाड़ दी। मैंने उसकी खूब मरम्मत कर दी है।"

विंस्टन को लड़के की माँ के बयान की याद आई, "कोई बात नहीं, तुम्हारे लड़के को फाँसी देखने जाने को नहीं मिला था; इसलिए कुछ बिगड़ा हुआ था।"

पार्सेस को शेखी मारने का मौका मिला, "खैर, मेरा मतलब यह कि बच्चों के शौक में तो कोई खराबी नहीं। शैतान तो ठहरे ही, लेकिन इनके जोश की क्या बात करूँ। तुम्हें मालूम नहीं, मेरी छोटी लड़की अपने दल के साथ पिछले शनिवार को बर्क हैमस्टेड की सैर करने गई, तो क्या किया कि वह तथा दो लड़कियाँ और अपने दल से निकलकर एक अजनबी के पीछे दिन-भर लगी रहीं, और अन्ततः उसे पुलिस के हवाले कर दिया। सात वर्ष की लौंडिया के लिए यह कितने कमाल की बात है।"

विंस्टन ने पूछा, "और अजनबी का क्या हुआ ?"

"इतना तो नहीं जानता, परन्तु कोई आश्चर्य नहीं यदि—" इतना कहकर पार्सस ने हाथ के इशारे से बन्दूक का निशाना साधने और मुख से गोली चलने की आवाज की नकल की।

साइम का ध्यान कहीं और था, अतएव उसने "अच्छा" कहकर ही पार्सस का समर्थन किया।

परन्तु विंस्टन को तो अपनी कर्तव्यनिष्ठा दिखानी थी; अतएव वह बोला, "ठीक ही है, हमें खतरे से तो हर वक्त होशियार रहना है।"

पार्सस सफाई देने के लिए बोला, "लड़ाई चल रही है, इसीलिए तो।"

इतने में मानो उपर्युक्त वार्तालाप के समर्थन के लिए ही इन लोगों के सिरों के ऊपर लगे टेलीस्क्रीन से एक तुरही बजनी प्रारम्भ हुई। समृद्धि-मन्त्रालय का सन्देश सुनाया जानेवाला था कि उत्पादन के क्षेत्र में कौन नई-नई सफलताएँ प्राप्त की गई हैं।

सूचना यों चलती है कि सारे ओशियानिया में श्रमिकों ने नया सुखी जीवन प्राप्त करने पर झण्डे लेकर बाजारों में बड़े भाई के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बड़े-बड़े स्व-संगठित प्रदर्शन किये, चाकलेट का राशन बढ़ाकर प्रति सप्ताह बीस माशे कर देने के लिए बड़े भाई के प्रति धन्यवाद के प्रदर्शन हुए। यह सुनकर विंस्टन सोचने लगा कि कल ही तो राशन को २० माशे तक घटा देने की सूचना प्रसारित हुई थी; क्या चौबीस घण्टे के बाद ही हम इस नई सूचना पर विश्वास कर लेंगे। आश्चर्य न कीजिये, इस सूचना पर विश्वास हो जाता है। विंस्टन ने देखा कि पार्सस ने तो विश्वास कर ही लिया।

टेलीस्क्रीन से बड़े-बड़े आँकड़ों की झड़ी जारी थी, जिनका मतलब यह था कि गत वर्ष की अपेक्षा अब अधिक भोजन है, अधिक कपड़े हैं, अधिक घर हैं, अधिक उनकी सजावटें हैं, अधिक बर्तन हैं, अधिक जहाज, अधिक हेलीकाप्टर अर्थात् सभी कुछ अधिक। वर्ष-प्रतिवर्ष,

क्षण-प्रतिक्षण, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वस्तु तेजी से उन्नति करती जा रही थी।

विंस्टन ने कैंटीन के चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और क्षुब्ध होकर प्रचलित जीवन-चर्या पर विचार करने लगा। क्या जीवन-चर्या सदैव ऐसी ही थी? असंख्य शरीरों की रगड़ से कैंटीन की दीवारें काली पड़ गई थीं; धातु की मेजें और कुर्सियाँ टूट-फूट गई थीं, और एक-दूसरे से ऐसी सटी हुई थीं कि बैठनेवालों की कुहनियाँ एक-दूसरे से रगड़ खाती थीं; चम्मच टेढ़े हो गये थे; थालियों में गड्ढे पड़ गये थे; सफ़ेद चीनी की प्याले बेहद भद्दे थे। सब जगह सब बर्तनों पर चिकनाई और उनकी दरारों में कालिख। गंदी मदिरा, कड़वा क़हवा, सड़ा शोरवा और गन्दे कपड़ों की मिली-जुली गंध सारे कमरे में बसी हुई थी। सच तो यह है कि इस दृश्य के विपरीत किसी और दृश्य की उसे याद नहीं थी। जबसे उसने होश संभाला था तब से न यथेष्ट खाने को था, न पहनने को। सामान सदैव ऐसा ही टूटा-फूटा रहा, कमरे ठण्डे रहे, गाड़ियों में भीड़ रही, मकान गिराऊ रहे, पाव रोटी बदरंग रही, चाय बिरले ही कभी मिली, क़हवा का स्वाद बुरा ही रहा; रसायनों से बनी मदिरा के अतिरिक्त कोई चीज सस्ती और सुलभ नहीं रही। परन्तु इस पर कोई असंतोष क्यों करे; जब तक उसे अपने पूर्वजों के आशीर्वाद से एक प्रकार की दिव्य-दृष्टि न मिली हो, जिससे उसे मालूम हो जाये कि इस देश की जीवन-चर्या दूसरी ही थी।

समृद्धि-मन्त्रालय से प्रसारित सूचना तुरही की दूसरी ध्वनि से समाप्त हुई; और उसकी जगह पर घटिया संगीत आरम्भ हुआ। बड़े-बड़े आँकड़ों से पार्सस प्रभावित होता दिखाई दिया। मुँह से अपना पाइप निकालकर जानकारी की भावना दिखाने के लिए वह अपना सिर हिलाकर बोला, "समृद्धि-मन्त्रालय ने तो इस वर्ष बहुत अच्छा काम किया है।"

किसी कारणवश विंस्टन को सहसा श्रीमती पार्संस की याद आ

गई। दो वर्ष के भीतर इसके बच्चे विचारों पर नियन्त्रण रखनेवाली पुलिस से अपने माता की चुगली करेंगे, जिसके परिणाम में श्रीमती पार्सस उड़ा दी जायेंगी, फिर साइम की बारी आयेगी और मेरी भी; पार्सस सदैव सुरक्षित रहेगा; मानो विंस्टन को इस बात का पूर्वाभास था कि कौन बचेगा और कौन मरेगा।

ऐसे ही समय उसकी तन्द्रा बुरी तरह भंग हो गई, जब पास की मेज पर बैठी वही काले बालोंवाली लड़की थोड़ा-सा मुड़कर उसकी ओर देखने लगी। वह कनखियों से ही देख रही थी, परन्तु विंस्टन के उसकी ओर ताकते ही वह दूसरी ओर देखने लगी।

भय की घबराहट विंस्टन के सारे शरीर में व्याप्त हो गई—यह लड़की कब से मुझे देख रही है, मेरा पीछा क्यों करती चली आ रही है।

मान लीजिये कि विंस्टन कभी-कभी अपनी मुख-मुद्रा नियन्त्रित रखने में चूक जाता हो। अपने विचारों की लगाम ढीली कर देना ऐसे समय बहुत खतरनाक है, जबकि आप किसी सार्वजनिक स्थान में या टेलीस्क्रीन के निकट हों। जरा-सी बात से आपके विचारों का पता चल जायेगा। घबराहट के कारण शरीर का कोई अंग खुजलाने लगना, चिन्ता की मुद्रा, गुनगुनाने की आदत, कोई भी अस्वाभाविकता का संकेत हो, तो देखनेवाले को अनुमान हो सकता है कि आप कुछ छिपाना चाहते हैं। यदि मुख पर प्रतिकूल भावना की झलक भी आ जाये, जैसे विजय की सूचना पाने पर अविश्वास की झलक का मुख पर होना, तो यह भी दण्डनीय है। नई बोली में इस अपराध के लिए भी एक शब्द है—"मुखापराध"।

इतने में लड़की ने अपना मुख विंस्टन की ओर से फेर लिया था। विंस्टन ने सोचा कि शायद वह उसके पीछे नहीं लगी थी, संयोगवश ही दो दिन तक लगातार वह उसके इतने निकट बैठ गई थी। इसी उधेड़-

बुन में उसे टेलीस्क्रीन से काम पर वापस होने का आदेश देनेवाली सीटी सुनाई दी और तीनों व्यक्ति उठ खड़े हुए।

● ● ●

दल के सदस्यों के लिए सायंकालीन मनोरंजन की व्यवस्था, 'समाज-संगम' नामक एक संस्था में रहती थी। सदस्यों के मनोरंजन के लिए इस संस्था को ही मान्यता प्राप्त थी। तीन सप्ताह के भीतर दो बार विन्स्टन इस संगम में अपनी हाजिरी देने से चूक गया था। यह उसकी नासमझी थी, क्योंकि संगम में सदस्यों की उपस्थिति का लेखा बहुत नियमपूर्वक रखा जाता था। सिद्धान्त यह था कि दल के सदस्य का कोई फालतू समय नहीं होना, यह मान लिया जाता था कि भोजन या नींद से मुक्त होने पर उसे सामाजिक मनोरंजन में भाग लेना चाहिए। यदि वह कोई ऐसा काम करता है, जिससे उसके विरुद्ध व्यक्तिवादी होने का सन्देह हो, जैसे अकेले घूमने जाना, तो ऐसा करना उसके लिए सदैव ही थोड़ा-बहुत खतरनाक होता था।

परन्तु इस शाम को मन्त्रालय से निकलने पर अप्रैल मास की शीतल वायु उसे बहुत भली लगी। आकाश निर्मल था और संगम में गंदी मदिरा के दौर तथा देर तक हुल्लड़, बकवास, व्याख्यान और थकानेवाले खेलों की याद करके अकस्मात् संगम को ले जानेवाली बस से पलट पड़ा, और निरुद्देश्य भाव से गंदी बस्ती की भूलभुलैयों की ओर चल दिया।

ऊबड़-खाबड़ सड़कें और उनके दोनों ओर टूटे-फूटे दोमंजिले घर, यही निम्न वर्ग के श्रमिकों की बस्ती का नकशा था। अँधेरे द्वारों और दोनों ओर की पतली गलियों के भीतर-बाहर असंख्य स्त्री-पुरुष आते-जाते दिखाई दे रहे थे। इस भीड़ में एक ओर जहाँ भद्दी लिपिस्टिक से रंगे ओठोंवाली नवयुवतियों का पीछा करते हुए नवयुवक थे, तो मोटी भद्दी औरतें भी इस भीड़ में थीं, जिनसे हमें यह संकेत मिलता था कि

दस वर्ष बाद इन नवयुवतियों का क्या रूप-रंग होगा। एक ओर कमर झुकाये बूढ़े लड़खड़ाते चल रहे थे तो दूसरी ओर चिथड़ों से ढके बच्चे नंगे पैरों नालियों की कीचड़ में खेलते या अपनी माताओं की कड़ी डाँट खाकर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। सड़क की अधिकांश खिड़कियाँ टूटने पर किसी प्रकार ढक दी गई थीं।

दल का दावा था कि उसने श्रमिकों को पूँजीपतियों की दासता से मुक्त किया था। दिन-रात टेलीस्क्रीन आँकड़े देकर यह साबित करता रहता था कि पचास वर्ष पहले की अपेक्षा जनता को अब अधिक भोजन, कपड़ा, घर और मनोरंजन प्राप्त हैं। उन्हे कम घंटे काम करना पड़ता है, वे अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और शिक्षित हैं। ये आँकड़े हमारे कान तो फाड़ा करते थे, परन्तु इनका एक शब्द भी प्रमाणित नहीं होता था और न अमान्य ही किया जा सकता था। साथ ही कपट-विचार सिद्धांत के अनुकूल दल का यह प्रचार भी होता रहता था कि श्रमिक वर्ग स्वभावतः निम्न है उसे पराश्रित रहना चाहिए।

इन गरीबों पर नियन्त्रण रखना कठिन नहीं था। बेचारे १२ वर्ष की अवस्था से काम पर जाने लगते थे, बीस तक ब्याह जाते थे, ३० तक अधेड़ हो जाते थे और ६० तक अधिकांश मर जाते थे। उनका मानसिक जीवन, कठिन शारीरिक श्रम, घरबार की चिन्ता व सिनेमा, फुटबाल, मदिरा और इन सबके ऊपर जुए से घिरा रहता था। साप्ताहिक लाटरी के सार्वजनिक महत्व से श्रमिक बहुत प्रभावित रहते थे। लाटरी और इससे पुरस्कार पाने की आशा ही लाखों का जीवन-आधार था। इसके ही चिन्तन में उन्हें आनन्द मिलता था, उनकी पीड़ा नष्ट होती थी, और उन्हें मानसिक स्फूर्ति प्राप्त होती थी। बहुत-से लोगों ने श्रमिकों के हाथ लाटरी से पुरस्कार पाने का ढंग बताने, भविष्यवाणी करने और ताबीज़ बेचने का धंधा चला रखा था। लाटरी के संचालन में विंस्टन का कोई दखल नहीं था, क्योंकि उसका काम समृद्धि-मंत्रालय के अधीन था। परन्तु वह क्या, दल के प्रायः सभी सदस्य जानते थे कि

पुरस्कार बहुत कुछ काल्पनिक ही थे। पुरस्कार में बहुत कम रकम बाँटा जाती थी और बड़े पुरस्कार पानेवालों के केवल नाम ही होते थे, उनका कोई अस्तित्व नहीं होता था।

विंस्टन इन अपरिचित सड़कों से होकर गुजरा, तो लोग सतर्क और द्वेषमय भावना से चुपचाप उसको ताकने लगे। ऐसी सड़कों पर नीला चोगा पहने दल के सदस्य प्रायः दिखाई नहीं देते थे। गश्ती पुलिस ऐसे लोगों को पूछताछ के लिए रोक लेती थी और यदि विचार पर निगरानी रखनेवाली पुलिस को सदस्य की ऐसी जगह उपस्थिति का पता लग जाता तो उस पर निगरानी होने लगती।

इतने ही में सड़क पर गड़बड मच गई; चारों ओर से चेतावनी की चिल्लाहट होने लगी; खरहों की भाँति लोग घरों की ओर भागते दिखाई देने लगे। एक युवती ने द्वार से झपटकर कीचड़ में खेलते बच्चे को उठा लिया और एक ही क्षण में अपना एप्रन समेटकर कमरे के भीतर घुस गई।

इसी समय बगल की गली से एक आदमी निकलकर विंस्टन के पास दौड़ा हुआ आया और आकाश की ओर घबराहट की मुद्रा में संकेत करते हुए चिल्लाया, "स्टीमर! ऊपर देखिये! फौरन लेट जाइये!"

इन दिनों चलनेवाले राकेट बमों को किसी कारणवश ये श्रमिक 'स्टीमर' कहने लगे थे। चेतावनी सुनते ही विंस्टन झटपट लेट गया। जब कभी ये श्रमिक ऐसी चेतावनी देते तो वह प्रायः सही ही होती। इन्हें किसी प्रकार राकेट के आगमन का पूर्वाभास हो जाता था। एक धमाका सुनाई दिया, जिससे सड़क की पटरी काँप गई और निकटवर्ती खिड़की से टूटे शीशे की बौछार उस पर गिरी।

विंस्टन ने उठकर चलना प्रारम्भ कर दिया। दो सौ गज तक सड़क के आगे बम से मकान नष्ट हो गये थे। आकाश की ओर धुएँ का काला बादल छाया हुआ था। नीचे पलस्तर की गर्द ने टूटे घरों के खण्डहरों

को घेर लिया था और उनके चारों ओर भीड़ इकट्ठी होने लगी थी। पटरी पर सामने पड़े पलस्तर के मध्य उसे एक गहरी लाल धारा दिखाई दी। यह किसी आदमी का कलाई से कटा हाथ था। विंस्टन ने अपनी ठोकर से उसे नाली में फेंक दिया और भीड़ से बचने के लिए बगल की गली की ओर मुड़ गया।

तीन-चार मिनट के भीतर बाजार का गंदी भीड़ से भरा जीवन फिर चालू हो गया, मानो कोई दुर्घटना हुई ही न हो। ऐसे राकेट बम प्राय: नित्य ही गिरा करते थे। बहुत समय से अब संसार में सर्वत्र कहीं अधिक शक्तिशाली आणविक अस्त्र शासनों को प्राप्त थे। अतएव यह सन्देह किया जाता था कि ये बम वैरी की ओर से नहीं गिराये जाते थे। जनता को लड़ाई से आतंकित और शांत रखने के लिए ओशियानिया की सरकार स्वयं इन बमों को छिपे ढंग से उन पर गिराती थी।

जिस गली में विंस्टन अब पहुँचा था, वह उसे परिचित-सी मालूम हुई। वह रुककर अन्धकार से ढके छोटे-छोटे घरों की ओर देखने लगा। ठीक अपने सिर के ऊपर उसे धातु के तीन बदरंग गोले लटकते दिखाई दिये। भय की कँपकँपी उसके शरीर में दौड़ गई, जब उसे याद आया कि वह उसी कबाड़खाने के बाहर खड़ा है, जहाँ उसने डायरी खरीदी थी।

पिछली बार उसका उपर्युक्त पुस्तक का खरीदना यथेष्ट नासमझी का काम था, और ऐसी जगह फिर न आने की उसने कसम खा ली थी। तो भी अपने निश्चय के विरुद्ध उसे यहाँ फिर आना पड़ा। वह द्वार से कबाड़खाने के भीतर चला गया, यह सोचकर कि पटरी पर मँडराने की अपेक्षा वह भीतर अधिक सुरक्षित रहेगा। यदि कोई उससे पूछेगा, तो उसे यह कहने का बहाना मिलेगा कि मैं तो वहाँ रेजर ब्लेड खरीदने की फिक्र में गया था।

कबाड़खाने के मालिक की अवस्था लगभग ६० वर्ष थी। इस क्षीण-काय और झुकी कमर के व्यक्ति की उदारता का परिचय देने

वाली लम्बी-सी नाक के ऊपर उसकी विनम्र आँखों को एक मोटा चश्मा ढँके हुए था। वह पुराने काले मखमल की एक बण्डी पहने था और उसकी धीमी तथा आडम्बर-युक्त चाल से सन्देह होता था कि वह कोई बुद्धिजीवी है। उसका लहजा भी अपढ़ श्रमिकों जैसा नीचे स्तर का नहीं था।

विंस्टन का स्वागत करते हुए वह तुरन्त ही बोला, "आप ही तो मुझसे एक छोटी-सी सादी पुस्तक मोल ले गये थे, जिसमें किसी युवती को अपने बहुमूल्य चित्र सुरक्षित रखने थे। उसका कागज बहुत सुन्दर था। किसी समय उसे 'क्रीमलेड' कहा जाता था। ५० वर्ष से तो अब ऐसा कागज कदाचित् बनता ही नहीं।" फिर विंस्टन की ओर अपनी ऐनक से झाँककर उसने पूछा, "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

विंस्टन ने निरुद्देश्य भाव मे उत्तर किया, "मैं इधर से जा रहा था, यों ही भीतर आ गया, कुछ चाहिए नहीं।"

बूढ़े ने हाथ जोड़कर क्षमा-प्रार्थना की मुद्रा में कहा, "कोई हर्ज नहीं, आप अपने चारों ओर देखिये। आप कहेंगे कि दुकान खाली ही है। आपस की बात है, पुरानी निधि की बिक्री का व्यापार प्रायः समाप्त हो गया है। इसकी कोई माँग नहीं रही इसलिए माल भी नहीं। आराइश का सामान, चीनी और शीशे के बर्तन धीरे-धीरे सभी टूट-फूट गये हैं; और धातु की चीजें तो प्रायः सभी गला दी गई हैं। वर्षों से मैंने पीतल का शमादान भी नहीं देखा है।"

दुकान का भीतरी भाग छोटा होने के कारण बेतरह भरा दिखाई दिया। परन्तु उसमें काम की प्रायः कोई वस्तु नहीं थी। बहुत-से गर्द भरे चित्रों के चौखटे, लोहे के पेंचों और ढिबरियों से भरे बर्तन, बेकार रूखानियाँ, टूटे चाकू, टूटी-फूटी और बदरंग घड़ियाँ थीं जिनकी मरम्मत असम्भव थी। परन्तु इस पँचमेल कूड़े के बीच मुलम्मा चढ़ी सुँघनियों या सुलेमानी ब्रूचों जैसी कुछ आकर्षक वस्तुएँ भी थीं; विंस्टन की

नजर एक गोल चिकनी वस्तु पर पहुँची जो लैम्प के प्रकाश में चमकती दिखाई दी।

विंस्टन ने उसे उठा लिया। वह एक ओर से गोल और दूसरी ओर से चपटी शीशे की एक भारी वस्तु थी। उसके भीतर लाल रंग की अजीब से ऐंठी हुई कोई चीज थी जो बूढ़े की समझ में मूँगा था।

बूढ़े ने बताया, "इसको बने कम-से-कम सौ वर्ष हुए; देखने में तो इससे भी अधिक पुराना मालूम होता है। शीशे में मूँगे को बन्द करके इसे बनाते थे।"

विंस्टन आकृष्ट होकर बोला, "यह वास्तव में बहुत सुन्दर है।"

बूढ़े ने प्रसन्न होकर कहा, "कोई सन्देह नहीं, परन्तु अब इसकी दाद देनेवालों की संख्या थोड़ी ही रह गई है।" दाम बताने आवश्यक थे, इसलिए कुछ खाँसकर बोला, "यदि आप इसे खरीदना चाहें तो आपको चार डालर में मिल सकता है।"

विंस्टन ने बूढ़े के हाथ में रकम दे दी और वह प्रिय वस्तु अपनी जेब में डाल ली। वह उसकी सुन्दरता से इतना आकर्षित नहीं था, जितना इस भावना से कि वह उस काल की है जो वर्तमान से बिल्कुल भिन्न था। उसने सही अनुमान कर लिया था कि यह वस्तु किसी समय कागज़ दबाने के काम में आती थी, परन्तु अब ऐसी वस्तु की स्पष्टतः कोई जरूरत नहीं थी। इसीलिए उसका इस वस्तु के प्रति आकर्षण और भी बढ़ गया। उसकी जेब में वह बहुत भारी मालूम हुई पर सौभाग्यवश वह बड़ी नहीं थी। ऐसी वस्तु अपने पास रखने से दल के सदस्य के प्रति सन्देह हो सकता था। कोई वस्तु चाहे भी कितनी सुन्दर हो, पुरानी होने के कारण वह संदिग्ध थी।

रकम पाकर बूढ़ा अधिक प्रसन्न दिखाई देने लगा और बोला, "सीढ़ी चढ़कर एक और कमरा है, जिसे देखना आप कदाचित् पसन्द करें, यद्यपि उसमें कुछ चीजों के अतिरिक्त विशेष आकर्षण नहीं है।"

तेल का लैंप जलाकर धीरे-धीरे ऊँची और पुरानी सीढ़ियों और

एक पतले बरामदे से रास्ता दिखाते हुए बूढ़ा विंस्टन को एक छोटे परन्तु रहने योग्य कमरे तक ले गया। विंस्टन ने देखा कि सामान इस प्रकार लगा है, मानो वह रहने का कमरा हो। फर्श पर एक छोटी-सी दरी, दीवारों पर एक-दो चित्र, और आतिशदान के निकट एक गहरी आराम-कुर्सी पड़ी हुई थी। आतिशदान के पटरे पर एक पुराने फैशन की शीशे की चालू घड़ी रखी थी, जिसमें बारह घण्टे बने हुए थे। खिड़की के नीचे कमरे का प्रायः चौथाई भाग घेरे हुए एक बड़ा पलंग था।

बूढ़ा क्षमा-याचना की मुद्रा में बोला, "जब तक मेरी पत्नी जीवित रही, तब तक हम लोग यहीं रहते थे।"

बूढ़ा लैम्प ऊँचा किये हुए था जिससे प्रकाश पूरे कमरे में पहुँच जाये। इस हलके प्रकाश में विंस्टन को कमरा अत्यन्त आकर्षक मालूम हो रहा था। श्रमिक बस्तियों में टेलीस्क्रीन नहीं होते थे, सो यहाँ भी कोई नहीं था। उसके मन में विचार आया कि यदि वह निवास-स्थान बदलने का साहस कर सके तो उसको यह कमरा प्रति सप्ताह थोड़े ही रुपये देकर रहने को मिल सकता है। यह एक ऐसा बेतुका और असम्भव विचार था, जिसे छोड़ देना तुरन्त ही आवश्यक हो गया। परन्तु कमरा देखकर उसके मन में एक प्रकार की वियोग-भावना जागृत हुई—वियोग उस जीवन से जिसका सुख उसके पूर्वजों को प्राप्त था। वह ऐसे कमरे में बैठने के सुख की कल्पना करने लगा। आतिशदान की मुँडेर पर अपने पैर रखे आराम-कुर्सी पर लेटे हैं; केतली आग पर चढ़ी है; अकेले हैं, परन्तु एकदम सुरक्षित। कोई निगरानी नहीं कर रहा, घड़ी की मैत्रीपूर्ण टिक्-टिक् और केतली के गीत के अतिरिक्त कोई आवाज नहीं है।

कमरे के कोने में लगी एक अलमारी की ओर विंस्टन का ध्यान आकर्षित हुआ। यह अलमारी पुस्तकें सजाने के काम की थी, इसीलिए कदाचित् विंस्टन का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ था। परन्तु

अलमारी में कूड़े के अतिरिक्त कुछ नहीं था, क्योंकि पुस्तकें ढूँढ़-ढूँढ़कर नष्ट कर दी गई थीं। ओशियानिया भर में १९६० के पहले छपी किसी पुस्तक की कोई प्रति शायद ही कहीं बची हो।

बूढ़ा हाथ में लैम्प लिये चन्दन के चौखटे में मढ़े एक चित्र के सामने खड़ा हो गया और नम्रता से बोला, "हाँ, यदि आपको पुरानी तस्वीरों में दिलचस्पी हो—"

विंस्टन चित्र देखने लगा यह इस्पात की एक तख्ती पर खुदा हुआ एक अंडाकार भवन का चित्र था, जिसमें चौकोर खिड़कियाँ और आगे एक छोटी-सी मीनार थी। भवन उसे कुछ परिचित-सा मालूम हुआ, यद्यपि उसमें चित्रित मूर्ति की याद उसे नहीं थी।

कुछ सोचकर उसने आखिरकार कहा, "मैं इस भवन को जानता हूँ; अब खण्डहर हो गया है, सड़क के बीच न्याय-प्रासाद के निकट है।"

बूढ़े ने सहमति प्रकट की और बोला, "इस पर—किस सन् में—कई वर्ष हुए बमबारी हुई थी। किसी समय यह एक गिर्जाघर था और इसका नाम था सेंट क्लीमेन्ट्स डेन।"

विंस्टन सोच रहा था कि चित्र में अंकित वह गिर्जाघर किस शती में बना होगा। लन्दन के किसी भवन का निर्माण-काल निश्चय करना सदैव कठिन होता था। यदि कोई बड़ा और शानदार भवन देखने में भी नया मालूम होता था तो यह दावा स्वभावतः कर दिया जाता था कि वह क्रान्ति के पश्चात् बना है। यदि प्रकट रूप में भवन पुराना मालूम होता था तो उसका निर्माण मध्य-युग के किसी अनिश्चित काल में बताया जाता था और यह कहा जाता था कि पूँजीवाद से प्रभावित शतियों में कोई महत्त्वपूर्ण निर्माण नहीं हुआ। शिलालेख और स्मारक —और हर वह चीज जिससे अतीत का पता चलता हो—नियमपूर्वक बदल दिये गये थे।

विंस्टन ने कहा, "मैं नहीं जानता था कि यह भवन गिर्जाघर था।"

बूढ़े ने कहा, "ऐसे अनेक गिर्जाघर अब भी बाकी हैं, पर वे अब दूसरे कामों में आ रहे हैं।"

विंस्टन ने वह चित्र मोल नहीं लिया, क्योंकि इसका उसके पास रहना शीशे के पेपरवेट से भी अधिक असाधारण बात होती। वह तुरन्त अकेला सीढ़ियों से उतरकर सड़क की ओर चल दिया।

उसने सोचा, कभी फिर आऊँगा और कबाड़खाने से कुछ सुन्दर चीजें खरीदूँगा। सेंट क्लीमेंट्स डेन का चित्र खरीदना ही है। उसका चौखटा निकलवा दूँगा और अपने चोगे के भीतर छिपाकर उसे घर ले आऊँगा। एक बार उसके मस्तिष्क में कबाड़खाने के ऊपरवाला कमरा किराये पर लेने का ख्याल भी आया। कुछ ही क्षण के लिए, ऐसी ही सुखमय कल्पनाओं के मध्य, वह अपनी स्थिति भूल गया और खिड़की से सड़क की ओर देखे बिना वह सड़क की पटरी तक पहुँच गया।

अकस्मात् उसका दिल बैठ गया और पेट में एक खलबली-सी मच गई। नीला चोगा पहने एक व्यक्ति कोई दस गज के फासले पर आता दिखाई दिया। यह वही काले बालोंवाली कहानी-विभाग की कर्मचारिणी थी। अँधेरा होने लगा था, परन्तु उसको पहचानने में विंस्टन को देर नहीं लगी। लड़की ने उसे घूरा, परन्तु तुरन्त ही तेजी के साथ आगे निकल गई मानो उसने विंस्टन को देखा ही न हो।

कुछ क्षण तक विंस्टन इतना शिथिल रहा कि वह पैर भी आगे न बढ़ा सकता था। किसी प्रकार उसने फिर चलना शुरू किया। सोचा, यह युवती मेरा पीछा यहाँ तक अवश्य कर रही होगी। यह संयोग ही की बात नहीं है कि हम दोनों एक ही समय ऐसी गली में चलने के लिए निकले जो चलती नहीं। यह औरत खुफिया पुलिस से नियुक्त हो या शौकिया ही इसने मेरा भेद लेने की धृष्टता की हो, मेरे विरुद्ध उसका चुगली खाना ही मेरी मौत के पैगाम के लिए काफी है।

एक बार उसे खयाल आया, दौड़कर शायद इस औरत को पकड़ सकूँ, उसका पीछा करता रहूँ और जब हम दोनों किसी सुनसान जगह

पर पहुँच जायें, तो मैं उसकी खोपड़ी तोड़ दूँ। मेरी जेब में पड़ा शीशे का बट्टा इस कपाल-क्रिया के लिए यथेष्ट भारी होगा। परन्तु उसका यह विचार तुरन्त ही समाप्त हो गया, क्योंकि डर के मारे वह इतना शिथिल हो गया था कि कोई भी शारीरिक उद्योग करना उसके लिए असहनीय था। एक बार उसने सोचा, समाज-संगम दौड़ जाऊँ और उसके बन्द होते समय तक वहाँ रुका रहूँ। यों संध्या के समय संगम में अपनी उपस्थिति का थोड़ा-बहुत प्रमाण तो मैं औरत की चुगली के विरुद्ध प्रस्तुत कर ही सकूँगा। परन्तु उसे यह कहना भी असम्भव मालूम हुआ। उसकी शिथिलता मृत्यु के समान हो गई थी। किसी प्रकार घर पहुँचकर शान्तिपूर्वक बैठने के अतिरिक्त उसके सामने कोई चारा नहीं था।

निवास-कक्ष तक पहुँचते-पहुँचते रात के दस बज गये। साढ़े ग्यारह बजे मेन स्विच द्वारा पूरे भवन की रोशनी बन्द होने को थी। इसलिए उसने रसोईघर में जाकर विजय-मदिरा का एक प्याला पिया। फिर मेज के पास बैठकर अपनी डायरी निकाली पर उसे तुरन्त खोला नहीं, क्योंकि उसी समय टेलीस्क्रीन से देशभक्ति का एक संगीत किसी स्त्री के तेज स्वर में उसे सुनाई देने लगा। वह डायरी की ओर घूरता रहा। परन्तु टेलीस्क्रीन की आवाज को भुला न सका।

भय की कल्पना विंस्टन पर फिर सवार हो गई। सोचने लगा कि अपराधी रात ही को तो गिरफ्तार किये जाते हैं। चाहिए यह कि पकड़ में आने के पहले ही वह आत्म-हत्या कर ले। कुछ लोग निःसंदेह ऐसा ही करते थे, परन्तु भय की कल्पना ने विंस्टन को इतना निस्तेज कर दिया था कि वह जैसे काले बालोंवाली लड़की को ठण्डा करने की उत्तेजना की पूर्ति नहीं कर सका, वैसे ही उसने आत्म-हत्या के सम्बन्ध में भी अपने को निष्क्रिय पाया।

टेलीस्क्रीन से एक औरत ने नया संगीत प्रारम्भ कर दिया था। उसकी आवाज शीशे के नुकीले टुकड़ों की तरह उसके मस्तिष्क को

पीड़ा पहुँचाने लगी। उसने सोचा कोई हर्ज नहीं यदि वे मुझे तुरन्त ही मार डालें; इसके लिए तो तैयार रहना ही चाहिए। परन्तु मरने के पहले अपराध को स्वीकार कराने का तमाशा भी किया जाता था। अपराधी को दीनतापूर्वक फर्श पर गिड़गिड़ाना पड़ता था। दया के लिए वह चिल्लाता था; उसकी हड्डियाँ तोड़ी जाती थीं; उसके दाँत तोड़ दिये जाते थे, और रक्तरंजित बालों के गुच्छे उसके सिर से नोचे जाते थे। इन अनाचारों का कहीं जिक्र नहीं होता, यद्यपि सभी इन्हें जानते थे। फिर यह सब क्यों सहन किया जाये—जब अन्त सब कष्टों का एक ही है और वह यह कि सभी पकड़ में आ जाते हैं और सभी अपने अपराध स्वीकार करते हैं। तो फिर आतंक के इतने दृश्य क्यों, जब परिणाम में कोई भेद नहीं होता।

परन्तु टेलीस्क्रीन से निकलती तेज आवाज से श्रृङ्खलाबद्ध विचार की प्रगति असम्भव हो गई। विंस्टन ने अपने मुँह में एक सिगरेट लगाई ही थी कि आधी तम्बाकू उसकी जीभ पर ही गिर पड़ी और उसकी कड़वी गर्द को थूकना भी मुश्किल हो गया। बड़े भाई की मुखाकृति उसके मस्तक के सामने घूम गई। जैसा वह कुछ दिन पहले कर चुका था, वैसे ही उसने एक सिक्के को अपनी जेब से निकालकर उसे देखा। चित्र उसकी ओर निहारता दिखाई दिया। गम्भीरता, शान्ति और संरक्षण की मुस्कराहट लिये हुए परन्तु इन काली मूँछों के पीछे किस प्रकार की मुस्कराहट छिपी हुई थी। शव-यात्रा के समय के शोक-संगीत के समान दल के पुराने नारे उसे सुनाई देने लगे :

युद्ध ही शान्ति है।
स्वतन्त्रता ही दासता है।
अज्ञान ही शक्ति है।

बेटी का ब्याह

(एडवर्ड स्ट्रीटर की पुस्तक का सार)

बेटी के ब्याह के समय बेचारे पिता की मानसिक तथा आर्थिक दुर्दशा का चित्रण बड़ी सहानुभूति के साथ एडवर्ड स्ट्रीटर ने इस पुस्तक में किया है जिसे पढ़कर हँसते-हँसते आपके पेट में बल पड़ जायेंगे।

बेटी का ब्याह

के अपने विवाह के बारे में जो भी कदम उठाती, उससे उसके पिता मि० स्टैनले बैंक्स को कोई विशेष हर्ष न होता; इसका कारण केवल यह था कि वह अपनी पहली सन्तान से उससे कहीं अधिक प्यार करते थे जितना कि उन्हें स्वयं आभास था।

उसकी किशोरावस्था में उसके पिता ने उसके साथ विवाह की इच्छा रखनेवाले हर युवक को बड़े तिरस्कार के साथ नामंजूर कर दिया था। बाहर को निकले हुए अपने बड़े-बड़े दाँत ठीक करवाकर और अपने बाल स्थायी रूप से घुंघराले करवाकर के ने जब से लोगों में उठना-बैठना शुरू किया था तभी से लम्बी-लम्बी टाँगोंवाले किशोर-वयस्क लड़के, जिनके बाल साही के काँटों की तरह खड़े रहते थे, २४ मैपिल ड्राइव के चक्कर लगाने लगे थे। मि० बैंक्स उन सभी को सन्देह की दृष्टि से देखते थे।

अकस्मात्—माता-पिता को कोई चेतावनी भी नहीं—दोनों को दिखाई देने लगा कि के की भाव-भंगिमा में कोई परिवर्तन होने लगा है, मानो कोई कीमिया उस पर अपना असर कर रही हो। घर पर उसकी मुख-मुद्रा से हमेशा गम्भीरता प्रदर्शित होती थी, और यही फैशन भी था; परन्तु अब उसके हाव-भाव में एक चंचलता प्रकट होने लगी जिसके कारण मि० बैंक्स को वह कुछ अपरिचित-सी लगने लगी थी।

एक दिन अपनी पत्नी से पूछ ही तो बैठे, "एली, के को क्या हो गया है, कुछ विचित्र-सा व्यवहार है उसका।"

श्रीमती बोलीं, "मैं नहीं जानती; कदाचित् प्रणय के पहले बाण का प्रभाव है।"

मि० बैंक्स तिरस्कार की मुद्रा में बड़बड़ाने लगे, "प्रणय किसके साथ ?"

"आपको उस लड़के की याद है ? उसका नाम बक्ले जैसा ही कुछ है।"

"तुम्हारा मतलब उस लम्बे-चौड़े सुअर से है ? कैसी बात करती हो।"

परन्तु दिन बीतते गये, तो साथ ही बक्ले का व्यक्तित्व भी बैंक्स-परिवार में अधिक प्रत्यक्ष होने लगा। बातचीत के सिलसिले में के के मुख से बक्ले का नाम निकल जाता, और दिन जाते के की बातों में बक्ले की चर्चा बढ़ती गई। के घर के बाहर जाती, तो मि० बैंक्स को कभी साफ न मालूम होता कि वह अपना समय कहाँ बिताती है। परन्तु यह प्रत्यक्ष था कि जहाँ उसका समय बीतता है, बक्ले भी उसके साथ रहता है। अकस्मात् लड़की के विवाह के सम्बन्ध में मि० बैंक्स की पुरानी भावना फिर जाग्रत हुई। यह नया पतिंगा, जो दीपक के इतने निकट उड़ने लगा था, उन्हें तो निश्चित रूप से बहुत ही बुरा लगता था।

बैंक्स-परिवार में अब वह खामोशी छा गई जो दर्शकों में थियेटर का परदा उठने के पहले होती है—उन लोगों ने सोचा कोई नई बात होनेवाली है, पर हुआ कुछ भी नहीं। के खोई-खोई-सी दिखाई देती रही। घर के बैठक में आकर बक्ले कभी-कभी के की प्रतीक्षा करता, तो परिवार के अन्य सदस्यों से अलग रहने का प्रयत्न करता और कुछ क्षण तक गम्भीर मुद्रा में दिखाई देता। इसी तरह कुछ क्षण रहने के बाद दोनों उठकर चल देते—रात के अंधियारे में।

● ● ●

एक दिन अकस्मात् तूफ़ान आ ही तो गया।

के का रात्रिकालीन भोजन इन दिनों आम तौर से घर के बाहर ही हुआ करता था। आज रात को के के दोनों छोटे भाई कोई तमाशा देखने चले गये थे, और माता-पिता के साथ खाने के लिए के भी बैठ गई थी।

बातचीत के सिलसिले में के ने सूचना दी, "ममी ! मैं अगले शनिवार और रविवार को घर पर नहीं रहूँगी।"

माँ ने पूछा, "बेटी ? कहाँ जा रही हो ?"

उत्तर मिला, "मैं दो दिन बक्ले के यहाँ रहूँगी।"

मि० बैंक्स हाथ में बिस्कुट लिये शोरवा पीने जा रहे थे। यह बात सुनकर चौंक पड़े, बिस्कुट हाथ से छूटकर शोरवे में गिरा, पूछने लगे, "सुनो, क्या तुम इस विचित्र व्यक्ति से ब्याह करना चाहती हो ?"

के का उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त रहा, "खयाल तो है।"

थोड़ी देर तक खामोशी रही और तीनों बैठे टमाटर का शोरवा पीते रहे। अन्ततः श्रीमती बैंक्स से न रहा गया और वह दबे व्यंग से पूछ बैठीं, "और कब ब्याह करने की बात सोच रही हो ?"

के के उत्तर में बच्चों की थकी शिक्षिका का स्वर था, बोली, "ममी ! मुझे नहीं मालूम, महीनों में हो या सप्ताहों के भीतर ही हो जाये—सब कुछ बक्ले की योजनाओं पर निर्भर है। इस सम्बन्ध में उसके विचार अटल हैं। विवाह की तिथि के सम्बन्ध में उसका वचन लेने की कोई आशा न कीजिये।"

मि० बैंक्स का पारा काफी चढ़ चुका था, खाते-खाते उन्हें मालूम हुआ, जैसे उनके गले में कुछ अटक गया है। पानी पीकर कुछ शान्त हुए, तो तीखे स्वर में कहा, "आशा है कि यदि मैं थोड़े-से सीधे-सादे प्रश्न पूछ लूँ तो बक्ले यह तो न समझेगा कि मैं उसे वचनबद्ध करने जा रहा हूँ।"

के अनमनी-सी दिखाई देने लगी।

परन्तु मि० बैंक्स कहते गये, "यह बक्ले है कौन वला, इसका पारिवारिक नाम क्या है, कौन से प्रदेश का रहनेवाला है, और कौन उसकी परवरिश करेगा ? यदि वह समझता है कि परवरिश मेरे जिम्मे होगी तो उसको बड़ी निराशा होगी। और भगवान जाने कौन—।"

पतिदेव की बात काटकर श्रीमती बोल पड़ीं, "स्टैनले, कोई यहाँ बहरा नहीं है, और प्रत्येक शब्द के साथ गाली देना तुम्हें शोभा नहीं देता। रसोईघर में बैठी नौकरानी डिलाइला सुन रही है, कितनी लज्जा की बात है हमारे लिए। अरे, के को उत्तर देने का मौका तो दो। उसे—"

इतने में माँ-बाप की दुलारी के पहली बार अपने पिता को मुँह-तोड़ उत्तर देने लगी, "पापा, सुनिये, मैं चौबीस वर्ष की हुई, और बक्ले छब्बीस वर्ष का है। हम लोग वयस्क हो गये हैं; और आपने बक्ले की परवरिश की जो बात कही, तो मैं आपसे एकदम साफ कह दूँ कि वह किसी पर अपनी परवरिश का भार डालने का नहीं; वह मरना बेहतर समझेगा, वह ऐसा व्यक्ति है, जो बिलकुल स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर रहना चाहेगा।

"और उसका पूरा नाम है बक्ले डंस्टन। वह पक्का व्यवसायी है, उसमें व्यवसाय की आश्चर्यजनक प्रतिभा है, और उसका व्यवसाय भी अत्यन्त सुन्दर है।"

इतने लम्बे उत्तर में बैंक्स को प्रश्न योग्य एक ही बात मिली, "करता क्या है ?"

"पापा, मैं नहीं जानती, वह कुछ बनाता है, और हमें इससे क्या मतलब कि वह क्या बनाता है। वह ऐसा आदमी है जो सभी काम कर सकता है।

"और आप माता-पिता की बात पूछेंगे, तो पापा, मैं आपसे इतना तो कह ही दूँ कि वे आप दोनों से कम नहीं हैं।" उसकी बोली से यह झलकता था कि वह हैसियत का बयान कुछ घटाकर दे रही है। "ये

लोग ईस्ट स्मिथफील्ड में रहते हैं और मेरा अनुमान है कि यह कस्बा फेयरव्यू मैनर से कम अच्छा नहीं, यद्यपि इन सब बातों से मेरे विचार में कुछ फर्क नहीं पड़ता।"

मि० बैंक्स ने चुप रहकर अपनी सहमति प्रकट की। जितने वे गर्म हुए थे, उतने ही अब ठण्डे पड़ गये। जो-कुछ वे कहती रहीं उसका अधिकांश उन्होंने सुना ही नहीं, और बक्ले को तो वे भूल ही गये थे। वे अपनी बड़ी बेटी के तमतमाये चेहरे को देखते रहे और उन्हें उसके बचपन की याद आती रही, जब भूरी चोटियाँ बाँधे और मैला फ्राक पहने अपने दोनों छोटे भाइयों की अत्यधिक छेड़छाड़ पर वह उनसे लड़ पड़ती थी। यह सब उन्हें कल की बात प्रतीत हुई। उन्हें कुछ ऐसी घबराहट हुई, मानो उनका हृदय भर आया हो, और आँखों से आँसू निकलने को हों।

कुर्सी से उठकर उन्होंने अपनी प्यारी बेटी का मस्तक चूमा और बोले, "बेटी, बहुत अच्छा। मेरा उसके प्रति स्नेह अभी से है।"

● ● ●

मि० बैंक्स की गिनती नगर के बहुत समझदार और सुलझे हुए वकीलों में थी। परन्तु इस घटना के बाद से वह अपने को एक नासमझ और चिन्तायुक्त मस्तिष्क-रोगी जैसा समझने लगे। रात को उन्हें नींद न आती। उनके शयन-गृह की छत पर एक दूधिया धब्बे जैसा प्रकाश सड़क की रोशनी से आता था और वे लेटे उसी को ताका करते—यह आवारा कौन है, जिसने मेरे घर पर आक्रमण करके मेरे देखते-देखते मेरी लड़की को मुझसे छीन लिया? लड़की, अरे वह लड़की ही तो है, उसे क्या मालूम कि सफल दाम्पत्य के लिए पुरुष में कौन-कौन गुण होने चाहिए। नाम के अतिरिक्त वे और कौन बात उसके विषय में जानती है? हाँ, एक बात जरूर जानती है, और वह है उसका सुन्दर स्वास्थ्य। यह तो बड़ी बात तब होगी जब उसके बच्चे पैदा होने लगेंगे।

उन्होंने अपनी श्रीमती की ओर देखा। वे शांति से सो रही थीं। स्त्रियां भी कैसी अजीब होती हैं। यदि बच्चे कोई नाच देखने चले जाते हैं तो इन्हें तब तक नींद नहीं आती, जब तक वे वापस नहीं आ जाते। परन्तु जब अपनी एकलौती बेटी के सामने यह समस्या है कि वह जीवन-भर क्या खायेगी, क्या पहनेगी, तो यह बच्चे के समान सो रही हैं।

अपनी पत्नी की बातों से मि० बैंक्स को यह बात साफ समझ में आने लगी कि उसे बक्ले को जरा भी फिक्र न थी; विवाहोत्सव और उससे सम्बन्धित प्रबन्ध की ही फिक्र थी, क्योंकि स्त्री की दृष्टि में विवाह, गिर्जाघर में दिये गये वचनों से ही पक्का नहीं होता, उसकी पुष्टि वस्त्रों, टोपियों, जूतों जैसी हजारों चीजों के प्रबन्ध से होती है।

मि० बैंक्स को हमेशा से मालूम था कि उनकी श्रीमती को खरीदारी का जन्म-जात चाव है, यद्यपि आर्थिक स्थिति के कारण उसकी इस प्रतिभा पर कुछ प्रतिबन्ध लग गये थे। अब इतने समय बाद उसे खरीदारी का स्वर्ण-अवसर मिला तो वह गुनगुनाई, "के दुलहिन बनकर बहुत सुन्दर लगेगी। उसका चेहरा-मोहरा और रूप-रंग बहुत ही उपयुक्त है। मैं जानती हूँ कि उस पर कौन पोशाक सबसे अधिक फबेगी, लम्बी कसी आस्तीन का ब्लाउज और स्कर्ट—"

● ● ●

क्रमशः यह प्रत्यक्ष होने लगा कि कभी-न-कभी बक्ले के परिवार से मिलने का प्रबन्ध करना होगा, परन्तु मि० बैंक्स सम्मिलन की तिथि टालते रहे।

एक दिन अन्यमनस्क होकर कहने लगे, "क्या ही अच्छा होता, यदि के ने किसी ऐसे को पसन्द किया होता जो हमारी जान-पहचान का होता। ऐसे परिवार में पहुँची, जिन्हें मैंने कभी देखा भी न था। मुझे अनुमान है कि ये लोग कैसे होंगे। बड़ी मुसीबत है।"

अन्ततः डंस्टन-परिवार ने स्वयं ही मि० बैंक्स को सपत्नीक अगले रविवार के भोजन पर निमन्त्रित किया। लिखा—हम सब चार ही व्यक्ति होंगे, सपत्नीक आप और हम दोनों, न के होगी न बक्ले; इसलिए कि हम लोग एक-दूसरे से खूब परिचित हो जायें।

निमन्त्रण पाकर मि० बैंक्स बोले, "कर्तव्य से खूब उऋण हुए; ये लोग बहुत भले मालूम होते हैं।"

डंस्टन के घर हाज़िरी देने जाना बैंक्स के लिए ऐसा ही था, जैसे कोई नवयुवती राज-दरबार में पहली बार हाजिरी देने की तैयारी कर रही हो। रविवार को प्रातःकाल पहले तो मि० बैंक्स ने बहुत चाव से शिकारी कोट और ढीला पतलून चढ़ाया; फिर नाश्ता करने के बाद ऊपर जाकर दफ्तर की पोशाक पहन आये और समय से आधा घण्टा पहले ही रवाना होने का हठ करने लगे। नतीजा यह हुआ कि १२ बजे के कुछ ही मिनट बाद दोनों अपनी मोटर पर ईस्ट स्मिथफील्ड पहुँच गये।

बैंक्स ने कहा, "डंस्टन के घर पर घण्टा-भर बैठे-बैठे दीवारें ताका करूँगा तो इसमें हम लोगों के लिए लज्जा की बात होगी। बेहतर है कि चलो शहर का चक्कर लगा आयें, और कुछ निवासियों से मुलाकात भी हो जाये।"

कुछ निराश होकर वह अपनी पत्नी से बोले, "शर्त बदता हूँ, खाने के पहले ये लोग कुछ पियेंगे भी नहीं।"

श्रीमती बोलीं, "मान लो वे नहीं पीते, तुम कोई शराबी तो हो नहीं।"

मि० बैंक्स ने एक आह भरी और बात वहीं समाप्त कर दी।

श्रीमती बोलीं, "समझदारी इसमें है कि बेकार चक्कर न लगाकर हम लोग डंस्टन के घर का पता लगा लें। इतना तो लाभ होगा ही कि समय से वहाँ पहुँच जायेंगे।

मि० बैंक्स बोले, "चलो, घर क्या होगा, कोई झोंपड़ी ही होगी।"

जब अन्ततः इन्होंने पता लगा लिया तो डंस्टन के जिस निवास-स्थान को मि० बैंक्स झोपड़ी समझे बैठे थे, वह उन्हें सफेदी से पुते एक बहुत बड़े पक्के भवन के रूप में दिखाई दिया, जिसके चारों ओर पुराने विलायती पेड़ लगे थे। जब मि० बैंक्स ने देखा कि यह मकान अपने घर से दूना तो है ही, तो उनकी घबराहट बढ़ गई।

उन्होंने अपनी घड़ी देखकर सूचना दी, "जिस होटल होते हुए हम लोग यहाँ आये है, वहीं वापस जाकर हाथ-मुँह धो आऊँ।" श्रीमती बोलीं, "क्या बकवास करते हो? डंस्टन के घर ही क्यों न हाथ-मुँह धो लेना। उनके यहाँ नल होगा ही।"

बैंक्स ने शान से कहा, "मैं होटल ही मे हाथ-मुँह धोना पसन्द करूँगा।" श्रीमती चुप रहीं, देखा, झगड़ने का यहाँ कोई मौका नहीं है।

जब दोनों की मोटर होटल के सामने पहुँची, तो शिष्टाचार के प्रतिकूल मि० बैंक्स ने श्रीमती को मोटर में ही रहने दिया और स्वयं जल्दी से दरवाजे के भीतर घुस गये। १० मिनट बाद लौटे, तो पहले से अधिक शांत दिखाई दिये। मि० बैंक्स मोटर मे पहुँचे तो उसके भीतर शनिवार की शैतानी रात की गन्ध व्याप्त हो गई।

श्रीमती से न रहा गया, बोली, "स्टैनले बैंक्स? पीकर आये हो?"

मि० बैंक्स को मोटर चलानी थी; अतएव सामने सड़क से आँखें हटाये बिना पत्नी से पूछा, "यह कैसी बात है कि कभी कोई संयोगवश कुछ पी ले तो उस पर शराब पीने का इलजाम लगे। मेरे ख्याल से पचास के ऊपर के आदमी को—"

कुछ देर बाद वह और भी ताव में आकर बोलीं, "मैं समझती हूँ कि तुम्हारे लिए बड़ी लज्जा की बात है कि तुम पुरानी ह्विस्की की भाँति गंधाते हुए डंस्टन-परिवार से मिलने जाओ। बड़ी जिल्लत की बात है। सो भी रविवार के प्रातःकाल।"

बैंक्स को अपनी पत्नी का संकेत समझ में नहीं आया। बहस की

बात बदलने की आशा से पूछा, "रविवार के प्रातःकाल का इस बात से क्या मतलब ?" परन्तु श्रीमती उलझती ही रहीं, जब तक डंस्टन की कोठी के फाटक के भीतर दोनों मुड़ नहीं गये।

• • •

लड़की के माता-पिता की लड़के के माता-पिता से पहली मुलाकात ऐसी ही हुई, मानो वह अमरीका में जाकर बसनेवाले गोरों और वहाँ के आदिवासी रेड इण्डियनों की पहली मुठभेड़ हो, जिसमें द्वेष और आश्चर्य की भावना लिये दोनों एक-दूसरे को ताकें। श्रीमती बैंक्स और श्रीमती डंस्टन की मुलालात होते ही दोनों ने एक-दूसरे को चोटी से एड़ी तक गौर से देखा। दोनों को एक-दूसरे से संतोष हुआ, तो आगे बढ़कर बाँह फैलाये दोनों एक-दूसरे से 'माई डियर' कहकर लिपट गईं।

इन दोनों के पतियों ने हिचकिचाते हुए एक-दूसरे से हाथ ही मिलाये और एक साथ स्वागतार्थ बोले, "आपसे मिलकर निःसन्देह बहुत खुशी हुई।"

श्रीमती डंस्टन आगे बढ़कर बैठक की ओर दोनों को ले चलीं। मि० डंस्टन ने पूछा, "आप, हाथ-मुँह धोइयेगा ?"

मि० बैंक्स के मस्तिष्क में डंस्टन के प्रति अभी अविश्वास था ही; सो झेंपते हुए उन्होंने कहा, "मैं धो चुका।"

श्रीमती डंस्टन बोलीं, "मैं कैसे बताऊँ, मुझे आपकी के कितनी प्यारी लगती है।"

श्रीमती बैंक्स अनुकूल प्रत्युत्तर के लिए बोलीं, "बक्ले के प्रति भी हमारी वैसी ही भावनाएँ हैं।"

मि० बैंक्स को कुछ कहना ही था, अतएव "हाँ अवश्य" कहकर उन्होंने अपनी पत्नी का समर्थन किया।

अब मि० बैंक्स के विचार में कहने की कोई बात नहीं रह गई

थी। वह बातचीत बन्द करके भोजन पर बैठने का प्रस्ताव सुनने के लिए तैयार थे।

इतने में नौकरानी एक हाथ में शराब का कंटर और दूसरे हाथ में नमकीन और गरम पकवान की थाली लिये सामने आ गई। मि० बैंक्स का अविश्वास समाप्त नहीं हुआ था, परन्तु उन्हें इस प्रबन्ध से खुशी जरूर हुई।

उन्होंने मदिरा का एक प्याला ले लिया, और उन्हें यह बहुत अच्छी लगी। डंस्टन ने कहा, "आइये, हम लोग वर-कन्या के सुख और दीर्घायु की कामना करते हुए अपने-अपने प्याले पियें।" मि० बैंक्स एक घूँट में सब पी गये और तुरन्त ही पिचके गुब्बारे के भाँति ढीले पड़ गये। मि० डंस्टन ने प्याले फिर भरे।

मि० बैंक्स होटल में हाथ-मुँह धोकर कुछ पी चुके थे। यहाँ भी आशा से अधिक उनका सत्कार हुआ, जिससे उन्हें बोलने की सूझी, "यह हम लोगों के लिए एक स्वर्ण-अवसर है। मैं और मेरी पत्नी न जाने कब से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। आपके पुत्र को तो देखते ही मैंने पसन्द कर लिया था। आप दोनों से मिलने पर मुझे वह पहले से अधिक पसन्द है। आशा है कि डंस्टन-बैंक्स परिवार एक-हृदय होगे।"

श्रीमती डंस्टन विचारपूर्वक बोलीं, "मुझे विश्वास है, हम लोगों की खूब निभेगी, और अब आप हमें डोरिस और हर्बर्ट कहा करें।"

श्रीमती बैंक्स जरूरत से ज्यादा उत्सुकता से बोलीं, "और आप हम दोनों को स्टैनले और एली कहा करें।"

इसके बाद कुछ समय तक व्यग्र शान्ति रही।

मि० बैंक्स ने पूछा, "हर्बर्ट ? क्या कभी तुमने फेयरव्यू मैनर देखा है ?"

उत्तर मिला, "स्टैनले, अभी तक देखा तो नहीं, पर हमने उसके बारे में सुना बहुत-कुछ है।"

श्रीमती बैंक्स ने तब तक बैठक के सब सामान की जाँच कर ली थी; बोलीं, "डोरिस, मुझे तुम्हारा घर बहुत पसन्द है।"

डोरिस ने उत्तर दिया, "एली, धन्यवाद ! यह घर हमें भी पसन्द है। मैं तुम्हारा घर देखना चाहती हूँ। बक्ले बराबर जिक्र किया करता है।"

मि० डंस्टन ने पूछा, "स्टैन, एक और ?"

मि० बैंक्स ने उत्तर दिया, "हर्ब, तुम्हारा साथ देने को एक और पी लूँगा।"

मि० बैंक्स की श्रीमती अपने पति के पास तक खिसककर चुपके से उनके कान में बोलीं, "जरा अपने पैरों की सुध रखना।"

परन्तु चेतावनी बेकार गई। बहुत देर तक बैंक्स के मस्तिष्क में प्रतीक्षा और सन्देह का खिंचाव रहा था। सत्कार और मदिरा से यह खिंचाव समाप्त हो गया था। वह पीने के योग्य न रहा। विनयपूर्वक उसने अपने नये मित्र हर्ब को मदिरा का कंटर खाली करने में सहायता दी।

खाना पहले ही से तैयार था, मौका देखकर श्रीमती डंस्टन ने कहा, "खाना तैयार है।"

इतना कहकर वह मेहमानों को भोजनालय की ओर ले चलीं। मि० बैंक्स के होश थोड़े-बहुत गायब हो चुके थे, परन्तु उन्हें शिष्टाचार का निर्वाह करना ही था। इसलिए श्रीमती डंस्टन की बगल में पहुँचकर बोले, "एडिथ ! यह घर आपका कितना सुन्दर है ?"

श्रीमती डंस्टन ने कहा, "डोरिस है मेरा नाम।" फिर श्रीमती बैंक्स की ओर संकेत करके बोलीं, "एली, आप यहाँ बैठिये और अब हम दोनों अपनी नई बहू की तारीफ आपसे सुनें।"

श्रीमती बैंक्स उत्तर देने में संक्षिप्त रहीं, "लड़की के बारे में कहने को बहुत तो मेरे पास है नहीं।"

मि० बैंक्स यकायक बोल पड़े, "वाह, आप यह जरूर सुनना चाहेंगी

कि किस प्रकार एली एक बार के को उसकी गाड़ी में ही ए० एंड पी० की दुकान के सामने छोड़कर उसे बिलकुल भूल गई थीं और घर चली आई थीं।" उन्होंने बड़े चाव से घटना का ब्यौरेवार विवरण दोनों को सुनाया। संस्मरणों का जल-प्रपात उनके मस्तिष्क से गिरने लगा। उन्होंने के की बाल्यावस्था से शिक्षा-काल तक की सब कहानी कह डाली। परिशिष्ट के रूप में अपने लड़कपन, नई जवानी, और दाम्पत्य जीवन का ब्यौरेवार विवरण भी जोड़ दिया। पहले तो डंस्टन-दम्पति बीच-बीच में कुछ बोलते रहे, परन्तु भोजन के समाप्त होते-होते उन्होंने बात में बैंक्स का मुकाबला करना बन्द कर दिया।

भोजन के पश्चात् मि० बैंक्स बैठक के एक अँधेरे कोने में पड़ी आराम-कुरसी पर लेट गये। लेटते ही उन्हें नींद आने लगी, और वह बोले, "अब आप लोग बक्ले की कहानी सुनाइये।" झपकी लेने की इच्छा वह रोक न सके। बक्ले की कथा हाई स्कूल में भरती होने तक ही पहुँची थी कि मि० बैंक्स की आँखें बन्द हो गईं, और वह एकदम सो गये।

तीसरे पहर बहुत देर से दोनों फेयरव्यू मैनर पहुँचे। इस बार श्रीमती बैंक्स ही मोटर चलाती रहीं। मि० बैंक्स बहुत शान्त और प्रसन्न रहे। डंस्टन-परिवार की तारीफ होती रही—बात-चीत में कैसे सुशील हैं। श्रीमती बैंक्स चुप रहीं; मि० बैंक्स एक छोटा-सा गीत गुनगुनाते रहे।

● ● ●

मि० बैंक्स को क्रमशः प्रत्यक्ष हो गया कि ढील से काम नहीं चलेगा। जब वर और कन्या ने वैवाहिक-सम्बन्ध का निश्चय कर लिया, तो सगाई की सूचना और उसके बाद विवाह-संस्कार ही बाकी रह जाता है। प्रश्न तिथियों का ही था।

मि० बैंक्स का ध्यान विवाहोत्सव पर केन्द्रित हुआ, तो सन्देह और

आशंका की भावनाएँ भी उनके हृदय में उठने लगीं। उन्हें यह अनुमान होने लगा कि विवाह क्या होगा, एक सार्वजनिक उत्सव होगा जिसमें कन्या के पिता की हैसियत से उन्हें प्रमुख पात्र का पार्ट अदा करना पड़ेगा। उनकी समझ में कभी यह आता कि यह मामला शीघ्र-से-शीघ्र समाप्त हो जाये। फिर कभी यह भी सोचते कि तिथि अगर दूर ही टाल दी जाये, तो जैसे लोगों को मौत की फिक्र नहीं रहती, वैसे विवाहोत्सव की चिन्ता भी इस समय तो टल ही जायेगी। श्रीमती बैंक्स का दृष्टिकोण दूसरा ही था। वह समझती थीं, मानो वह किसी तमाशे का प्रबन्ध करने को हैं, जैसे वह पोशाकों की तैयारी, पर्दों के निर्माण, और डोरी-डण्डों को इकट्ठा करने के प्रबन्ध में लगी हों।

के का कहना था कि पापा और ममी दोनों यह महत्वपूर्ण बात भूले हुए मालूम होते हैं कि विवाह उनका नहीं, मेरा होना है, और मैं अपनी प्रेरणा के अनुसार ही विवाह की तिथि और स्थान का निश्चय कर लूँगी। खलबली की कोई जरूरत नहीं। ममी को हाथ क्या, उंगली उठाने की भी जरूरत नहीं। मेरे आदेश देने पर प्रत्येक बात अपनी-अपनी जगह बैठ जायेगी। मुझे और बक्ले को इसी प्रकार अपना जीवन बिताना है, सादगी से और किसी घबराहट के बिना। मैंने तो अपने घर की ऊँची दुकान में फीका पकवान ही बनते देखा है। अब यह सब मैं नहीं होने दूँगी, इसे दोनों अच्छी तरह समझ लें।

यों ही कुछ समय तक बहस का तूफान चलते-चलते वह अकस्मात् समाप्त हो गया। यह निश्चय हो गया कि शुक्रवार १० जून को साढ़े चार बजे तीसरे पहर सेण्ट जॉर्ज गिर्जाघर में दोनों का शुभ विवाह सम्पन्न होगा।

● ● ●

मि० बैंक्स का कहना था कि के ने अपने निश्चय की सूचना अपनी जान-पहचान के सभी सगे-सम्बन्धियों को दे दी है इसलिए मदिरा-पान का

निमन्त्रण बहुत जरूरी नहीं। के ने कहा, "यह तो बड़ी हँसी की बात होगी, मैंने तो थोड़े ही लोगों को सूचना दी है। और चलन तो यही है कि जब सगे-सम्बन्धी मदिरा-पान के लिए इकट्ठे हों, तभी सगाई की सूचना दी जाये।"

के के निश्चय का परिणाम यह हुआ कि एक दिन मि० बैंक्स तीसरे पहर की तीन बजकर सत्तावन मिनट की गाड़ी में कस्बे के बाहर चले गये। शुष्क हास्य लिए एक छोटा-सा व्याख्यान तैयार करने, जो के की बाल्यावस्था और किशोरावस्था से प्रारम्भ होकर एकाएक उसकी सगाई की सूचना पर समाप्त हो।

लड़की का अनुमान था कि पार्टी में पच्चीस-तीस से अधिक लोग नहीं होंगे। मि० बैंक्स ने अपने अनुभव से यह सीखा था, कि पैंतीस से चालीस अतिथियों का प्रबन्ध करना चाहिए। भंडारखाने में पहुँचे तो देखते क्या हैं कि श्रीमती ने मित्रों से माँगकर प्यालों की कतार लगा रखी है। उन्होंने अतिथि-सत्कार के विषय में ब्यौरेवार नहीं सोचा था। उनका हृदय बैठ-सा गया, "अकेला मैं किस प्रकार इतनी बड़ी भीड़ को पिलाने का प्रबन्ध करूँगा। मेरे तो दो ही हाथ हैं। प्रबन्ध के लिए तो आठ हाथों का एक प्रशिक्षित पशु आवश्यक है।"

परन्तु यह घबराहट का मौका न था, निर्णयपूर्वक काम करना आवश्यक था। प्रत्येक अतिथि के लिए मार्टिनी हो। यह सबसे आसान रहेगा। थोड़ी-सी बोतलें ह्विस्की के मेल से बनी मदिरा की भी हों— उनके लिए जिन्हें जिन से परहेज हो। उन्होंने अलमारी से दो बड़ी सुराहियाँ निकालीं और एक बोतल के बाद दूसरी दोनों में उँडेलने लगे। ये बोतलें उन्होंने बड़े जतन तथा प्रेम से अपने जीवन-काल में जमा की थीं। अब ये लुटेंगी, यह सोचकर उन्हें मानसिक पीड़ा का अनुभव हुआ।

समय से पहले ही मेहमान आने शुरू हो गये। स्त्रियाँ एक-दूसरे का स्वागत करते बोलती नहीं, चिल्लाती थीं। आगन्तुक महिलाओं का

हुल्लड़ मि० वैंक्स को सुनाई देने लगा। मि० वैंक्स झाड़न से अपने हाथ पोंछकर उनका स्वागत करने के लिए भण्डारखाने से निकलने ही वाले थे कि उन्हें द्वार पर ही एक स्वस्थ युवक ने प्रेमपूर्वक मुस्कराते हुए रोक लिया और बोला, "कैसे मिजाज है ? आप मुझे ह्विस्की के चार गिलास देने की कृपा करेंगे।"

मि० वैंक्स ने संकेत किया, "मार्टिनी से काम नहीं चलेगा ?" उत्तर मिला, "जी नहीं, आपकी बहुत मेहरबानी है, मुझे ह्विस्की ही चाहिए।"

मि० वैंक्स ने अलग रखे चार गिलासों में बरफ भर दी और आगन्तुक के सामने सरका दिये। युवक ने मि० वैंक्स को उनकी सत्कार-सेवा के लिए धन्यवाद दिया।

वह हटा तो उसकी जगह मोटे फ्रेम का चश्मा लगाये एक मोटा युवक आ गया और बोला, "जनाब, चार ह्विस्की के गिलास और एक सोडा के साथ स्काच का।"

मि० वैंक्स ने अभी ही स्काच की तीन बोतलें अपनी श्रीमती के गुलदस्तों के पीछे अलमारी के पटरे पर छिपा दी थीं। बात बनाने के लिए कहा, "मेरे पास स्काच नहीं है।" समझे थे कि उनका झूठ पकड़ा नहीं जायेगा।

मोटा युवक निरुत्तर दिखाई दिया। इस नवीन स्थिति को प्रत्येक दृष्टिकोण से समझने के लिए वह एक क्षण तक चुप रहा, फिर बोला, "मालूम नहीं, जनाब, शायद बूर्बोन और सोडा से काम चल जाये।"

बैंक्स झूठ बोला था। प्रायश्चित्त के रूप में चिढ़कर उसने एक विशेष मेल की बहुत-सी ह्विस्की एक गिलास में उँडेल दी और मार्टिनी के लिए फिर इसरार किया। आगन्तुक ने इन्कार करते हुए कहा, "यही बहुत है।"

अब द्वार पर कई युवक आ गये। एक ने गम्भीरता से अपनी माँग प्रस्तुत की, "चार गिलास ह्विस्की के दीजिये। दो में कोई

खुराफ़ात चीज न हो, आप समझ गये न। एक में थोड़ी-सी बरफ़ हो और दूसरी में थोड़ी-सी शकर हो, कड़ुवई का कोई अंश न हो।"

मि० बैंक्स ने मन-ही-मन कहा, "हे ईश्वर! ये लोग क्या समझते हैं कि मैं यहाँ नुसखे बाँध रहा हूँ।"

थोड़ी-सी फ़ुरसत मिली तो अपना सूट झाड़-पोंछकर मार्टिनी का एक गिलास लिये वह बैठके की ओर चले, जहाँ से चट्टानों पर ठोकर खाती लहरों की गर्जना जैसा शोर निकलने लगा था। कंधों से रगड़ खाते हुए वह बैठके में पहुँचे। कुछ लोगों ने स्वभावतः मुस्कराकर उनका स्वागत जरूर किया, बाकी लोग अपने-अपने आनन्द में इतने मग्न थे कि किसी ने उनकी ओर ध्यान भी नहीं दिया।

केवल श्रीमती बैंक्स उनसे बोलीं, "स्टैनले? तुम कहाँ थे? डोरिस और हर्बर्ट आ गये हैं।"

मि० बैंक्स ने पूछा, "डोरिस और हर्बर्ट कौन?"

इतने में मि० डंस्टन ने तपाक से स्टैनले का स्वागत किया, "बहुत खूब। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। क्षमा कीजिये, बहुत देर हो गई। हम लोग रास्ता भूल गये थे, डोरिस हमेशा चाहती हैं—"

श्रीमती बैंक्स ने पतिदेव को आदेश दिया, "जाकर डोरिस और हर्ब को कुछ पिलाओ तो।"

मि० बैंक्स ने आशापूर्वक पूछा, "आप मार्टिनी पियेंगे?"

आशा से प्रतिकूल उत्तर मिला, "स्टैन आपको कोई एतराज न हो, तो हम ह्विस्की ही पसन्द करेंगे। मैं आपकी सेवा करूँ?"

मि० बैंक्स ने कहा, "नहीं नहीं, एतराज की क्या बात है, अभी लेकर आता हूँ।"

मि० बैंक्स को भंडारखाने में पहुँचने में ज़रा भी देर हो जाती तो उनकी बड़ी भद्द हो जाती। प्यासे युवकों का एक गोल भण्डारखाने में पहुँचकर शराब बाँटने का काम अपने हाथ में लेने ही को था कि मि० बैंक्स वहाँ पहुँच गये। उन्होंने डंस्टन-दम्पति के लिए उनकी

फरमाइश के अनुसार ह्विस्की के गिलास भेज दिये और फिर एक घण्टे तक अपनी इज्ज़त बचाने की कोशिश में वह ऐसे जुटे रहे, मानो बढ़िया से रक्षा करने के लिए किसी बाँध की मरम्मत मे जुटे हों। ग़नीमत यही थी कि मेहमान अब जो पाते उसी पर संतुष्ट हो जाते। बैठक में हुल्लड़ का रंग मेले की धकापेल जैसा था।

भीड़ छंटने लगी। हुल्लड़ भी शांत होने लगा। अब थोड़े-से पियक्कड़ ही आखिरी दौर के लिए सामनेवाले बरामदे में जमा थे। यह सुनकर मि० बैंक्स ने अपना भण्डारखाना बन्द किया और इन लोगों में जा बैठे। ऊपर से वह आदर-सत्कार में दरियादिल दिखाई देते थे, परन्तु हृदय से वह जन्मजात कंजूस थे।

श्रीमती बैंक्स अन्तिम आगन्तुक को धन्यवाद देते हुए बोलीं, "आप कृपापूर्वक पधारीं, नमस्कार।" फिर बैंक्स को देखकर ताना मारा, "तुम्हारी सहायता खूब रही।"

मि० बैंक्स ने उत्तर दिया, "तुम क्या समझती हो कि मैं क्या करता रहा? मँडराता रहा?"

इस प्रकार जब सब मेहमान विदा हो गये, तब मि० बैंक्स ने पछतावे की भावना लिये अपने सजे घर की दुर्गति का निरीक्षण किया। अकस्मात् उन्हें याद आया कि सगाई की सूचना देना तो वह भूल ही गये।

परन्तु इस सूचना की किसी को फिक्र भी न थी।

● ● ●

आजकल के विवाहोत्सव नये तमाशे से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं। तमाशे की तैयारी हो जाने पर यही निश्चय करना रह जाता है कि वह बड़े थियेटर में खेला जाये कि छोटे थियेटर में; और फिर तमाशाई उसमें भरे किस प्रकार जायें।

के ने अपने माता-पिता से कहा, "मुझे आपसे इतना कह देना है कि विवाह छोटे पैमाने पर होना है और दम्पति के स्वागत के लिए भी आमन्त्रितों की संख्या थोड़ी ही होगी।"

के की बात यों तो मि० बैंक्स को बहुत अच्छी लगनी चाहिए थी, परन्तु अपने अनुभव के आधार पर उन्हें इस सिद्धान्त के कार्यान्वित होने की कोई आशा नहीं दिखाई दी। वह बोले, "उस दिन मेरी जैक गिबंस से बात हो रही थी। उसे अपनी चार लड़कियों के विवाह का अनुभव है। वह कहता है कि विवाहोत्सव या तो परिवार के भीतर सीमित रहते हैं या फिर उनके लिए कोई बड़ा बाग होना चाहिए।"

के ने कहा, "मेरा विवाह न इतना छोटा होगा न उतना बड़ा। उसमें मेरे मित्र ही होंगे, और व्यापारियों की सभा जैसा वह बड़ा भी नहीं होगा।"

मि० बैंक्स ने कहा, "तुमसे व्यापारियों की सभा की बात किसने की ? जो मैं कहता आ रहा हूँ, वह यह है कि उत्सव में तीस होंगे या तीन सौ।"

अकस्मात् मि० बैंक्स को सूची बनाने की धुन सवार हुई। पीले कागज का पैड ले आये। उसमें तीन नाम लिखे और कहा, "देखो, कानून के अनुसार यही सूची सबसे अधिक छोटी है। तुम, बक्ले और चर्च के पादरी साइरस गैल्जवर्दी। कोई और ?"

के निराशा की मुद्रा में अपने हाथ फैलाकर बोली, "यह तो बच्चों जैसी बात है। आप हमेशा बात को पकड़ लेते हैं।"

श्रीमती बोल पड़ीं, "के, तुम्हारे पिता कभी-कभी अच्छी बात भी कह जाते हैं। स्टैनले, आगे बढ़ो। डंस्टन-दम्पति, हम दोनों और दोनों लड़कों—बेन तथा टामी—को भी शामिल कर लो।"

के आगे बढ़ी और बोली, "और हेरियट चाची ? वह हों, तो चाचा चार्ली भी निमन्त्रित होंगे।"

मि० बैंक्स ने कहा, "बहुत ठीक ! परन्तु यहाँ से मुझे सूची बढ़ाने में

किफायत करनी होगी।" तभी मित्रोंने उनके मस्तिष्क में आना प्रारम्भ किया। वह तेजी के साथ लिखते गये और कागज के हाशिये पर जोड़ भी लिखते गये। पौन घंटे में पैड के सब ताव खतम हो गये।

"तुम्हें मालूम है, सूची में अब आमन्त्रितों की संख्या कहाँ तक पहुँच गई है?"

के ने कुछ बुझे दिल से अनुमान लगाया, "पचास तक पहुँची होगी।"

बैंक्स ने उत्तर दिया, "दो सौ छः। अभी हमारे अधिकांश मित्र सम्मिलित नहीं हो पाये हैं, और कदाचित् बक्ले के परिवार में एक-दो ऐसे लोग हों, जिन्हें वे लोग सम्मिलित करना चाहेंगे।"

के से न रहा गया। बोली, "यह सब तो ठीक है, पापा। शायद आपको यह सब बहुत बुरा मालूम हो रहा है, परन्तु मैं आपसे निवेदन कर दूँ कि विवाह मेरा होना है इसलिए उत्सव छोटा ही होगा। मुझे परवाह नहीं।"

अकस्मात् मेज छोड़कर वह सीढ़ियों पर चढ़ गई। मि० बैंक्स आश्चर्य से उसकी ओर ताकते ही रह गये। एली से बोले, "हे ईश्वर! के को क्या हो गया है? हम लोग तो शान्तिपूर्वक बैठे हुए थोड़े से नाम ही लिख रहे हैं। और यह है कि क्रोध में आपे से बाहर हुई जा रही है।"

मि० बैंक्स का पुत्र टामी खाने में लगा हुआ था। मुँह में बिस्कुट भरे बोला, "घबरा गई है। औरतें बहुत जल्दी घबरा जाती हैं।"

उस रात मि० बैंक्स को नींद नहीं आई। फेयरव्यू मैनर में जब रात का गहरा सन्नाटा हो गया, तब भी वह अपने कमरे की छत पर सड़क की धुंधली रोशनी का अक्स देखते रहे।

तीन सौ लोग मेरी शराब पियेंगे और तीन सौ लोगों को खाना देना होगा। तीन सौ!

मैं तो बरबाद हो गया, बिलकुल बरबाद हो गया। जीवन-भर

संयम से रहा। अब मैं रस्मों के शिकंजे में फँस गया हूँ, तो मुझे अपने ही हाथों अपनी हैसियत का कचूमर निकालना पड़ेगा।

इसी प्रकार वह करवटें बदलते और आहें भरते रहे। और मन में कहते रहे, "ऐसा नहीं होने का।" परन्तु वह जानते थे कि यह सब करना पड़ेगा ही।

● ● ●

लम्बे वाद-विवाद के बाद यह निर्णय हुआ कि एक सौ पचास से अधिक व्यक्ति चोट खाये बिना बैंक्स के घर में भरे नहीं जा सकते। इनके अतिरिक्त सौ और गिर्जाघर के लिए निमन्त्रित किये जा सकते हैं। परन्तु निश्चय है कि दम्पति के स्वागत में ये निमन्त्रित नहीं हो सकते।

श्रीमती बैंक्स ने तब तक थोड़े ही लोगों को खिलाया-पिलाया था। इस संख्या से तो रह घबरा गईं। उन्होंने प्रस्ताव किया, "दोनों अलग-अलग सूची बनायें, जिनमें वही लोग हों जिन्हें निमन्त्रण देना आवश्यक हो।"

संध्या के समय मि० बैंक्स इन सूचियों का मिलान करने बैठे। घण्टों लग गये। दोनों में एक ही नामों की संख्या बहुत कम थी, शायद इसलिए कि बैंक्स-परिवार में दोनों के मित्र अलग-अलग थे। सम्मिलित सूची की संख्या पक्की होने पर उन्होंने अपनी पत्नी और पुत्री की ओर क्रूर व्यंग से देखकर पूछा, "बताओ कितने हुए।"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर कहा, "दो सौ।" इतना कह तो वह गईं परन्तु उन्हें अपने अनुमान पर विश्वास न था।

मि० बैंक्स गर्वपूर्वक चिल्लाये, "पाँच सौ बहत्तर। पाँच, सात, दो। मैंने तुमसे क्या कहा था अपने परिवार तक रहो या किसी बड़े बाग में उत्सव का प्रबन्ध करो।"

श्रीमती बैंक्स ने सूचियाँ समेट लीं, "हुश्! मुझे देखने दो। तुमने कोई गलती की है। मैं बढ़कर इस सूची को काट सकती हूँ। देखो तो,

स्पार्कमैन-दम्पति की बुलाने की क्या जरूरत है। ये कभी हमसे नहीं मिलते; और यह बालों में खिज़ाब लगानेवाली औरत! इसे तो मैं घर में घुसने भी न दूँगी।"

मि० बैंक्स को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि जब कभी उन्हें कोई सुन्दर स्त्री दिखाई देती तो श्रीमती उसके बालों को खिज़ाब से रंगा बताती थीं। इसलिए उन्होंने अपना रोब दिखाकर कहा, "सुनो, तुम्हें मालूम नहीं कि हैरी स्पार्कमैन मेरा घनिष्ठ मित्र ही नहीं है, मुझे उससे अच्छे मुकदमे भी मिलते हैं। अरे, मैं तो उसके पीछे-पीछे पृथ्वी के अन्त तक जाने को तैयार हूँ? और यही आशा मुझे उससे है।"

"जाने दो, तुम कभी उससे मिलते भी हो? हम दोनों उनको गिर्जाघर के लिए निमन्त्रण दे देंगे।"

श्रीमती के इस उत्तर ने मि० बैंक्स को गरम कर दिया और वह चिल्ला उठे, "गिर्जाघर! तुम चाहती हो कि हैरी और जेन स्पार्कमैन गिर्जाघर में तो निमन्त्रित हों, परन्तु स्वागत में सम्मिलित न किये जायें। मेरे घनिष्ठ मित्र स्पार्कमैन के लिए यह बात। जब इनकी लड़की का विवाह हुआ था, तो क्या इन्होंने हम दोनों को गिर्जाघर में ही बुलाया था? बिलकुल गलत। और तुम तो स्वागत में बड़े चाव से सम्मिलित हुई थीं। अपना दाँव आया तो गिर्जाघर ही!"

कुछ दिन बाद मि० बैंक्स ने दोपहर के खाने पर अपने एक मुवक्किल को बुलाया, जो एक बड़े व्यवसाय का संचालक था। भोजन का प्रबन्ध उन्हें स्वयं करना पड़ा था, और इस अनुभव के पश्चात् उन्हें भविष्य के लिए सचेत होना था। तब उन्होंने यह समझाया कि विवाह में बुलाये गये मेहमानों को दो श्रेणियों में बाँटना चाहिए—कुछ गिर्जाघर ही के लिए निमन्त्रित हों, और बाकी ऐसे जो गिर्जाघर के अतिरिक्त स्वागत के लिए भी निमन्त्रित हों। इसी प्रकार व्यक्ति पीछे खर्च का हिसाब लगाया जा सकता है। जब उनका विवाह हुआ था, तब व्यक्ति पीछे कोई पौने चार डालर का खर्च आया था जिसमें

मदिरा, टूट-फूट, फूल, सामान, बीमा और बैराओं की बख्शीश, सभी कुछ शामिल था।

मि० बैंक्स ने मेज़ पर बिछे मेज़पोश पर हिसाब लगा डाला और अतिथि-सत्कार की भावना उनके हृदय से छूमन्तर हो गई।

अपनी पत्नी से अब वह अपना दृढ़ निश्चय दिखाते हुए बोले, "एली! मुझे तुमसे एक ही बात कहनी है, और वह यह कि स्वागत में एक सौ पचास लोग ही सम्मिलित किये जायेंगे। तुम्हें सूची की काट-छाँट करनी है। मुझे परवाह नहीं, यदि विवाह के बाद कोई भी मेरा मित्र न रहे। सूची लेकर व्यावहारिक सीमा के भीतर नामों को काट दो।"

श्रीमती बैंक्स चकित होकर अपने पति की ओर देखने लगीं, "स्टैनले, मैंने तो पहले ही तुमसे यही बात कही थी और तुम बोले कि किसी को गिर्जाघर बुलाओ और स्वागत में न बुलाओ तो उसकी मान-हानि होती है। मैं पहले ही से काटने के लिए तैयार थी और अब भी हूँ। अब स्पार्कमैन-दम्पति जैसे लोगों की—"

मि० बैंक्स चौंक गये; फिर सँभलकर बोले, "अब सवाल लोगों को नाराज़ करने का नहीं है, अपनी सुरक्षा ही की बात है। लोग क्या कहेंगे, यदि हम शाही दावत देकर फ़क़ीर हो जायें?"

● ● ●

अगली संध्या को जब मि० बैंक्स दफ्तर से वापस अपने घर पहुँचे, तब वह बिलकुल निश्चिन्त और शांत थे। जितना आनन्द अकस्मात् धनवान होने से होता है, उससे कुछ ही कम, अपने धन की रक्षा कर पाने पर होता है।

बैठके में अपनी पत्नी को बुलाकर उन्होंने पूछा, "एली! फ़ेहरिस्त पूरी कर ली?"

"जी हाँ; केवल—"

इतने ही में के ने आकर पिता के गले में अपनी पतली बाहें डाल दीं और बोली, "आप भी कितने भोले हैं, आप जानते हैं कि आपने किया क्या ? आप बक्ले की फेहरिस्त तो भूल ही गये। आज ही आई है।"

मि० बैंक्स को एक धक्का-सा लगा। उठकर पास ही पड़ी हुई बड़ी-सी आराम-कुर्सी पर धम्म से लेट गये। उन्होंने समझ लिया कि वह मात खा गये। पूछा, "इस फेहरिस्त में कितने हैं ?"

श्रीमती बैंक्स का बराबर यही रोना रहा कि उन्हें प्रातःकाल से रात तक एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं मिलती, परन्तु अब माँ-बेटी दोनों रोज़ नाश्ते के बाद ही नगर की ओर खरीदारी के लिए निकलने लगीं। मि० बैंक्स के फटे गोजे बेमरम्मत श्रीमती के झोले में जमा होने लगे, उनकी बग़ैर बटन की कमीजों की तह कपड़ों की अलमारी में बढ़ने लगी।

कपड़ों की खरीदारी का मेला चालू हुआ। सन्ध्या के समय मि० बैंक्स और उनके दोनों लड़के चुपचाप भोजन करते और चढ़ावे के वस्त्रों की समस्या पर माँ-बेटी के बाद-विवाद सुना करते। के की अलमारी में कपड़े ठसा-ठस भर गये; परन्तु मि० बैंक्स चकित होकर दोनों से यही सुनते, कि के के पास कपड़ों का बहुत टोटा है। के के कपड़ों की समस्या दोनों की दृष्टि में इतनी मौलिक थी, मानों वह समुद्र से जन्मी वीनस देवी के समान हो। इस बात को दोनों भूल गये कि के और बक्ले एक छोटे-से घर में रहेंगे जहाँ उसका अधिकांश समय चूल्हे के सामने बीतेगा, परन्तु उसके कपड़ों की तैयारी इस प्रकार होनी है, मानो देश के एक छोर से दूसरे छोर तक जहाँ भी कोई मेले या तमाशे होंगे, उन सब में उसे सम्मिलित होना पड़ेगा।

सौगात के पार्सल नित्य आने लगे। जो औरतें इन पार्सलों को भेजतीं, वे अपने पूरे नाम भी न लिखतीं। ऐनेट, एस्टेल, बैबेट जैसे नाम सौगात के साथ लगे दिखते।

मि० बैंक्स ने इन पर इस प्रकार टिप्पणी की, "जैसे फूलों का गुल-दस्ता होता है, वैसे ही इन नामों से तो महिलाओं का गुलदस्ता बन सकता है।"

श्रीमती बैंक्स अपने वस्त्रों के सम्बन्ध में भी बहुत चिन्तित दिखाई देती थीं। इस विषय पर श्रीमती डंस्टन से फोन पर लगातार बात चलती रहती थी। वार्तालाप के पैसे पतिदेव की जेब से जाते थे; परन्तु इस समय श्रीमती को इसकी चिन्ता न थी।

मि० बैंक्स ने एक बार श्रीमती से पूछ ही तो लिया, "तुम्हारी पोशाक का समधिन की पोशाक से क्या सम्बन्ध है, क्या तुम दोनों को जुड़वाँ बहनें बनकर विवाह में सम्मिलित होना है?"

सन्ध्या के समय जब मि० बैंक्स नीचे बैठते तो ऊपर जमा औरतों की बात-चीत उन्हें नित्य सुनाई देती। इस निरन्तर वार्तालाप के बीच कभी-कभी आनन्द की किलकारियाँ भी उन्हें सुनाई पड़तीं। तब वह चौंक जाते, क्योंकि अनुभव से वह जानते थे कि नारी के हर्ष का बहुत भारी मूल्य चुकाना पड़ता है।

● ● ●

कुछ समय से मि० बैंक्स ने एक कापी बना रखी थी, जिसमें वह विवाह से सम्बन्धित अपने विचार टाँक लिया करते थे। सोते समय वह इसे मेज़ पर अपने पलँग की बगल में रख दिया करते थे। कभी-कभी आधी रात को अकस्मात् उठ पड़ते, और रोशनी खोलकर ऐसे-ऐसे शब्द टाँक लेते, जैसे मिठाइयाँ, दुल्हिन का गुलदस्ता, इसके दाम कौन देगा।

इस कापी में टँके पहले शब्दों में था—शैंपेन। टाँकने के पश्चात् कई सप्ताह तक उन्हें शैंपेन के बारे में इतने परस्पर-विरोधी मत मिले कि वे बिलकुल घबरा गये, और इस सम्बन्ध में उनसे कुछ निर्णय न करते बना।

मि० बैंक्स के घर से स्टेशन जानेवाली सड़क पर शराब की एक दुकान थी, जिसके मलिक का नाम था सैम लोकूजोस। यह व्यक्ति मि० बैंक्स का सुहृद् मित्र था और बढ़िया रहन-सहन के सम्बन्ध में उसकी जानकारी बहुत अच्छी थी। एक दिन उन्होंने अपने इस मित्र से परामर्श करना निश्चय किया।

मि० बैंक्स का खयाल था कि शैंपेन जैसी नियामत भोजन-गृह की अलमारी के सबसे ऊपरवाले पटरे पर रहनी चाहिए, जिससे वह विशेष अवसरों पर ही काम में आये।

सैम के हृदय में इस वस्तु के प्रति इतना मान न था।

इसलिए लापरवाही से वह कह गया, "यकीन मानो ढेरों शैंपेन रखी है। किस मेल की चाहते हो? सब एक ही हैं, कोई बहुत अच्छी नहीं। यहाँ देखो कुछ रखी है। गनीमत है; एक पेटी के पैंतालीस डालर समझ लो।"

मि० बैंक्स का मुँह पीला पड़ गया, पर अब स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई और चारा न था।

जब सौदा हो गया तो सैम ने समझा दिया, "बोतलों को बरफ जैसा ठण्डा करना न भूलना। तब कोई इन्हें चखेगा भी नहीं।"

संध्या के समय पत्नी से बातचीत के सिलसिले में कह दिया, "आज शैंपेन ले आया हूँ।"

"कितनी लाये?"

बैंक्स को सफाई पेश करने की तुरन्त ही जरूरत हुई। बोले, "मैंने सोचा, अपने पास यथेष्ट मात्रा में रहनी चाहिए। मौके पर टोटा होने से मैं वैसी भद्द नहीं कराना चाहता, जैसी जार्ज इवांस की हुई थी और फिर कुछ बोतलें बच जायेंगी तो हमेशा—"

"लेकिन यह तो बताओ कि लाये कितनी?"

"दस पेटियाँ। परन्तु अगर यह सोचो—"

"दस पेटियाँ? कितने दाम देने पड़े?"

"सैम ने मेरे साथ बड़ी रियायत की; केवल पैंतालीस डालर लिये, दाम अधिक नहीं हैं।"

"पैंतालीस डालर ? किस बात के ?"

"एक पेटी के, और काहे के, अब—"

श्रीमती से न रहा गया, "स्टैनले बैंक्स ! तुम्हारा कहने का मतलब यह है कि तुमने चार सौ पचास डालर शैंपेन पर खर्च कर दिये, जब बेचारी के के लिए निहायत ही जरूरी सामान का प्रबन्ध करने पर तुम एक-एक पैसे के लिए मुझसे झगड़ते रहे। इससे बढ़कर कमीनेपन की बात और क्या हो सकती है। अब मुझसे खर्च की बात कभी न करना, यही मुझे तुमसे कहना है।"

● ● ●

मि० बैंक्स के घर का टेलीफोन कभी काम नहीं आता था। अब यह कैफियत थी कि रिसीवर फोन पर रखते ही घंटी बजने लगती थी।

एक बार मि० बैंक्स ने पूछ लिया, "एली, कौन बोल रहा था ?"

उत्तर मिला, "अजी एक औरत है जो के के विवाह के फोटो लेना चाहती है।"

मि० बैंक्स कितने भोले थे। शुरू-शुरू में उन्होंने जब अपनी बेटी के विवाह का तखमीना लगाया था तो सोचा था—एक-दो पेटियाँ शैंपेन की होंगी, दो सौ सैंडविचें होंगी; यदि दुर्भाग्यवश लड़की के अपनी माँ के विवाह की पोशाक न आई तो विवाह की नई पोशाक, एक सुन्दर भेंट और थोड़ी-बहुत बखशीशें—इतना ही बहुत था। गिर्जाघर मुफ्त होगा ही; और कोई जरूरत नहीं।

अब अकस्मात् उन्हें दिखाई दिया कि वह एक बहुत बड़े और संगठित व्यवसाय के एकमात्र ग्राहक हैं, और सारा माल उनके लिए ही तैयार हो रहा है।

मि० बैंक्स आराम-कुर्सी पर कंधे सिकोड़े बैठे आतिशदान के दोनों ओर लगी पुस्तकों की ओर निष्प्रयोजन ताक रहे थे।

श्रीमती बैंक्स आकर बोलीं, "स्टैनले, मैं चाहती हूँ कि बहुत जल्दी ही किसी दिन तुम दफ्तर से सीधे लौटकर नगर में मुझसे मिलो। के के साथ हमें चाँदी के बर्तन छाँटने हैं, और समय के भीतर उन पर दोनों के नाम खुदवाने हैं।"

मि० बैंक्स का ध्यान कहीं और था; पूछा, "क्या कहा ?"

"के के लिए चाँदी के बर्तन, जो भोजन के काम आयेंगे; तुम जानते ही हो कि हमें के के लिए चाँदी के बर्तनों और मेजपोश-चादर वगैरह का प्रबन्ध करना है।"

मि० बैंक्स ने आश्चर्य से पूछा, "मेजपोश-चादरें ?" मालूम होता था जैसे वह नशे में हों।

श्रीमती बोलीं, "निःसन्देह; लड़की की चादरें, तौलिये, रूमाल और ऐसी ही अन्य वस्तुएँ।"

मि० बैंक्स बेचारे की बुरी हालत थी। उन्होंने ईश्वर को याद किया—पता नहीं, सौगन्ध के रूप में या प्रार्थना के लिए ही—और बोले, "क्या बक्ले के माता-पिता लड़के के अतिरिक्त कुछ और न देंगे ?"

मि० बैंक्स को ऐसा लगा मानो के का विवाह क्या होगा किसी बड़े चुनाव के संगठन की पेचीदा तैयारियाँ होंगी। पाँच वर्षों से के पड़ोस के प्रायः सभी विवाहों में वधू की सहेली बनकर सम्मिलित हुई थी। संयोगवश सहेलियों की बात सामने आई तो के को उन एहसानों को उतारने की फिक्र हुई, जो उस पर लद चुके थे। सहेलियों की संख्या की सीमा की उसे कोई चिन्ता न थी। सहेलियों की सूची बढ़ती गई, तो मि० बैंक्स व्यंग किये बिना न रह सके। बोले, "विवाह क्या होगा, फूलों से सजी लड़कियों का जुलूस होगा।"

● ● ●

निमन्त्रण-पत्र भेजने के पश्चात् प्रातःकाल की डाक का सर्वोपरि महत्व हो गया।

पत्र देखते-देखते श्रीमती बैंक्स चिल्ला पड़ीं, "कितनी बुरी बात है, लिडले-डोरिस दम्पति सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।"

मि० बैंक्स के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

श्रीमती ने दूसरी खबर सुनाई, "ह्वाइटहेड-दम्पति लिखते हैं कि उन्हें दूसरे विवाह में जाना था; परन्तु हमारा निमन्त्रण-पत्र पाकर उन्होंने उसका विचार छोड़ दिया है, क्योंकि हमारे उत्सव में सम्मिलित होने से चूकना नहीं चाहते। कितने भले है !"

मि० बैंक्स अपना ध्यान समाचारपत्र पढ़ने में लगाये रहे, योरप की खबरें उन्हें अधिक रोचक मालूम हुईं।

प्रतिदिन उन पत्रों की संख्या बढ़ती जाती थी, जिनके लेखक—परिचित या अपरिचित—विवाह में हर्षपूर्वक सम्मिलित होने का वचन देते थे। मालूम होता था जैसे के ने अपने विवाह के लिए ऐसा दिन चुना हो, जब चार सौ मील तक चारों ओर किसी को कोई और काम ही न हो। बैंक्स-डंस्टन विवाहोत्सव मानो नीरसता के रेगिस्तान का नखलिस्तान था।

● ● ●

समाचारपत्रों में सगाई की सूचना छपने के दो दिन बाद पहली सौगात आई। यह एक हाथ से रंगी थाली थी। श्रीमती बैंक्स ने एक कमरा खाली कर लिया और दीवार के सहारे ताश खेलने की एक मेज लगाकर उस पर अपना सबसे बढ़िया मेजपोश बिछा दिया। के ने थाली को उस पर ऐसे ध्यान से सजाया जैसे कोई पादरी गिर्जाघर की टाँड सजाता है। ऐसी ही भावना लिये परिवार के सब सदस्य के को घेरे हुए थे।

बैंक्स-परिवार में तब तक कभी सौगातों के निरन्तर आने का ताँता

नहीं लगा था। अपना पैसा खर्च करके कोई सौगात उन्हें भेजे, इस पर उनके हृदय में विनम्र कृतज्ञता की भावना उमड़ती थी। मूल्य, सौन्दर्य या उपयोग की दृष्टि से ये पहली सौगातें जैसी कुछ भी रही हों, उन्हें खोलकर सभी आश्चर्य और प्रसन्नता से चिल्ला उठते थे।

माँ-बेटी दोनों किसी सौगात के बारे में छोटी-से-छोटी बात भी नहीं भूलती थीं। पहले कभी व्यवहार की मामूली बातें भी न उनकी समझ में आती थीं और न उन्हें याद ही रहती थीं—जैसे उन्हें कभी यह याद नहीं रहा कि अमुक महाजन का उन्हें कुछ देना है या कुछ उसकी तरफ निकलता है—परन्तु जब सौगातें आने लगीं तो उनके भेजनेवालों और उनके साधनों के बखानने में उनकी स्मरण-शक्ति हाथियों जैसी हो गई।

कुछ समय तक मि० बैंक्स को उन सौगातों के पाने में विशेष आनन्द आता रहा, जिनका सम्बन्ध मदिरापान से था। पहले पुराने फैशन के एक दर्जन मदिरा-पात्र आये, फिर नये फैशन के इतने ही और आये। इसके पश्चात् उनके स्टूवेन नामक मित्र के यहाँ से एक पात्र आया, जिसमें काकटेल बनाई जाती है। ताँबे की लाल चमड़े से मढ़ी चमकती मेज भी इन सौगातों में शामिल हुई। मि० बैंक्स के हृदय में उपहार भेजनेवालों की दौलत के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हुई।

क्रमशः के के पास तीन दर्जन पुराने फैशन के मदिरा-पात्र, दो दर्जन एक मेल के पात्र, चार दर्जन दूसरे मेल के पात्र, काकटेल बनाने के तीन बड़े बर्तन, दो बर्तन मार्टिनी के लिए, प्यालों के दो सेट काकटेल पिलाने के लिए, दो कंटर ह्विस्की छानने के लिए, बोतलें खोलने के लिए पाँच चाँदी के पेंचकश, मदिरा-पान से सम्बन्धित अन्य छोटी-बड़ी वस्तुएँ सौगातों के रूप में जमा हो गईं। मालूम होता था, जैसे शराब की कोई बड़ी दुकान लगी हो। मि० बैंक्स का चाव और आनन्द अब समाप्त हो गया, और उन्हें आशंका यह होने लगी कि नुमाइश को

देखकर लोग यह न समझने लगें कि मैंने अपने बच्चों को शराबी बना दिया है।

जहाँ बहुत-सी सौगातें होती हैं, वहाँ एक ऐसी भी होती है, जो मौत के समान टीका-टिप्पणी करने योग्य हो। ऐसा ही एक सौगात एक बड़े बक्स में बन्द शनिवार को के के घर पहुँची।

यह एक चीनी लड़के-लड़की का खिलौना था, जो लाल कोट और उसी रंग का स्कर्ट और नीले रंग के मोजे पहने पुल को पार कर रहे थे। घर के सब लोग सौगात का बक्स खोलने बैठ गये। उसमें बन्द खिलौने को देखते ही सब चकरा गये। सबसे पहले मि० बैंक्स ही को होश आया और दांत पीसते हुए उन्होंने कहा, "किसने भेजा है?" बक्स खोलकर घरवालों ने एक कार्ड निकाला, जिसमें लिखा था, "चाची मार्न के प्यार और स्नेह सहित।"

"यह क्या! चाची मार्न, जिनसे परिवार को एक भारी चेक की आशा थी। इन्होंने तो एक खिलौने में ही टरका दिया।"

के रुआंसी होकर बोली, "हम लोग इसका क्या करें?"

मि० बैंक्स बोले, "तुम्हें बताऊँ क्या करो?"

श्रीमती बैंक्स ने खिलौने को दूर से देखा, और बोलीं, "इसे और सौगातों के साथ रख देना है। वह किसी भी समय देखने के लिए आ सकती हैं।"

यह निकृष्ट सौगात कहाँ रखी जाये? पहले वह कोने की एक मेज पर रखी गई। फिर अलमारी पर रख दी गई। वहाँ उसकी जगह उपयुक्त नहीं जँची, तो बिजली की घड़ी के पीछे खिड़की पर रख दी गई। परन्तु सन्तोष नहीं हुआ, क्योंकि जहाँ कहीं भी रखी जाती सौगातों को देखने आनेवालों की नजर में सबसे पहले उसके ही आने की सम्भावना थी।

इस समय से निष्कपट धन्यवाद की भावना सौगात पानेवालों के

हृदयों से कूच कर गई। प्रत्येक पार्सल की जाँच पूरब के व्यापारियों की तरह की जाने लगी।

"यह क्या ?"

"दूसरी थाली," के एक लम्बी आह भरकर बोली, "एक मुसीबत यह भी आ गई !"

"कहाँ से आई है ? इसे हम वापस कर सकते हैं।"

"टकर की उपहारों की दुकान से।"

माँ ने कहा, "बेटी, वहाँ से तो काफी कूड़ा यहाँ आ चुका है। हमें तो कोई ऐसी चीज चाहिए जो तुम्हारे मतलब की हो।"

बेटी बोली, "मुसीबत यह है कि टकर की दुकान पर कोई मतलब की चीज तो है ही नहीं।"

● ● ●

श्रीमती बैंक्स यह समझती रहीं कि उन्होंने तो अपने कर्तव्य का पालन किया है, और सब निठल्ले ही रहते हैं। यह भावना लिये उन्होंने एक दिन स्वागत में खिलाने-पिलानेवालों की बात छेड़ी, "मुझे एक अच्छे होटलवाले की फिक्र है जो स्वागतोत्सव में खिलाने-पिलाने का अच्छा प्रबन्ध कर सके। शहर ही से प्रबन्ध किया जा सकता है। सैली हेरिसन ने अपनी लड़की के विवाह में एक होटलवाले को बुलाया था जिससे वह बहुत खुश रहीं। उसके नौकरों की सेवा सुचारु रही और वे बहुत तमीजदार थे। इस होटलवाले ने दाम भी कम ही लिये।"

अगले शनिवार को प्रातःकाल पति-पत्नी नगर जाकर बकिंघम होटल पहुँचे।

मि० मसौला नामक युवक वहाँ उनसे मिला। वह दुकान का प्रबन्धक था और उसे व्यवहार की बात करनी आती थी। उसके लम्बे होंठ पर नाक के नीचे छोटी-सी मूँछ थी, मानो लैंप के शेड के ऊपर एक झालर लगी हो।

वह बोला, "दावत का प्रबन्ध आप चाहते हैं ? बहुत अच्छा, हम प्रबन्ध का पूरा भार लेने के लिए तैयार हैं। आप दोनों को इसके लिए फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं। हम लोग देश की बड़ी-से-बड़ी शादियों का प्रबन्ध कर चुके हैं।" मसौला ने समझा दिया कि उसका होटल ऐसी शादियों की दावत का काम अपने हाथ में नहीं लेता जो ऊँची श्रेणी के मध्य न सम्पन्न होने को हों।

मि० बैंक्स ने समझा—मेरी बड़ी भूल हुई, मुझे किसी ऐसे होटल वाले को चुनना था जो इतनी ऊँची हैसियत का न होता।

उन्होंने साहस बटोरकर कहा, "हमारा उत्सव बड़ा नहीं होने का।"

मसौला ने मेज की दराज से एक बड़ा-सा एलबम निकाला, और कहा, "आइये, मैं कुछ जलसों के चित्र दिखाऊँ, जो मेरे प्रबन्ध में सम्पन्न हुए।"

चित्र देखते-देखते मि० बैंक्स का भय घबराहट में परिवर्तित हो गया। उन्हें मालूम हुआ कि बकिंघम होटल वाले बड़ी-बड़ी जमींदारियों और महलों में ही खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध करते हैं। जिस सड़क पर वे रहते थे, वह किसी कस्बे की पिछड़ी गली जैसी उन्हें दिखाई देने लगी। इस दशा में तो मसौला को उनका घर किसी बड़े रईस की कोठी की ड्योढ़ी जैसा ही जँचेगा।

परन्तु अब सौदा किये बिना वापस जाना असम्भव था। मसौला ने एक पैड निकालकर कहा, "अब हमें आप इस बात का अनुमान बताइये कि आप क्या खिलायेंगे-पिलायेंगे। हम लोग शैंपेन का प्रबन्ध स्वयं कर लेंगे।"

अन्तिम वाक्य सुनकर खिसियाहट के मारे मि० बैंक्स का चेहरा लाल हो गया; बोले, "मुझे अफसोस है कि मैं अपनी बात पूरी नहीं कह पया। मैंने शैंपेन पहले से ही खरीद ली है।"

मसौला को बुरा लगा, और उसके चेहरे पर एक क्षण के लिए खेद

की रेखा दौड़ गई। परन्तु शिष्ट भाव से उसने कहा, 'तो शराब खोल-कर पिलाने के दाम तो हमें आपसे लेने ही होंगे।"

"खोलना कैसा ?"

"एक डालर फी बोतल खोलने और पिलाने का। आप फ्रांसीसी शैंपेन ही पिला रहे हैं न ?"

मि० बैंक्स ने अपने निर्णय की विचित्रता की स्वीकारोक्ति मे कहा, "जी नहीं।" फिर कुछ सफाई देने के तात्पर्य से जोड़ दिया, "इन छोकरों पर अच्छी शराब लुटाना मूर्खता है।"

मसौला ने सहमति के लिए सिर हिलाकर विनम्रतापूर्वक कहा, "बहुत ठीक, अब भोजन के विषय में बात हो जाये। विवाह जून के पहले सप्ताह में होगा। यह कैसा रहेगा, यदि मेज के दोनों सिरों पर ठण्डी की हुई बड़े मेल की सामन मछली हो और बीच में बड़े-बड़े कटोरों में कई मेल सलाद सजा दिये जायें। दूसरी आकर्षक सजावट इस प्रकार हो सकती कि मेज के मध्य ठण्डी की हुई स्टर्जियन मछली की प्लेट रख दी जाये। बर्फ के सम्बन्ध में तो हमारा प्रबन्ध अपूर्व ही है। हम लोग बर्फ के एक बड़े चौक के भीतर रंगीन रोशनी जमा देते हैं और उसके ऊपर—"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर टोक दिया, "परन्तु हमने इतनी बड़ी दावत की बात कभी नहीं सोची थी।"

मसौला ने पेंसिल रखते हुए भ्रमपूर्वक श्रीमती जी से पूछा, "तो आप चाहती क्या हैं ?"

श्रीमती बैंक्स घबराकर अपना बटुआ टटोलने लगीं; बोलीं, "हाँ, हमारा खयाल था कि कई मेल की सैंडविचें हो जातीं, कुछ आइसक्रीम और केक हो जाते।"

"आप जो आज्ञा करें, परन्तु ऐसी चीजें तो आम तौर से बच्चों की पार्टियों में दी जाती हैं।"

मि० बैंक्स को अपनी पत्नी का रुख देखकर आश्चर्य हुआ, जब अकस्मात् बिगड़कर उन्होंने कहा, "हम यही चाहते हैं।"

मसौला ने सब बातें दर्ज करते हुए कहा, "निःसन्देह ऐसा ही होगा और विश्वास कीजिये कि आप देखकर खुश होंगी। अब यह तो बताइये कि स्वागत होगा कहाँ।"

मि० बैंक्स ने अकड़कर कहा, "फेयरव्यू मैनर में नम्बर चौबीस मैंगिल ड्राइव पर।"

मसौला ने पूछा, "यह जगह है क्या, कोई क्लब है या कोई बँगला ?"

मि० बैंक्स ने शान से उत्तर दिया, "जी नहीं, वह मेरा निजी घर है।"

निजी घर के प्रति सहज सम्मान की जो भावना होती है उसका प्रदर्शन करने के लिए मसौला ने नत-मस्तक होकर पूछा, "आप कितने लोगों के आने की आशा करते हैं ?"

"लगभग एक सौ पचास।"

"कोठी बड़ी है ?"

मि० बैंक्स ने फिर उसी धृष्टता से उत्तर दिया, "जी नहीं, घर छोटा ही है।"

"तब तो आप छत पर एक शामियाने का प्रबन्ध करना आवश्यक समझेंगे ही।"

"घर में शामियाने योग्य कोई छत नहीं है। यदि मेहमान घर में नहीं समाते तो वे सहन का चक्कर लगा सकते हैं।"

मसौला ने श्रीमती बैंक्स की ओर देखकर पूछा, "और अगर बारिश शुरू हो जाये ?"

श्रीमती बैंक्स बोलीं, "यही तो मैं भी कह रही थी। स्टैनले, यदि पानी बरसने ही लगे तो क्या करेंगे ?"

मसौला ने विश्वास दिलाते हुए कहा, "शामियाना बहुत मँहगा नहीं रहेगा।"

मि० बैंक्स ने परेशान होकर पूछा, "सुनिये, और सब बातें तो हो चुकीं, खर्च क्या बैठेगा ?"

मसौला ने कहा, "जैसी पार्टी आपकी नजर में है, उसको देखते खर्च कम ही होगा।" उसके स्वर में इस भावना का संकेत था कि बैंक्स की दावत निम्न स्तर की ही होगी। मि० बैंक्स को आश्वस्त करने के लिए उसने कहा, "जो सेवा आपकी होगी उसके देखते लागत नाम-मात्र ही होगी।" कुछ दिन बाद मसौला स्वयं मि० बैंक्स के घर पहुँच गया। उसके साथ बड़ी-बड़ी मूँछें रखाये जो नामक एक सीधा-सादा व्यक्ति था।

श्रीमती बैंक्स गृह-प्रबन्ध में चतुर थीं और उन्हें अपने घर पर गर्व था। अब मसौला और जो उनके एक के बाद दूसरे कमरे की टीका-टिप्पणी करते हुए निरीक्षण करने लगे, तो उनकी समझ में आया कि इनकी नजर में दावत के लिए उनका घर झोंपड़ी मात्र है।

मसौला ने कहा, "बहुत छोटा है।"

जो ने "जी हाँ !" कहकर अपनी सहमति प्रकट की।

मसौला ने कहा, "आने-जाने की बड़ी दिक्क़त रहेगी।"

जो ने फिर वही "जी हाँ !" कह दिया।

श्रीमती बैंक्स मसौला की टीका नहीं समझ पाईं; बोलीं, "उस दिन सब खिड़कियाँ खुली रहेंगी।"

मसौला समझ गया। विनम्रता से बोला, "हमारा मतलब यह है कि एक कमरे से दूसरे कमरे तक मेहमानों के आने-जाने में कठिनाई रहेगी। प्रत्येक कमरे में भीतर की ओर कम-से-कम दो दरवाजे होने चाहिए। जिस कमरे में हम खड़े हैं उसमें एक ही दरवाजा है। क्या कहूँ, ऐसे कमरे में तो मेहमान बुरी तरह फँस जायेंगे।"

श्रीमती बैंक्स ने घबराकर पूछा, "आपका कोई सुझाव है ?"

मसौला ने कहा, 'श्रीमतीजी, सुझाव है क्यों नहीं। शामियाने से भी भीड़ की तकलीफ कम नहीं होगी। पहली जरूरत यह है कि कमरों का सब सामान बाहर निकाल दीजिये।"

श्रीमती बैंक्स यह सुझाव सुनकर बहुत दुखी हुईं और रुआँसी-सी होकर बोलीं, "तो क्या आप कुर्सी-मेज़ जैसा सामान तो नहीं हटवाना चाहते ?"

"निस्सन्देह ! बड़ा, छोटा और पियानो तक सब सामान कमरे के बाहर होना चाहिए; और भोजन-गृह का सामान भी—"

यह सामन निकालकर रखा कहाँ जायेगा, कौन इसे निकालेगा, और कैसे फिर यह वापस रखा जायेगा—यह सब श्रीमतीजी की समझ में नहीं आया। कुछ समय तक बेकार हुज्जत करती रहीं। अंततः मसौला की कार्यकारिता के आगे उन्हें दबना पड़ा।

● ● ●

जब कभी कोई सुदूर घटना के बारे में बहुत दिनों तक गहराई के साथ सोचा करता है, तो वह दूरस्थ होकर भी मस्तिष्क में चिपक जाती है। फलतः, जब एक दिन प्रातःकाल उठने पर किसी को प्रत्यक्ष होता है कि जो घटना दूरस्थ होकर उसके मस्तिष्क में चिपकी हुई थी, वह अकस्मात् तत्कालीन वर्तमान हो गई है तो मस्तिष्क को बहुत धक्का लगता है।

विवाह के दिन बहुत सबेरे ही मि० बैंक्स की नींद खुल गई और वह अपने काम में लग गये। परन्तु उनके मस्तिष्क में यह बात देर ही से आई कि विवाह की तिथि वास्तव में आज ही है, और कुछ ही घंटों के भीतर उनकी पहली सन्तान का विवाह हो जायगा।

नीचे उतरकर उन्होंने देखा कि घर पहचाना नहीं जाता। सामान सब गायब हो चुका था और घर भर में फर्श से साबुन तथा मोम की पालिश की गन्ध आ रही थी। सीढ़ी से उतरते ही उन्हें नौकरानी दिखाई दी।

मिलते ही उसने सूचना दी, "साहब, इस समय आपका नाश्ता मेरे रसोईघर में होगा।" इतना वह कह तो गई, परन्तु साहब का रसोईघर में खाना उसे हास्यास्पद-सा जँचा, और हँसी से लोट-पोट होती हुई वह भण्डारखाने में घुस गई।

डिलाइला की मेज पर बैठकर मि० बैंक्स ने इतमीनान से नाश्ता किया। उसकी समझ में आया कि औरतों की ऐसे मामलों में निर्णय-शक्ति बहुत निर्बल होती है। कौन बड़ी आफत थी, तैयारी के लिए यथेष्ट समय था, मेरा नाश्ता साधारण ढंग से अपनी जगह पर हो सकता था।

सादे कहवा का दूसरा प्याला पीकर वह कुछ समय तक खाली कमरों में चक्कर लगाते रहे। बैठक के फर्श पर फूल-पत्तियों के गमलों के मध्य गीली मिट्टी के कुछ ढेर भी थे। कूड़े-करकट के मध्य भटकते हुए घर के पिछले दरवाजे से वह अपनी वाटिका में पहुँचे।

यहाँ उन्होंने तीन अपरिचितों को एक बहुत बड़ा बंडल खोलते देखा तो पूछा, "यही शमियाना है ?"

एक आदमी ने मि० बैंक्स की समझ का संशोधन करने के लिए उत्तर दिया, "यह बैंक्स-परिवार में होने वाले विवाह के लिए तंबू है।"

मि० बैंक्स ने निर्मल आकाश की ओर कनखियों से देखा और किफायत का एक सुन्दर सुझाव उनके मन में तुरन्त आ गया, तो उन्होंने साधारण ढंग से कहा, "तुम्हें समझना चाहिए कि ऐसे खुले दिन में हमें तंबू की जरूरत तो नहीं होगी।"

सुनते ही लोगों ने तंबू खोलना बंद कर दिया, और आश्चर्य से चुपचाप उनकी ओर ताकने लगे। अंत में एक ने साहसपूर्वक कह ही दिया, "इन्हें तंबू की जरूरत नहीं, सुनो जैक। तीन सप्ताह से इस तंबू का बयाना हमारे पास है। तमाम लोग इसके लिए छटपटा रहे हैं, यही समझो कि बड़े किस्मतवर हो।"

मि० बैंक्स तंबू के बंडल से बचकर पैदल मैपिल ड्राइव की सड़क

पर निकल गये। सड़क पर कोई चहल-पहल न थी। कुछ घर दूर उनके नये पड़ोसी मि० हागसन अपने घर के सामने लगे घास के तख्ते को काट रहे थे। मि० बैंक्स की कल्पना में आज जितने व्यस्त वह थे उतना ही सारे संसार को होना चाहिए था। इसलिए उन्हें मि० हागसन को ऐसे बेकार के काम में लगे देखकर आश्चर्य हुआ। टहलते हुए वह उनके निकट पहुँच गये। मि० हागसन ने अपना काम रोककर कहा, "आइये, छुट्टी के ये दिन तो बहुत बढ़िया होने चाहिएं।"

मि० बैंक्स ने कहा, "जरूर, मुझे भी यही आशा है, आज तीसरे पहर मेरी लड़की का विवाह है।"

मि० हागसन ने घास काटनेवाली मशीन से अपने गीले हाथ हटाकर बड़े तपाक से मि० बैंक्स के हाथ की ओर बढ़ाये, "खूब, आपने मुझसे पहले नहीं कहा, यह आपका पहला बच्चा है न? लड़की अपने घर से छूटेगी, इसका कुछ रंज तो होगा ही, परन्तु ठीक ही है। बैठियेगा नहीं, आज आपके सामने बहुत-से काम होंगे।"

मि० बैंक्स ने कहा, "खेद है, बैठने की फ़ुर्सत नहीं। प्रातःकाल ही से हम सब व्यस्त हैं। इस समय पत्नी के बताये एक काम पर ही जा रहा हूँ।"

बहाना तो कर दिया परन्तु निष्प्रयोजन तेजी के साथ आगे ही वह बढ़ते गये। सभी ओर उन्होंने एक ही कैफ़ियत देखी। सब लोग अपने छुट्टी के दिन के कामों में व्यस्त थे। उनके घर पर क्या हो रहा था, इसकी किसी को फ़िक्र न थी। एक मील चलने के बाद वह जंगल-जंगल गाँव पार करके अपने घर पहुँच गये। सड़क से नहीं लौटे क्योंकि मि० हागसन की दृष्टि से उन्हें बचना था।

घर वापस आये, तब तक कारीगरों की जगह पर सम्बन्धी पहुँचने लगे थे। उनकी संख्या बढ़ती जा रही थी। फोन की घण्टी बजनी रुकती न थी—जो चाचा नगर पहुँच गये हैं और यह मालूम करना चाहते हैं, कि कैसे फेयरब्यू मैनर पहुँचें; बर्था बहिन स्टेशन पहुँच गई हैं,

कोई उन्हें आकर घर पहुँचा दे। ऐसी ही खबरें फोन से वहाँ पहुँच रही थीं। इस गड़बड़ में मि० बैंक्स ने अकस्मात् देखा कि के का पता नहीं।

ऊपर तकिये में अपना मुख छिपाये लेटी हुई वह मिली।

मि० बैंक्स ऊपर जाकर उसके पलंग की बगल में बैठ गये और बोले, "बेटी, क्या बात है, आज तो तुम्हारा विवाह होने जा रहा है।"

"पापा? हाय पापा? मैं जानती हूँ। यही तो बात है, मेरे विवाह का दिन है अवश्य, परन्तु वह मेरा नहीं, और सबका होगा।"

मि० बैंक्स ने आश्वासन देते हुए कहा, "जानता हूँ, जानता हूँ, मेरा भी नहीं है।"

श्रीमती पुलिज्की ने के के विवाह की पोशाक बनाकर श्रीमती बैंक्स को दे दी थी। तीसरे पहर वह यह देखने पहुँचीं कि पोशाक ठीक प्रकार से उस पर फबती है न?

मि० बैंक्स आप-ही-आप दुनिया को सुनाने के लिए बोले, "हे ईश्वर! इस समय यह देखा जायेगा कि पोशाक लड़की पर फबती है कि नहीं। यह औरत करेगी क्या? यदि पोशाक ठीक नहीं बैठी तो काट-छाँट करने अब बैठेगी? लोगों को मालूम होना चाहिए कि पौने तीन बजे हैं, और पौने दो घण्टे में विवाह होना है।"

मि० बैंक्स के लड़के, बेन और टामी, समय की कमी की बात सुनकर हमेशा बिगड़ उठते थे।

सो एक बोला, "पापा! आप समझते हैं कि हमें अपने कपड़े पहनने में एक घण्टा लगा।"

मि० बैंक्स ने अपना क्रोध पी जाने का प्रयत्न किया। लड़ने का समय न था, इसलिए शान्ति की मुद्रा में उन्होंने दोनों से कहा, "आज तीसरे पहर तुम दोनों पर भारी दायित्व रहेगा। तुम्हीं दोनों हमारे पूरे परिवार को जानते हो। इसलिए तुम्हीं दोनों को लोगों की अगवानी करने और उनका परिचय कराने का काम करना पड़ेगा। हमारी कार को लेकर तुम्हें वहाँ चार बजे तक पहुँच जाना है।"

दोनों बोल उठे, "पापा हम पहुँच जायेंगे; चिन्ता की कोई बात नहीं; आप इतमीनान रखिये।"

मि० वैंक्स सबके पहले ही तैयार हो गये। के के कमरे से बोलियों की भनक आ रही थी। परन्तु किसी कारण भीतर जाने से वह हिचकते रहे। इसी उधेड़-बुन में वह सीढ़ियों के ऊपर निष्क्रिय खड़े रहे।

अकस्मात् टामी अपने कमरे से निकलकर बोला, "पापा ! इस मेल की कमीज में कालर के बटन लगने चाहिये; आपके पास हैं ?"

मि० बैंक्स अपने छोटे बेटे की ओर उदासीन दृष्टि से ताकते हुए बोले, "तुम्हारे पास होने चाहिए, तुम्हारी माँ तुम्हें एक सेट संध्या के समय पहननेवाली कमीज के लिए दे चुकी हैं।"

लड़के ने उत्तर दिया, "पापा ? मुझे याद है, परन्तु इस समय ढूँढ़े नहीं मिलते। शायद कमीज के साथ धोबी के यहाँ चले गये हों।"

मि० वैंक्स के शयन-गृह में उनकी अलमारी के भीतर वर्षों से जवाहरों और जेवरों का एक डिब्बा था। उसमें नाना प्रकार की छोटी-छोटी चीजें जमा थीं—जैसे पिनें, चाभियाँ, नेल-क्लिपर और तमगे के फीते। मि० वैंक्स ने इस डिब्बे को खूब खखोला, परन्तु उसमें कालर का बटन एक भी न था।

अब उनकी बोली में खिसियाहट की मात्रा बढ़ी और उन्हें नसीहत करने की सूझी, "सुनो, तुम्हारे सामने दो महीने तैयारी के थे; क्या किया ? इस वक्त तो बेन को लेकर गिर्जाघर जाओ, फिर आकर कालर-बटन ढूँढ़ना—और निगल लेना।"

इस अन्याय के विरुद्ध टामी कुछ कहने को हुआ, परन्तु पिता के मुख का रुख देखकर चुपचाप हट गया।

श्रीमती पुलिज्की ने सूचना दी कि के तैयार है। मि० वैंक्स उसके पीछे हो लिए। वह के के द्वार पर रुकी और नाटक के पर्दे के समान उसने द्वार को खोल दिया। के कमरे के बीच में खड़ी थी। उसका गाउन और दुपट्टा बड़े जतन से उसके पीछे सजा था। अब वह पाँच

फुट चार इंच की भूरे बालोंवाली लड़की नहीं, किसी मध्यकालीन दरबार की राजकुमारी जँचती थी। अपना सिर कुछ पीछे की ओर झुकाये थी, मानो अतलस और कमख्वाब के वातावरण में पली-बढ़ी कोई राजकुमारी बड़े इत्मीनान से तथा शान्त भाव से दरबारियों पर अपने रोब का अनुमान कर रही हो।

मि० बैंक्स की आँखें अकस्मात् चौंधिया गईं, "बेटी, तुम बेहद सुन्दर हो! क्या नूर है!"

लड़की ने अपने पिता का हाथ दबाकर कहा, "पापा! धन्यवाद।" एक क्षण के लिए उसकी आँखें पिता की आँखों से मिलीं। ये आँखें उसकी थीं जो लड़की से अब स्त्री हो गई थी; बोली, "अब विवाह के लिए चलना है।" मि० बैंक्स ने घड़ी देखी, "ईश्वर कुशल करे, चार बजकर पाँच मिनट हुए हैं।"

● ● ●

ये सब अब बरामदे में पहुँचे, जहाँ से उन्हें दोहरे द्वारों से होकर गिर्जाघर के भीतर पहुँचना था। द्वार अभी बन्द थे। सहेलियाँ पहुँच गई थीं, और कुछ अगवानी करनेवाले भी। सब को नियमानुसार कपड़े पहने देख मि० बैंक्स चकित हुए। टामी भी कहीं से आ टपका था; और कपड़ों में ऐसा सजा था, मानो नित्य तीसरे पहर ऐसे ही कपड़े पहनने की उसकी आदत रही हो।

मि० बैंक्स के अतिरिक्त सभी विवाह-संस्कार की विधि से भली प्रकार परिचित दिखाई देते थे; और उन्हें किंचित् दुःख तथा आश्चर्य भी हुआ कि उनकी निगरानी बिना कैसे यह क्रम नियमानुसार चल रहा था। अकस्मात् एक नाट्यकार की भाँति स्थानीय प्रबन्धक ट्रिंगिल ने गिर्जाघर के द्वार खोल दिये। मि० बैंक्स ने अपने पुत्र बेन को अपनी माँ की बाँह-में-बाँह डाले तुरन्त गिर्जाघर के केन्द्रीय मार्ग में सबके आगे घुसते देखा।

बाकी अगवानी करनेवाले भी नियमानुसार इनके पीछे हो लिए। ट्रिगिल ने आगे जानेवालों की बगल खड़े होकर संकेत किया, "साव-धान!" और दीवार में लगा एक छोटा-सा बटन दबा दिया।

गिर्जाघर का वाद्य-गीत क्रमशः समाप्त हुआ। सन्नाटे में केवल कई सौ उपस्थित नर-नारियों के कपड़ों की रगड़ की मधुर ध्वनि सुनाई देती रही, जब वे एक ही बार दो ओर देखने का प्रयत्न करते थे।

यह क्षण बड़े महत्व का था। कई सप्ताह से मि० बैंक्स इसकी प्रतीक्षा से भयभीत थे। अब वही क्षण उनके इतने निकट आ गया था कि उसका महत्व समझने का इनके पास समय न था। अब वह बिल-कुल शान्त थे। उनकी यह शान्ति साधारण न थी, इस शान्ति में एक प्रकार का वैराग्य था। बगल में खड़ी उनकी लड़की भी अब उनके लिए अपरिचित थी। अब वह उनकी छोटी बेटी न रहकर एक सुन्दर शान्त महिला हो गई थी, जिसमें जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान अकस्मात् कहीं से आकर भर गया था। अपने जीवन के सबसे बड़े क्षेत्र के द्वार पर वह इस समय खड़ी थी, और उसके मुख पर बुद्धि और विश्वास के चिह्न अंकित थे।

ऐसे ही महत्वपूर्ण समय उपस्थित सहेलियों में दो को नाक छिनकते देख वह कुछ भयभीत हुए। छोटी-छोटी बातों में स्त्रियाँ कितनी लापर-वाही से अपना काम बनाती हैं—यह यों प्रत्यक्ष हुआ कि उन्होंने पास खड़े अगवानी करनेवालों की जेबों से उनके रूमाल निकालकर अपनी आँखें और नाकें तुरन्त साफ कर लीं।

मि० बैंक्स को ईश्वर का नाम लेने के अतिरिक्त आगे सोचने का मौका न मिला। गिर्जाघर के बाजे से सावधान होने की सूचना निकली; के ने पिता की बाँह पर हाथ रखकर कहा, "पापा! हम आगे बढ़ते हैं।"

ट्रिगिल ने धीरे से आदेश दिया, "आगे बढ़ो, दाहिने पैर से।" चलने-वाले कुछ हिचके तो ट्रिगिल ने अपना आदेश दोहराया। मि० बैंक्स ने

आदेश का तुरन्त पालन किया। अन्य सब को अपने कदम उसी समय बदलने पड़े तो उसे भी फिर अपना कदम बदलना पड़ा। इस प्रकार जलूस बड़े द्वार से गिर्जाघर में घुसा।

मि० बैंक्स ने अपनी कनखियों से परिचित व्यक्तियों के मुखारविन्दों की झलक पकड़ने का प्रयत्न किया। उनकी मुख-मुद्रा पर लड़की के प्रति सद्भावना चित्रित थी। इस प्रकार वह गर्व की भावना से परिपूर्ण हुए। गिर्जाघर के दूसरे छोर पर बवले अपने 'बेस्ट मैन' सहित इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। एक क्षण पश्चात् दोनों उसकी कतार में मिलकर मंच पर खड़े पादरी के सामने हो गये। पादरी के हाथ में श्वेत साटिन से मढ़ी एक पुस्तक थी; और पृष्ठ का संकेत करने के लिए बैंजनी रंग की छोटी-सी डोर पुस्तक के नीचे लटकी हुई थी। पादरी ने पढ़ना शुरू किया।

मि० बैंक्स को किसी प्रकार संकेत मिल गया कि अपना पार्ट अदा करने का मौका अब उनके सामने है। पढ़ते-पढ़ते पादरी गैलसवर्दी, एक जगह पूछेगा, "कन्यादान कौन करेगा ?" और उन्हें उत्तर देना होगा, "मैं करूँगा।" इस तमाशे में उनका इतना ही काम होगा। वह चाहते थे कि खूबी से अपना पार्ट अदा करें और सोचने लगे कि वह किस प्रकार बोलें।

उन्हें इस बात का भी खयाल था कि जब वह दो शब्दों का एक वाक्य कहकर अपना पार्ट अदा कर चुकेंगे, तब उन्हें एक पग पीछे मुख फेरकर आगे खड़ी अपनी पत्नी की बगल में पहुँच जाना होगा। उन्होंने अनुमान करना चाहा कि उनके ठीक पीछे क्या है। उन्हें कुछ ऐसा सन्देह हुआ कि कदाचित् पैर पीछे करने पर वह किसी कालीन के उलटे हुए कोने से ठोकर न खा जायें। इसलिए वह अपना दाहिना पैर चुपकेसे पीछे करके इस प्रकार टटोलने लगे, जैसे कोई कीड़ा अपने पिछले पैर से टटोलता हो। वह समझे थे कि कदाचित् कोई उनकी यह हरकत देख न सकेगा। परन्तु तमाशाई क्यों चूकते। वे समझे कि मि० बैंक्स

पिये हुए हैं; इसीसे इनके पैर गड़बड़ा रहे हैं। इतने में मंच पर खड़े पादरी गैल्सवर्दी के मुखारबिंद से उच्च स्वर में प्रश्न प्रसारित हुआ : "कन्यादान कौन करेगा ?"

सब-कुछ ध्यान रखते हुए भी मि० बैंक्स बेखबर रहे। के ने अपने हाथ से उनका हाथ दबाकर बोलने का संकेत किया, तब उन्हें कुछ होश आया। वह बुदबुदाये, "मैं करूँगा।" और लड़की का हाथ बक्ले के हाथ में पकड़ा दिया। जिस समय वह यह साधारण-सा काम पूरा कर चुके तो उनके हृदय में एक लहर-सी दौड़ गई कि उनके हृदय से लगी कोई प्रिय वस्तु उनसे झटककर अलग हो गई है।

वह कुछ और न देख सके। धीरे से घूमकर क्रूर दृष्टि से उन्होंने उपस्थित व्यक्तियों की ओर देखा और श्रीमती बैंक्स की बगल में जा खड़े हुए। वह प्रार्थना के शब्द भली प्रकार न सुन सके और विवाह-संस्कार अकस्मात् समाप्त हो गया।

मि० बैंक्स को यह सब असम्भव-सा मालूम हुआ; परन्तु विवाह-संस्कार निश्चित रूप से समाप्त हो चुका था। के और बक्ले एक-दूसरे का चुम्बन कर रहे थे; गिर्जाघर के वाद्य से बरात के संगीत के मधुर स्वर निकल रहे थे और आनन्द का वह वातावरण था, जो बसंत की धूप में स्कूल की छुट्टी पाने पर बच्चों के हृदय में होता है; के के गाउन का पिछला सिरा सँभाले प्रमुख सहेली चल रही थी; मेहमान विदाई के लिए अपनी-अपनी चीजों को सँभालने या ढूँढ़ने में लगे थे।

के बक्ले की बाँह-में-बाँह डाले इन सब मेहमानों पर अपनी मुस्कराहट बिखेरती जा रही थी, और मि० बैंक्स के हृदय में फिर वही विछोह की विचित्र-सी भावना जागृत हुई। टामी अपनी माँ को साथ लिये निकट आया।

दाहिने-बाँयें मुस्कराते मि० बैंक्स अपनी पत्नी के पीछे चल पड़े।

● ● ●

बरात के पीछे-पीछे कुछ मिनट बाद मि० बैंक्स अपनी श्रीमती सहित घर पहुँचे। दोनों की अनुपस्थिति में मसौला ने अपने वचन के अनुसार मेहमानों के सत्कार का पक्का प्रबन्ध कर लिया था। मसौला के बैरे उसी प्रकार फुर्ती से चक्कर लगा रहे थे, जैसे वाल्ट डिसने की कार्टून फ़िल्म की कठपुतलियाँ।

मसौला ने दोनों का सदर दरवाज़े ही पर स्वागत करके कहा, "पक्की तैयारी है; आप निश्चिन्त रहें। सीधे बैठके में जाइये, वहाँ बरात के फ़ोटो लिये जा रहे हैं।"

बैठके में वाइज़गोल्ड नामक फ़ोटोग्राफ़र बारात के कई ग्रुपों के चित्र उतार रहा था, यद्यपि गर्मी के मारे पसीने से तर था। शैंपेन का दौर चालू हो गया था। जो लोग फ़ोटो खिंचाना अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे, वे इधर-उधर खड़े शैंपेन के गहरे घूँट पीते-पीते चित्र खिंचानेवालों की दिल्लगी उड़ा रहे थे। मि० बैंक्स ने अलग ही कुछ मदिरा निश्चिन्त होकर पी ली थी, जिस कारण उन पर नशे का रंग आ चुका था। परन्तु जब मसौला का बैरा थाल में भरे प्याले लिये उनके निकट पहुँचा तो उन्होंने एक और ले लिया।

वाइज़गोल्ड के पीछे बैठक के दरवाज़े पर उन्हें अकस्मात् चेहरे-ही-चेहरे दिखाई दिये। इनके पीछे भी चेहरे-ही-चेहरे थे। सदर दरवाज़ा भी चेहरों से ठसाठस भरा था। खिड़की से झाँकने पर उन्होंने देखा कि बरातियों की भीड़ घर के बाहर सड़क पर पहुँच गई थी। मसौला बड़े होटल के बैरों के जमादार की भाँति बैठक के द्वार पर खड़ा धैर्य और शील के साथ भीड़ को आगे बढ़ने से रोके हुए था।

वाइज़गोल्ड के चित्र लेना समाप्त करते ही कमरे के द्वार पर खड़े अगवानी करनेवालों की कतार सहसा फट गई, मानो उसे कोई सैनिक आदेश मिला हो। आगे बढ़ती भीड़ के नीचे कुचल जाने से बचने के लिए मसौला तुरन्त दरवाजे की बगल में हो गया। पौन घंटे तक जो हंगामा रहा, उसकी सही याद रखना मि० बैंक्स के मान का न था।

किसी ने मि० बैंक्स को यह नहीं समझाया था कि उन्हें बरातियों के स्वागत के लिए खड़ा हो जाना चाहिए था। पहले तो वह स्वागत करने के पक्ष में न थे; फिर उनकी समझ में आया कि यदि वह बैठक के बीच में खड़े रहेंगे, तो लोग उन्हें बैरा समझेंगे। इसलिए ज्यों ही श्रीमती डंस्टन पहले मेहमान की हैसियत से श्रीमती बैंक्स की बगल में पहुँचीं कि वह चुपके-से उन दोनों के बीच में पहुँच गये।

उन्हें तुरन्त ही प्रत्यक्ष हुआ कि मेहमानों का श्रीमती डंस्टन से परिचय कराना भी उनका कर्तव्य है। जो लोग आगे बढ़कर उनसे हाथ मिलाते जाते थे, उनमें अधिकांश उनके अभिन्न मित्र रहे थे; तो भी उस समय उन्हें किसी का नाम याद नहीं आ रहा था। इसलिए घबराकर उन्होंने चुपके से अपनी श्रीमती के कान में कहा, "जरा, इनके नाम तो बोल दिया करो।"

श्रीमती बैंक्स ने अपने पति की ओर चिन्तित दृष्टि से देखा। वह जानती थीं कि उनके पति पर काम का बहुत भार रह चुका था, परन्तु उन्हें हार्दिक आशा थी कि दो घण्टे का कष्ट वह और सहन कर सकेंगे।

इतने में एक जोड़ा श्रीमती बैंक्स को दिखाई दिया, तो उल्लास-पूर्वक उन्होंने स्वागत किया, "आइये जैक-नैंसी हिलियर्ड! डियर, तुम कितनी भली लगती हो? अरे, क्या मैं भूल गई? हाँ, हाँ, आप ग्रेस लिपिनकाट हैं। आप भी आ गईं, मुझे बहुत खुशी है।"

इन दोनों का श्रीमती डंस्टन से परिचय कराना मि० बैंक्स के लिए जरूरी था, परन्तु उन पर नशे का काफी असर था; बोले, "लिपिनकाट-दम्पति, माफ कीजियेगा, मेरा मतलब है हिलियर्ड दम्पती।"

कमरे में बरातियों का प्रवेश अन्ततः समाप्त हुआ। यदि बैठक में एक व्यक्ति और आ जाता तो स्वागत करनेवालों को बैठक के आतिश-दान में शरण मिलती।

मसौला के प्रबंध में जरूर कुछ गड़बड़ थी। सोचा गह गया था कि

अगवानी करनेवालों से मिलकर मेहमान पिछले द्वार से शामियाने के नीचे पहुँच जायेंगे, जहाँ मसौला ने मेजों पर बोतलें और प्याले सजाकर मदिरा पिलाने का पूरा प्रबंध कर रखा था। हुआ यह कि मेहमानों के पहले जोड़े पिछला दरवाजा रोककर खड़े हो गये और लम्बे वार्तालाप में लग गये। जो लोग इनके पीछे आये वे पिछले द्वार को रुका देख बैठक में ही इकट्ठे होने लगे।

मसौला के बैरे इतने चतुर थे कि किसी को मदिरालय जाने की जरूरत नहीं पड़ी। वे भीड़ के अन्दर मशीनों की भाँति शैंपेन से भरे प्यालों की थालियाँ लिये एक ओर से दूसरी ओर तक घूमते फिरते थे। किसी दूसरे के लिए तो इस भीड़ के मध्य खुली बोतल ले जाना भी असम्भव था। मि० बैंक्स इन व्यस्त लड़कों से इतने प्रसन्न थे कि उनकी दृष्टि में प्याला पीछे कुछ रकम के हिसाब से इन्हें पारिश्रमिक मिलना चाहिए था। ऐसे कर्तव्यशील लोग उन्होंने कभी नहीं देखे थे। ज्यों ही किसी का प्याला खतम हुआ कि वे उसकी बगल में दूसरा भरा प्याला लिये हाजिर हो गये। इतना ही खयाल उन्हें तंग किये था कि इस सुन्दर सत्कार के परिणाम में उनकी शैंपेन का स्टाक आधे घण्टे के भीतर ही समाप्त हो जायेगा।

उत्सव के समाप्त होने के पश्चात् कुछ समय तक उन्हें इतनी ही याद रही कि बहुत-से लोग उनकी ओर देखकर मुँह बना रहे थे, या अन्य लोगों की ओर। इसके अतिरिक्त और कुछ उन्हें याद नहीं रहा। जब वर-वधू द्वारा अतिथियों के बीच अपने विवाह के समय मिला हुआ गुलदस्ता उछालने का समय आया तो पीछे खड़े के और बक्ले ने मि० बैंक्स की आस्तीन पकड़कर उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया। के अपने सिमटे गाउन को अपनी बाँह पर सँभाले हँसकर बोली, "पापा, अब हम दोनों तैयार हैं! आप मुझे अपना गुलदस्ता बरातियों के मध्य उछालते न देखेंगे।"

मि० वैंक्स दोनों के पीछे हो लिये और मेहमान हुल्लड़ मचाते हुए पीछे खिसक गये। के और बक्ले घर के चबूतरे पर खड़े हो गये।

के के मुख पर अब एक बिलकुल नई आभा थी जिसे देखकर मि० वैंक्स चकित हुए। जब गिर्जाघर के भीतर विवाह के लिए वह जा रही थी, तब उसके मुख पर नैसर्गिक सौन्दर्य था। अब उसके भोले मुख में मि० वैंक्स को एक प्रकार की स्वच्छन्दता दिखाई दी, जिसका अनुभव उन्हें पहले कभी नहीं हुआ था। बक्ले के मुख पर सन्तोष की झलक देखकर उन्हें कुछ ईर्ष्या जैसी भावना का अनुभव हुआ कि जिसे वह अपनी समझे हुए थे वह अब पराई हो गई है।

चबूतरे के नीचे भीड़ में धकापेल मची और शीघ्र ही दुलहिन का गुलदस्ता वायु में बहता हुआ नियमानुसार के की प्रमुख सहेली की फैली बाँहों में आ गिरा। इसके पश्चात् सीढ़ियों के पीछे से के और बक्ले गायब हो गए, और बराती उनके पीछे चल पड़े।

भीड़ फिर फैल गई। मसौला के बैरे जो थोड़ा-सा आराम कर चुके थे, अब फिर नये उत्साह से अपनी सेवा में लग गये। मि० वैंक्स ने सोचा कि जरा उस जगह का निरीक्षण भी कर लिया जाये, जहाँ मसौला ने मदिरा पिलाने का प्रबन्ध कर रखा था।

मि० वैंक्स ने बैठक में जितनी भीड़ का अनुभव किया था, उसके हिसाब से उनका अनुमान था कि शामियाने के नीचे आधा भाग खाली ही रहेगा। अनुमान के प्रतिकूल यहाँ भी भीड़ की धकापेल थी। जितनी गर्मी हम्माम में होती है या उस शीशे के कमरे में जिसके भीतर गर्म देश के पेड़-पौधे उगाये जाते हैं, उसके बीच की गर्मी शामियाने के नीचे थी। श्रीमती वैंक्स ने एक आदमी को मेहमानों के मध्य चक्कर लगाते हुए गाने-बजाने का काम सुपुर्द कर रखा था। मि० वैंक्स ने उसे अपने ढंग पर एक इतालवी पोशाक पहने अपने बाजे पर बहुत जोर से गाते शामियाने के एक बाँस की बगल में देखा। शामियाने में हुल्लड़ इतना अधिक था, मानो लोहार की धौंकनी चल रही हो, और पानी किसी

नल से गिर रहा हो। मदिरा की मेज के सामने उत्सुक ग्राहकों की भीड़ लगी थी। मि० वैंक्स किसी प्रकार भीड़ में घुसकर मेज के पीछे खड़े पसीने से तर कार्यकर्ताओं का ध्यान आकृष्ट करने पहुँचे। वे लोग बरफ में पड़ी बोतलों को खोलकर मदिरा के प्याले भरने लगे थे।

मि० बैंक्स के बगल में खड़ा एक अजनबी कुत्ते की भाँति ध्यान-पूर्वक देख रहा था। मि० बैंक्स से मित्रवत् वार्तालाप के लिए उसने कहना शुरू किया, "कितना गड़बड़ इन्तजाम है।"

मि० वैंक्स ने अपनी सहमति प्रकट करने के लिए कहा, "बिलकुल गड़बड़।"

अजनबी न कहा, "जैसी शैंपेन है वैसी ही सेवा भी है।"

मि० बैंक्स ने अपनी सफाई में कहा, "जिस मेल की शैंपेन इस देश में बनती है, उसके देखते मेरा खयाल था कि यह बहुत अच्छी चीज है।"

मृदु-भाषी व्यक्ति ने कहा, "यह गन्दा पानी है! चमकती गन्दगी जिसे शैंपेन कहते हैं! वास्तव में गन्दा पानी ही है। कुछ पीपे के नीचे की होती है। यह पेंदी के बिलकुल निकट की है।" इस प्रकार टिप्पणी करते हुए मदिरा के दो भरे प्याले उसने उठाये और चल दिया।

मि० बैंक्स ने सामने खड़े एक सेवक को संकेत किया, "कितनी शैंपेन बची है?"

सेवक ने उनकी ओर उदासीन दृष्टि से देखकर कहा, "बहुत काफी, फिक्र न कीजिये आपके लिये बहुत है।"

मि० बैंक्स लज्जित होकर लौटे। शामियाने से निकलते ही उन्होंने अपनी सेक्रेटरी मिस बैलमी को दफ्तर से आये कुछ लोगों से बात करते देखा। इनसे अलग होकर शैंपेन का भरा प्याला किसी प्रकार सँभाले वह उनकी ओर बढ़ी। मिस बैलमी को इतनी बढ़िया सजावट में उन्होंने कभी पहले नहीं देखा था; इसलिए वह कुछ चौंक-से गये। उनकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहें, परन्तु उनकी सेक्रेटरी के मुख पर कोई घबराहट न थी।"

हास्य-मुद्रा में अपने स्वामी का स्वागत करते हुए वह बोली, "गिर्जाघर में चलते हुए आप बहुत भले और स्वस्थ दिखाई दिये। किसी को आपकी घबराहट का अनुमान नहीं हो सका।"

पिछले दिन तीसरे पहर मि० बैंक्स दफ्तर से लौटे थे, तब तो मिस बैलमी विनम्रता की प्रतिमूर्ति ही थीं। इस समय उसका रंग-ढंग ही दूसरा था। मि० बैंक्स ने धन्यवाद दिया और दोनों ने खामोशी से अपने प्याले पिये।

मिस बैलमी ध्यानपूर्वक अपने प्याले की ओर देखती हुई बोलीं, "इस चीज को ध्यानपूर्वक और निरन्तर देखते रहना पड़ता है। यदि आप ऐसा नहीं करते तो आप उसकी पकड़ में आ जायेंगे। बस कुछ पूछिये न, कुछ जानना चाहते हैं?" ऐसा कहकर उसने मि० बैंक्स के कान में कहा, "मिस डिडरिक्सन को देखा आपने? कितने गहरे पाउडर से पुती है और अभी नया-नया खिजाब लगाना शुरू किया है। आइये, आपसे ये लोग मिलकर बहुत खुश होंगी।"

इतने में बढ़िया सूट पहने एक युवक ने आकर मि० बैंक्स से कहा, "आपकी श्रीमती आपके लिए परेशान हैं, इतनी कि शायद वह अपने बाल नोंच डालें।"

मि० बैंक्स के सामने कुछ काम तो आया और वह तुरन्त भीड़ को चीरते अपनी पत्नी के पास पहुंचे। मिलते ही वह बोलीं, "स्टैनले बैंक्स, तुम कहाँ थे? मैं तो तुम्हारे बिना पागल-सी हो गई। मालूम होता है तुम शामियाने के नीचे गप्पें लड़ा रहे थे। साथ चलो; के और बक्ले आते ही होंगे।"

घर के सामने फिर भारी भीड़ लग गई थी। मसौला के आदमी इस भीड़ में मिठाई के कटोरे लिये चक्कर लगा रहे थे। लोग बेहयाई से दोनों हाथों मिठाई लूट रहे थे और अधिकांश तुरन्त ही उनकी उँगलियों से फिसलकर फर्श पर गिरती जाती थी।

पच्चीस वर्ष से वह ऐसे दृश्य की कल्पना करते आ रहे थे। अब

वह दृश्य उनके सामने आनेवाला था, जब उनकी पहली लड़की एक हृष्ट-पुष्ट अजनबी की बाँह-में-बाँह डाले सीढ़ी से उतरती हुई उनके जीवन के क्षेत्र से विलुप्त हो जायेगी। दृश्य सामने आते ही वह हतबुद्धि हो गये।

एक सहेली सीढ़ी के नीचे दोनों ओर झाँककर लज्जापूर्वक हँस पड़ी और गायब हो गई। कोई चिल्ला उठा, "देखो, दोनों आ रहे है।" मानो कोई घुड़दौड़ हो। तभी के और बक्ले सब प्रकार से सज्जित होकर गर्दन झुकाये सीढ़ी से उतरकर भीड़ चीरते बारहसिंगे की भाँति उसी प्रकार दौड़ते हुए आगे बढ़े, जैसे मि० बैंक्स ने सभी नव-दम्पतियों को विवाह के उपरान्त विदा होते समय देखा था।

दोनों अब घर के बाहर पगडण्डी पर पहुँच गये। उनके कन्धों पर मिठाई बिखरी हुई थी और बरातियों के हाथों मिठाई की बौछार से बचने के लिए दोनों के सिर झुके हुए थे। उनके ठीक पीछे मि० बैंक्स और उनके पीछे सभी अगवानी करनेवाले और सहेलियाँ। पगडण्डी के अन्त में बक्ले की मोटर खड़ी थी। इस भीड़-भाड़ में भी विदाई की रस्म लोकाचार के अनुसार सम्पन्न हो रही थी। दोनों मोटर के भीतर हो गये। के खुली खिड़की से झाँकने लगी और बक्ले प्रवेशकों की भीड़ चीरता मोटर में दूसरी ओर से घुसा।

के ने पिता को नमस्कार किया, "पापा, अब मैं चली, आपने मेरा खूब दुलार किया है। मैं सदैव आपसे स्नेह करती रहूँगी।"

कार कठिनाई से आगे बढ़ी। मि० बैंक्स कार के मडगार्ड से एक सहेली के सहारे हटे और दोनों को आशीर्वाद दिया, "अच्छा विदा, खुश रहो।" इतने में मोटर सड़क पर कई घर पार कर गई। कुछ अगवानी करनेवाले जो नियमानुसार मोटर के पीछे-पीछे थोड़ी दूर तक दौड़ते चले गये थे, अब अपने पतलूनों की गर्द झाड़ते वापस आ रहे थे।

मि० बैंक्स घर वापस आये। उत्सव का अन्तिम दृश्य बाकी था।

वर-वधू को अब लोग भूल चुके थे। पुराने खयाल के अधिकांश अतिथि तो लौटने लगे थे, परन्तु कुछ लोग रह गये थे, जो मदिरा की अन्तिम बोतल तक समाप्त करने के लिए तैयार थे।

● ● ●

अन्तिम मेहमान भी विदा हो चुका था। सेवक सेवा समाप्त करके अपने हाथ पोंछ चुके थे, बड़े और नये तमाशों में सम्मिलित होने के लिए बराती हुल्लड़ मचाते गायब हो चुके थे। डंस्टन-दम्पति जा चुके थे, सब सम्बन्धी भी उसी प्रकार विस्मृत हो गये थे, जिस प्रकार विवाह के पहले वे विस्मृत रहे थे। सपत्नीक मि० बैंक्स ही अब बरात के बाद की बरबादी के मध्य रह गये थे। छत पर पड़ी आराम कुर्सियों को घसीटकर दोनों उन पर ढेर हो गये। कालीन पर मिठाई बिखरी हुई थी, बैठक में जिन थोड़ी मेजों को मसौला ने छोड़ दिया था, उन सब पर मदिरा से भरे प्यालों के गोल-गोल चिह्न बन गये थे। दरवाजों और खिड़कियों के सफेद पेंट से पुते किवाड़ों पर बुझाई गई सिगरटों के काले निशान जहाँ-जहाँ बने थे। फूलों के गमलों के कारण आतिशदान का पता न था। घर की इस अस्त-व्यस्त दशा को दोनों चुपचाप कुछ देर तक ताकते रहे।

श्रीमती बैंक्स संस्मरण-मग्न होकर बोलीं, "विदा होते समय जो पोशाक उसने पहनी, उसमें वह कितनी सुन्दर मालूम होती थी! क्या कहते हो, सुन्दर लगती थी न?"

मि० बैंक्स को अच्छी तरह कुछ याद न था; केवल अपनी लड़की का रेखाचित्र ही उनके मस्तिष्क में था; वह इतना ही कह पाये, "मेरी दुलारी बेटी!"

श्रीमती बैंक्स मेहमानों की याद करने लगीं; बोलीं, "ब्रिजवोल्ड-दम्पति नहीं आये, यद्यपि उन्होंने आने के लिए लिख दिया था, और

जेन ने मुझसे कह दिया था कि हम लोग जरूर आयेंगे। कैसे आश्चर्य की बात है।"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वे आये कि नहीं ?"

श्रीमती बैंक्स ने निश्चय से कहा, "मैंने सब अच्छी तरह जान लिया है कि कौन आया और कौन नहीं।"

मि० बैंक्स ने उनकी बात का खण्डन नहीं किया। वह जानते थे कि उनकी श्रीमती की स्मरण-शक्ति बहुत पक्की है; उसे सदैव याद रहेगा कि कौन आया, कौन नहीं आया, और कौन लोग बे-बुलाये भी घुस आये।

अकस्मात् श्रीमती बैंक्स हाथ से अपना मस्तक दबाकर चिल्ला पड़ीं, "हे ईश्वर! हम लोग स्टोरर-दम्पति को बुलाना कैसे भूल गये।"

मि० बैंक्स ने कहा, "भूलना चाहिए तो नहीं था।"

"परन्तु भूल ही तो गये।"

"बहुत बुरा हुआ; क्या हम बहाना नहीं कर सकते कि हमने उन्हें निमन्त्रण अवश्य भेजा था। क्यों न तुम कल जाकर एस्थर से पूछो कि वह आई क्यों नहीं।"

श्रीमती बैंक्स ने कहा, "यह कर सकती हूँ।"

मि० बैंक्स ने कहा, "मेरी समझ में यही सबसे अच्छा होगा।"

दोनों थककर फिर चुप हो गये। दोनों के मस्तिष्क में दिन-भर की घटनाओं के चित्र चक्कर लगाने लगे। यदि दोनों के अन्तर्-चित्रों के फ़िल्म बन सकते तो दोनों फ़िल्म एक-दूसरे से कितने भिन्न होते!

मि० बैंक्स के मस्तिष्क के एक कोने में खर्च का हिसाब निरन्तर जोड़ा जा रहा था। नई-नई रकमें आती जातीं और जोड़ बढ़ता जाता।

श्रीमती बैंक्स को घर की सफाई की अधिक चिन्ता थी। कुछ देर तक चुप रहकर बोलीं, "चलो बिजली की झाड़ू निकाल लायें, इस

कूड़े-कर्कट की सफाई का काम कल के लिए डिलाइला के जिम्मे छोड़ देना उचित न होगा। मैं ऊपर जाकर अपने कपड़े अभी बदलती हूँ।"

मि० बैंक्स चुपचाप अपनी पत्नी के पीछे हो लिये। समुद्र से बहते कोहरे के समान थकावट के झोंके उन्हें अपनी आत्मा को ढँकते मालूम होने लगे। एक बार उन्हें अपनी बेटी की याद आई; बिदा होने के पहले यहीं तो खड़ी हुई थी। रुककर मुँडेर से उन्होंने कमरे में बिखरी मिठाई पर एक बार नज़र डाली और सीढ़ी पर चढ़ते चले गये।

स्नानघर के हौज़ में उन्हें शैंपेन की एक बोतल पड़ी दिखाई दी। मसौला के घर छोड़ने के कुछ ही पहले किसी ने इसे वहाँ रख दिया था। किसलिए—इसका वह कोई अनुमान न कर सके। अभी तक ठंडी थी। एक क्षण सोचते रहे कि खोलूँ या पड़ी रहने दूँ। परन्तु तुरन्त ही पलट पड़े और सीढ़ी से उतरकर बिजली की झाड़ू निकाल लाये।

एक घण्टे के भीतर ही मिठाई का सब चूरा मशीन के फूलते पेट में पहुँच गया। दोनों एक बार फिर अपनी कुर्सियों पर लेट गये और आतिशदान के सामने लगे गमलों की ओर थकी दृष्टि से निहारने लगे।

कालीन के किनारे मिठाई के कुछ टुकड़े ब्रुश की पकड़ में न आने के कारण फर्श पर रह गये थे। इन्हें देखकर मि० बैंक्स उन्हें उठाने को उठे। कालीन के सिरे के नीचे कुछ और चूरा उन्हें दिखाई दिया। कोने को उन्होंने पलटा तो उसके नीचे रंग-बिरंगे काग़ज़ की चटाई-जैसी दिखाई दी।

बिना कोई टिप्पणी किये मि० बैंक्स ने कालीन को जहाँ-का-तहाँ रहने दिया। श्रीमती देखती रहीं, परन्तु कुछ बोली नहीं। मि० बैंक्स चुपचाप स्नानघर में गये और अन्तिम बोतल की काग खोली। खाली कमरे से केक के लिए खरीदे गये शैंपेन के दो नये प्याले उठा लिये और अपनी पत्नी के पास वापस आये।

उन्होंने दोनों प्याले सावधानी से भर लिये और एक अपनी श्रीमती को दिया। फूलों की पृष्ठभूमि में ब्रैकेट पर रखी घड़ी ने बारह बजाये; नगर से आई रेलगाड़ी की सीटी भी उसी समय सुनाई दी; सन्नाटे में कोई कुत्ता भी कहीं भूंक रहा था। प्याले को हाथ में लेकर मि० बैंक्स ने कहा, "हो जाये।"

श्रीमती ने सहमति प्रकट की, "अवश्य।"

पादरी पीटर की कहानी

(कैथरीन मार्शल द्वारा लिखित जीवनी का सार)

संयुक्त राज्य अमरीका की सीनेट (राज्य सभा) के स्वर्गीय पादरी पीटर मार्शल हर प्रकार से एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में अपने धार्मिक विश्वास को पूरी तरह निबाहा। बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों के सामने भी उनकी आस्था कभी डिगने नहीं पाई।

उनकी पत्नी कैथरीन मार्शल की लिखी हुई उनकी इस जीवनी में हँसी की लहरें भी हैं और हर्ष तथा गर्व के आँसू भी। यह एक भव्य व्यक्ति का अत्यंत सुन्दर तथा मर्मस्पर्शी चित्रण है जैसा सजीव चित्रण केवल एक पत्नी ही कर सकती है।

पादरी पीटर की कहानी

पीटर मार्शल से परिचय प्राप्त करने के दो वर्ष पहले से मेरे हृदय में उनके निकट संपर्क में आने की उत्सुकता थी। उस समय वह जार्जिया राज्य के अटलांटा नगर में पादरी थे। इनकी जन्मभूमि स्कॉटलैंड में थी। अतएव जार्जिया के समाचारपत्रों में, एक आकर्षक स्कॉच युवक की मधुर वाणी की तारीफ के बहाने, पीटर मार्शल की चर्चा हुआ करती थी। मैं पड़ोस में ही एक कालेज की छात्रा थी। इस कारण मुझे उनके प्रवचन सुनने के मौके मिला करते थे। उनके हार्दिक उत्साह और प्रवचनों के भावात्मक सौन्दर्य से मैं बहुत प्रभावित थी। उनकी प्रार्थना में सौन्दर्य और सत्य के पुट से मैं जिस प्रकार अभिमन्त्रित हो जाती थी, उसी प्रकार जब आगे चलकर यह अमरीकी सीनेट (राज्य-सभा) के बड़े पादरी नियुक्त हुए प्रायः सभी अमरीकी उनके प्रवचनों से प्रभावित होने लगे। एक बार मैंने अपने माता-पिता को लिखा, "ऐसा प्रवचन तो मैंने कभी पहले सुना ही न था। मुझे तो ऐसा लगता है कि ज्यों ही यह बोलना प्रारम्भ करते हैं श्रोता का ईश्वर से संपर्क हो जाता है। आप कहेंगे कि मैं कैसे अल्हड़पन की बात कर रही हूँ, परन्तु मुझे इस व्यक्ति से मिलने की हार्दिक इच्छा है।"

मैं एक कालेज की छात्रा और पीटर मार्शल पादरी होने के अतिरिक्त अवस्था में मुझसे बारह वर्ष बड़े भी थे। अतएव उन तक पहुँचना मुझे इतना ही कठिन जान पड़ा, मानो वह मंगल-ग्रह के निवासी हों।

जब वह अटलांटा के वेस्टमिंस्टर प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर के पादरी नियुक्त हुए, उस समय इस गिर्जाघर का आकर्षण इतना घट गया था कि उसे बन्द करने की बात सोची जा रही थी। अब यह गिर्जाघर इतना आकर्षक हो गया था कि उनका प्रवचन सुनने के लिए गिर्जाघर में नागरिकों की भीड़ लग जाती थी और छोटे पादरियों को खुली खिड़कियों से ही प्रवचन सुनने का मौका मिल पाता था। पीटर का युवक-युवतियों पर भी काफी प्रभाव था। अटलांटा में पाँच बड़े विद्यालय थे। इनमें तीन विश्वविद्यालय थे—जार्जिया टेक्निकल, एमरी, आगिल-थार्प—एक थी कोलम्बिया सेमिनरी और पाँचवाँ था एग्नीस स्कॉट कालेज जिसकी मैं छात्रा थी।

स्कॉच लोगों का अंग्रेजी बोलने का एक खास लहजा होता है जो उनकी जन्मभूमि का परिचय दे देता है। कुछ आलोचक वैमनस्य के कारण कहा करते थे कि पीटर का आकर्षण उनके स्कॉच लहजे पर ही आधारित है। यह सत्य है उनकी वाणी में असाधारण माधुर्य और स्पष्टता थी, और यह वाणी उनके स्कॉच लहजे से और भी आकर्षक हो जाती थी। वह स्कॉटलैंड में पैदा हुए थे और वहीं पले थे। इक्कीस वर्ष की आयु पूरी होने पर यह अमरीका आये थे। अमरीकियों की दृष्टि में उनके जीवन की यह पृष्ठभूमि कुछ चमत्कारपूर्ण थी। यह लम्बे थे और हृष्ट-पुष्ट भी। लड़कपन में फुटबाल खूब खेले थे; जिस कारण पादरी होने पर भी उनके चोगे के भीतर चौड़े कंधों की झलक दर्शकों को मिलती थी। उनके घुँघराले बाल बिखरे रहते थे और उनका मुख सुन्दर था, पर इस सौन्दर्य में बनावट का नाम भी न था।

परन्तु इन बाहरी आकर्षणों से कहीं बढ़कर उनके प्रवचन का प्रभाव था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके प्रवचन सुनकर श्रोता ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव करने लगते थे। जब पीटर प्रवचन देते तब उपस्थित प्रार्थी ऐसा अनुभव करते कि ईश्वर कोई सुदूर निराकार निर्गुण अस्तित्व नहीं, वह पितातुल्य उनका निकटस्थ संरक्षक है जिसे

मानव की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की चिन्ता है। एक नौजवान क्लर्क अपना दोपहर का भोजन छोड़कर उनका प्रवचन सुनने आया करता था। उसका कहना था, "हमारा पादरी ईश्वर से भलीभाँति परिचित है और उसकी सहायता से मुझे भी अपने ईश्वर का ज्ञान होने लगा है।"

उन दिनों, और सदैव ही, पीटर यह बात बार-बार कहते कि आध्यात्मिक अनुभव ज्ञान की वस्तु है, प्रमाण की नहीं। तर्क से तो प्रमाणित नहीं होता कि सूर्यास्त बहुत सुन्दर लगता है। आग के गोले के समान जब वह पश्चिमी क्षितिज से मिलने के लिए उतरने लगता है और अन्त में विश्राम के लिए उसकी लालिमामय गोद में पहुँचता है, तब सूर्य के रथ से आकाश और उसके बादल कितनी शीघ्रता से अपने रंग बदलने लगते हैं—यह छटा अनुभव करने की वस्तु है, प्रमाण की नहीं।

जब अंततः मुझे इन युवक पादरी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो मेरी आदर्शवादिता और नवयौवन-जन्य भावुकता भी इन पर केन्द्रित हो गई। मेरे अध्यापक डा० हेनरी राबिसन ने एक बार यह निर्णय किया कि पास के एक कस्बे में मद्य-निषेध पर पीटर मार्शल के साथ मेरे और मेरी एक सहपाठिनी के व्याख्यान हों। मैंने डा० राबिसन से तय किया कि कस्बे की ओर जाते समय वह मुझे कालेज की वाटिका से अपने साथ ले लें। वाटिका पहुँचकर एक हाथ में पुर्तगाली कविताओं का संग्रह लिये दूसरे हाथ से मैं अपनी सुध-बुध खोकर कुमुदिनी के पुष्पों से सुशोभित जलाशय से अठखेलियाँ करने लगी। मैंने सोचा यह था कि गुलाब के कुञ्ज से होते हुए जब मार्शल मुझे बुलाने आयें तो इस कलात्मक मुद्रा में उन्हें मेरी झलक मिले। हुआ यह कि डा० राबिसन मुझे लेने वाटिका पहुँच तो गये, परन्तु मोटर में बैठे-ही-बैठे मुझे बुलाने के लिए हार्न बजाने लगे। मेरी कल्पना भंग हुई और मैं अपनी सह-पाठिनी के साथ मोटर की पिछली सीट पर बैठ गई और बातचीत के

बीच-बीच में एक कहानी के बारे में सोचने लगती, जो पीटर के विषय में प्रसिद्ध थी। एक प्रार्थना-सभा में मजाक में उन्होंने कहा था, "ऐसा लगता है कि गिर्जाघर के प्राय: सभी श्रोताओं को इस बात की जानकारी मुझसे अधिक है कि मेरा विवाह कब होगा और किससे।"

इतना कहकर वह एक बच्चे के समान जोर से हँसकर बोले थे, "मैं यह बताना चाहता हूँ कि मैं विवाह तभी करूँगा जब मैं अपने को विवाह योग्य समझूँगा और उसके लिए अपने को तैयार भी समझूँगा। इस समय मैं विवाह योग्य तो हूँ, परन्तु अभी विवाह के लिए तैयार नहीं।"

मद्य-निषेध के लिए जो-कुछ किया गया उसकी सफलता की मुझे इतनी ही याद है कि जिले के निवासी शीघ्र ही पहले की भाँति शराब पीने लगे। परन्तु व्याख्यान से लौटते समय पीटर ने जो कहा, उसकी याद मुझे भली-भाँति है। उन्होंने पूछा, "इस सप्ताह आप मिल सकेंगी? बहुत दिनों से मिलने का उत्सुक हूँ।" मैंने विस्मय प्रकट किया तो बोले, "पादरी भी अंधे नहीं होते, यह आपको मालूम होना चाहिए।"

एक वर्ष पश्चात् हमारी सगाई हो गई। मेरी समझ में तो भगवान् की चमत्कारी अनुकम्पा के ही कारण मेरा उनसे सम्बन्ध हो सका।

● ● ●

मेरी बहुत-सी प्रतिद्वन्द्विनियाँ थीं। अटलांटा की कुमारी नवयुवतियाँ अपने नगर के इस पादरी को अपने योग्य वर समझती थीं और उनकी माताएँ अपनी पुत्रियों की इस कामना में सक्रिय सहयोग देती थीं। आम तौर से वे पारिवारिक सहभोज में अपनी "लड़की से मिलने के लिए" उस पुरुष को निमंत्रित करती थीं, जिसे वह अपना जमाई बनाने की फिक्र में होती थीं। इसके पश्चात् टेलीफोन से बुलावा दिया जाता—गृहिणी ने तमाशे के लिये टिकट ले लिये हैं, क्यों न उनकी लड़की को

साथ लेकर वह तमाशा देख आयें। या फिर सीधा यही प्रश्न किया जाता था कि इधर कई दिनों तक आप मेरी लड़की से मिलने आये क्यों नहीं ?

गृहिणियों और उनकी बेटियों के इस व्यवहार से पीटर को काफी परेशानी हुई। परन्तु इससे भी अधिक परेशानी उन्हें कुछ विवाहिता महिलाओं के व्यवहार से होती थी। आगे चलकर मुझे पता लगा कि प्रत्येक सभा में कुछ ऐसी स्त्रियाँ अवश्य होती थीं जो अपने इस पादरी को भावुक दृष्टि से देखती थीं। वे अपने पादरी की कुछ-न-कुछ वैयक्तिक सेवा करने को उत्सुक रहती थीं—फटे कपड़ों की मरम्मत कर दें; मेज पर फूल सजा दें; मेज पर भरा जलपात्र रख दें। परिचय-पत्र, छोटे-बड़े निवेदन और उपहार—कभी-कभी बहुत बड़े-बड़े उपहार भी—गिर्जाघर के दफ्तर में रहस्यपूर्ण ढंग से पहुँच जाते; किसी धार्मिक समस्या का बहाना लेकर स्त्रियाँ उन्हें फोन भी किया करतीं। पीटर का यह प्रिय व्यंग्य था, "न जाने शैतान को सदैव नर के रूप में ही क्यों चित्रित किया जाता है ?"

परन्तु अपने प्रणय-काल में मुझे पीटर की इन समस्याओं का कोई पता न था। हमारी केवल छः बार ही भेंट हो सकी। पीटर प्रवचन लिखने, मिलने जाने, पढ़ाने, सभाएँ करने और विवाह-संस्कार सम्पन्न कराने में इतने व्यस्त रहते कि उन्हें मुझसे मिलने की फुरसत ही बहुत कम मिलती। किसी युवक-युवती के विवाह-संस्कार के समय वह नव-दम्पति को यह आशीर्वाद सदैव देते कि वे मानव के परमानन्द-भवन में प्रवेश पा रहे हैं, अतएव दोनों आजीवन सब प्रकार से सुखी रहें। आम तौर पर उनसे मिलने का मौका तभी मिलता जब वह गिर्जाघर में काम करने के पश्चात् मुझे अपनी मोटर पर कालेज पहुँचाने जाते। उस समय भी उन्हें अपनी सेक्रेटरी की सहायता लेनी पड़ती। जब मैं श्रोताओं की भीड़ चीरती हुई गिर्जाघर के द्वार तक पहुँचती, तो उनकी सेक्रेटरी अकस्मात् आ जाती और संदेश देती, "मार्शल साहब का

निवेदन है कि आप कुछ प्रतीक्षा करें, बात करने के लिए कुछ लोग उन्हें घेरे हैं। उनसे निपटकर वह आपको पहुँचा देंगे।''

मैं प्रतीक्षा करती रहती।

पीटर आम तौर से युवक-युवतियों को इस प्रकार उपदेश देते, ''तुम्हें पहले से कभी नहीं मालूम हो सकेगा कि कब प्रणय-पाश में फँसोगे और इसकी पहचान क्या होगी। मैंने जितने भुक्त-भोगियों से इस विषय में पूछा है उन सबने मेरी उपर्युक्त बात का समर्थन किया। जो बात प्रणय के सम्बन्ध में सही है वही ईश्वर की सत्ता के ज्ञान के सम्बन्ध में में भी सही है। निजी अनुभव के बिना यह जानकारी प्राप्त होना असम्भव है।''

मई १६३६ के एक रविवार की रात के समय पीटर को पहली बार प्रणय का आभास हुआ। 'वेस्टमिंस्टर्स फेलोशिप आवर' के लिए प्रार्थना की एक पुस्तक की आलोचना करने को मुझसे कहा गया था। मेरे वक्तव्य के पश्चात् जब पीटर बोले तो उनकी नीली आँखों में गहरे आदर की भावना के साथ एक प्रकार की अपूर्व चमक भी दिखाई दी, मुझे उन्होंने तुरन्त ही अगले शनिवार की रात को भोजन के लिए निमन्त्रित किया। फिर हम दोनों संध्याकालीन प्रार्थना के लिए गिर्जा-घर गये, जहाँ अगली तीन कतारों की ही एक सीट पर बैठ जाने की मैंने भूल की।

उधर प्रणय एक रूप में अंकुरित हुआ, तो इधर वह पेट की पीड़ा के साथ मुझे प्रत्यक्ष हुआ। सिर चकराने के कारण पत्थर के खम्भे और प्रार्थना-मंच के पीछे खिड़की पर बने प्रभु यीशु के चित्र डूबते-उतराते दिखाई देने लगे। जब पीटर ने अपने प्रार्थना-मंच से मेरे नाम के साथ उस वक्तव्य का जिक्र किया जो मैंने कुछ ही समय पहले दिया था, तब तक मैं पीड़ा के मारे ज्ञानशून्य-सी हो गई थी। उनका प्रव-चन प्रारम्भ होते-होते मुझे जान पड़ा कि ठहरने में मेरी कुशल नहीं।

वापस जाने के लिए उठी, तो पग-पग चलना इतना दूभर लगा,

मानो वह मेरे जीवन की सबसे लम्बी यात्रा रही हो। प्रवचन शीघ्र समाप्त हुआ, गिर्जाघर में सन्नाटा छा गया, केवल पत्थर के फर्श पर ऊँची एड़ी के जूतों का खट-खट शब्द ही सुनाई देता था। मुझे ऐसा लगा मानो पीटर की आँखें मेरी पीठ पर बराबर लगी हुई हैं। गिर्जाघर के बाहर बरामदे में पहुँचने पर जब मुझे कर्मचारियों का सहानुभूति-पूर्ण सहारा मिल गया, तभी उन्होंने अपना स्थगित प्रवचन पुनः प्रारम्भ किया।

उसी रात मैं कालेज के अस्पताल में पहुँचाई गई, और मेरे पेट की अनोखी पीड़ा का निदान ढूँढ़ने का प्रयत्न किया गया। प्रमुख परिचारिका को प्रणय-पीड़ित लड़कियों की बहुत अच्छी जानकारी थी, जिस कारण उसने तुरन्त ही अपना सन्देह प्रकट किया।

अगले दिन तीसरे पहर पीटर मुझसे मिलने आये। उनकी आँखों में जो चमक मैंने पिछली रात देखी थी, वह अभी तक थी। यह चमक उस दृढ़ निर्णय और निश्चय की प्रतीक थी जो स्काटलैंडवासियों में हुआ करता है। उन्हें मालूम था कि वह क्या चाहते हैं।

उनके प्रस्ताव के शब्द बहुत सीधे-सादे थे, यद्यपि वे अत्यन्त मधुर वाणी में उच्चरित हुए, मानो किसी पारखी के सादे शब्द-चित्र सुन्दर कोमल कशीदाकारी से घिरे हों। मेरे हृदय ने अपना उत्तर मुझे तुरन्त दे दिया, परन्तु मुझे डर लगा कि कहीं मेरा हृदय दैवी आदेश को न ढँक ले। अतएव हम दोनों इस बात पर सहमत हुए कि अलग-अलग भगवान से प्रार्थना करें और उसका आदेश सुनने का प्रयत्न करें।

कालेज की परीक्षाएँ समाप्त होने पर जब मैं कालेज के अहाते के भीतर इधर-उधर टहलती थी, तभी किसी अदृश्य शक्ति की छत्रछाया का मुझे आभास हुआ। मुझे प्रार्थना करना आता न था, और अल्हड़ थी ही, परन्तु इतना मुझे अवश्य समझ में आया कि हृदय में बसे भगवान अपने प्रिय स्वप्नों को हमारे हृदयों पर अंकित करके ही हमारा पथ-प्रदर्शन करते हैं। जब हमारा स्वप्न साकार होता है तो ईश्वरेच्छा

मानकर उसे हम स्वीकार करते हैं। इस प्रकार समझ जाने पर पीटर तक अपना उत्तर पहुँचा देने का प्रिय काम ही बाकी रह गया था।

जब हम दोनों डिकाटूर से अटलांटा जा रहे थे, तभी मैंने अपनी स्वीकृति देने का निर्णय किया। जब मैं अपनी बात कह चुकी, तो पीटर ने संक्षेप में इतना ही कहा, "ईश्वर को अनेक धन्यवाद।" थोड़ी देर तक मोटर आगे बढ़ती रही और हम दोनों खामोश रहे। फिर एक जगह सड़क के किनारे उन्होंने कार खड़ी कर दी और उनके नत-मस्तक मुख से जीवन की सुन्दरतम प्रार्थना निकली जिसका भावार्थ यह था कि ईश्वर उनकी जीवनचर्या के सभी अंगों में व्याप्त है। वह अपने को भगवान् का अनुचर समझते हैं और ईश्वर ही के साथ वह इस शुभ घड़ी का आनन्द लेना चाहते हैं। इसके पश्चात् ही उन्होंने मुझे अपने बाहु-पाश में जकड़ लिया।

● ● ●

अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में पीटर पादरी बनने के उत्सुक नहीं थे। तब उनका जीवन-ध्येय दूसरा ही था। स्कॉटलैंड के समृद्ध बन्दरगाह ग्लासगो के निकट कोटब्रिज में जन्म लेने के कारण वह ब्रिटिश जंगी बेड़े के प्रभाव में पले थे। अतएव वह मल्लाह बनने की धुन में थे। चौदह वर्ष की अवस्था में उन्होंने जंगी बेड़े में भर्ती होने के कई प्रयत्न किये जो विफल रहे। किशोरावस्था में वह मिस्त्री का काम सीखते रहे, पर जहाजी नौकरी की उत्सुकता उनके हृदय में बनी ही रही। परन्तु इक्कीसवीं वर्षगाँठ के पहले ही उन्हें ऐसा लगा कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनका कन्धा पकड़कर एक नये मार्ग का निश्चयात्मक आदेश उन्हें दे दिया है।

गर्मी की छुट्टियों में इंगलैण्ड-स्कॉटलैण्ड सीमा के सोलह मील दक्षिण-पूर्व वह इंगलैण्ड के बैमूबर्ग नामक एक गाँव में काम कर रहे थे। पड़ोस के एक गाँव से रात के समय पीटर बैमूबर्ग की ओर चले, तो समय

बचाने के खयाल से वह एक झाबर भूमि पार करने लगे। रात बहु
ही अँधेरी थी, झाबर मे खड़ी झाड़ियों के बीच से बहती हवा की हर
हराहट सुनाई देती थी; या बीच-बीच में जंगली मुर्गों की बाँग भी सु
पड़ती थी, जब वे उनके पैरों की आहट से चौकन्ने हो जाते थे।

अकस्मात् उन्हें ऐसा लगा मानो किसी ने 'पीटर' कहकर पुकार
हो। उस आवाहन में बड़ा आग्रह था।

वह रुक गये और बोले, "कौन है, क्या चाहते हो?" एक क्षण भ
वह सुनते रहे, परन्तु वायु की हरहराहट के अतिरिक्त उन्हें कुछ सुना
न दिया। यह समझकर कि कानों को केवल धोखा हो गया है, व
कुछ पग और आगे बढ़े। फिर वही आवाज और इस बार और भ
अधिक आग्रहपूर्ण।

इस निबिड़ अन्धकार में झाँकने का प्रयत्न करते-करते वह अकस्मा
एक जगह घुटनों के बल गिर पड़े। सँभलने के लिए उन्होंने अपना हा
आगे बढ़ाया पर वहाँ उन्हें कुछ न मिला। जब सावधानी से फि
टटोलने का प्रयत्न किया तो उन्हें पता लगा कि वह एक ऐसी गह
खदान के किनारे खड़े हैं जहाँ से पत्थरों की खुदाई हो चुकी थी। य
एक पग भी और आगे बढ़ते तो लुढ़क जाते और मृत्यु निश्चित थी।

अब पीटर के हृदय में आकाशवाणी के सम्बन्ध में कोई सन्देह न
रह गया।

इस घटना के पहले अपनी व्यस्त जीवनचर्या के बावजूद पीटर
हृदय में अशान्ति और असंतोष रहता था। एक रात्रिकालीन पा
शाला में कुछ समय तक प्रशिक्षित होकर उन्होंने नल बनाने का का
यथेष्ट मात्रा में सीख लिया था और इस प्रशिक्षण के अतिरिक्त भ
उनका जीवन व्यस्त ही रहता था। वह गिर्जाघर से संलग्न विद्याल
में पढ़ाते थे, बच्चों को गाना सिखाते थे और स्काउट मास्टर भी थे
वाई० एम० सी० ए० की फुटबाल टीम के सदस्य थे, क्रिकेट खेल
थे, नाटकों में अभिनय करते थे, बैंड में ढोल बजाते थे।

रात्रि के निविड़ अन्धकार में उस झाबर भूमि के मध्य पीटर को विश्वास हो गया कि उन्हें भगवान् का दूसरे क्षेत्र के लिए स्पष्ट आदेश मिला है। उन्हें अपने भाग्य का नवीन आश्वासन मिला और उसी वर्ष शरद् के पहले एक पादरी का प्रवचन सुनते-सुनते उन्हें ज्ञात हो गया कि उन्हें अपना जीवन धर्म के प्रचार में ही लगाना है। व्याख्यान के समाप्त होते ही उन्होंने खड़े होकर भरी सभा में घोषणा की, "मैं अपना जीवन भगवान् को अर्पित करता हूँ। वह जिस प्रकार चाहे मुझसे काम ले।"

जिस व्यक्ति ने मिस्त्री बनने के लिए १४ वर्ष की अवस्था में पढ़ाई छोड़ दी हो, उसका पादरी-पद के लिए प्रशिक्षित होना सरल न था। विश्वविद्यालय की आवश्यक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के पहले उन्हें कुछ प्रारम्भिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना था। पीटर ने ग्लासगो के एक कॉलेज में प्रति सप्ताह तीन रात हाजिरी देना शुरू किया। परन्तु नल के कारखाने में ६ घण्टे काम करने के बाद कक्षा के काम में ध्यान लगाना कठिन था। सफ़र, पुस्तकों और फीस पर अतिरिक्त रकम खर्च होने लगी तो आगे की पढ़ाई के लिए रकम बचाना भी असम्भव हो गया। धर्म-सेवा को पूरा समय देने की चेष्टा असम्भव और सुदूर-सी दिखने लगी कि ऐसे ही समय एक चचेरे भाई जो अमरीका में जाकर बस गये थे, कुछ दिनों के लिए पीटर के पास रहने आ गये। उन्होंने पीटर से कहा, "अमरीका चलो। वहाँ अधिक सुगमता से अपनी पढ़ाई पूरी कर सकोगे और उद्धार के लिए जितने पापी स्कॉटलैंड में हैं उससे कम अमरीका में नहीं हैं।"

परेशान होकर अपने निर्णय के सम्बन्ध में प्रार्थना करते-करते पीटर को अन्तरात्मा से स्पष्ट आदेश मिल गया। १६ मार्च, १६२७ को 'केमरोनिया' नामक जहाज पर वह अमरीका के लिए चल दिये। शीघ्र ही स्कॉटलैंड की पहाड़ियाँ ठंढे अटलांटिक महासागर में डूबकर उनकी दृष्टि से ओझल हो गईं। उन्हें अकेलेपन का अनुभव हुआ और

कुछ भय भी लगा। परन्तु ईश्वर के प्रति अटल विश्वास ने उनकी रक्षा की। इस विश्वास ही की परीक्षा आगे होती रही।

● ● ●

जब पीटर अमरीका पहुँचे तो उनके भूरे चमड़े के पुराने बटुए में दो सप्ताह के गुजारे भर की ही रकम थी। यह बटुआ उनके पास सुरक्षित रहा, उन्हें सदैव दैवी रक्षा की याद दिलाने के लिए। बहुत से लोग धर्म की व्यावहारिक उपयोगिता के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं या अस्वीकार करते हैं। धर्म को गिर्जाघर की रंगीन खिड़कियों से उतरकर व्यक्ति की जेब तक पहुँचना चाहिए और यदि धर्मोपदेशक को सफल होना है तो उसे इस वास्तविकता का ज्ञान होना ही चाहिए।

ईश्वर में असीम विश्वास के कारण पीटर के जेब-खर्च की समस्या भी अगले महीनों में हल होती रही। जब अमरीकावासी मन्दी के भूत से त्रस्त थे तब उन्होंने एक दिन अपने प्रवचन में कहा था, "अपने निजी अनुभव के आधार पर मैं साक्षी दे सकता हूँ कि ईश्वर पर अटल विश्वास रखकर प्रार्थना और भक्ति द्वारा ही मेरी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति हो सकी है।"

पाँच महीनों तक इस युवक प्रवासी को जो भी काम मिला उसको ही वह करता रहा। पीटर खाइयाँ खोदते, इमारती काम करते या ढलाई के कारखाने में मिस्त्री की सहायता करते। कठिन और देर तक परिश्रम करने के वह आदी रहे थे। परन्तु उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस प्रकार परिश्रम करके वह अपने लक्ष्य के निकट कैसे पहुँचेंगे। अभी तक गिर्जाघर से उनका कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं बन सका था। और पादरी का काम उन्हें पहले से अधिक दूर दिखाई देने लगा था। वह सोचने लगे थे कि कहीं वह ईश्वर के दिखाये मार्ग से भटक तो नहीं गये हैं। स्काटलैंड लौट जाने के निर्णय पर वह पहुँचने ही को थे कि उनको एक दस्ती पत्र मिला। यह पत्र उनके एक अनन्य मित्र का

था। वह एक वर्ष पहले स्कॉटलैंड छोड़कर अलाबामा राज्य के बर्मिघम नगर में आ बसा था। पत्र में लिखा था, "यहाँ क्यों न चले आओ? मुझे पूरी आशा है कि मैं तुम्हें बर्मिघम के समाचार-पत्र 'न्यूज़' में काम दिलवा दूँगा।"

पीटर ने अपने मित्र का सुझाव मान लिया और उन्हें तुरन्त ही बर्मिघम के 'न्यूज़' कार्यालय में प्रूफ़ पढ़ने का काम मिल गया। वह पुराने फर्स्ट प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर के सदस्य हुए और गिर्जाघर का पादरी इस स्कॉच युवक की धार्मिक निष्ठा और दैवी आदेश-पालन के दृढ़ निश्चय से शीघ्र ही प्रभावित हुआ। थोड़े ही महीनों के भीतर पीटर 'यंग पीपुल्स सोसाइटी' नामक संस्था के प्रधान हो गये, वयस्कों को बाइबिल पढ़ाने लगे और कभी-कभी रविवार की प्रार्थना में सहायता भी देने लगे। बर्मिघम के प्रेस्बिटेरी ने पादरी-पद के लिए उनके प्रार्थना-पत्र पर विचार किया और निर्णय हुआ कि वह डिकाटूर (जार्जिया) स्थित कोलम्बिया थियालाजिकल सेमिनरी में प्रशिक्षण के लिए भर्ती कर लिये जायें।

'न्यूज़' के पत्रकार उनकी योजना का मज़ाक उड़ाने के लिए उनसे प्रश्न किया करते, "पीटर, सेमिनरी तक पहुँचने का खर्च किस प्रकार निकाल पाओगे? २० डालर प्रति सप्ताह पाकर कितना बचा सकोगे?"

और हँसते हुए पीटर उत्तर देते, "जी हाँ, प्रभु ने पादरी बनाने के लिए मुझे इस देश में भेजा है और यह उसी को निर्णय करना है कि किस प्रकार मैं इस पद तक पहुँच पाऊँगा। आदेश-पालन ही मेरा काम है। बाकी उसके हाथ में है।"

युवक सहयोगी उनकी ओर देखते और सिर हिलाते। पीटर के विश्वास में उन्हें उपहास की सामग्री मिलती थी।

ऐसी ही स्थिति में अप्रैल १९२८ की एक रात को उन वयस्कों ने, जो उनसे बाइबिल पढ़ते थे, पीटर को एक भोज दिया। सभा में एक सदस्य ने खड़े होकर छोटे से व्याख्यान में अपने युवक शिक्षक की खूब

तारीफ की और उनके हाथ में एक पत्र दिया जिसमें यह सूचना थी : "आपकी कक्षा के सदस्य सेमिनरी के व्यय-भार में ५० डालर प्रति मास तक की सहायता देंगे। सदस्यगण आपके स्वप्न को साकार देखने के बहुत उत्सुक हैं। वे धन से तो सहायता करेंगे ही; उनकी प्रार्थनाएं और पूरण कामनाएँ भी आपके साथ हैं।"

जब पीटर को बोलने का मौका मिला तो उन्हें अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शब्द ढूँढने पड़े। परन्तु इनकी आवश्यकता न थी, क्योंकि पीटर की कृतज्ञता उनकी आकृति पर ही परिलक्षित थी। अगले वर्ष भी वे लोग ५० डालर प्रति मास की सहायता देते रहे। इसके पश्चात् दो छोटे गिर्जाघरों में उन्हें काम मिल गया और इस प्रकार वह अपना व्यय-भार सँभाल सके, यहाँ तक कि मई १६३१ में अपनी २७वीं वर्षगांठ के कुछ पहले यह धर्मशिक्षा के स्नातक हो गये और उन्हें 'मैग्ना कुम लाउडी' की उपाधि मिली जिसका अमरीकी शिक्षा-क्षेत्र में ऊंचा मान है। इसके पश्चात् उनका भूरा बटुआ कभी खाली नहीं रहा।

प्रभु ने अपना वचन पूरा किया, "पहले प्रभु के राज्य और उनकी दया का पता लगाओ ! फिर तुम्हारी सभी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जायगी।" पीटर का यह अटल विश्वास था कि भगवान् हमारे भरण-पोषण का प्रबन्ध करते रहते हैं, इन कठिन दिनों के अनुशासन में पुष्ट ही हुआ; और इसलिए यह विश्वास उनके प्रवचनों का आधार-प्रस्तर बना।

● ● ●

जब हमारी सगाई हो गई तो मैं समझी कि एक वर्ष मुझे शिक्षण-कार्य करना है। परन्तु पीटर ३० वर्ष के हो गये थे और वर्षों से वह गृही बनने के उत्सुक थे। उनकी यह आकांक्षा उनके प्रवचनों तथा सार्वजनिक प्रार्थनाओं में भी परिलक्षित होती थी; अब वह एक वर्ष तक

प्रतीक्षा करने के लिए तैयार न थे। हमने नवम्बर के प्रथम सप्ताह में ही विवाह कर लेने का निश्चय किया।

उस ग्रीष्म में हम दोनों को मिलने के बहुत कम अवसर मिले, क्योंकि हमारी निजी योजनाएँ उनके धार्मिक दायित्वों से सदैव टक्कर खाती रहीं। कभी-कभी इस प्रकार का पत्र मिलता, "मुझे शुक्रवार को तीसरे पहर एक विवाह कराना है। क्या ही अच्छा हो यदि विवाह का समय एक घण्टा आगे बढ़ाने के लिए मैं दुलहिन को राजी कर सकूँ।" मैं उन दिनों अपने माता-पिता के साथ कैसर डब्लू० (वर्जिनिया) में थी और हमें सम्मिलन के छः अवसर ही मिल सके। एक बार पीटर को मुझसे मिलने के लिए ७,००० मील की यात्रा करनी पड़ी।

इधर पीटर के प्रणय-पत्र अपने क्षेत्र में मुझे अनोखे ही लगे। स्कॉटलैण्ड के सुपुत्रों में व्यावहारिक व्यावसायिकता के साथ काव्यमय भावुकता का अपूर्व सम्मिश्रण मिलता है। यही बात मुझे पीटर के पत्रों में मिली। उन्हें प्रणय-गीतों की पंक्तियों के साथ यह सूचना देने में कोई भी असंगति नहीं मालूम होती थी कि भाग्यवश उन्हें सगाई की अँगूठी थोक भाव पर मिल गई। दूसरे पत्र में उन्होंने चांदी के बर्तनों को सस्ते दामों प्राप्त करने का उल्लेख किया था। एक बार उन्हें एक दुकानदार मित्र मिल गया, जो उन्हें आधे दामों पर आराइश का सामान देने के लिए तैयार हो गया था।

कैसर में मेरा घर था और वहीं चौथी नवम्बर को गिरजाघर में हमारा विवाह हुआ। संस्कार के कुछ पहले उन्हें वेस्टमिंस्टर के कर्मचारियों का एक तार मिला, जिसमें उन्हें उन प्रिय वाक्यों को दोहराने का अवसर मिला, जिनसे उनके पादरी नव-दम्पतियों को आशीर्वादात्मक बधाई दिया करते थे :

मानव के परमानन्द-भवन में प्रवेश पाने पर आपको हार्दिक बधाई है।

अगले दिन प्रातःकाल जब मेरी आँख खुलीं तो मैंने पीटर को कुहनी के सहारे मेरी ओर निहारते देखा। मालूम होता था जैसे वह मुझे बड़ी देर से निहार रहे थे। उनकी भाव-भंगिमा से मैं यह नहीं समझ पाई कि वह क्या सोच रहे थे। या तो वह मेरे सौंदर्य को निहारकर प्रसन्न हो रहे थे, या वह यह सोच रहे थे कि विवाह-बंधन में वह किस प्रकार फँस गये थे।

हम दोनों वाशिंगटन में थे और होटल के उपर्ले खण्ड में वाशिंगटन के न्यूयार्क एवेन्यू प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर की पैस्टरल कमेटी के सदस्य हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने पीटर को अपना पादरी बनाने के लिए निमंत्रित किया था। पिछले महीने उन्होंने उनका निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि बहुत कुछ आंतरिक विचार-मंथन के पश्चात् वह इस निर्णय पर पहुँचे थे कि उन्हें अभी अटलांटा को बहुत-कुछ सेवा करनी है। उन्होंने कमेटी के सदस्यों को इस प्रकार पत्र लिखा था :

"इतने ऊँचे पद के दायित्व और गौरव का भार वहन करने योग्य मैं अभी नहीं हूँ। समय ही मुझे बता सकेगा कि मैं कभी भी मस्तिष्क और हृदय के उन गुणों से परिपूर्ण हो सकूँगा, जो आपके प्रार्थना-मंच के लिए आवश्यक हैं।" परन्तु कमेटी के सदस्य नकारात्मक उत्तर के लिए तैयार न थे और उन्होंने इस आशय का तार भेजा :

हमें आपको सूचित करते हर्ष होता है कि हमारी कमेटी ने सर्वसम्मति से गिर्जाघर के सदस्यों से सिफारिश की है कि आप निमन्त्रित किये जायें। पाँचवीं नवम्बर को गिर्जाघर के सदस्यों की सभा होगी।

पाँचवीं नवम्बर भी आ गई और पैस्टरल कमेटी को हम दोनों से बात करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। वे यह जानते थे कि पिछले दिन के तीसरे पहर ही हम लोगों का विवाह हुआ था। परन्तु उन्हें पूरी आशा थी कि हम अपनी सुहागरातों के साथ गिर्जाघर का काम करते रहने

में बुरा न मानेंगे। अपने दाम्पत्य की याद करते मुझे ऐसा लगता है कि यह जीवन गिर्जाघर की समिति की बैठकों से प्रारम्भ हुआ तो यही सिलसिला अंत तक चलता रहा।

नाश्ते का भी समय पीटर को नहीं मिला। पीछे मुड़कर यह कहते हुए वह चल दिये, "कैथरिन, कपड़े पहनकर तैयार होने में शीघ्रता की आवश्यकता नहीं, मैं पहुँचकर अपना काम प्रारम्भ कर दूँगा। लोग जब तुमसे मिलना चाहेंगे, तो मैं तुम्हें टेलीफोन कर दूँगा।" उनके शब्दों का जिस प्रकार मुझ पर प्रभाव पड़ता था, उससे मेरी समझ में यही आया कि वह मुझे उस समय बुला भेजेंगे जब वे सब मुझे भेड़ियों के समान नोंच खाने के लिए तैयार होंगे; यद्यपि हुआ यह कि कमेटी के सदस्य अत्यन्त ही विनीत रहे और मुझे किसी भी कठिनाई का कोई अनुभव नहीं हुआ।

पीटर ने उन लोगों को साफ-साफ समझा दिया कि वह कई महीनों तक किसी भी हालत में वाशिंगटन न पहुँच सकेंगे। अटलांटा के गिर्जाघर के सदस्यों के प्रति उन्हें कई दायित्वों का निर्वाह करना था। हुआ यह कि वाशिंगटन गिर्जाघर के सदस्य सत्रह महीनों तक धैर्यपूर्वक एक के बाद दूसरे पादरी को सुनकर पीटर को निमंत्रण देने के लिए प्रस्तुत हुए, तो अपनी इच्छानुसार पादरी पाने में उन्हें ग्यारह महीने और प्रतीक्षा करनी पड़ी। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वे आवश्यक प्रतीक्षा करते रहेंगे।

उनके इस विश्वास का एक ही उत्तर हमारी समझ में आया और वह यह कि ईश्वर वाशिंगटन में हमारी उपस्थिति चाहता था। जब हमने अटलांटा छोड़ने का निश्चय किया तो अटलांटा गिर्जाघर के सदस्यों ने विवश होकर आंसू बहाते हुए परन्तु धार्मिक उदारता के साथ हमारा निर्णय स्वीकार किया।

● ● ●

वह अविस्मरणीय छुट्टी बिताने हम दोनों ब्रिटेन पहुँचे, जहाँ उन्होंने मेरा परिचय स्कॉटलैंड के अपने प्रिय स्वजनों से कराया। इसके पश्चात् पहली अक्तूबर, १९३७ से पीटर ने वाशिंगटन में पादरी के पद का कार्य-भार सँभाला। पीटर ने अपने स्वाभाविक लहजे में कहा, "कैथरिन, मैं बहुत भयभीत हूँ, कदाचित् मुझे इस गिर्जाघर का काम स्वीकार न करना चाहिए था। मानो कि ये लोग मुझे पसन्द न करें, तो फिर ?"

हम पर जिन विशाल दायित्वों का भार आ पड़ा था, उन्हें देखकर हमारा भयभीत होना स्वाभाविक ही था। न्यूयार्क एवेन्यू के प्रार्थना-मंच की गणना राष्ट्र के एक दर्जन प्रमुख प्रार्थना-मंचों में होती थी। अब्राहम लिंकन सहित अमरीका के आठ प्रेसिडेंटों ने वहाँ प्रार्थना की थी। अमरीका पहुँचने के दस वर्ष के भीतर ही देश की राजधानी के इतने ऊँचे पद पर पहुँचना बहुत बड़ी बात थी। कोई आश्चर्य नहीं कि पीटर को भय का आभास हुआ।

परन्तु अटलांटा में श्रोताओं की जो कैफियत रही, वही न्यूयार्क एवन्यू गिर्जाघर के बाहर प्रति रविवार के प्रातःकाल दिखने लगी। गिर्जाघर के बाहर श्रोताओं की लम्बी कतारें प्रतीक्षा करने लगीं। लिंकन चैपल और निचले व्याख्यान-भवन में, उस भीड़ के लिए जो गिर्जाघर के भीतर समा न पाती थी, लाउडस्पीकर लगाने आवश्यक हो गये। अन्ततः गिर्जाघर के अधिकारियों को यही निर्णय करना पड़ा कि स्थिति सँभालने के लिए प्रति रविवार को दोपहर के पहले दो प्रार्थना-सभाएँ हों—एक नौ बजे और दूसरी ग्यारह बजे।

अन्य पादरियों की भाँति पीटर भी श्रोताओं की भीड़ से प्रोत्साहित होते थे। तो भी उन्हें अपने दायित्व का पूरा खयाल रहता था और वह यह प्रयत्न करते रहते थे कि उनके व्यक्तित्व के सामने कहीं उनके श्रोता ईसा मसीह को न भूल जायें। कभी-कभी प्रार्थना-मंच से किसी आमन्त्रित पादरी को बोलना होता था। ऐसे समय उनकी चापलूसी करने के लिए जब उनसे कोई कहता कि बहुत-से लोग यह जानकर घर चले गये कि

आज पीटर का व्याख्यान नहीं होगा, हो उन्हें इतना बुरा लगता कि वह क्रोधवश यहाँ तक कह डालते, "मैं नहीं था तो ईश्वर तो उपस्थित था। लोग गिर्जाघर आये क्यों थे, ईश्वर की उपासना करने या मेरा व्याख्यान सुनने ?"

जब कोई चर्च की सदस्या यह कहती कि वह अपने पड़ोसी के यहाँ काम करने जा रही है, क्योंकि वह पीटर मार्शल की भक्त नहीं, तो पीटर उसे कड़वे शब्दों में समझा देते कि उन्हें प्रभु के भक्तों में ही दिलचस्पी है, पीटर मार्शल के भक्तों में नहीं। एक दिन रविवार को वर्षा हो रही थी तो अपने कमरे की खिड़की से गिर्जाघर के बाहर लम्बी कतारों में खड़े लोगों को देखकर वह कहने लगे, "मुझे ऐसी ऋतु में इतने अधिक लोगों को प्रतीक्षा करते देखकर आश्चर्य होता है। जब मैं यह देखता हूँ तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करने लगता हूँ।"

श्रोताओं की भीड़ में थोड़े-से वाशिंगटन के प्रसिद्ध व्यक्ति भी सम्मिलित होते थे। कठिन परिश्रम के मार्ग से ही पीटर इतने उच्च पद तक पहुंचे थे; अतएव जनवादी आदर्श उनकी नस-नस में व्याप्त था। पहले तो राजधानी के प्रसिद्ध व्यक्तियों की खुशामद से वह इतने हिचकते रहे कि उनकी वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति का भी उन्हें खयाल न रहा। परन्तु शीघ्र ही उन्हें पता लगा कि धनी-मानियों के भाग्य में भी रोग, पीड़ा और वियोग रहते ही हैं; अन्य लोगों की भाँति उन्हें और उनके परिवारों को भी सहायता, सांत्वना और परामर्श की आवश्यकता रहती है। राजधानी के पादरी की हैसियत से संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट से लेकर सभी की सेवा करना उन्होंने अपने कर्तव्य का अविभाज्य अंग मान लिया।

जब पीटर वाशिंगटन आये तो नवयुवक संघ के सदस्यों की संख्या १२ के निकट थी। यह स्थिति तुरन्त ही बदली और न्यूयार्क एवेन्यू नवयुवकों के गिर्जाघर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। पीटर के अटल विश्वास से अमरीकी युवक-युवतियाँ कितने अधिक प्रभावित होते थे,

इसका दृष्टान्त मुझे कई वर्ष बाद एक लड़की ने सुनाया जो उन दिनों वहाँ थी।

वुडरो विलसन हाई स्कूल का अनुशासन बिलकुल बिगड़ गया था। कई आमन्त्रित वक्ताओं का स्वागत हुल्लड़ या मटर के दानों और कागज के विमानों की बौछारों से किया जा चुका था। कई वक्ताओं को परेशान होकर मंच छोड़ देना पड़ा था।

जब लड़कियों ने सुना कि उनके सम्मुख व्याख्यान देने के लिए एक पादरी बुलाये गये हैं, तो उन्होंने इन्हें भी परेशान करने का निश्चय किया। लड़की का कहना था, "मेरी पक्की धारणा थी कि डा० मार्शल को लड़कियों के हुल्लड़ से हताश होकर मंच से हटना पड़ेगा।"

पहले तो यह लड़की पादरी के खिले मुख और लहजे से ही प्रभावित हो गई। बोलते-बोलते वह गार्डेनिया नामक फूल की बात लड़कियों के सामने ले आये; वह कहते गये, "तुम जानती हो कि इस फूल में उँगली लगते ही स्पर्श की सूचना देने के लिए उस पर भूरे दाग बन जाते हैं। तुम्हारे जीवन इसी फूल के समान हैं। शुद्धता की व्याख्या भी यही है। होनहारो, संसार को कोई विनाशकारी वस्तु न दो। ऊँचे आदर्शों, सुन्दर स्वप्नों और शुभ विचारों का स्वागत करो, उनसे परहेज़ न करो....।"

अकस्मात् लड़की को पता लगा कि पूरे सभा-भवन की सभी लड़कियाँ मन्त्र-मुग्ध होकर पीटर मार्शल की ओर आँखें लगाये कानों से उनका एक-एक शब्द पीती जा रही हैं। उनके व्याख्यान के समाप्त होते ही शत-शत करतल ध्वनियों से लड़कियों ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

चौदह वर्ष बाद भी लड़की को उनके प्रवचन का विषय और गार्डेनिया का दृष्टान्त याद रहा। उसने विचारपूर्वक कहा, "हम लड़कियों को पीटर मार्शल के व्याख्यान सुनने का चाव रहता था। वह कोई ऐसी बात न कहते थे, जो हमारी समझ में न आती हो; और अपने जीवन-निर्माण का पूरा-पूरा दायित्व वह हम पर ही रख देते थे।"

अधिकांश पादरी किसी विचार के विकास के लिए ही अपने प्रवचन लिखते हैं। पीटर अपने प्रवचनों में किसी चरित्र या भाव का चित्रण करते थे और श्रोताओं की भावना को जागृत करते थे। उनका यह ढंग उन्हें स्वभावतः प्राप्त था, क्योंकि उनके विचार ही चित्रमय होते थे। छोटी-छोटी घटनाओं का नाटकीय चित्रण करने में वह सिद्ध-हस्त थे। गुमनाम व्यभिचारिणियाँ और प्राचीनकाल के साइमन पीटर या जैकियस जैसे निम्न श्रेणी के विश्वासघाती उनके प्रवचनों से निकलकर उपस्थित श्रोताओं से सहानुभूतिपूर्वक अपने हाथ मिलाते जान पड़ते थे। अकस्मात् श्रोताओं की समझ में आ जाता कि ये सब नर-नारी उनके ही जैसे थे। उनमें भी वही आशंकाएँ, कमजोरियाँ, वही पापी प्रवृत्तियाँ, उद्धार की वही आशाएँ थीं; और तब से अब तक एकमात्र प्रभु यीशु ही उनके उद्धारक थे। यदि ईसा मसीह उनकी समस्याएँ हल कर सके थे, तो हम सब की समस्याओं का हल करना भी प्रभु के लिए सम्भव था।

पीटर की पक्की धारणा थी कि कर्म की वास्तविक प्रेरणा भावना से मिलती है, बुद्धि से नहीं। परन्तु उन्हें भावुकता से घृणा थी। संयुक्त राज्य अमरीका के विकास के दिनों में जहाँ लकड़ी चीरने के कारखाने होते थे, वहीं कुछ साधारण बुद्धि के पादरी भी कर्मचारियों और मालिकों की सेवा के लिए पहुँच जाते थे। उनके प्रवचनों में एक प्रकार की कृत्रिमता होती थी। पीटर को यह कृत्रिमता नापसन्द थी; और पादरियों का काँपती आवाज में बोलना भी वह अनुचित समझते थे। वह चालू विशेषणों से बचते थे और उनके मतानुसार बाइबिल की सरल और सीधी भाषा में ऐसे वाक्यांशों को कोई स्थान प्राप्त न था जैसे "प्रिय ईसा", "सुन्दर प्रभु", "मधुर उद्धारक", "सौन्दर्यपूर्ण पावन-आत्मा।"

● ● ●

पीटर को गृह-प्रबन्ध में असाधारण आनन्द आता था, और घर में सामान लगाने के काम में वह अपने स्वाभाविक जोश से छोटी-से-छोटी बातों में भी मेरी सहायता करते थे। उनके शरीर की तौल सवा दो मन से कुछ अधिक थी। वह चाहते थे कि कोई भी फर्नीचर इतना कमजोर न हो कि उनके उस पर बैठने पर वह चरमराने लगे; जब वह सामान की इस प्रकार परीक्षा करते थे तो बहुत से दुकानदार भयभीत हो जाते होंगे।

पतिदेव कमरे में यथेष्ट प्रकाश चाहते थे। उनकी समझ में यथेष्टता का स्तर जनरल एलिक्ट्रिक कम्पनी की प्रदर्शनी की चकाचौंध तक पहुँचता था। यदि मैंने कभी भोजन की मेज पर मोमबत्ती ही की रोशनी कर दी, तो मुझे उनकी फटकार के लिए भी तैयार रहना पड़ा। कोई मेहमान आया हुआ होता तो उनका व्यंग्य इस प्रकार होता, "विलई, मुझे आशा है कि तुम्हें अपना मुँह इस रोशनी में मिल सकता है। हाँ, है तो। नहीं, थोड़ा-सा बाईं ओर हट गया है। यह तुम्हारा ही कमाल है, कैथरिन! ईश्वर की सौगन्ध, क्या हमारे लिए फैशन की नकल करना जरूरी है?"

हमारे घर के बैठक की सजावट से तो मालूम होता था मानो वह कोई सामुद्रिक संग्रहालय हो। समुद्र के चित्र चारों ओर लगे थे और यह सब पीटर का काम था। उन्हें संग्रह का हार्दिक चाव था। जिस चाव से छोटे बच्चे चिड़ियों के अंडे जमा करते हैं, उसी चाव से वह समुद्र के दृश्य-चित्र, घड़ियाँ, टिकट, ढकने, चीनी और शीशे के बर्तन तथा खेल के सामान जमा करते रहते थे।

खेल के तो वह माहिर थे ही; जिस प्रकार उनकी आँखों का रंग उनकी शारीरिक विशेषता से सम्बन्धित था, उसी प्रकार प्रतियोगितात्मक खेलों में दिलचस्पी उनकी प्रकृति का अंग थी। बेसबाल से क्रिकेट की बोलिंग तक, बच्चों के टिडलीविंक्स से वयस्कों की शतरंज तक, ताश में रमी से कन्ट्रैक्ट ब्रिज तक, सब खेलों के वह माहिर थे। किसी

भी खेल में व्यस्त होते थे तो तन्मयता के साथ। उनका कहना था कि यदि कोई खेल खेलने योग्य है, तो वह जीतने योग्य भी है, और आम तौर से वह जीत भी जाते थे। हमारे विवाह के आधा घण्टा पहले ही मेरी छोटी बहन से चीनी चेकर्स खेलते-खेलते अपनी जीत के लिए इतने तन्मय हो गये थे कि विवाह के लिए उनका कपड़े पहनना टलता रहा। मेरे परिवार ने उन्हें एक उपाधि प्रदान की थी—जी० जी० पी० (ग्रेट गेम प्लेयर) अर्थात् खेल के खास खिलाड़ी। उन लोगों का विचार था कि पीटर के पत्रों में उनके नाम के आगे डी० डी० के बाद जी० जी० पी० की नई उपाधि बहुत शोभा देगी।

कुछ लोग कदाचित् आश्चर्य करें कि एक व्यस्त पादरी को खेल के लिए इतना समय किस प्रकार मिलना सम्भव था। बात यह है कि पीटर यह समय अपनी नींद से चुराते थे। जबसे उन्होंने नल के कारखाने में काम करना शुरू किया था, तब से वह रात में जागने के आदी हो गये थे, क्योंकि अकसर उन्हें रात की पाली में काम करना पड़ता था। आधी रात के निकट तो वह गम्भीर मानसिक श्रम के लिए तैयार होते थे और तभी उन्हें अपने प्रवचनों के लिए प्रेरणामय विचार मिलते थे। खेल में जब सब थककर सोने के लिए जम्हाई लेने लगते थे तब भी पीटर नई बाजी जारी रखने के लिए तैयार दिखते। जब वह किसी को आगे खेलने के लिए तैयार न पाते, तभी वह हारकर कहते, "अच्छा, तो मालूम होता है कि मैं भी खेल समाप्त करके सोने जाऊँ।" मानो उनकी समझ में नींद से बढ़कर कोई भयानक वस्तु न थी!

• • •

अपने किसी प्रवचन में पीटर ने विवाह की व्याख्या इस प्रकार की कि "इस संस्कार से दो हृदय और दो जीवन मिलकर एक हो जाते हैं।" दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भिक दिनों में हमें वास्तविक एकता प्राप्त करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। निस्सन्देह,

पीटर मुझसे प्रेम करते थे। परन्तु वह आदि से अन्त तक प्रभु-सेवक थे और हजारों लोगों की सेवा के लिए सदैव प्रस्तुत रहते थे। उनकी पत्नी होने के नाते इस स्थिति को स्वीकार करना मेरे लिए अनिवार्य ही था।

गिर्जाघर के दफ्तर में प्रतिदिन काम करने की आदत उन्होंने अपने अविवाहित जीवन-काल में डाल ली थी। वह सप्ताह में सातों दिन दफ्तर करते थे और बहुत-सी रातों को उन्हें सभाओं में काम करना या प्रवचन देना होता था। वह कभी-कभी एक सप्ताह के लिए नगर के बाहर प्रार्थना-सभाओं के लिए चले जाते थे। नगर के बाहर काम ले लेने पर मेरी समझ से गिर्जाघर का हर्ज होता था, घरेलू जीवन में व्यतिक्रम पड़ता था और उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता था। मेरा कहना था कि बाहर के निमन्त्रण उनका समय एक प्रकार से छीनते ही थे, परन्तु पीटर मुझसे सहमत न होते। वह कहते थे कि कितने ही निमन्त्रण वह अस्वीकार करते रहते हैं, जबकि मेरा ध्यान उन निमन्त्रणों पर ही रहता जो उन्हें स्वीकार करने पड़ते थे।

पीटर का खयाल था कि बाहरी निमन्त्रणों के प्रति मेरा विरोध उनके कर्तव्य के प्रति मेरी ईर्ष्या का प्रतीक था और वह कहा करते थे कि समझ आने पर मेरा विरोध समाप्त हो जायेगा। यह सही है कि ईर्ष्या व्यक्ति की ही नहीं, संस्था की भी हो सकती है; और मैं इस दुर्गुण से मुक्त न थी। इस दुर्गुण से मुक्त होने के लिए वर्षों का अनुभव और चिन्तन आवश्यक था, जिसे प्राप्त करने पर ही मैं पीटर का दृष्टिकोण समझ सकी। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भिक-काल में मैं उस आंतरिक प्रेरणा की शक्ति का अनुमान भी नहीं कर सकी जो पीटर को प्रवचनों के लिए निरन्तर विवश किया करती थी, जिसके सामने वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी भूल जाते थे।

पीटर की धार्मिकता में इतना प्रत्यक्ष और पूर्ण सत्य था कि उसमें दिखावे, ढोंग या कपट का कोई स्थान न था। इसीलिए वह ईश्वर के

अस्तित्व, स्रोत और साहाय्य की बात सरल और स्मरणीय शब्दों में व्यक्त कर पाते थे।

एक रात मैं पूछ बैठी, "अगला इनकम-टैक्स देने के लिए रकम कहाँ से आयेगी ?"

पीटर ने उत्तर दिया, "ईश्वर ही जाने, मुझे अभी तक उसका कोई आदेश नहीं मिला है।"

वह मसखरे न थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि ईश्वर को उनके इनकम-टैक्स की अदायगी की फिक्र थी और वह इस सम्बन्ध में अवश्य हमारी सहायता करेगा।

कभी-कभी इस सहज विश्वास के कारण हास्यजनक स्थितियाँ भी सामने आ जाती थीं। पीटर को पेरू-पक्षी का मांस बहुत प्रिय था। परन्तु उन्हें मांस का कीमा बहुत नापसंद था। एक रात खाने से उन्होंने बर्तन का ढक्कन उठाया तो देखा कि उसमें पेरू-मांस का कीमा भरा है। उनके मुख पर अरुचि की रेखा दौड़ गई।

बोले, "कैथरिन, तुम्हें आज भगवान् से मुझ पर दया की भिक्षा माँगनी होगी। ईश्वर साक्षी है, पेरू के कीमे के लिए कृतज्ञ नहीं हो पाता और मैं उसे व्यर्थ भी नहीं करना चाहता।"

हम दोनों को पता लग गया कि जब तक हम दोनों एक साथ प्रार्थना करते रहेंगे तब तक हमारे मतभेद गम्भीर न हो सकेंगे, उनमें कोई कटुता न आ पायेगी। हम दोनों ने यह पाठ इतनी भली भाँति याद कर लिया था कि पीटर उन दम्पतियों को भी यही परामर्श दिया करते थे जिनके पारस्परिक सम्बन्ध विच्छेद के निकट पहुँचने लगते थे। अपने दाम्पत्य जीवन में हमें इस सत्य का पता लगा कि मतभेद का वह महत्व नहीं जितना महत्व इस दृढ़ निश्चय का है कि मतभेद को सुलझाना है। विवाह स्वर्ग में तय होते हैं—ऐसा कहा जाता है। वास्तव में कुछ ही विवाह इस प्रकार के होते हैं, परन्तु सभी दाम्पत्य जीवनों को मृत्युलोक की यात्रा पार करनी पड़ती है और मृत्युलोक में भी स्वर्ग

का आगमन होता है यदि हम उसके लिए आवश्यक कर्म करें। यह सत्य सभी दम्पतियों के लिए है, वे पादरी और उसकी पत्नी ही क्यों न हों।

• • •

जब कोई धर्मोपदेशक निर्भय होकर अपने विश्वास के आधार पर उपदेश देता रहता है, तो कुछ लोग उसके वैरी भी हो जाते हैं, यही बात पीटर के साथ भी हुई। लोग अपने पापों की चर्चा पसन्द नहीं करते। अकसर उनकी आलोचना व्यक्तिगत होकर कष्टदायक हो जाती; जैसे एक बार उन्हें फायर ब्रिगेड के एक अधिकारी की निन्दा करनी पड़ी, जो शराब के नशे में आग बुझाने का संचालन कर रहा था। एक बार गंदी बस्तियों पर उन्हें कुछ कहना पड़ा, "इन गंदी बस्तियों से किराये की कमाई पानेवालों में बहुत-से गिर्जाघर के सदस्य हैं; इस बात से गिर्जाघर की प्रतिष्ठा पर आघात ही होता है। गिर्जाघर को—अर्थात् हम सबको—इस सम्बन्ध में क्या करना है?"

वाशिंगटन में नियुक्ति के दूसरे वर्ष गिर्जाघर में इतनी चिंताजनक स्थितियाँ पैदा हुईं कि पेट की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए पीटर लगातार सोडा के लिए हाथ बढ़ाते रहते। उनके चिकित्सक को उनके पेट में घाव का संदेह होने लगा। परन्तु पेट की पीड़ा उनकी मानसिक चिंता का परिणाममात्र थी। गिर्जाघर के कुछ सदस्य सुधार का विरोध करने पर तुले हुए थे और पीटर की धारणा थी कि यदि गिर्जाघर के पुराने सदस्य अपना दृष्टिकोण नहीं बदलते तो उनका पतन निश्चित है। नई पीढ़ी के लोग अब अधिक संख्या में सम्मिलित होने लगे थे, जिस कारण पुरानों और नयों के बीच संघर्ष होने लगा था। गिर्जाघर के कुछ सदस्य अपने नये पादरी की सनक को समझ नहीं पाते थे। जब वाशिंगटन का तापमान नब्बे डिग्री के ऊपर जाने लगता था तो पीटर कभी-कभी कमीज पहने ही दिखाई देते थे। कुछ लोग इस पर भी बुरा मानते थे।

पीटर इन छोटी-छोटी आलोचनाओं से परेशान थे, और वह अपना पद असफल मानते थे। जब तक उन्हें गिर्जाघर के अन्दर फूट दिखाई देती रही, वह अकसर पूछते थे, "उपदेश से क्या लाभ ? यदि गिर्जाघर के सदस्य एक-दूसरे से प्रेम न करें तो पारस्परिक सहयोग से भी वंचित रहें ?" प्रति तिमाही प्रायः एक बार मुझे सचेत करते कि वह इस्तीफा देने की बात सोच रहे हैं। मैं पत्नी की भाँति उन्हें उत्तर देती कि अपनी कायरता पर उन्हें लज्जित होना चाहिए, तो वह आह भरकर यह बुदबुदाते चले जाते, "हे ईश्वर, शान्ति कब हमें दर्शन देगी ?"

उनकी प्रार्थना होती, "हे ईश्वर ! जहाँ कहीं हम गलती पर हों, वहीं हमें अपने सुधार के लिए प्रस्तुत करो, और यदि हम सही मार्ग पर हों तो इसी मार्ग पर चलना हमारे लिए सरल कर दो।"

स्पष्ट प्रार्थना, धैर्यशील परिश्रम, स्नेह और समय के अजेय समन्वय से पीटर का संघर्ष अन्ततः उनके पक्ष में समाप्त हुआ। न्यूयार्क एवेन्यू और पीटर के मध्य जो चिन्ताजनक भेद उत्पन्न हो गये थे, उनमें से अधिकांश जब समाप्त हो गये तो उनके पेट की पीड़ा भी दूर हो गई और उन्हें सोडा की जरूरत नहीं पड़ने लगी। एक ऐसा समय भी आया जब वाशिंगटन के गाड़ीवाले भी तिराहे पर बने पुराने गिर्जाघर को 'पीटर मार्शल का गिर्जाघर' कहने लगे।

परन्तु पीटर इस चिन्ता-काल को कभी भूले नहीं। वर्षों पश्चात् संयुक्त राज्य अमरीका की सीनेट में उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की, "हे भगवन् ! आज के कर्तव्य की सर्वोत्कृष्ट पूर्ति की शक्ति हमें दो। हम आज की ही चिन्ताओं को गनीमत मानें, और भविष्य की चिन्ताओं को आज ही से न लाद लें। हमें चिन्ता के पाप से मुक्त करो, नहीं तो पेट के घाव हमारे अविश्वास के प्रतीक बनकर प्रकट होंगे।" उनकी प्रार्थना अनुभव-जन्य थी।

● ● ●

१६४० के हिममय जनवरी मास में एक दिन प्रातःकाल हमारे प्रथम पुत्र पीटर जान मार्शल ने जन्म लिया। पिता अपने बच्चे को दुलार में 'वी' पीटर कहा करते थे। तत्पश्चात् पीटर के बहुत-से प्रवचनों में इस शिशु का जिक्र होने लगा, क्योंकि दृष्टान्त के लिए शिशु उन्हें अनायास प्राप्त हो जाते थे। संध्याकालीन प्रवचन प्रातःकालीन प्रवचनों से अधिक सरल और घरेलू हुआ करते थे। ऐसे ही एक संध्याकालीन प्रवचन में पीटर केप काड में बने बेर के मुरब्बों के रंग का वर्णन करने का प्रयत्न कर रहे थे कि उन्हें अकस्मात् एक उपमा सूझी। व्याख्या करने लगे, "मुरब्बे का सुन्दर झरबेरी-जैसा रंग होता है, या मानो पिटने पर शिशु के गाल का रंग—" अविवाहित पीटर को यह उपमा कैसे सूझती।

पीटर अपने पुत्र को बहुत प्यार करते थे, साथ ही उस पर अनुशासन करना भी उन्हें आता था। वह ऐसे लोगों में नहीं थे जो अपने शिशुओं को नहलाया-धुलाया करें। ये काम उन्होंने मेरे क्षेत्र के समक्ष रखे थे। परन्तु आगे चलकर जब कभी पीटर जान कोई शरारत करता और दण्ड देना आवश्यक होता, तो पिता ही दण्ड देने का काम करते। तो भी दण्ड में क्रोध का कोई अंश न रहता। एक बार उन्होंने अपने बेटे से कहा, "पीटर, तुम बेहद शैतान हो।" उसका हाथ पकड़कर कमरे के भीतर ले गये और द्वार बन्द कर लिये। थोड़ी-सी खामोशी रही, जिसके पश्चात् बच्चे के चूतड़ पर जोरदार थप्पड़ के साथ जोर से रोने की आवाज सुनाई दी। द्वार खुला और बाप-बेटे एक-दूसरे का हाथ पकड़े दिखाई दिये।

ऐसे अवसरों के होते हुए भी हमारे मैन्स-भवन में भोजन के समय का वार्तालाप कोई सुनता तो वह हमारे पुत्र को अपने पिता से भयभीत होते न पाता। पीटर चाहते थे कि भोजन के समय सब प्रसन्न-चित्त रहें, पारिवारिक बैठक में मनोरंजन की व्यापकता रहे। इस मनोरंजन में उनका बहुत योग रहता था। ऐसा अकसर होता कि भोजन करते-

करते वह रूमाल रखकर उठ खड़े होते और पियानो तक पहुँचकर कोई स्कॉच-गीत या अमरीकी फुटबाल गीत गाने लगते। अपने लड़के से निरर्थक वार्तालाप करना भी उनका एक प्रिय व्यसन था।

यह वार्तालाप प्रायः इस प्रकार होता : "पीटर, मैं अपने दफ्तर की बात कर चुका। अब अपनी सुनाओ। क्या रेडियेटर अपनी जगह लग गया, तब तो बल्लाबागों को फन्नीनाओं के साथ गरम होकर हाथी को काट खाना चाहिए।"

बच्चे के मुहासों से भरे मुख पर हँसी फूट पड़ती और वह अपना काँटा मेज पर रखकर भाव बताकर अण्ड-बण्ड बातें उड़ाने लगता, "नहीं डैडी, बडगम के नीचे कम्बल दौड़ने लगा, और शेखजी मोटे आदमी के पेट में घुस गये।" ऐसी ही बातों में हम सब खूब प्रफुल्लित होते।

हमारे सम्मिलन के सुखी अवसरों में एक ही बाधा रहती। ऐसे अवसर हमें बहुत कम मिलते। मैं बहुधा चिन्तित हो जाती और पीटर भी आत्म-ग्लानि का अनुभव करते कि वह अपने पुत्र के साथ मनोरंजन का यथेष्ट समय क्यों नहीं निकाल पाते। जेटिस्बर्ग थियालाजिकल सेमिनरी के भावी पादरियों को व्याख्यान देते हुए पीटर ने एक बार इस समस्या का जिक्र किया :

"अपने गिर्जाघर तथा उसके सदस्यों की सेवा को जोश के साथ अपना समय देकर भी अपने परिवार की ओर से लापरवाह न हो जाओ। उन्हें भी तुम्हारी सेवा की आवश्यकता है। मैं वह आलोचना नहीं भूलने का जो एक बार रात को हमें अपने बच्चे की प्रार्थना द्वारा प्राप्त हुई। उसने प्रार्थना की : "हे ईश्वर! आपको हार्दिक धन्यवाद जो आपने मेरे पिता को यह संध्या अपने घर ही पर बिताने की अनुमति दे दी।"

● ● ●

पीटर को प्रार्थना के प्रभाव में अटल विश्वास था। उनकी धारणा थी कि कभी-कभी ऐसे योग आते हैं जब हमें अपनी समस्याएँ ईश्वर को अर्पित कर देनी चाहिए और फिर सन्देह और चिन्ता से मुक्त होकर हमें उन समस्याओं के सम्बन्ध में निष्क्रिय हो जाना चाहिए। बात दृष्टान्त से समझने के लिए उन्होंने अपने प्रवचन में एक परिवार की कहानी सुनाई जिसे महासमर काल में एक वैतनिक सहायिका की भारी आवश्यकता प्रतीत हुई। उपस्थित श्रोताओं में बहुत-से तुरन्त ही समझ गये कि पादरी अपने परिवार की ही बात कर रहे हैं।

मार्च १९४३ में मुझे पलंग पर लेटे रहने का आदेश हुआ। डाक्टरों को सन्देह था कि मुझे यक्ष्मा हो गया है। परन्तु खाँसी न थी, इस कारण मुझे घर पर ही रहने दिया गया। अट्ठारह महीने तक मुझे बराबर पलंग पर ही लेटे रहना पड़ा। सितम्बर १९४४ तक पिछले *पन्द्रह महीनों के भीतर चौदह नौकरानियाँ आईं और गईं।* *सभी अधिक* वेतन पर सरकारी नौकरियों में लग गई थीं। इस प्रकार गृहस्थी के अस्त-व्यस्त होने के कारण हमारे चार वर्ष के पुत्र पर अरक्षित जीवन के लक्षण प्रकट होने लगे। मैं चंगी नहीं हो पा रही थी, और पीटर के काम का भी हर्ज होता रहता था।

हमने नौकरानियों के लिए सभी मान्य ढंगे अपनाये। विज्ञापन छप-वाये, काम दिलानेवाली संस्थाओं को लिखा, मित्रों से सिफारिशें उठ-वाईं। परन्तु सब प्रयत्न विफल रहे। अन्ततः ऐसा दिखाई देने लगा कि कुछ समय के लिए परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से अलग होना होगा। मैं किसी विश्राम-गृह चली जाती, पीटर जॉन मेरे माता-पिता के पास रहने चला जाता और पीटर होटल की शरण लेते।

इस विकट परिस्थिति में हमने अपनी समस्या भगवान् के हवाले कर दी। हमने उससे कहा कि यदि वह यह चाहता है कि जब तक मैं चंगी न हो जाऊँ—और मेरे चंगे होने की अवधि का किसी को पता न था—तब तक के लिए हम अपनी गृहस्थी तितर-बितर कर दें, तो हमें

उसकी आज्ञा शिरोधार्य है। फिर अपने मन की बात इस प्रकार जोड़ी, "परन्तु यदि तू चाहता है कि हम सब एक साथ रहें, तो हम आशा करते हैं कि तू किसी को हमारे परिवार की देखभाल के लिए भेज देगा। समस्या अब तेरी है, हम निष्क्रिय रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।" मुझे यह सोचकर, अब भी, आश्चर्य होता है कि हमने ऐसी प्रार्थना का साहस तो किया ही, हम अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे, क्योंकि फिर हमने नौकरानी ढूँढने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया।

हमें जो उत्तर मिला उससे यह प्रत्यक्ष हो गया कि व्यावहारिक बातों में भी भगवान् की सच्ची सहायता मानव को प्राप्त होती है। वह दया करने में संकोच नहीं करता। देता नहीं, उँडेलता है।

केप काड में हमने ग्रीष्म में रहने के लिए एक कुटी बना ली थी। वहीं हम अपनी छुट्टी के दिन बिता रहे थे। हमें ६ सितम्बर को बुधवार के दिन वाशिंगटन पहुँचना था। हमने निश्चय कर लिया कि हमें उस तिथि तक कोई सहायिका मिल जानी चाहिए।

कैपिटल हिल पर पत्रकारिता में लगी अल्मा डीन फुलर नामक एक लड़की, हमारे गिर्जाघर की प्रार्थना-सभाओं में आया करती थी प्रत्येक गिर्जाघर में लड़कियों का एक दल नियुक्त रहता है जो समूह-गान करती हैं। पहली सितम्बर को इस लड़की ने हमारे गिर्जाघर के संगीत-दल में सम्मिलित होने का निश्चय किया। वर्षों से यह लड़की भगवद्-दर्शन की खोज में थी। उसने आकर कहा, "मुझे पता था कि कुछ लोगों को धर्म का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है और वे असीम आनन्द का अनुभव करते हैं। परन्तु मुझे यह ज्ञान मिला नहीं। मैं खोज में रही, परन्तु यह ज्ञान मेरी पकड़ में नहीं आ सका।"

कैपिटल हिल में जिस काम पर वह लगी थी उससे उसे शान्ति और सन्तोष प्राप्त न था। उसे यह काम अपनी प्रवृत्ति के प्रतिकूल लगता था। उसका कहना था, "मुझे ऐसा लगता था कि मेरी प्रवृत्ति किसी दूसरी ओर है। परन्तु मुझे इसका पता न था; ऐसा लगता था

कि मुझे घर के बाहर होने का आभास तो था, परन्तु अपने घर का पता न था।"

अलमा डीन संगीत के लिए अपनी परीक्षा कराने गई तो हमारे संगीत-संचालक उपस्थित लड़कियों के सामने हमारी समस्या ले आये। उन्होंने पूछा, "तुम लोगों में किसी को ऐसी लड़की की जानकारी है जो आगामी शरद् में किसी मुनासिब काम पर लगने के लिए तैयार हो?"

उसी क्षण भगवान् ने हमारी प्रार्थना के साथ कुमारी फुलर की भी सुन ली। लड़की ने आगे बताया, "अकस्मात् मुझे ऐसा लगा मानो श्री बीशलर (संगीत-संचालक) मुझसे ही पूछ रहे हैं, किसी और से नहीं। मार्शल-दम्पति से मेरा कोई पूर्व-परिचय न था। मुझे यह भी पता न था कि श्रीमती मार्शल बीमार हैं। परन्तु बीशलर साहब ने जो कुछ कहा वह निम्रान की रोशनी में लिखे अक्षरों की भाँति मेरे हृदय-पटल पर अंकित हो गया। बार-बार मेरी अन्तरात्मा मुझसे कह रही थी कि यह काम मन्जूर करने के लिए क्यों न तुम्हीं तैयार हो जाओ।"

अलमा डीन पहले तो इस आदेश से आकर्षित नहीं हुई। उसे घर का काम करना पसन्द न था। खाना पकाना वह जानती न थी। उसका विचारक्रम इस प्रकार चला, "मैं मार्शल-दम्पति के किस काम की हो सकूँगी? नौकरानी के वेतन पर मेरी गुजर कैसे होगी? कैपिटल हिल में जिस काम पर मैं नियुक्त हूँ उस पर मेरे स्वजनों को गर्व है। उसे छोड़कर कम वेतन पर अनुपयुक्त काम करने के निश्चय की सफाई मैं उनके सामने कैसे दूँगी?" इन प्रश्नों के उसके सामने रहने पर भी भगवान् का आदेश उसके हृदय से हटा नहीं। वह उसे आगे की ओर ठेलता ही रहा।

बुधवार तक भगवान् के उत्तर की हमें प्रतीक्षा करनी थी। उसी दिन कुमारी फुलर मुझसे मिलने आई। उसकी गहरी भूरी आँखों में सौन्दर्य अवश्य था, परन्तु उनमें अशान्ति, असंतोष और भय की झलक

भी थी। वह मुझे अपनी स्थिति से असंतुष्ट लगी, परन्तु उसकी बात में संकोच न था। संगीत-परीक्षा की घटना उसने शान्तिपूर्वक मुझे बता दी।

उसने हठपूर्वक कहा, "मैं इस काम के योग्य नहीं, मैं इसे चाहती भी नहीं। परन्तु आपसे बात करने इसलिए आई हूँ कि आज रात को शान्तिपूर्वक सो सकूँ। साफ-साफ कहूँ श्रीमतीजी, कोई बात ऐसी है जो मुझे समझ में नहीं आती। इतना ही कह सकती हूँ कि मैं यहाँ हूँ, परन्तु इतना भी नहीं जानती कि यहाँ आई क्यों?"

इतना सुनते ही मैं भी उसकी भाँति उत्तेजित हो गई। मैंने कहा, "इस पहेली की खोई कड़ियाँ मुझसे लो।" यों मैंने उसे अपनी समस्या, उसके विषय में भगवान् से अपनी प्रार्थना और उस दिन तक दैवी निर्णय की प्रतीक्षा की बात बताई।

पलंग के पास बैठी लड़की बहुत चकित दिखाई दी। उसकी समझ में न आया था कि जो शक्ति उसे ठेलकर मेरे पास तक ले आई थी वह भगवान् की प्रेरणा ही थी। दोनों के लिए स्थिति के क्रान्तिकारी लक्षण थे। अतएव हमने तय किया कि प्रकाश के लिए हम दोनों दो सप्ताह तक भगवान् से प्रार्थना करते रहें। लड़की ने मुझे अपना संक्षिप्त नाम एडी बताया।

यों एडी अर्द्धचेतन अवस्था में मुझसे विदा हुई।

दो सप्ताह के पश्चात् उसे प्रत्यक्ष उत्तर मिल गया। एडी जहाँ नौकरी करती थी वहाँ उसके मालिक ने चेतावनी दी कि जिस काम पर वह लगी है उसे छोड़ना उसके लिए आत्महत्या के बराबर होगा। अपना काम छोड़कर घर की नौकरानी बनना उसकी भी समझ के प्रतिकूल था। तो भी इस परिवर्तन को उसने भगवान् का आदेश मान लिया। छः वर्ष से वह ईश्वरीय अनुकम्पा की प्रार्थना कर रही थी। जब उसे ईश्वर का आदेश मिला, तो इन्कार करना अब उसके लिए असम्भव था।

जिस साहस से उतरती छतरी का चालक धरती पर पहली बार कूदता है, प्रायः उसी साहस से वह अपनी नौकरी छोड़कर मेरे घर में आ गई। उसे एक अलग कमरा दिया गया था। उसमें अपना सब सामान रखते ही अकस्मात् उसे प्रमाण मिल गया कि उसका निर्णय सही ही है।

एडी ने कुछ दिनों बाद मुझसे कहा, "अपने जीवन में पहली बार मुझे अकस्मात् पता लगा कि उचित समय पर उचित स्थान पर पहुँचने का क्या प्रभाव होता है। यह कुछ ऐसा ही था जैसे कोई किसी जादू के चक्कर से मुक्त होकर पृथ्वी पर उतरे तो धीरे-धीरे क्षितिज और उससे सम्बन्धित सभी दृश्य उसे अपनी-अपनी जगह पर सही दिखाई देने लगें। मेरी अशान्ति और उलझन बिलकुल समाप्त हो गई। अब मैं जान पाई हूँ कि हमें ईश्वर से जो-कुछ आदेश मिलते हैं उनके पालन से सांसारिक जीवन की सभी बातें हमें अपनी-अपनी जगह पर सही रूप में मिल जाती हैं। उस रात से मेरे जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है।"

एडी ने सोचा था कि कदाचित् वह कुछ ही महीनों तक हमारे पास रहे, परन्तु वह चार वर्ष तक हमारे साथ रही।

उसने मेरे घर की देखभाल ही नहीं की, वह मेरी प्यारी सखी भी हो गई। उसके ही स्थायी और सस्नेह सत्संग के कारण मेरा अकेलापन कटा और मैं शीघ्र चंगी भी हो गई। जो सौन्दर्य और चरित्र उसके भीतर सुपुप्त था, वह हमारी आँखों के सामने जागृत होकर प्रत्यक्ष हो गया। वह बहुत प्रसन्नचित्त और समझदार हो गई और नेतृत्व के अपूर्व गुण भी उसमें विकसित होने लगे।

हमें अपनी प्रार्थना का फल कल्पना से कहीं अधिक सुन्दर मिला। पीटर, एडी और मैं एक-दूसरे के पूरक हो गये; और एक-दूसरे की आवश्यक सहायता करने लगे। जब पीटर राष्ट्रीय राज्य-सभा के पादरी हुए तो एडी ने कैपिटल हिल के काम में जो अनुभव प्राप्त किया

था वह उनके बहुत काम आया। हम तीनों के बीच स्नेह की जो कड़ियाँ बनीं, उन्हें अनन्तकाल तक स्थायी रहना है।

पद-परिवर्तन से एडी को कोई सामाजिक या आर्थिक हानि भी नहीं पहुँची। कोई प्रयत्न न करने पर भी सन् १९४८ में नेशनल रेड-क्रास के दफ्तर में उसे एक अच्छी जगह मिल गई और पुराने काम में उसका जितना वेतन था, उसके दूने से अधिक उसे मिलने लगा।

एडी को हमारे पास भेजने की कृतज्ञता भगवान् के प्रति हम दोनों स्वीकार करते रहे। पीटर का ईश्वरीय अनुकम्पा पर जो अटल विश्वास रहा था, वह इस सुन्दर घटना से पुष्ट ही हुआ।

• • •

कैथेड्रल एवेन्यू नामक सड़क के दोनों ओर एक छोर से दूसरे छोर तक फारसिथिया की झाड़ियों में फूल खिले हुए थे। ३१ मार्च, १९४९ के रविवार का प्रातःकाल बहुत सुन्दर लग रहा था। धूप खिली हुई थी। और कोई पता न था कि यह रविवार किसी दूसरे से भिन्न होगा। ९ बजे की प्रार्थना के लिए आठ बजकर बीस मिनट पर पीटर नियमानुसार रवाना हो चुके थे।

दस बजे फोन की घण्टी बजी। पीटर के सचिव ने मुझे सूचना दी कि उन्हें अपना प्रवचन रोक देना पड़ा। अकस्मात् उन्होंने अपना हृदय पकड़ लिया और मंच से झुककर पुकारा, "गिर्जाघर में कोई डाक्टर है? हो तो तुरन्त मेरी सहायता करो।" शीघ्र ही वह सड़क पार जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के अस्पताल पहुँचा दिये गए।

दो दिनों से पीटर अपनी बाहों में पीड़ा की शिकायत कर रहे थे। हम समझे थे कि यह पीड़ा केवल पुट्ठों की होगी। अब बारम्बार एक ही भयावह विचार हृदय में आने लगा। किसी को कहने का साहस न था; परन्तु सभी सुहृदों को प्रत्यक्ष हो गया होगा कि उन पर हृद-रोग का पहला आक्रमण हुआ है।

अगले दिन तीसरे पहर जाकर उनकी दशा की गम्भीरता प्रत्यक्ष हो पाई। हृदय को रक्त ले जाने वाली एक रग बिलकुल रुक गई थी। पीटर को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। उनका तापमान बढ़ रहा था और रक्तचाप घट रहा था। रोग का आक्रमण जारी था।

मैंने डाक्टर से पूछा, "मुझे सही बात मालूम हो जाये—पीटर के बचने की कितनी आशा है?"

डाक्टर ने उत्तर दिया, "बहन जी, आक्रमण बहुत उग्र है। अधिक-से-अधिक आशा पचास प्रतिशत तक पहुँचती है। हम बचाने का यथा-शक्ति प्रयत्न कर रहे हैं।"

उस दिन प्रत्यक्ष रूप में हजारों बार अपनी आँखें भली प्रकार बन्द करके मैंने याचना की, "हे ईश्वर, इन्हें बचाओ!" परन्तु मैं जानती थी कि मेरी याचना हार्दिक प्रार्थना न हो सकी। भय, असीम भय और दुश्चिन्ता ने मेरे हृदय-कपाट बन्द कर दिये थे। मैं ऐसी ही कल्पना करती रही कि यदि पीटर मर जायेंगे तो फिर उनके बिना मैं कैसे जिऊँगी।

उस रात मैं पलंग पर काष्ठवत् पड़ी रही। प्रत्येक स्नायु उत्तेजित रहा, और नींद तो आई ही नहीं। जब तक मैं प्रार्थना करती, तब तक कुछ शान्त रहती; परन्तु ज्यों ही मेरी प्रार्थना रुकती कि भय का शीत मुझ पर छा जाता और मैं अस्पताल से फोन की घण्टी की प्रतीक्षा करने लगती।

किसी प्रकार प्रातःकाल आया, परन्तु नाश्ता करने बैठी तो गले के नीचे कुछ उतरा ही नहीं। जब और सब खा रहे थे तब मैं ईसा मसीह के उस वचन की याद कर रही थी जिसमें उन्होंने शान्ति की प्रतिज्ञा की थी, वैसी नहीं जैसी कि दुनियावी लोग आम तौर से समझा करते हैं। मैंने प्रभु से कहा कि मेरे हृदय में जो तूफान उमड़ रहा है, वह मेरे अधिकार से बाहर है। मैंने प्रार्थना की कि वरदान के रूप में वह मुझे भय के मध्य ही वह शान्ति दें जिसकी उन्होंने प्रतिज्ञा की थी। यों ही

मुझे यह संकेत मिल जायेगा कि रोग के बुरे लक्षण होने पर भी वह पीटर को चंगा कर देंगे।

पन्द्रह मिनट के भीतर मेरी प्रार्थना की स्वीकृति हुई। दुश्चिन्ता और भय से मैं मुक्त हुई। विश्वास और शान्ति—वह शान्ति जो साधारण समझ के बाहर है—मुझमें व्याप्त होने लगी। पेट की ऐंठन समाप्त हुई। दीवालों पर लगे चित्र दिखाई देने लगे; अन्य व्यक्ति भी अपनी-अपनी जगह पर दिखने लगे। मेरे साथ बहुतों ने भगवान् से प्रार्थना की होगी। अब मेरी समझ में आया कि भगवान् ने इन प्रार्थनाओं को मंजूर कर लिया है और पीटर चंगे हो जायेंगे।

अगले घण्टे में ही किसी समय पतिदेव की पीड़ा और साँस लेने की तकलीफ समाप्त हुई। इसका पता मुझे कुछ समय बाद लगा। उस रात उन्हें पहली बार अच्छी नींद भी आई। बुधवार को उनका रक्त-चाप एक बार फिर कुछ ऊपर चढ़ा। बृहस्पतिवार की रात को उनका तापमान प्राकृतिक स्तर पर पहुँच गया।

भली प्रकार स्वस्थ होने में पीटर को बहुत समय लगा, परन्तु हम जान गये थे कि वह चंगे हो जायेंगे। ईश्वर ने उन्हें एक विशेष उद्देश्य से बचाया था। सत्य तो यह है कि पीटर के जीवन का सबसे अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण भाग इस घटना के आगे ही आया।

● ● ●

रिपब्लिकन दल के बहुमत से १९४७ में और डेमोक्रेट दल की सर्व-सम्मति से दिसम्बर १९४८ में पीटर संयुक्त राज्य की राष्ट्रीय राज्य-सभा के पादरी नियुक्त हुए। जब से उन्होंने संयुक्त राज्य में अपने पग रखे थे, तब से ईश्वर ने उन्हें नई-नई जगहों पर अपने संदेश का उपदेश देने के लिए भेजा था। पीटर को ऐसा लगा कि राज्य-सभा का भवन उनके लिए सबसे अधिक अपरिचित है। तो भी राष्ट्र के सर्वोपरि विधान-मंडल में सवशक्तिमान ईश्वर के दैवी विवेक की पहुँच बहुत

जरूरी थी। पीटर ने कभी इस पद के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया था और पहले तो वह इस पद को स्वीकार करने से भी हिचकिचाये। सेवा के प्रारम्भिक दिनों में उन्हें शीघ्र विश्वास न होता था कि राज्य-सभा के सदस्य उनकी प्रारम्भिक प्रार्थना को आवश्यक संकेत से अधिक क्या महत्व देंगे। उनका कहना था, "राज्य-सभा भवन का वातावरण प्रार्थना के प्रतिकूल ही रहता है। कागज इधर-उधर उलटे जा रहे हैं, खाँसी का सिलसिला चल रहा है, और यह भावना व्याप्त है कि प्रार्थना से निपट लें जिससे महत्व की बातों पर गौर करने का समय मिले। इस भवन में तो प्रार्थना करना ऐसा ही है जैसे बेसबाल टूर्नामेंट के पहले दिन ग्रिफिथ स्टेडियम में कोई खड़ा होकर प्रार्थना करने का प्रयत्न करे।"

कुछ अनुभव के पश्चात् उन्होंने एक बार कहा, "मुझे पता लगा है कि मेरी प्रार्थना जितनी लम्बी होती है, उतनी ही कम पसन्द की जाती है।"

कालांतर में जब श्रोतागण उनके गुणों से परिचित हो गये तो स्थिति में भी परिवर्तन हुआ। वाशिंगटन के प्रसिद्ध पत्रकार ट्रिस काफिन ने एक बार उनके विषय में लिखा, "वह सीनेट के अंतःकरण के रक्षक हो गये हैं। उनके भाषण में माधुर्य और शील है, परन्तु उनके शब्द आडम्बर और बकवास को काटते चले जाते हैं।" उन सदस्यों की संख्या बढ़ने लगी जो अपने दफ्तर और समिति-कक्ष कुछ पहले से छोड़ देते थे, जिससे उन्हें प्रारम्भिक प्रार्थना सुनने को मिल जाये। दोनों दलों के सदस्यों से उन्हें आदर और हार्दिक स्नेह का दान मिलता रहा। एक बार सीनेट के सदस्य आर्थर वैंडेनबर्ग ने कहा, "पीटर से परिचित होते ही हम उनसे स्नेह करने लगते हैं। मेरे पादरी मेरे घनिष्ठ और अमूल्य मित्र हैं।"

पहले पीटर को इस बात से परेशानी हुई कि प्रार्थना होने के पहले ही पत्रकार उनसे उसकी प्रतिलिपि की माँग करने लगे। उनकी आदत बिना लिखे प्रार्थना करने की थी। पत्रकारों की माँग का परिणाम यह

होता था कि प्रार्थना लिखे बिना वह बोल नहीं सकते थे, परन्तु पीटर ने शान्तिपूर्वक भगवान से उनकी प्रार्थना के संचालन की याचना की। वह चाहते थे कि उनकी प्रार्थना सीधी उनके हृदय से निकले। यह प्रार्थना मंजूर हुई।

तुरन्त ही संयुक्त राज्य अमरीका भर के समाचारपत्रों में उनकी प्रार्थना की संक्षिप्तता, उनकी कटुता और उनकी स्थिति-अनुकूलता की प्रसिद्धि होने लगी। न्यूयार्क के 'टाइम्स' पत्र ने यह टिप्पणी की कि राज्य-सभा के सोलन जैसे बुद्धिमानों की बुद्धि के नेता की आध्यात्मिकता का ढंग विशेष रूप से स्फूर्तिदायक है। इस बात के उदाहरण के लिए कि उनकी प्रार्थनाएँ स्थिति के अनुकूल होती हैं, पत्र ने नीचे लिखा उद्धरण दिया—

"राज्य-सभा के सामने बहुत-से काम थे। इनमें एक प्रस्ताव पर कड़ी बहस भी होनी थी जिसमें पोस्टमास्टरों की नियुक्ति के सम्बन्ध में जाँच की माँग की गई थी। इस वातावरण में मार्शल की प्रार्थना इस प्रकार थी :

'हम पिस्सुओं को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं और ऊँटों की ओर ध्यान भी नहीं देते। हे भगवान्, इस स्थिति में हमें एक नई बुद्धि दो जिससे हम महत्व को श्रेणीबद्ध कर सकें और हमें इस बात की योग्यता दो कि छोटी बात को देखते ही हम उसे पहचान सकें और उपयुक्त ढंग से उसे निपटा भी सकें।' "

'लाइफ' पत्रिका में एक बार यह प्रकाशित हुआ—

"डाक्टर मार्शल को सबसे पहले घमंडियों को ठिकाने लगाने का कष्ट उठाना पड़ा। संयुक्त राज्य अमरीका के राज्य-सभा भवन में एक दिन उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की, 'हे परमात्मा, हम स्वीकार करते हैं कि हमें आपकी आवश्यकता का ज्ञान है, तो भी अपने घमंड और हठधर्मी के कारण हम आपके नेतृत्व के बिना काम चलाने का प्रयत्न करते हैं। हम जो राई को पर्वत बना देते हैं और अपने साथ अपनी

समस्याओं का महत्व भी जिस प्रकार बेतरह बढ़ा देते हैं, उसके लिए हमें क्षमा कीजिये।' "

अपने पादरी से बोलचाल के ऐसे शब्द सुनकर राज्य-सभा के सदस्य अकसर यह कहने लगते कि उनके लिए भगवान् से प्रार्थना के साथ उनकी बुद्धि-सुधार के लिए भी प्रार्थना की जाती है।

वास्तव में यह बात थी नहीं। पीटर समाचारपत्रों के इस मत से बराबर असहमत रहे कि वह सदस्यों से प्रार्थना करते थे जिससे कि वह विधान-निर्माण में उनको प्रभावित कर सकें। उनका कहना था कि उनकी प्रार्थना भगवान् से होती थी सदस्यों से नहीं। पीटर कानून के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे। परन्तु वह यह अवश्य चाहते थे कि सदस्य ईश्वरीय न्याय से प्रभावित हों। सीधा-सादा सत्य तो यह है कि उनकी संक्षिप्त प्रार्थनाएँ बहुधा अर्थपूर्ण दिखाई देती थीं, क्योंकि पीटर के माध्यम से ही ईश्वर तक उनकी प्रार्थना पहुँचती थी। 'कांग्रेसनल रिकार्ड' के पृष्ठों में हमें उनकी दैव प्रेरित प्रार्थनाओं की अथक जीवन-शक्ति का प्रमाण मिलता है।

● ● ●

काल के प्रभाव से हम दोनों में बहुत-से परिवर्तन हुए। हमारे दाम्पत्य-जीवन में हृदय और मस्तिष्क की एकताएं बढ़ती गईं, यद्यपि कभी निर्जीव संधि भी नहीं रही। एक बात में हम कभी भी एक-दूसरे से पूर्णरूप में सहमत नहीं हो सके और वह थी उपदेश के लिए नगर के बाहर पीटर के यात्राएँ। अब प्रश्न इस नीति की संगति का नहीं रह गया था, क्योंकि हम दोनों जानते थे कि यात्राओं के कारण उनकी जान का खतरा था।

एक बार पीटर ने अपने एक मित्र से निजी तौर पर कहा, "तुम जानते हो कि मेरे सबसे अधिक प्रभावशाली प्रवचन वही हुए हैं जिनको मैंने कैथरिन के साथ तैयार किया था। और घर के बाहर यात्रा करके

मेरे वही प्रवचन सबसे अधिक प्रभावोत्पादक हुए हैं जिनके लिए मैंने कैथरिन की मर्जी के अनुकूल यात्रा की है। मुझे प्रवचन देने के निमंत्रण स्वीकार करने पड़ते हैं। भगवान् का आदेश हुआ कि मैं उपदेश देता रहूँ। यह आदेश भगवान् ने वापस नहीं लिया है। यदि वह चाहते हैं कि मैं जीवित रहूँ तो वह मेरे जीवित रहने का प्रबन्ध करते रहेंगे। कैथरिन को मैं कैसे यह सब समझाऊँ ?"

उन्होंने हृद्-रोग के पहले आक्रमण के पश्चात् जब फिर से अपना काम प्रारम्भ किया तो कुछ समय तक वह अधिक काम के सम्बन्ध में सतर्क रहे। परन्तु क्रमशः उन्हें अपनी प्राकृतिक जीवन-शक्ति और उमंग फिर से मिल गई। वह चंगे दिखाई ही नहीं देने लगे, बल्कि अपने को चंगा मानने भी लगे; और जीवन-रस में पहले-जैसा आनन्द भी लेने लगे। यों वह अत्यधिक परिश्रम के लिए प्रोत्साहित हुए। अन्य लोग भी उनसे अत्यधिक सेवा की आशा करने लगे।

उनकी सेवाओं की गति बढ़ती चली गई। हृद्-रोग के आक्रमण के एक वर्ष पश्चात् पीटर के निकटतम स्वजनों को पता लग गया कि वह खतरे के भीतर फिर आ रहे हैं। प्रश्न था, उन्हें हम रोकें कैसे। पीटर के सचिव, गिर्जाघर के कर्मचारियों और बहुत से मित्रों से मिलकर हम लोगों ने एक प्रकार से सस्नेह षड्यन्त्र रचा। यथाशक्ति हम सबने उन्हें काम से बचाने की कोशिश की। हम उन्हें शान्त जीवन के लिए समझाते रहे, परन्तु हमारे तर्कों का उन पर कोई असर नहीं हुआ। इनके विरुद्ध उन्होंने अपने मस्तिष्क के कपाट बन्द कर रखे थे।

मृत्यु से लड़ने के पश्चात् उनके उपदेश पहले से अधिक अधिकार-पूर्ण होने लगे। ऐसा लगता था मानो पीटर किसी पठार के शिखर पर चढ़ गये हों, जहाँ से उन्हें क्षितिज पर अपना जीवन-लक्ष्य प्रत्यक्ष दिखने लगा था। अभी से उन्होंने अपने को उन पादरियों की लम्बी सूची में डाल लिया था जो न्यूयार्क एवन्यू प्रेस्बिटेरियन गिर्जाघर की सेवा कर चुके थे। जब एक पादरी ने उनसे पूछा, "बताओ पीटर, अपनी बीमारी

में तुमने क्या सीखा ?" तो पीटर ने तुरन्त उत्तर दिया, "क्या तुम वास्तव में जानना चाहते हो ? मैंने ईश्वर के राज्य में यह सीखा कि पीटर मार्शल के बगैर भी भगवान् के राज्य का काम चलता रहेगा।"

क्रमशः मुझे पता लग गया कि हम लोगों की इच्छा के अनुकूल अपने प्राणों की रक्षा के लिए श्रम की मात्रा कम करके उन्हें अपने पादरी-जीवन के पद का स्तर नहीं गिराना है। उन्हें जो मार्ग दिखाया गया, वह था अपनी ही चिन्ता करना, श्रम की मात्रा घटाते जाना और जीवन-चर्या को सीमित तथा संकुचित करना—और यह सब ऐसे समय पर जब उन्हें अपने में जवानी की सब शक्तियों की पूर्णता का आभास था। इस प्रकार सब कुछ देख-सुनकर भी उन्होंने अपनी कार्यशीलता मन्द न करने का ही निश्चय किया।

इसलिए उन्होंने अपने को पूर्ण रूप से भगवान् की शरण में अर्पित कर दिया। अपनी ओर से उन्होंने निश्चय किया कि वह अपना काम यथाशक्ति करते रहेंगे। स्वास्थ्य-सहित उसके परिणाम ईश्वर के सुपुर्द रहेंगे। किस प्रकार पीटर अपने निश्चय में मेरी सहमति प्राप्त करें—यही समस्या वह नहीं हल कर सके। वह जानते थे कि मैं उनकी रक्षा का प्रयत्न करती रहती थी और अपनी दुविधा की निवृत्ति का मार्ग ढूँढ़ने में कितनी तल्लीन रहती थी।

मैंने अपने को इस प्रकार समझाया कि पीटर के लिए मेरी प्रार्थनाएँ सुनी नहीं गईं, क्योंकि मैंने भगवान् से अपनी देन को कम करने की प्रार्थना की थी। कदाचित् भगवान् पीटर को हृद्-रोग से पूर्ण रूप में मुक्त करना चाहते थे, जिससे वह दीर्घायु प्राप्त कर सकें।

पीटर के हृदय पर रोग के पहले आक्रमण की मुसीबत में प्रार्थना के लिए मैंने इस विषय के विशेषज्ञों से परामर्श लिया था। पीटर की पूरी जानकारी और सहयोग से मैंने उन विशेषज्ञों से पथ-प्रदर्शन की सहायता फिर माँगी। यहाँ भी हम विफल रहे।

अन्ततः वह जो चाहते थे उसके लिए ही मैं राजी हो गई, और

पीटर को मैंने भगवान् के सुपुर्द किया—वह उनका भला करे या बुरा। जब मैंने पीटर को अपना यह निश्चय बताया तो उन्हें अत्यन्त सन्तोष हुआ। उनकी समझ में आया, मानो मैंने कह दिया हो, "ईश्वर के आदेश से अधिकाधिक उपदेश देते रहो, मैं अब हस्तक्षेप नहीं करूँगी।"

इस प्रकार उनके प्रवचनों की संख्या बढ़ने लगी, उनका प्रभाव भी बढ़ने लगा और मैं सस्नेह उनका साथ देती रही। कभी उन पर गर्व करती और कभी भावी की कल्पना से व्याकुल होती। हृदय की दुश्चिन्ता में मैं अपने को बिलकुल असहाय पाती।

● ● ●

२५ जनवरी सन् १९४९ के प्रातःकाल लगभग साढे तीन बजे पीटर ने छाती और बाहों में कठिन पीड़ा होने पर मुझे जगाया। उन्हें मेरा नाम ही लेना था क्योंकि किसी कारणवश मैं पड़ी जाग ही रही थी।

"कैथरिन, बहुत दर्द है, डाक्टर को तुरन्त बुलाओ।"

पलंग के निकट रखे फोन तक पहुँचते-पहुँचते मेरा हृदय भी बहुत जोर से धड़कने लगा।

डाक्टर की प्रतीक्षा करते समय पीड़ा पहले तो कम हुई, परन्तु अकस्मात् फिर बढ़ गई। डाक्टर ने पहुँचते ही निश्चय किया कि पीटर को अस्पताल तुरन्त पहुँचा दिया जाये।

पीटर ने पहले तो त्यौरियाँ चढ़ाईं, किन्तु शीघ्र ही मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए बोले, "मुझे अधिक आशा नहीं। कितना कष्टदायक उपद्रव है यह।"

बच्चे को अकेला छोड़कर पीटर के साथ अस्पताल की गाड़ी में जाना मेरे लिए असम्भव था। पलंग की बगल में खड़ी मुझसे उनका हाथ नहीं छोड़ते बना। पीटर समझ गये और अपनी उँगलियों के संकेत से उन्होंने मुझे हार्दिक आश्वासन दिया।

जब गाड़ी चली गई तो मैं ऊपर्ले खण्ड पर पहुँचकर अपने पलंग के

निकट घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी। परन्तु बोलने के पहले ही मुझे भगवान् की भक्ति में डूबने जैसा अनुभव हुआ। अब भगवान् से कुछ माँगना मुझे अनावश्यक जान पड़ने लगा था। उस अथाह भक्ति में मैंने पीटर-सहित अपने को सब प्रकार से समर्पित कर दिया। उस समय मैं समझी कि इस समर्पण से इस लोक में पीटर रोगमुक्त हो जायेंगे। परन्तु जो मैं न जानती थी वह भगवान् को ज्ञात था। अस्पताल की गाड़ी जाने से पहले मैंने उनको निचले कमरे से देखा था। जीवित पीटर का मेरे लिए यही अन्तिम दर्शन था।

उसी प्रातःकाल सवा आठ बजे पीटर का स्वर्गवास हुआ। अर्द्ध-निद्रा में अत्यन्त शान्तिपूर्वक वह संसार से विदा हुए। आठ बजकर बीस मिनट पर डाक्टर ने फोन से मुझे सूचना दी। सूचना से इतनी अचेत हो गई कि रो भी न सकी। कुछ समय बाद मुझे अस्पताल में पीटर के पलंग के पास एक घण्टा बैठने का मौका मिला।

द्वार खोलकर जब धीरे से मैं उनके छोटे-से सादे कमरे में पहुँची, तो मुझे ऐसा लगा मानो पूरा कमरा भगवान् की आभा से भरा है और मुझे दो दैवी आत्माओं के दर्शन हुए—ईसा मसीह और सन्त पीटर—अचल रूप में नहीं, मेरी ओर बड़े स्नेह और सहानुभूति से निहारते हुए।

मैं बड़ी देर तक उनका हाथ पकड़े पलंग के पास बैठी रही। थोड़ी देर बाद द्वार पर हलकी थपकी सुनाई दी। एडी पहुँच गई थी। मैंने उसे भीतर आने का संकेत किया। उसकी आँखें मेरे मुख पर चिपकी हुई थीं। एक मिनट ठहरकर वह चली गई।

उसने मुझे कुछ समय बाद बताया, "आप उस समय बिलकुल परिवर्तित हो गई थीं। निःसन्देह आप उस समय एक विभिन्न नवीनता से परिपूर्ण थीं और संसार का सब स्नेह मुझे आपकी आँखों में समाया दिखाई देता था। ऐसे ही समय मृत्यु पर ईसा मसीह की शक्ति का मुझे आभास हुआ। उनकी आभा पूरे कमरे में व्याप्त थी।"

मेरी घड़ी के हिसाब से अस्पताल के कमरे में घुसने के ठीक ५० मिनट पश्चात् एक समय आया जब दोनों प्रकाशपूर्ण दैवी आत्माएँ मेरी दृष्टि से लोप हो गईं। अकस्मात् कमरा मुझे खाली, ठंडा और उदासी से भरा दिखाई देने लगा और मैं काँपने लगी। अब वहाँ से मेरे भी हटने का समय आ गया था।

जब मैं जाने के लिए उठने लगी तो मुझे भली भाँति ज्ञात हो गया कि जिस पुरुष को मैंने अपना जीवन अर्पित किया था उसके ऐहिक शरीर से मेरी अब विदाई हो रही है। उनके स्पर्श, उनके स्नेह, उनकी प्रफुल्लता और उनके हास्य से मैं अब आमरण विदा हो रही थी।

अपने विवाह के दिन फूलों से सजी वेदी के सामने हम दोनों ने आमरण एक-दूसरे का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी। शरीरों का इस प्रकार विछोह होना मृत्युलोकी मानवों के लिए अत्यन्त कष्टदायक होता है।

परन्तु कुछ दिनों तक तो उनका स्वर्गवास मेरे लिए अन्धकारपूर्ण नहीं रहा। दैवी प्रकाश से मेरा जीवन-मार्ग आलोकित होता रहा। मुझे ऐसा लगता रहा मानो पीटर लौकिक और पारलौकिक जीवन के बीच की अदृश्य सीमा आनन्दपूर्वक पार करके चले गये हैं और परदे को हटाकर हमें स्वर्ग का दृश्य देखने का अवसर देते हैं जिससे हम लोग जो यहाँ रह गये हैं उनके आनन्दमय जीवन में भाग ले सकें और उनके अनुभव को भली भाँति समझ सकें।

जीवन में पहली बार मुझे ऐसा लगा मानो पृथ्वी पर ही मुझे स्वर्ग का राज्य मिल गया है। बहुत-से निर्णय करने थे। प्रत्येक के सम्बन्ध में मुझे सर्वाङ्ग सुन्दर, सही और तुरन्त प्रेरणा मिली। मानो मुझे सत्य का अन्तर्ज्ञान हो गया था।

पहली रात मुझे नींद बिलकुल नहीं आई, परन्तु प्रातःकाल अन्तिम संस्कार के सब ब्यौरे मुझे प्रत्यक्ष हो गये। यह भी मुझे ज्ञात हो गया कि बाइबिल के किस अंश का पाठ होगा। मृत्यु के संबंध में असभ्य जातियों

तथा बहुत-से ईसाइयों में भी जो भ्रान्तिपूर्ण धारणा थी, उसके प्रति पीटर के विचारों का पता गिर्जाघर के सब सदस्यों को था। पीटर मृत्यु को जीवन-परीक्षा की उत्तीर्णता मानते थे। इसलिए वह चाहते थे कि अन्तिम संस्कार उसी प्रकार हो जिस प्रकार भगवान् का आदेश है, चाहे कितना भी वह प्रचलित परिपाटी के विरुद्ध हो। मैं जानती थी कि पीटर मुझे शोक-सूचक काले वस्त्र पहनने की अनुमति न देते। इसलिए मैंने भूरे रंग के वही कपड़े पहने जो रविवार को मैं पहना करती थी। प्रार्थना के लिए ११ बजे प्रातःकाल का समय नियत हुआ, क्योंकि अपने पादरी के नेतृत्व में हमारे गिर्जाघर के सदस्य तभी प्रार्थना के लिए उपस्थित होते थे। मैंने अपने बैठने के लिए वही जगह निश्चित रखी जहाँ मैं सदैव बैठा करती थी और सदैव की भाँति सम्मिलित भजन का भी प्रबन्ध किया गया। प्रार्थना के विषय में पीटर की तारीफ़ न थी, केवल भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी थी कि कितने अद्भुत ढंग से उसने एक प्रवासी युवक से अपनी सेवा का काम लिया। ऐसे ही समय गिर्जाघर के सदस्यों को भगवान् का सन्देश मिलना था कि गिर्जाघर के जीवन में इस दुर्घटना का सामना करने में उन्हें परमात्मा की सहायता मिलेगी। मैं जानती थी कि पीटर अन्तिम संस्कार की प्रार्थना में यही चाहते थे कि हम सब एक बार फिर अपने को भगवान् की सेवा में अर्पित करने का निश्चय करें।

मैं चाहती थी कि अन्तिम संस्कार स्वर्ग के राज्य के वातावरण में सम्पन्न हो। पीटर की इच्छाओं के अनुकूल आदेश देने से केवल यही नहीं हुआ कि इस प्रकार का वातावरण बन गया बल्कि उपस्थित जनों में पूर्ण एकता भी दिखाई दी। हम लोगों के हृदयों में कोई दुर्भावना न थी, एक-दूसरे के लिए हार्दिक स्नेह ही था। बारह वर्षों के भीतर पहली बार मुझे ऐसा लगा कि वाशिंगटन एक छोटा-सा कस्बा है जहाँ सब एक-दूसरे के सुख-दुःख में सम्मिलित होते हैं। मैन्स के दरवाजों और खिड़कियों के पर्दे खुले हुए थे। सैकड़ों मित्र नैवेद्य, पुष्प और

भक्ति या आशीर्वाद का सन्देश लेकर मेरे घर पहुँचे। वहाँ उन्हें स्नेह, सौन्दर्य और शान्ति का इतना प्रिय वातावरण मिला कि किसी की तबियत वहाँ बैठने में ऊबती न थी।

पाठक यह न समझें कि मैं उन दिनों कभी रोई नहीं। रोई अवश्य, कई बार तो बड़ी देर तक रोती रही, परन्तु आँसुओं में कोई कटुता न थी। विछोह के दुःख को आँसुओं द्वारा बह निकलने का मौका ही मिला। बीच-बीच में भगवान् मेरे मन को शान्ति और हृदय को धैर्य देते रहे।

अंतिम संस्कार की प्रार्थना में अवर्णनीय सरलता और मधुरता रही। भगवान् की वह अनुकम्पा प्रार्थना में भी मेरे साथ रही जो पिछले दो दिनों से मुझे सँभाले रही थी। मैं मुस्करा सकी, जबरदस्ती नहीं, सच्चे हृदय से। शव के पीछे-पीछे गिर्जाघर के केन्द्रीय मार्ग से जब मैं अपने पुत्र के साथ वापस हो रही थी, तो मैंने एक सखी का दुखी मुख आँसुओं से भीगा देखा तो भी फिर मुस्कराकर मैंने उससे कान में कहा, "बेटी, धीरज रखो!" हम बाहर निकले तो गिर्जाघर के सामने छोटी-सी वाटिका में और पगडण्डियों पर नंगे सिर और शान्त जनों की भीड़ देखी जो भीतर नहीं जा सके थे। गिर्जाघर के बाहर लोगों की जैसी कतारें पीटर के जीवनकाल में दिखाई देती थीं वही उनके अन्तिम संस्कार में उनके साथ रहीं।

गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए केपकाड में जो कुटी बनवाई थी, वहां जून मास में मैं नियमानुसार पहुंची। जब हमारी मोटर सहन में पहुँची तो हमने देखा कि खिड़कियाँ पहले जैसी ही नीली थीं। सदैव की भाँति गुलाब की झाड़ियों की कलियाँ भी खिलने के लिए प्रस्तुत थीं। रसोईघर के द्वार के निकट लगे चीड़ के पुराने पेड़ में चिड़ियों के एक जोड़े ने अपन घोंसला बना लिया था।

कुटी के भीतर प्रत्येक कमरा पीटर की याद दिलाता था। वह सभी जगह उपस्थित-से दिखते थे। बैठक से लगे स्नानगृह में उनकी

गर्मियों में पहनने की एक हैट टंगी थी जिसके नीले फीते का रंग कुछ हलका पड़ गया था। उनके पलँग के नीचे उनका सफेद जूतों का पुराना जोड़ा रखा था, जिसे पहनकर वह वाटिका में काम करते थे। जूते के भीतर उनके मोजे भी खुँसे हुए थे। उनका एक जूता हाथ में लेकर मैं विचारमग्न हो गई : "अब मुझे वे शब्द अर्थपूर्ण मालूम होते हैं जिनमें स्मृतियाँ आशीर्वाद देती हुई, जलाती हुई बताई गई हैं। हे ईश्वर, यह स्मरण कितना दुःखदायी है।"

सन्ध्या होते-होते भावनाओं का तूफान थोड़ा-बहुत शान्त हुआ, तो मैं समुद्रतट की ओर चल दी।

कंकड़-पत्थर से भरे तट पर लहरों के हलके थपेड़ों की ध्वनि सुनाई दे रही थी और जल पर चन्द्रदेव की किरणों ने चाँदनी का एक मार्ग बना रखा था। दुःख से गर्म मेरे कपोलों को समुद्र की शीतल वायु झलने लगी। अकस्मात् मुझे वह शब्द याद आये जो अन्तिम बार मैंने पीटर से कहे थे।

मेरे मानस-पटल पर यह चित्र सदैव बना रहता है—पीटर उस स्ट्रेचर पर लेटे हैं जिसमें सेवकों ने अस्पताल की गाड़ी में चढ़ाने के पहले एक क्षण के लिए उन्हें लिटा दिया था। पीटर ने दर्द की हालत में भी मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा उन आँखों से जो करुणा से परिपूर्ण थीं। उनके निकट झुककर मैंने कहा, "प्यारे, मैं प्रातःकाल तुमसे मिलने आऊँगी।"

खड़ी-खड़ी मैं सुन्दर क्षितिज की ओर देखती हुई यह कल्पना करती रही कि पति से मेरे अन्तिम शब्द सदैव गीत होकर मेरा हृदय शान्त करते रहेंगे :

मिलने आऊँगी, प्यारे, प्रातःकाल तुमसे मिलने आऊँगी !

समुद्र के रहस्य

(रैशल एल० कार्सन की पुस्तक 'दि सी एराउंड अस' का सार)

समुद्र के रहस्यो के इस वर्णन में विज्ञान तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय है। यह पुस्तक हमारे इस भूमंडल के नित्य बनते-बिगड़ते रूपों, जल और वायु से सम्बन्धित प्राकृतिक घटनाओं, और जल तथा थल के पारस्परिक सम्बन्ध का एक रोचक चित्र प्रस्तुत करती है।

समुद्र के रहस्य

पृथ्वी के इतिहास में मानव का अस्तित्व बहुत कम समय से है। इस मानव ने इतने कम समय के भीतर जिस प्रकार महाद्वीपों को जीता और लूटा है, उस प्रकार वह समुद्र का नियन्त्रण या परिवर्तन नहीं कर सका है। नगरों और कस्बों के अप्राकृतिक जीवन में वह इस पृथ्वी की वास्तविकता और उसके लम्बे इतिहास को अक्सर भूल जाता है, यद्यपि इस लम्बे इतिहास में मानव के अस्तित्व की कथा एक क्षण-मात्र के समान है।

इस वास्तविकता की झलक उस समय उसे विशेष रूप में मिलती है जब वह लम्बी महासागर की यात्रा के लिए निकलता है। दिन-प्रतिदिन उसे पीछे हटते क्षितिज पर लहरों से बनती-बिगड़ती छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ और खाइयाँ दिखाई देती रहती हैं; रात के समय आकाश में तारिकाओं की प्रगति से पृथ्वी के घूमने का आभास उसे होता है; या जब आकाश और जल के मध्य उसे अकेलेपन का अनुभव होता है, तो साथ ही उसे ब्रह्मांड में पृथ्वी के अकेलेपन का भी आभास होता है।

भूमि पर रहते हुए नहीं, परन्तु जल-यात्रा करते समय यह सत्य उसकी समझ में आता है कि पृथ्वी का अधिकांश जलमय है, उस पर महासागर का बाहुल्य है और भूभाग तो सागर को फोड़कर कहीं-कहीं ही जल के ऊपर दिखाई देने लगे हैं। और इनके अस्तित्व का स्थायित्व भी संदिग्ध है।

हम समुद्र से घिरे हैं। देश-देशान्तरों का व्यापार समुद्र-मार्ग से ही होता है। जो हवाएँ भूमि पर चलती हैं, वे समुद्र के विशाल वक्ष पर ही जन्म लेकर पुष्ट होती हैं और उसी ओर लौट जाती है। महाद्वीप स्वयं क्षण-प्रतिक्षण घटते-घटते जलमग्न होते रहते हैं। जो बादल समुद्र से चलते हैं, वे नदी के रूप में वहीं फिर वापस पहुँच जाते हैं। किसी धुँधले अतीत में जड़ और जंगम जीवन जल ही में जन्मा और अनेकानेक परिवर्तनों के पश्चात् इस जीवन के अवशेष जल ही में मिल जाते हैं। अन्त में सभी को समुद्र में मिल जाना है—उस महासागर में, जो काल की अविराम धारा के समान है, वही हर वस्तु की उत्पत्ति का स्रोत है और उसी में हर वस्तु को विलीन हो जाना है।

समुद्र और भूमि की विभाजन-सीमा पृथ्वी की अन्य लाक्षणिकताओं की अपेक्षा स्थायित्व में अधिक हीन है, क्योंकि समुद्र एक विशाल और अत्यन्त निश्चयात्मक ज्वार-भाटे के समान बढ़ता-घटता रहता है और कभी-कभी अपने बहाव से किसी महादेश का आधा भाग तक निगल जाता है। भूगर्भ-विज्ञान का काल-क्रम बहुत ही लम्बा है, जिसका एक-एक युग करोड़ों वर्ष का है। इस काल-क्रम में कई बार उत्तरी अमरीका जल-मग्न हो चुका है। उसके पुराने समुद्र-तटों के संकेत हमें उत्तरी-अमरीका के वर्तमान तट के एक हजार मील पीछे तक मिलते हैं।

पेनसिलवेनिया के पर्वतीय शिखरों की कंकरीली चट्टानों पर बैठा हूँ। ये चट्टानें असंख्य सामुद्रिक घोंघों के खोलों के एक-दूसरे से मिलने पर बनी हैं। किसी अतीत में ये घोंघे समुद्र की एक शाखा में जीते-मरते रहे जो इस स्थान के ऊपर बहता था। कालान्तर में ये खोल मिलकर चट्टान बन गये और समुद्र पीछे हट गया। फिर कई युगों पश्चात् पृथ्वी के ऊपरी भाग के सिकुड़ने पर चट्टानें ऊपर उठ गईं और एक लम्बे पर्वत की शृङ्खला बन गईं।

इस प्रकार सभी भूभागों के किसी अतीत में कहीं-न-कहीं समुद्र का पता मिलता है। हिमालय के शिखरों पर २०,००० फुट की ऊँचाई तक

हमें जलजात कंकरीला पत्थर कहीं-कहीं बाहर निकला दिखाई देता है। ये चट्टानें हमें आज से ५ करोड़ वर्ष पुराने उस अतीत की याद दिलाती हैं जब एक उष्ण और निखरा समुद्र दक्षिणी योरप और उत्तरी अफ्रीका से दक्षिण-पश्चिम एशिया तक फैला हुआ था। यह समुद्र असंख्य जल-कीटों से भरा था जो मरते रहकर कंकरीली चट्टानें बनाते रहे। कई युगों पश्चात् इस चट्टान से प्राचीन मिस्रियों ने अपना स्फिक्स मूर्त किया। फिर इन्हीं चट्टानों के पत्थरों से इन्होंने अपने पूर्वजों की प्रस्तर-समाधियाँ (पिरामिड) बनाईं।

ब्रिटेन के डोवर नामक नगर के प्रसिद्ध श्वेत कगार खड़िया के बने हैं जिसे किसी समय समुद्र ने यहाँ जमा किया था। यह खड़िया एक-दूसरे से सटे असंख्य जल-जीवों के छोटे-छोटे खोलों से बनी। संयुक्त राज्य अमरीका के कैंटकी प्रदेश में एक विशाल गुफा है जिसमें मीलों की यात्रा सम्भव है और कहीं-कहीं गुफा की छत की ऊँचाई २५० फुट तक पहुँचती है। आज से करोड़ों वर्ष पूर्व पेलिओजोइक-युग में समुद्र ने वहाँ कंकरीली चट्टान की मोटी तह जमा दी। फिर किसी पहाड़ से बहती जलधारा ने धीरे-धीरे इस चट्टान को घुलाना प्रारम्भ किया। जो भाग घुलने से बच गया, वह अब गुफा की छत के रूप में हमें दिखता है। जो घुल गया यह हमें अब गुफा के रूप में दिखाई देता है।

इसी प्रकार कनाडा और संयुक्त राज्य अमरीका की सीमा पर प्रसिद्ध नियागरा जल-प्रपात की कहानी भी करोड़ों वर्ष पूर्व सिलूरियन-युग से प्रारम्भ होती है, जब ध्रुवसागर की एक विशाल खाड़ी दक्षिण की ओर महाद्वीप के एक विशेष भाग पर फैल गई। इस खाड़ी की राह में 'डोलोमाइट' नामक अत्यन्त कड़ी चट बिछने लगी और कालान्तर में यह चट कनाडा और संयुक्त राज्य अमरीका की सीमा पर एक लम्बी कगार के रूप में प्रकट हुई। लाखों वर्ष पश्चात् गलती हिम-नदियों की जलधारा इस कगार से गिरने लगी और धारा ने 'डोलोमाइट' के नीचे कुछ कम कड़ी चटें काट डालीं, जिससे ऊपर लटकी कड़ी चटें क्रमशः

टूटकर गिरती गईं। इस प्रकार नियागरा जल-प्रपात और उसके दोनों ओर के संकुचित तथा ऊँचे मार्ग का प्राकृतिक निर्माण हुआ।

महासागर तो पृथ्वी की गहरी खंदकों को युग-युगान्तर से भरे हुए हैं, तो वे भूभागों पर क्यों आक्रमण करते हैं? अनादिकाल से पृथ्वी ठंडी होती जा रही है, तो घन पदार्थ में परिवर्तन के साथ पृथ्वी का ऊपरी भाग भी सिकुड़ता रहता है। भूभाग और जलधि की सीमा के परिवर्तन का यही प्रधान कारण है। भूभाग की सतह नीचे जाती है तो नीचे भाग पर समुद्र आ जाता है। फिर भूभाग से बहती मिट्टी समुद्र को पाटती रहती है। युगयुगान्तर से भूमि कटती जा रही है और नदियों के मार्ग से उसकी मिट्टी समुद्र को पाटती जा रही है। जितनी मिट्टी जल की जगह लेती है उतना ही जल को उठने का आदेश मिलता है।

इसके अतिरिक्त जल के नीचे ज्वालामुखी बढ़ते रहते हैं। गले पत्थर इनसे निकलकर अपनी-अपनी पहाड़ियाँ बनाते रहते हैं जो आवश्यक ऊँचाई प्राप्त करने पर हमें द्वीपों के रूप में दिखाई देने लगते हैं। इन ज्वालामुखियों की विशालता बहुत प्रभावोत्पादक है। उदाहरण के लिए, हवाई द्वीप समूह से सम्बन्धित ज्वालामुखी-शृङ्खला लगभग दो हजार मील लम्बी है और इसके भीतर कई बड़े-बड़े द्वीप हैं। कितनी विशाल जलराशि की जगह इन्होंने ले ली है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है।

पिछले दस लाख वर्षों में भूमि पर समुद्र का जो आक्रमण होता रहा उसके कारणों में प्रधानता हिम-नदों की ही रही है। इस लम्बे काल के भीतर चार बार विशेष भूभागों पर हिम की चोटियाँ चढ़ गईं और हिमनदों के रूप में उन्होंने घाटियों और मैदानों की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। भूमि पर जमा हिम वार्षिक शरद के प्रभाव से जितना मोटा होता गया, उतनी ही समुद्र की सतह नीची होती गई; और जब हिम गलकर समुद्र की ओर वापस होने लगा तो समुद्र की सतह ऊँची होने लगी।

अब हम हिम की चौथी चढ़ाई के उतार के मध्य में हैं; चौथी चढ़ाई में जिन भूभागों पर हिम चढ़ गया था, उसमें आधा उतर गया है, अब वह केवल उत्तर में ग्रीनलैंड तथा दक्षिणी ध्रुव के अंटार्कटिका महाद्वीप पर या कुछ बिखरे शैल-शिखरों पर रह गया है। इस प्रकार हम उस युग के मध्य हैं जिसमें समुद्र की सतह बढ़ रही है, वह अधिकाधिक जगह घेरता जा रहा है। मानव-जीवन की अवधि तो बहुत छोटी ही है। इसके भीतर पृथ्वी की नियमानुकूल लीला का दृष्टिगोचर होना कठिन है। परन्तु संयुक्त राज्य अमरीका के समुद्र-तट पर १९३० से जो तट तथा ज्वार से सम्बन्धित अवलोकन हो रहे हैं, उनसे यह प्रमाणित हो गया है कि समुद्र की सतह निरन्तर ऊँची होती जा रही है। मसाचुसेट्स से फ्लोरिडा तक तट की लम्बाई एक हजार मील है। यहाँ और मेक्सिको की खाड़ी के तट पर १९३० से १९४८ तक सतह की ऊँचाई लगभग चार इंच बढ़ी है; प्रशान्त महासागर की सतह भी ऊँची हो रही है परन्तु यह अधिक विशाल है। इसलिए सतह का चढ़ाव भी अपेक्षाकृत धीमा है।

पहली बार हमें महासागर बढ़ता दिखाई देने लगा है। वह अपनी सीमाएँ बढ़ाता जा रहा है। यह सिलसिला हजारों वर्ष से चालू है, तबसे जब अन्तिम हिमयुग के हिमनद गलने लगे। कब और कहाँ महासागर की वर्तमान चढ़ाई रुकेगी और कब वह फिर अपने गर्तों की ओर मुड़ने लगेगा, यह कोई नहीं कह सकता। इस समय जितना हिम भूभागों पर जमा है वह यदि गल जाये तो जो सागर उत्तरी अमरीका को घेरे हुए हैं उसकी सतह सौ फुट चढ़ जाये, अटलांटिक महासागर पर बसे अधिकांश नगर तथा कस्बे जलमग्न हो जायें, अपलाशियन पहाड़ियों के नीचे समुद्र की लहरें थपेड़े मारने लगें और मेक्सिको की खाड़ी का तटवर्ती मैदान तथा मिसिसिपी घाटी का निचला भाग जलमग्न हो जाये।

वायु और जल

जब से महासागरों का अस्तित्व हुआ तभी से उसका जल वायु के झकोरों से हिलता-डुलता रहा। खुले सागर में लहरों की चाल में कोई संयम दिखाई नहीं देता—वे एक-दूसरे को पकड़ती, बराबर से निकल जाती या नष्ट करती दिखाई देती हैं। किसी भी भाग की लहरों पर ध्यान दीजिये, उनके उद्गम, प्रगति और दिशा में निरन्तर भिन्नता दिखाई देती है। कुछ तो कभी तट तक पहुँचती ही नहीं और कुछ आधे महासागर की दौड़ लगाती हुई किसी सुदूर तट पर गरजती हुई समाप्त होती दिखती हैं।

जिस जल से लहर बनती है वह उसके साथ समुद्र में आगे नहीं बढ़ता लहर बनने पर उसके जल का प्रत्येक कण चक्कर लगाकर प्रायः उसी जगह पहुँच जाता है जहाँ से उसकी प्रगति प्रारम्भ हुई थी। और यह हमारे लिए शुभ ही है, क्योंकि यदि लहर के साथ जल की प्रगति भी होती तो जहाजों की यात्रा असम्भव हो जाती। लहरों के विवरण में एक सुन्दर वाक्यांश का प्रयोग होता है—लहर की दौड़। अर्थ यह है कि बहती वायु के साथ अबाध रूप से चलने पर लहर कितनी दूर तक जा सकती है। दौड़ जितनी लम्बी होती है, लहर उतनी ही ऊँची होती है, खाड़ी या सीमित जल-राशि के भीतर बड़ी लहरें नहीं बनतीं। लहर की दौड़ ६०० से ८०० मील तक हो और वायु की प्रगति आँधी जैसी हो तभी महासागर की विशालतम लहरें बनती हैं।

समुद्र के भीतर ही जन्मी कुछ शक्तियाँ लहर का रूप बदल सकती हैं, समुद्र में विकराल लहरें तभी उमड़ती हैं जब ज्वार की लहरें वायु से जन्मी लहरों के मार्ग में आती हैं, या उनसे टक्कर लेती हैं। स्कॉट-लैण्ड की 'रूस्ट' नाम से प्रसिद्ध लहरें इसी प्रकार बनती हैं। शेटलैण्ड द्वीप-समूह के दक्षिणी छोर पर ये 'रूस्ट' लहरें उठती हैं। जब वायु की दिशा पूर्वोत्तर होती है तो 'रूस्ट' लहरें शान्त रहती हैं। परन्तु जब वायु-संचालित लहरें किसी दूसरी दिशा से चलती हैं तब वे ज्वार-भाटे

की लहरों से टक्कर लेती हैं। ये लहरें ज्वार के रूप में बढ़ती हुई तट की ओर जाती हैं या भाटे के रूप में तट से समुद्र की ओर जाती हैं। यों दोनों की जंगली पशुओं जैसी मुठभेड़ होती है। जब ज्वार का अत्यधिक जोर होता है तो लहरों की लड़ाई का क्षेत्र तीन मील तक विस्तृत हो जाता है। 'ब्रिटिश आइलैंड्स पाइलट' नामक पत्रिका का कहना है कि समुद्र की इस विशाल उथल-पुथल में जलयान-संचालन असम्भव हो जाता है। कभी-कभी कुछ जलयान डूब जाते है और बाकी कई दिनों तक लहरों की टक्करें खाया करते हैं।

गढ़े से शिखर तक साधारण वायु में २५ फुट की ऊँचाई तक लहर कदाचित् ही कहीं पहुँचती हो। परन्तु तूफान में लहरों की ऊँचाई इसके दुगने से आगे तक भी पहुँच जाती है। तूफान की लहरों की सर्वोच्च सीमा के विषय में मतभेद है। अधिकांश पाठ्य-पुस्तकों में ऊँचाई की सीमा ६० फुट तक मानी गई है। परन्तु मल्लाह इससे अधिक ऊँची लहरें देखने के विवरण सुनाया करते हैं। हमें एक विशाल लहर का उल्लेख मिलता है जो वैज्ञानिक नाम के कारण विश्वसनीय है। फरवरी १९३३ में संयुक्त राज्य अमरीका के 'रमाय' नामक जहाज को मनीला से सैन डाइगो की यात्रा में सात दिन तक तूफान का सामना करना पड़ा। पहरे पर खड़े एक अफसर ने जहाज की पिछाड़ी से एक लहर को मुख्य मस्तूल की एक विशेष मंजिल के ऊपर स्तर तक उठते देखा। चूँकि 'रमायो' का पिछला भाग लहर के गढ़े तक पहुँच गया था, इसलिए अफसर को लहर के शिखर की ऊँचाई का सही अनुमान लग सका। जहाज की ऊँचाई के हिसाब से लहर की ऊंचाई का हिसाब लगाया जा सका। लहर ११२ फुट की ऊँचाई तक पहुँची।

परन्तु लहरों की समुद्र पर कुछ भी ऊँचाई रहे, समुद्र-तट पर ही तूफानी लहरों का विनाशकारी प्रभाव प्रत्यक्ष हो पाता है। ऊपर की ओर उछलती लहरों के प्रबल थपेड़े प्रकाशगृहों को ढक लेते हैं, भवनों को हिला डालते हैं और तट पर निर्मित घाटों इत्यादि को बच्चों के

खिलौनों की भाँति तोड़-फोड़ डालते हैं। शरद् ऋतु में चलनेवाली आँधियों से उत्पन्न लहरों का दबाव प्रति वर्ग फुट ७५ मन तक पहुँच जाता है। सन् १८७२ में एक शारदीय तूफान के मध्य स्काटलैंड के विक नामक स्थान पर वहीं का इंजीनियर एक कगार पर खड़ा निश्चिन्तता से तमाशा देख रहा था कि कंक्रीट की बनी ठोकर पर एक लहर चढ़ आई और उसने ठोकर की पूरी शिला को बहाकर घाट के भीतर गिरा दिया। तूफान के पश्चात् गोताखोरों ने टूट-फूट की जाँच की कि लहरें ३६,४५० मन की शिला को तोड़कर बहा ले गईं। पाँच वर्ष पश्चात् यह प्रत्यक्ष हो गया कि यह घटना तो भूमिका-मात्र थी, क्योंकि इस बार तूफानी लहर दूनी तौल के घाट को ही तोड़कर बहा ले गई।

समुद्र के सुनसान कगारों या पहाड़ी अन्तरीपों पर बने प्रकाशगृहों पर तूफानी लहरों का भरपूर जोर पड़ता है। इसलिए उनके पहरेदारों को वे घटनाएँ देखने में आई हैं जो दैवी ही कही जा सकती हैं। सन् १८४० में रात के समय आँधी के दौरान में एडीस्टोन प्रकाशगृह का मजबूती से बन्द द्वार अकस्मात् भीतरी टूट-फूट से खुल गया, और उसके बोल्ट तथा कब्जे खुलकर अलग हो गये, इंजीनियरों का कहना है कि इतनी भारी तोड़-फोड़ वायु के दबाव के अकस्मात् अत्यधिक बढ़ने और तुरन्त ही शून्य पैदा होने पर होती है, जब एक भारी लहर पीछे हटती है और द्वार के बाहरी भाग पर अकस्मात् दबाव की शून्यता आ जाती है। नवम्बर में एक बार स्काटलैंड के तट पर बने बेल-राक प्रकाशगृह से समुद्र के ऊपर बने ८६ फुट ऊँचे स्तम्भ पर लगी सीढ़ी कटकर अलग जा गिरी। बिशप राक प्रकाशगृह का समुद्र की सतह से १०० फुट ऊपर लगा घण्टा शारदीय तूफान के झोंके में अलग जा गिरा। संयुक्त राज्य अमरीका के अटलाण्टिक तट के मिनाट्स लेज पर बनी ९७ फुट ऊँची मीनार अकसर टकराती लहरों से पूरी ढक जाती है और सन् १८५१ में इस प्रकाशगृह में लगा लैम्प उखड़कर बह गया। संयुक्त राज्य

अमरीका के आरेगन तट पर बने ट्रिनिडाड हेड प्रकाशगृह का पहरेदार दिसम्बर के एक शारदीय तूफान का दृश्य देख रहा था। गृह की रोशनी समुद्र की सतह से १९६ फुट ऊपर है। परन्तु एक लहर दीवार की भाँति चलती रोशनी के स्तर तक पहुँच गई और पूरा स्तम्भ उसकी बौछार से ढक गया। लहर के धक्के से रोशनी का संचालन-चक्र भी रुक गया।

पथरीले तट पर पहुँचती लहरों के साथ पत्थर के छोटे-बड़े टुकड़े भी रहते हैं। एक बार समुद्र की सतह से १०० फुट की ऊँचाई पर टिल्लामूक राक पर बने प्रकाशगृह के पहरेदार के घर के ऊपर लहरों ने डेढ़ मन भारी पत्थर पहुँचा दिया जिसने घर की छत पर २० फुट का छेद फोड़ दिया। स्कॉटलैण्ड के पेंटलैण्ड फर्थ पर डनेट हेड की ३०० फुट ऊँची चट्टान पर बने प्रकाशगृह की खिड़कियाँ अकसर उन पत्थरों से टूटती रहती हैं जिनकी बौछार लहरों द्वारा इतनी ऊँचाई तक पहुँच जाती है।

यों समुद्र की लहरें संसार-भर के समुद्र-तट काटती रहती हैं, कहीं कगार काटती रहती हैं, कहीं एक ओर तट की बालू खींचती जाती हैं और दूसरी ओर बालू का टीला या द्वीप बनाती जाती हैं।

काड अन्तरीप का टीला इतनी शीघ्रता से कट रहा है कि सरकार ने जो दस एकड़ जमीन हाइलैंड प्रकाशगृह के लिए खरीदी थी उसमें से आधी जमीन कट गई है और टीला ३ फुट प्रतिवर्ष के हिसाब से कटता जा रहा है। जिस प्रकार कटाई हो रही है उसके अनुसार बाहरी अन्तरीप को ५,००० वर्षों के भीतर गायब हो जाना चाहिए।

काड अन्तरीप के निकट नांटुकेट द्वीप के दक्षिणी तट के टीले पत्थर से लदी लहरों की रगड़ से प्रतिवर्ष छः फुट कटते जा रहे हैं। चट्टानों के टुकड़े टूटकर गिरते जाते हैं; फिर यही टुकड़े एक-दूसरे से टकराते हुए चूर होते रहते हैं और लहरों के साथ जाकर आगे की कटाई करते रहते हैं। पथरीले तट पर चट्टानों की घिसाई और रगड़ाई

निरन्तर गर्जना के साथ होती रहती है। चट्टानों पर टकराती लहरों की गर्जना बालू पर समाप्त होती लहरों की ध्वनि से भिन्न होती है। तट पर चलनेवाले सरलता से इसे पहचान लेते हैं और फिर जल्दी भूलते नहीं—गड़गड़ाहट के मध्य एक गहरी सीटी जैसी ध्वनि।

ब्रिटिश तट के भी बहुत-से भाग समुद्र की लहरों के प्रभाव से कटते जा रहे हैं। पुराने उल्लेखों से पता लगता है कि तटवर्ती टीले बड़ी तेजी से कटते जा रहे हैं। क्रोमर और मंडस्ले की कटाई १९ फुट प्रतिवर्ष हुई है और साउथफील्ड के तट १५ फुट से ४५ फुट प्रतिवर्ष कटे हैं। सन् १७८६ के एक नक्शे के साथ होल्डरनेस के विनष्ट गाँवों की सूची लगी है और संकेत है—समुद्र में बह गए।

साथ ही जल की प्रगति से तटवर्ती दृश्यों का भी बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक निर्माण हुआ है, समुद्र-तटवर्ती गुफाएँ चट्टानों की दरारों में लहरों की निरन्तर टक्करों से ही तो बनती हैं। जल के निरन्तर दबाव और टक्कर के परिणामस्वरूप निचले भाग कटते जाते हैं और गुफाएँ गहरी होती जाती हैं। इन गुफाओं की छतों और लटकी चटों पर लहरें उसी प्रकार टकराती हैं जैसे उन पर भयानक गोलों की चोटें पड़ रही हों। इस प्रकार कभी-कभी गुफा की छत में एक छेद बन जाता है जिसमें लहरों की टक्कर के साथ एक फव्वारा जैसा निकला करता है।

जिन सामुद्रिक लहरों ने विशेष रूप से मनुष्य का ध्यान आकृष्ट किया है, वे ज्वार की लहरें कहलाती हैं। इन लहरों का नामकरण लोक-मान्य ही है, ज्वार से इनका कोई सम्बन्ध नहीं। इस नाम से वे लहरें प्रसिद्ध हैं जो समुद्र के भीतर ज्वालामुखी के फूटने पर प्रत्यक्ष होती हैं। वे लहरें भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं जो तूफान के फलस्वरूप ज्वार की लहर की ऊँचाई से भी ऊपर पहुँच जाती हैं।

आम तौर से ज्वालामुखी से जाग्रत लहरों का प्राथमिक लक्षण होता है अकस्मात् समुद्र का पीछे हटना। सन् १८६८ में दक्षिणी अमरीका का पश्चिमी तट बुरी तरह से ज्वालामुखियों द्वारा प्रभावित

हुआ। अत्यन्त भीषण धक्कों की कुछ ही देर बाद समुद्र पीछे हट गया और जो जहाज ४० फुट गहरे समुद्र में लंगर डाले हुए थे उनको कीचड़ में फंसा छोड़ गया। फिर जल की एक विशाल लहर आई और जहाजों को चौथाई मील तक भूमि की ओर ले गई।

सन् १९४६ की पहली अप्रैल को हवाई द्वीप के आदिवासी बहुत स्तम्भित हुए जब लहरों की गर्जना अकस्मात् बन्द हुई और एक अजीब शान्ति छा गई। वे न जान सके कि समुद्र की लहरें २,३०० मील की दूरी पर अल्यूशियन द्वीप-समूह में भूचाल के परिणामस्वरूप पीछे हट गई हैं। न उन्हें अनुमान हो सका कि कुछ ही क्षणों में साधारण ज्वार से २५ फुट या उससे भी अधिक ऊँचा उठकर यह समुद्र विकराल रूप में वापस आयेगा और द्वीप के निवासियों तथा उनके घरों को अपने साथ बहा ले जायेगा। खुले सागर में अल्यूशियन भूचाल से लहरें एक-दो फुट ही ऊपर उठीं; परन्तु हवाई द्वीप तक पहुँचते उन्हें ५ घण्टों से कम लगे। यों ये लहरें लगभग ४७० मील प्रति घण्टा की चाल से आगे बढ़ीं।

उष्ण-प्रधान तूफानों के कारण जो जानें जाती हैं उनमें से तीन-चौथाई तूफानों की लहरों से नष्ट होती हैं। इन्हीं के कारण सन् १९०० की आठवीं सितम्बर को टेक्साज के गैल्वस्टन नगर में और सन् १९३५ की दूसरी-तीसरी सितम्बर को फ्लोरिडा कीज के निचले भाग में दुर्घटनाएँ हुईं। ऐतिहासिक काल में तूफान के कारण सबसे भीषण विनाशकांड ७ अक्तूबर, १७३७ को बंगाल की खाड़ी में हुआ जब २०,००० नावें नष्ट हो गईं और ३ लाख आदमी डूब गये।

परन्तु महासागर की सबसे बड़ी और भीषण लहरें एक प्रकार से अदृश्य ही रहती हैं। ये लहरें समुद्र के बहुत नीचे अज्ञात दिशा की ओर बहती हैं और जिस प्रकार समुद्र के ऊपर की लहरें जहाजों को इधर-उधर फेंकती हैं, उसी प्रकार ये लहरें पनडुब्बियों की दुर्गति करती हैं। जिस प्रकार ऊपरी लहरें और ज्वार की लहरें एक-दूसरे से टक्कर खाकर

प्रत्यक्ष आफत बर्पा करती हैं उसी प्रकार ये लहरें समुद्र के नीचे खाड़ी-धारा (गल्फ़ स्ट्रीम) जैसी सामुद्रिक धाराओं से लड़कर भीतरी उथल-पुथल करती हैं। इन टक्करों की जल-यात्रा की विशालता का अनुमान लगाना कठिन है क्योंकि कुछ लहरें ३०० फुट तक पहुँच जाती हैं।

इन आन्तरिक जल-संघर्षो से समुद्र के नीचे बसे जल-जीवों की जीवनचर्या किस प्रकार प्रभावित होती है, इसका पता हमें बहुत कम है। हम इतना ही अनुमान कर सकते हैं कि जिन प्राकृतिक रहस्यों की जानकारी हमें हुई है, उनसे कहीं अधिक रहस्य समुद्र के विप्लव-युक्त अन्तस्तल में छिपे हुए मानव की अतृप्त जिज्ञासा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अन्धकारमय सागर

संसार का सागरीय क्षेत्र पूरी पृथ्वी का लगभग तीन-चौथाई भाग घेरे है। यदि इसमें से हम उथले भाग निकाल डालें तो भी मीलों गहरा अन्धकारपूर्ण पृथ्वी का लगभग आधा भाग जल से ढका रह जायेगा; और यह विशाल क्षेत्र जो सूर्य से प्रकाश पानेवाले जल-क्षेत्र तथा गहरे महासागर की तह के मध्य है, अपने भेद अभी तक हठपूर्वक हमसे छिपाये हुए है।

विशाल वैज्ञानिक सुविधाएँ पाकर भी मानव प्रकृति के इस अज्ञात संसार की खोज में अभी तक असफल रहा है। गोताखोर के वस्त्र पहन-कर वह ५०० फुट से अधिक गहराई में नहीं जा सकता। केवल विलियम बीब और ओटिस बार्टन ही प्रकाश की अन्तिम सीमा के आगे की गह-राई के सागर की खोज कर सके हैं। बेथीस्फियर नामक यंत्र में बैठकर वह बरमुडा द्वीप के पास खुले महासागर के भीतर ३,०२८ फुट की गह-राई तक सन् १९३४ में पहुँच सके थे। और केवल बार्टन बेंथोस्कोप नामक एक इस्पात के गोले के भीतर बैठकर सन् १९४९ में कैलिफोर्निया के निकटस्थ सागर में ४,५०० फुट की गहराई तक उतर सका था।

सतह के नीचे प्रकाश बहुत शीघ्र कम होने लगता है। २०० से

३०० फुट तक की गहराई में लाल किरणें समाप्त हो जाती हैं और उनके साथ ही उनकी गर्मी भी। फिर हरी किरणें मन्द होने लगती हैं और १,००० फुट तक पहुँचने के पश्चात् चमकदार नील वर्ण ही रह जाता है। निर्मल जल में बैंजनी किरणें एक हजार फुट की गहराई तक और जा पाती हैं। इसके आगे तो गहरे समुद्र की कालिमा ही रहती है।

विश्व के इस अन्धकारपूर्ण भाग में किसी के लिए कोई रक्षा नहीं है। वहाँ के वासियों को अपने शत्रुओं से बचने के कोई साधन प्राप्त नहीं हैं। कोई वनस्पति जल में ६०० सौ फुट की गहराई के आगे जीवित नहीं रह सकती। वानस्पत्य भोज्य ऊपर ही के जल में रह जाता है तो अन्धकारमय सागर के जल-जीव एक-दूसरे का शिकार करके ही जीवित रह पाते हैं। गहरे समुद्र की कुछ छोटी और सपक्ष नाग जैसी मछलियों के तलवार जैसे लम्बे जबड़ों से इस विश्व के निरन्तर संघर्ष का संकेत हमें मिलता है। विशाल मुँह और लचीले शरीर के कारण ये मछलियाँ अपने से कई गुने बड़े जीव निगल जाती हैं।

गहरे सागर की बहुत-सी मछलियों को एक प्राकृतिक मशाल प्राप्त रहती है जिसे शिकार की तलाश में ये इच्छानुसार जलाती अथवा बुझाती रहती हैं। कुछ के शरीर पर विभिन्न रंग की प्रकाश-मालाएँ रहती हैं। गहरे सागर की एक मछली प्रकाशमय द्रव अपने शरीर से निकालती है जो प्रकाशमय बादल जैसा हो जाता है, उसी प्रकार जैसे उसकी ही मेल की उथले सागर में रहनेवाली मछली स्याही समान द्रव निकालती है।

उथले जल की मैकरल और हेरिंग जैसी मछलियाँ आम तौर से नीली या हरी होती हैं; गहरे सागर में जहाँ जल गहरा नीला हो जाता है वहाँ जल-जीव मणि के समान चमकदार और श्वेत होते हैं। उनके शीशे जैसे शरीर उन्हें व्यापक अन्धकार में छिपा देते हैं और वैरियों से उनकी रक्षा करते हैं। हजार फुट की गहराई पर रुपहली मछलियों की

बहुतायत रहती है। बहुत-सी लाल, भद्दी बादामी या काली होती हैं। १,५०० फुट से अधिक गहराई में सभी मछलियाँ काली, गहरी बैंजनी या कत्थई होती हैं; यद्यपि उनके बच्चों के रंग लाल, रक्तवर्ण या बैंजनी होते हैं। इसका कारण मालूम नहीं।

यद्यपि यह धारणा रही कि अन्धकार और जल के भारी दबाव के कारण महासागर के अत्यधिक गहरे भागों में जीवन असम्भव है, परन्तु हाल में वहाँ जीवों के आधिक्य का पता लगा है। चौथाई मील से अधिक गहराई में विलियम बीब को प्राणियों के अति विशाल समूह दिखाई दिये। बेथीस्फियर द्वारा वह आधी मील के आगे नहीं उतर सके। वहाँ की हालत वह इस प्रकार बताते हैं कि बिजली की रोशनी के मार्ग में उन्हें सदैव ही प्लैंक्टन नामक कीटों की भीड़ धुन्ध जैसी चक्कर काटती दिखाई देती रही।

हाल ही में यह पता लगा है कि डेढ़-दो हजार फुट की गहराई में सागर का अधिकांश एक अज्ञात कीट से इतना भरा है कि इनकी भीड़ धुन्ध जैसी दिखाई देती है। समुद्र के विषय में इतनी सनसनीखेज खोज बहुत वर्षों बाद हुई है। जब प्रतिध्वनि के आधार पर जहाज समुद्र की तली का पता लगाने में सफल होने लगे, तो नये यन्त्रों पर काम करनेवालों को एक नई मुसीबत का सामना करना पड़ा। जब उन्होंने ध्वनि की लहरें प्रसारित कीं तो पहली प्रतिध्वनि उन्हें मछलियों, ह्वेलों या पनडुब्बियों के समूह से मिली; इसके बाद ही उन्हें तली की प्रतिध्वनि मिली। महासमर छिड़ने पर समुद्र की खोज सैनिक नियन्त्रण में आ गई। इसके बाद संयुक्त राज्य अमरीका के जंगी बेड़े ने सूचना दी कि सन् १९४२ में संयुक्त राज्य अमरीका के जहाज 'जैस्पर' पर सवार तीन वैज्ञानिकों को दूर तक फैली एक तह का पता लगा जिससे प्रतिध्वनि आती थी। एक हजार से पन्द्रह सौ फुट की गहराई तक ३०० वर्ग मील के घेरे में उन्हें इस तह का पता लगा। महासागर विज्ञान की स्क्रिप्स संस्था के वैज्ञानिक मार्टिन डबल्यू० जान्सन ने सन्

१९४५ में एक और मनोरंजक और आश्चर्यजनक खोज की कि जिस तह से प्रतिध्वनि आती थी वह नियमानुकूल ऊपर-नीचे होती रहती थी—रात को ऊपर समुद्र स्तर के निकट और दिन को नीचे समुद्र के गहरे अन्तस्तल में। इससे प्रमाणित हुआ कि यह तह प्राणियों की ही थी।

इन खोजों के पश्चात् यह "धोखे की तली" कई बार देखी जा चुकी है और समुद्र की बहुत गहराई में व्याप्त है। इसके विषय में तीन वैज्ञानिक अनुमान हैं। पहला यह है कि तली उन बहुत छोटे प्लैंक्टन का भारी समूह है जो रात के समय ऊपर उठ आते हैं और दिन के समय गहराई में प्रकाश क्षेत्र के नीचे चले जाते हैं। दूसरा यह कि यह तली उन मछलियों का समूह है जो प्लैंक्टनों को निगलकर जीवित रहती हैं और उनके पीछे-पीछे ऊपर-नीचे घूमा करती हैं, तीसरा आश्चर्यजनक, परन्तु कम-से-कम मान्य, अनुमान यह है कि यह तली स्क्विड नामक मछलियों का समूह है जिनकी समुद्र में अत्यधिक संख्या है। परन्तु इस तली की रचना की पकड़ नहीं हो सकी है, उसका फोटो भी नहीं लिया जा सका है। अतएव अभी तक इस विषय में हमारा ज्ञान अधूरा है।

कुछ मेल की शारवीय सीलों और ह्वेलों को गहरे सागरों की आहार-निधि का पता लग गया है। पूर्वी प्रशान्त महासागर के पूर्वोत्तर भाग में एक रोंयेदार सील मिलती है। उसके पेट में ऐसी मछली की हड्डियाँ मिली हैं जिसकी जाति की मछली कभी मृत या जीवित देखी नहीं गई थी। मत्स्य-विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि यह विचित्र मछली बहुत गहरे जल की प्राणी है।

बहुत बड़ी और चौड़े सिर तथा विशाल दाँतों वाली स्पर्म ह्वेल का भी आखेट-क्षेत्र गहरा जल ही है। इसे अपना आहार स्क्विड नामक मछली से मिलता है या बहुत बड़ी स्क्विड से भी जो १,५०० फुट या इससे अधिक गहराई में ही रहती है। स्पर्म ह्वेल के सिर पर अकसर गोल-

गोल दाग पाये जाते हैं, जहाँ स्क्विड पर लगी जोंकें ह्वेल पर भी बैठ गई थीं। गहरे जल के निबिड़ अन्धकार में इन दो विशाल जल-जीवों का जो मल्ल-युद्ध हुआ करता है उसकी कल्पना ही की जा सकती है—२ हजार मन की स्पर्म ह्वेल और ३० फीट लम्बी स्क्विड जिसकी सर्प जैसी बाहों के कारण उसकी कुल लम्बाई ५० फीट तक पहुँच जाती है।

गहराई में जल का दबाव अत्यधिक बढ़ जाता है। इस भारी गहराई में चमकीले स्पंज और जेली-मछली जैसे नाजुक प्राणियों का जीवित रहना समझ के बाहर जान पड़ता है। समुद्र के स्तर पर वायु का दबाव होता है साढ़े सात सेर प्रति वर्ग इंच। जल के नीचे उतरने पर दबाव की मात्रा प्रति ३३ फुट साढ़े सात सेर बढ़ जाती है। गोताखोरी की सीमा तक दबाव की मात्रा २२ सेर प्रति वर्ग इंच तक पहुँच जाती है और इससे अधिक दबाव मानव-शरीर सहन नहीं कर सकता। परन्तु गहरे समुद्र के जीवों को किसी असुविधा का अनुभव नहीं होता क्योंकि उसके भीतरी अवयवों में वही दबाव होता है जो बाहर है। चूँकि अधिकांश जीव एक सीमित क्षेत्र के भीतर ही रहते हैं, इसलिए दबाव के परिवर्तन का उन्हें बहुत कम अनुभव होता है।

सागरीय जीवन में दबाव से सम्बन्धित सबसे अधिक अचम्भे का प्राणी है प्लैंक्टन जो सैकड़ों-हजारों फुट ऊपर-नीचे जाया करता है। ह्वेलें और सीलें भी हजारों फुट के गोते लगाती हैं; कैसे ये जीव दबाव के भारी परिवर्तनों को सहन कर लेते हैं, यह भी समझ में नहीं आता। तिस पर भी ह्वेल के शिकारियों का कहना है कि नवीन ह्वेल जब भाले से छिद जाती है तो सीधी आधे मील का गोता लगाती है और साँस के लिए तुरन्त ही समुद्र की सतह पर आ जाती है, बिना किसी थकान के।

इनके अतिरिक्त, वे मछलियाँ जिनके शरीर में वायु की थैली होती है, दबाव के परिवर्तन से बुरी प्रकार प्रभावित होती हैं। आहार का

पीछा करते-करते कभी-कभी वे उस सीमा के ऊपर पहुँच जाती हैं जिसके लिए उनका शरीर बना था। ऐसी हालत में भी वे वापस नहीं जा पातीं। ऊपरी जल के कम दबाव में उनकी थैली के भीतर वायु बढ़ती है, मछली हलकी हो जाती है और जल उसे ऊपर की ओर फेंकने लगता है। यदि इस उछाल का सामना करने में वह असफल होती है तो वह मरती हुई समुद्र की सतह पर उतराने लगती है, उसके सब अवयव फूलकर फट जाते हैं।

गुप्त भू-खण्ड

सैकड़ों जहाजों ने जो प्रतिध्वनियाँ ली हैं उनकी संख्या इतनी बढ़ गई है कि उसके हिसाब से उनका वर्गीकरण नहीं किया जा सका है। अतएव महासागर की तली की ब्यौरेवार ऊँचाई-नीचाई दिखानेवाले नकशे बनने में अभी कई वर्ष लगेंगे। तो भी गहराई का स्थूल रूप में सही पता प्रायः लग ही जाता है।

गहराई के तीन भाग हैं—महाद्वीपीय विस्तार, महाद्वीपीय ढाल और सागर की तली। महाद्वीपीय विस्तार बहुत कुछ उससे मिले हुए थल-भाग जैसा है। कुछ अत्यधिक गहरे भागों को छोड़कर शेष भाग की तली तक सूर्य का प्रकाश पहुँच जाता है। जल पर विभिन्न प्रकार के जीवित पौधे तैरते रहते हैं। सिवार घास चट्टानों से चिपकी रहती है। मैदानों में चरनेवाले मवेशियों की भाँति परिचित मछलियाँ उसमें घूमती रहती हैं। उसकी जलमग्न घाटियाँ और पहाड़ियाँ उसी ढंग पर हिम-नदी के प्रभाव से बनी हैं, जिसके दृश्य से हम उत्तरी गोलार्द्ध में परिचित हैं। भूगर्भ-शास्त्रियों का कहना है कि आज का जलमग्न महाद्वीपीय विस्तार किसी सुदूर अतीत में जल के ऊपरी भूभाग का अंग था।

महाद्वीपीय विस्तार मैदानों की भाँति क्रमशः गहरा होता जाता है, परन्तु एक सीमा पर पहुँचकर यह अनंत गहराई की ओर उतरने

लगता है, इस विस्तार की चौड़ाई तट के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है। संयुक्त राज्य अमरीका के पूर्वोत्तर तट के निकट इसकी चौड़ाई १५० मील है। प्रशान्त महासागर की ओर इसकी चौड़ाई २० मील के लगभग रहती है; दक्षिणी फ्लोरिडा के हैटरास तट के पास यह विस्तार बहुत पतला हो जाता है, कदाचित् इसलिए कि खाड़ी की धारा इससे रगड़ती हुई ही उत्तर की ओर घूमती है।

महाद्वीपीय ढाल महाद्वीप की अन्तिम सीमाओं का संकेत करते हैं। वास्तव में समुद्र यहीं से शुरू होता है। थाल की कगर जैसी गहरे समुद्र की ये दीवारें विश्व के सर्वोच्च कगार हैं। इनकी औसत ऊँचाई १२,००० फुट है और कहीं-कहीं ये कगारें ३०,००० फुट तक ऊँची हैं। जलमग्न दर्रों, ढालू टीलों और चक्करदार घाटियों से इनकी शोभा में चार चाँद लग जाते हैं। ये सब एक या अधिक मील की गहराई पर जलमग्न हैं। यदि ऐसा न होता तो इनकी गिनती संसार के सबसे अधिक दर्शनीय दृश्यों में होती। संयुक्त राज्य अमरीका के ग्रैंड कैनियन से इनकी तुलना की जा सकती है। कोई नहीं कह सकता कि ये सब कैसे बने। इनकी उत्पत्ति के विषय में जो मतभेद है, उसका समाधान अभी तक नहीं हो सका है।

आश्चर्य की बात है कि समुद्र की सबसे गहरी घाटियाँ समुद्र के केन्द्र में न होकर महाद्वीपों ही के निकट हैं। मिंडानाओ नामक सबसे गहरी खंदक फिलीपींस द्वीप के पूर्व में है और समुद्र की यह भयानक खंदक ६½ मील गहरी है। जापान के निकट टुस्कारोरा खंदक लगभग इतनी ही गहरी है।

महासागर की तली में कहीं-कहीं लम्बी जलमग्न पर्वत-श्रेणियाँ आ जाती हैं। अटलांटिक रिज नामक सबसे बड़ी श्रेणी १०,००० मील लम्बी है। यह अटलांटिक महासागर के मध्य आइसलैंड के निकट प्रारम्भ होती है और दक्षिण की ओर दोनों महाद्वीपों के बीचोंबीच चली जाती है। कहीं-कहीं कोई शिखर समुद्र के ऊपर निकल आता है।

अजोर द्वीपसमूह का पिको द्वीप इस श्रेणी का सर्वोच्च शिखर है। इसकी ऊँचाई महासागर की तली से २७,००० फुट है। इस ऊँचाई का केवल ७-८ हजार फुट भाग समुद्र के ऊपर निकला दिखाई देता है। यह श्रेणी तो दिखाई नहीं देती, परन्तु हम जानते हैं कि इसके टीले और ढलान वानस्पत्य जीवन से रहित हैं। भूमि की भाँति समुद्र में भी एक स्तर ऐसा होता है जिसके नीचे वानस्पत्य जीवन असंभव है।

क्या जलमग्न पहाड़ों को हम श्रुति-प्रसिद्ध जलमग्न महाद्वीपों से सम्बन्धित कर सकते हैं? सैकड़ों वर्ष पुरानी जलमग्न अटलांटिस सम्बन्धी श्रुति कभी-कभी अटलांटिस रिज से सम्बन्धित कर दी जाती है। इस सुन्दर कल्पना के विरुद्ध दुर्भाग्यवश यह सत्य हमारे सामने है कि यदि यह रिज कभी समुद्र के बाहर भी थी तो ऐसे अतीत में जब पृथ्वी पर मानव की सृष्टि नहीं हो पाई थी।

तो भी अन्य प्रसिद्ध कथाओं की भाँति अटलांटिस की कथा में सत्य का अंश सम्भव है, क्योंकि ब्रिटेन और योरप के मध्य आधुनिक उत्तरी सागर के नीचे ऐसी ही एक जलमग्न भूमि है। एक पीढ़ी पहले प्रसिद्ध डागर बैंक में शिकार करनेवाले मछेरों ने डेनमार्क जैसी लम्बाई-चौड़ाई के एक पठार का नक्शा बना लिया जो ६० फुट की गहराई पर है। इस पठार के फर्श से मछेरों के जालों में सड़ी वनस्पति के ढेर, पत्थर के भद्दे औजार और भूमि पर चरनेवाले चौपायों की हड्डियाँ आ गईं। जालों के इस कूड़े में वैज्ञानिक प्रागैतिहासिक काल की वनस्पतियाँ, पशु और औजार पहचान पाये।

गहरे समुद्र की तली में ऊपर पृथ्वी पर से आनेवाले मिट्टी-कूड़े के पर्त करोड़ों वर्षों से जमा होते आ रहे हैं। इतने मोटे पर्त पृथ्वी पर कहीं भी नहीं हैं। इन पर्तों में सब नदियों की लाई हुई वह मिट्टी है जो समुद्र तक पहुँची है; इनमें ज्वालामुखियों से निकली हुई राख भी है जिसे वायु में पृथ्वी का चक्कर लगाकर अन्ततः यहाँ शरण मिली; यहाँ तटवर्ती मरुभूमि से समुद्र की ओर बहती वायु के साथ उड़कर

आनेवाले बालू के कण भी हैं; बहते हुए हिम और हिमशिलाओं द्वारा लाये हुए कंकड़, पत्थर और घोंघे भी हैं; टूटते तारों द्वारा पृथ्वी पर गिरनेवाले लोहे, निकिल इत्यादि के टुकड़े भी यहाँ जमा हैं। परन्तु सबसे बड़ी मात्रा है उन असंख्य जल-जीवों के खोलों और हड्डियों की जो किसी सुन्दर अतीत काल के जल-जीवों के अवशेष हैं।

ये पर्त पृथ्वी की लम्बी कहानी के अविस्मरणीय मनोरंजक स्मारक हैं। जब हममें यथेष्ट समझ आयेगी तब हमें इनके इतिहास का पता लगेगा। सेब में छेद करनेवाले औजार के सिद्धान्त पर एक मशीन बनी है जिसकी सहायता से सागर-वैज्ञानिक इस पर्त का ७० फुट लम्बा नमूना खोद निकालने में सफल हुए हैं जिसमें पर्तों का क्रम अक्षुण्ण रहता है। ऐसा नमूना लाखों वर्ष के भूगर्भीय इतिहास का प्रतीक है।

समुद्र की तह में बारूद के गोले फोड़कर उनकी प्रतिध्वनि के आधार पर इस फर्श की मोटाई नापी जा सकती है। एक प्रतिध्वनि हमें पर्त के ऊपर से मिलती है और दूसरी सागर की वास्तविक पथरीली तली से। खुले अटलांटिक महासागर में जो नाप हाल ही में की गई है उससे पता लगता है की इन पर्तों की मोटाई २ मील से अधिक होती है।

यों समुद्र की कहानी का क्रम स्पष्ट रूप से हमारे सामने आने लगा है। कहानी जारी है क्योंकि असंख्य प्राकृतिक अथवा मानवीय करनियों के अवशेष इस अदृश्य जलमग्न फर्श पर बिछते जा रहे हैं और आधुनिक विश्व का सच्चा इतिहास वहाँ इस प्रकार इकट्ठा हो रहा है। आज से १०,००० वर्ष पश्चात् इसे कौन पढ़ेगा?

धाराएँ

महासागर की स्थायी धाराएँ अपनी प्राकृतिक भव्यता में अद्वितीय हैं। इनमें वे धाराएँ जिन्हें वायु का सहारा मिल जाता है अपना प्रवाह अन्य धाराओं के आगे ले जाती हैं। वायु-धाराओं में सबसे अधिक

स्थायित्व व्यापार-धाराओं को प्राप्त है जो पूर्वोत्तर या पूर्व-दक्षिण की ओर से भूमध्य रेखा की ओर प्रायः निरन्तर चला करती हैं। पृथ्वी स्वयं अपनी धुरी के चारों ओर घूमती रहती है जिसके परिणामस्वरूप जल और वायुधाराएँ उत्तरार्द्ध में दाहिनी ओर मुड़ जाती हैं और दक्षिणार्द्ध में बाईं ओर।

सन् १७६९ के लगभग बेंजमिन फ्रैंकलिन की निगरानी में खाड़ी धारा का पहला मानचित्र बनाया गया था। इस धारा की व्युत्पत्ति उत्तरी भूमध्यरेखीय धारा से होती है जो अफ्रीका से पश्चिम की ओर चलती है। पनामा पहुँचकर वह अटलांटिक तट के किनारे-किनारे उत्तर की ओर मुड़ती है और मेक्सिको के यूकेटन प्रायद्वीप से उसकी विशालता प्रत्यक्ष होने लगती है। वहाँ वह समुद्र के मध्य ९५ मील चौड़ी और एक मील गहरी नदी का रूप धारण कर लेती है। इस नदी में जल की गति $३\frac{१}{२}$ मील प्रति घण्टे तक पहुँचती है और मात्रा तो इतनी बड़ी होती है कि उसमें अमरीका की सबसे विशाल मिसिसिपी नदी जैसी कई सौ नदियाँ समा जायें। आजकल प्रायः सभी जहाज शक्ति-संचालित होते हैं और समुद्र पर वायु या जलधारा की विशेष परवाह नहीं करते। तो भी तट के किनारे-किनारे आने-जानेवाले जहाज इस धारा से बचने का खयाल रखते हैं। दक्षिणी फ्लोरिडा से दक्षिण की ओर जानेवाले माल या तेल के जहाज प्रायद्वीप से लगे कीज द्वीपसमूह से सटे रहते हैं जिससे उनका बचाव खाड़ी धारा से हो सके।

खाड़ी-धारा की वेग-शक्ति का सम्भवतः कारण यह है कि वास्तव में वहाँ उसका जल ऊपर से नीचे की ओर चलता है। निरन्तर और तीव्र पूर्वी वायु-धाराएँ यूकेटन और मेक्सिको की खाड़ियों में सतह का इतना जल ढेर कर देती हैं कि खुले अटलांटिक महासागर की अपेक्षा यहाँ समुद्र का स्तर ऊँचा हो जाता है।

खाड़ी धारा के भीतर भी पृथ्वी के अपनी धुरी के चारों ओर घूमते रहने के कारण धारा दाहिनी ओर कुछ ऊँची हो जाती है। यह समझ

लेना आवश्यक है कि आम तौर पर यद्यपि कहा यही जाता है कि जल का धरातल सब जगह एक समान रहता है पर वास्तव में सामुद्रिक जल का स्तर सब जगह एक जैसा नहीं रहता।

हेटरास अन्तरीप (उत्तरी करोलिना) के आगे यह धारा कुछ पतली होकर उत्तर-पूर्व की ओर मँडराती हुई स्थिर जलधि के मध्य आगे बढ़ती है। ग्रैंड बैंक्स तक पहुँचने पर उसका लब्राडर धारा से संगम निकट आ जाता है। ध्रुव प्रदेशीय ठंडी धारा का रंग गहरा हरा होता है और खाड़ी धारा का उष्ण जल नील वर्ण का होता है, जिस कारण दोनों धाराएँ तुरन्त पहचान ली जाती हैं। शरद् ऋतु में तापमान का परिवर्तन संगम पर इतना तीव्र होता है कि जब कोई जहाज खाड़ी धारा में घुसता है तो उसके अगले भाग में वायु का तापमान पिछले भाग के तापमान से २०° अधिक हो सकता है। अमरीका के पूर्वी तट पर बने कुछ सैर के स्थानों पर हमें समुद्र का जल बहुत ठंडा मिलता है। कारण यह है कि ध्रुव प्रदेशीय धारा हमारे तट और खाड़ी धारा के बीच में आ जाती है।

प्रशान्त महासागर की उत्तरी भूमध्यरेखीय धारा पृथ्वी की सबसे लम्बी पश्चिमी धारा है, क्योंकि पनामा से फिलीपींस द्वीप-समूह तक ६,००० मील की यात्रा में उसे किसी बाधा का सामना नहीं करना पड़ता। वहाँ पहुँचकर उसका अधिकांश उत्तर की दिशा में मुड़ जाता है। और उसके इस भाग को जापान-धारा कहते हैं। यों यह धारा एशिया में खाड़ी धारा के जोड़ की हो जाती है। जापान-धारा पूर्वी एशिया के महाद्वीपीय विस्तार के समकक्ष उत्तर की ओर बढ़ती जाती है और उसकी दिशा तभी बदलती है जब ओखट्स्क और बेरिंग सागर होती हुई ध्रुव प्रदेशीय शीत धारा उसके मुकाबले पर आ जाती है। अब वह उत्तरी अमरीका के तट की ओर बढ़ती है, जहाँ उसका जल अल्यूशियन और अलास्का तटों के जल से मिलकर बहुत कुछ ठंडा हो जाता है। जब वह दक्षिण की ओर कैलिफोर्निया तट तक पहुँचती है तब

तक वह ठंडी धारा हो जाती है और अमरीका के पश्चिमी तट के जलवायु की उष्णता इस धारा के प्रभाव से थोड़ी-बहुत कम हो जाती है।

हंबोल्ट धारा दक्षिणी ध्रुव से उत्तर की ओर दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तट के किनारे-किनारे चलती है। पेंग्विन नामक पक्षी यों तो ठंडे देशों में ही पाया जाता है, परन्तु हम्बोल्ट धारा के प्रभाव से भूमध्य रेखा तक इतनी ठंडक पहुँचती है कि यह पक्षी इस रेखा के निकट गलापगोस द्वीप-समूह में भी पाया जाता है। धारा से लाये हुए ठण्डे और खनिजों से सम्पन्न जल में जलजीवों का अतुलनीय आधिक्य है। लाखों अबाबीलें इन जलजीवों से अपने पेट भरकर तटवर्ती पहाड़ियों और द्वीपों पर जो श्वेत विष्ठा जमा करती हैं उसके सूखने पर 'गुआनो' नाम की खाद बनती है जिसकी गणना संसार की प्रमुखतम महत्वपूर्ण खादों में की जाती है।

गलापगोस द्वीप-समूह के निकट हम्बोल्ट धारा के ठंडे हरे जल और भूमध्यरेखीय नीले उष्ण जल के मिश्रण के आश्चर्यजनक दृश्य देखने में आते हैं। लहरें एक-दूसरे से मिलती हैं और फेनिल धाराएँ बनती हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो समुद्र के अन्तस्थल में दो विभिन्न तापमान की धाराओं का द्वन्द्व चल रहा हो। आहें और फुफकारें जैसी सुनाई देती हैं, पानी उबलता जैसा दिखता है और दूरस्थ लहरों की चट्टानों से टक्कर लेने जैसी ध्वनि सुनाई देती है, क्योंकि वहाँ जल ऊपर-नीचे चला करता है। जो जल-जीव समुद्र के गहरे भाग में रहते हैं, वे जल के साथ ऊपर आ जाते हैं जहाँ उनका यहाँ रहनेवाले जल-जीवों से घोर संघर्ष होता है। कई स्थानों पर निरन्तर नीचे से ऊपर यह जल-यात्रा होती रहती है।

संयुक्त राज्य अमरीका के पश्चिमी तट पर सार्डीन मछली का अत्यन्त लाभप्रद व्यवसाय जल में होनेवाली इस प्राकृतिक उथल-पुथल का ही परिणाम है।

संचरणशील ज्वार

ज्वार की लहरों की अपेक्षा कोई और शक्ति समुद्र को इतना प्रभावित नहीं करती। इनसे प्रभावित जल की मात्रा अत्यधिक विशाल है। उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट पर पसामाकोडी नामक छोटी-सी खाड़ी में प्रतिदिन दो बार ज्वार की लहरें ५० अरब मन जल ले जाती हैं। फण्डी की खाड़ी में इस मात्रा का ५० गुना जल पहुँचता है, और मानव की आविष्कृत कोई शक्ति जल के इस नियमानुकूल चढ़ाव और उतार का नियन्त्रण नहीं कर सकती। अटलांटिक महासागर का 'क्वीन मेरी' नामक विशाल मुसाफिरी जहाज भी न्यूयार्क बन्दरगाह के भीतर आने के लिए ज्वार के शान्त होने की प्रतीक्षा किया करता है, नहीं तो ज्वार की धारा उसे घाट से इतने जोर के साथ लड़ा दे कि जहाज ही टूट जाये।

चाँद और सूर्य के आकर्षण से समुद्र में ज्वार-धारा उत्पन्न होती है। मास में दो बार अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्वार की लहर सबसे अधिक ऊँची उठती है। इन दिनों सूर्य, चाँद और पृथ्वी एक ही कतार में होते हैं, अतएव सूर्य तथा चन्द्रमा की आकर्षण-शक्ति मिलकर बहुत अधिक हो जाती है। मास में दो बार अष्टमी के निकट सूर्य, चाँद और पृथ्वी एक त्रिकोण-सा बनाते हैं। तब ज्वार-धारा बहुत ही नीची रह जाती है क्योंकि सूर्य और चाँद के आकर्षण एक-दूसरे के विरुद्ध होते हैं; इसे भाटा कहते हैं।

संसार के सबसे ऊँचे ज्वार फंडी की खाड़ी में आते हैं जहाँ सर्वोच्च ज्वार-धारा ५० फुट की ऊँचाई तक जाती है। संसार में बिखरे अन्य स्थानों पर ज्वार-धारा की ऊंचाई ३० फुट के ऊपर जाती है, जैसे अर्जेंटाइना में पोर्टो गलेगोस, अलास्का में कुक इनलेट और फ्रांस में सेंट मालो खाड़ी। परन्तु कई अन्य जगहों में, जैसे टहिटी में, सर्वोच्च ज्वार की ऊँचाई एक फुट और कुछ इंच के निकट रहती है। पनामा नहर के पूर्वी

सिरे पर ज्वार-धारा दो फुट के ऊपर नहीं जाती; परन्तु प्रशान्त महा-सागर के सिरे पर, चालीस मील ही दूर, ज्वार लहर १२ से १६ फुट तक जाती है।

पृथ्वी की बाल्यावस्था में ज्वार-धाराएँ बहुत ऊँची और शक्ति-शालिनी होती थीं, क्योंकि तब सूर्य और चाँद कहीं अधिक निकट थे। ज्वार की लहर की तब अत्यधिक विशालता और प्रचंडता होती होगी और किसी भी प्राणी का तट पर जीवित बच जाना असम्भव हो जाता होगा।

लाखों वर्षों के बाद चाँद दूर हो गया है और ज्वार-लहर की रगड़ ने पृथ्वी की चक्र-गति भी मन्द कर दी है। किसी समय अपनी धुरी के चारों ओर एक चक्र पूरा करने में उसे कदाचित् चार घण्टे ही लगते थे। पृथ्वी के घूमने की गति कभी इतनी मंद हो जायेगी कि हमारा दिन अब से ५० गुना लम्बा हो जायेगा। इराक में बाबिल का उत्कर्ष आज से लगभग ४,००० वर्ष पहले था। तब से आज का दिन कई सेकंड लम्बा हो गया माना जाता है।

ज्वार के असाधारण परिणामों में कदाचित् सबसे अधिक प्रसिद्ध 'बोर' हैं। 'बोर' का जन्म तब होता है जब ज्वार की ऊँचाई बहुत हो, साथ ही नदी के मुहाने पर बालू का टीला-जैसा कोई बंध हो। फलतः ज्वार-धारा रुकने पर सिमटती है और ऊँची होकर भीतर की ओर तेजी से घुसती है। दक्षिणी अमरीका की अमेजन नदी में 'बोर' नदी के भीतर २०० मील तक घुसता चला जाता है और एक ही समय एक-दूसरे के पीछे पाँच ऊँची लहरें जाती दिखाई देती हैं।

चीन सागर में गिरनेवाली जीन्तांग नदी में यातायात 'बोर' से ही नियन्त्रित होता है, क्योंकि यहाँ का 'बोर' संसार में सबसे अधिक बड़ा और खतरनाक होता है। महीने के अधिकांश में वह आठ से ग्यारह फुट तक ऊँची लहर के रूप में १४-१५ मील प्रति घण्टे की रफ्तार से फेनिल जल-प्रपात की भाँति अपने को बिगाड़ता-बनाता आगे बढ़ता है।

कभी-कभी आगे बढ़ती लहर का शिखर नदी के २५ फुट ऊपर तक पहुँच जाता है।

सीप, घोंघे जैसे असंख्य पंगु जीवों का अस्तित्व ज्वार की लहर पर अवलम्बित रहता है, क्योंकि इसके द्वारा उन्हें अपना भोजन मिलता है। ज्वार-भाटे की सीमाओं के भीतर रहनेवाले जीवों ने अपने को इस प्राकृतिक परिवर्तन के अनुकूल बना लिया है, क्योंकि जहाँ जल के अभाव में इन्हें प्यास से मरने का खतरा है वहाँ इनका जलधारा में बह जाना भी निश्चित है; जहाँ थल के जीव उन्हें खा सकते हैं, तो जल-जीवों की भी उन तक पहुँच है; और उनके नाजुक अवयव उन तूफानों की लहरें भी सहन कर जाते हैं जो कड़े-से-कड़े पत्थरों को भी तोड़ डालती हैं।

कुछ जलजात जीवों की प्रजनन-लीला चांद्र मास और सम्बन्धित ज्वार-भाटों के अनुकूल होती है। उत्तरी अफ्रीका के तट पर समुद्र में एक कीट होता है जो पूर्णिमा की रात ही को प्रजनन-कर्म करता है और इन उष्ण-प्रधान समुद्र-तटों पर कुछ कीट होते हैं जिनके अंडे-बच्चे ज्वार-भाटे के तिथि-क्रम के इतने अनुकूल होते हैं कि वैज्ञानिक पर्यवेक्षक इनका कर्म-क्रम देखकर महीना, दिन और दिन का समय भी बता सकते हैं।

मनुष्य के हाथ की नाप की ग्रुनियन नामक एक चमकीली छोटी-सी मछली होती है जिसने अपनी जीवन-चर्या ज्वार-भाटे के क्रम के बिलकुल अनुकूल बना ली है। मार्च से अगस्त तक की पूर्णिमा के कुछ ही पश्चात् कैलिफोर्निया के तटों पर लहरों में ये मछलियाँ दिखाई देने लगती हैं। वे भाटे की लहर के साथ आती हैं और एक क्षण तक गीली बालू पर चमकती पड़ी रहती हैं, फिर उछलकर अगली लहर में पहुँच-कर समुद्र की ओर चली जाती हैं।

अगली और पिछली लहर के बीच नर और मादा मछली को सम्मिलन का अवसर मिलता है और इतने ही समय के भीतर गीली

बालू में वे अपने अण्डे दाबकर चली जाती हैं। भाटे के कारण लहरों की सीमा पीछे हटती जाती है। जिस कारण गीली बालू में दबे अण्डे सुरक्षित रहते हैं। एक पक्ष तक इन अण्डों को गीली और गरम बालू के नीचे संसेचित होने का अवसर मिलता है। जब दूज के ज्वार की लहरें उन पर आती हैं तब ठंडे जल का स्पर्श पाकर इन अण्डों में से बच्चे निकल आते हैं और लहरों के साथ अपनी पहली समुद्र-यात्रा पर चले जाते हैं।

उत्तरी ब्रिटैनी (फ्रांस) और निकटवर्ती चैनल द्वीप-समूह के रेतीले समुद्र-तटों पर हजारों की संख्या में एक कीट का जीवन-क्षेत्र है जिसे कनवोलुटा रोस्कोफेंसिस कहते हैं। इस कीट की ज्वार-क्रम से सम्बन्धित जीवन-लीला स्मरण रखने योग्य है। कनवोलुटा ने एक प्रकार की हरी काई से घनिष्ठ समझौता कर रखा है, जिसके अवयव उसके शरीर के भीतर रहकर उसे भोज्य देते रहते हैं। वनस्पति को अपनी प्राण-रक्षा के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता रहती है। अतएव भाटा उतर जाने पर कनवोलुटा बालू से निकलकर धूप में आ जाता है ताकि उसके भीतर वानस्पत्य अंश आवश्यक भोज्य बना सके। जब ज्वार लौट आता है तो कीट बह जाने से बचने के लिए अपने को फिर बालू के नीचे दबा लेता है। इस प्रकार उसकी जीवनचर्या ज्वार-भाटे के क्रम पर अवलम्बित रहती है—भाटे के पश्चात् धूप में, ज्वार आने पर बालू के नीचे।

कनवोलुटा के सम्बन्ध में सबसे अधिक स्मरणीय बात यह है कि कभी-कभी उनकी बस्ती किसी जल-जीव प्रदर्शनी में भेज दी जाती है। वहाँ ज्वार-भाटे तो आते नहीं। परन्तु दिन में दो बार कनवोलुटा जल-पात्र के पेंदे में पड़ी बालू से उठकर सूर्य के प्रकाश में आ जाता है और इतनी ही बार वह बालू में उतर जाता है। उसके मस्तिष्क नहीं होता इसलिए उसके स्मरण-शक्ति भी नहीं होती। परन्तु उसके छोटे हरे शरीर के प्रत्येक अवयव में सामुद्रिक ज्वार-भाटे का कालक्रम

समाया हुआ है, जिसका निर्वाह स्वभावत: वह इस अपरिचित क्षेत्र में भी करता रहता है।

पृथ्वी का ताप-वितरक

यदि महासागर न होते तो वायु में हमें अत्यधिक गरमी, सरदी और खुश्की की अकथनीय कठिनाइयाँ भोगनी पड़तीं। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से ढका है और गरमी को सोख लेने तथा निकालने में जल इस विश्व का सर्वोत्तम तत्व है, वह सूर्यशक्ति का प्राकृतिक बचत बैंक है, जिस कारण ऋतु-परिवर्तन की विषमताओं से हमारी बहुत-कुछ रक्षा होती रहती है।

सागरीय धाराओं के माध्यम से गरमी-सरदी का वितरण हजारों मीलों तक होता रहता है। पृथ्वी के दक्षिणार्द्ध के व्यापारिक वायु-क्षेत्र से गरम जल की जो धारा चलने लगती है उसका क्रम डेढ़ वर्ष में पूरी होनेवाली ७,००० मील से अधिक लम्बी यात्रा के मार्ग में पहचाना जा सकता है। सूर्य की गरमी संसार के सब भागों पर समान मात्रा में नहीं पहुँचती, महासागर गर्मी की असमानता की पूर्ति करता है।

समुद्र की ताप-वितरण शक्ति से कोई स्थान समुद्र का पड़ोसी होकर उतना प्रभावित नहीं होता जितना जल-धाराओं और हवाओं की दिशा से। उत्तरी अमरीका का पूर्वी तट समुद्र से किंचित् ही प्रभावित हो पाता है, क्योंकि वहाँ पश्चिमी हवाएँ चला करती हैं। इसके मुकाबले प्रशांत महासागरीय तट उन हवाओं के मार्ग में पड़ता है जो हजारों मील चौड़े महासागर की नमी लिये वहाँ पहुँचती हैं। प्रशांत महासागर से प्राप्त नमी के कारण ब्रिटिश कोलम्बिया, वाशिंगटन और आरेगन राज्यों का मौसम समशीतोष्ण हो जाता है। परन्तु पहाड़ी श्रेणियों की बाधा के कारण यह प्रभाव तटवर्ती पट्टी तक ही सीमित रह जाता है।

अटलांटिक महासागर से चलनेवाली हवाओं को पुरानी दुनिया

का योरपीय तट बिलकुल खुला मिलता है। तट पर पहाड़ी बाधाओं के न होने के कारण हवाएँ योरप के भीतर सैकड़ों मील तक चली जाती हैं। खाड़ी-धारा भी योरपीय तटों तक पहुँचती है। अतएव योरपीय तटों का जलवायु इस धारा की प्रबलता और उसके तापक्रम से भी प्रभावित होता है। यद्यपि लम्बी यात्रा के अन्त में इस धारा की प्रबलता और तापक्रम में बहुत कुछ क्षीणता आ जाती है। भविष्य में चलकर किसी समय योरपीय ऋतु-परिवर्तन के दीर्घकालीन संकेत कुछ अंश में सामुद्रिक तापक्रम की माप पर आधारित होंगे। उत्तरी अटलांटिक महासागर की उपमा एक बड़े स्नानागार से दी जाती है जिसमें एक गरम पानी का और दो ठंडे पानी के नल लगे हैं। खाड़ी धारा है गरम पानी का नल और पूर्वी ग्रीनलैंड तथा लब्राडर धाराएँ ठंडे पानी के नल हैं। ठंडे नलों में जल की मात्रा बदलती रहती है। गरम नल में जल की मात्रा भी बदलती रहती है और उसका तापक्रम भी। इन तीनों नलों के मिश्रण से पूर्वी अटलांटिक महासागर की सतह का तापक्रम निर्धारित होता है। यदि शरद् ऋतु में यह तापक्रम कुछ भी बढ़ जाता है तो पश्चिमोत्तर योरप में शीघ्र हिम गलने लगने का संकेत मिलता है। जिस कारण वासंती जुताई कुछ पहले संभव हो जाती है और बढ़िया फसल की आशा होने लगती है।

इस प्रकार महासागर संसार के दैनिक और वार्षिक जलवायु का नियमन किया करता है। पृथ्वी के लम्बे इतिहास में युगीन ऋतु-परिवर्तन भी क्या महासागर से प्रभावित हुए हैं? प्रसिद्ध स्वीडिश विशेषज्ञ आटो पेटरसन ने इस वैज्ञानिक कल्पना का प्रतिपादन किया है कि महासागर से पृथ्वी के युगीन-ऋतु-परिवर्तन भी प्रभावित हुए हैं।

इस वैज्ञानिक ने सिद्ध किया है कि साधारण और विषम जलवायु के युग एक-दूसरे के बाद ज्वार-भाटे के चक्र के साथ आते रहते हैं। प्रति १८ शतियों के पश्चात् सूर्य और चन्द्रमा उस स्थिति में आ जाते हैं जिसमें वे समुद्र को अत्यधिक आकर्षित करते हैं। ऐतिहासिक काल

में विशालतम ज्वार-लहरों का समय सन् १४३३ के लगभग आया। इस वर्ष के पहले और पश्चात् एक शताब्दी तक जब ज्वारों का अत्यधिक जोर रहा, तो घटनाएँ भी आश्चर्यजनक और असाधारण रूप में प्रत्यक्ष हुईं।

उत्तरी अटलाण्टिक महासागर का अधिकांश भाग ध्रुव प्रदेशीय हिम से ढक गया। उत्तरी और बाल्टिक सागरों के तट विकराल आँधियों और बाढ़ों से नष्ट हुए और शरद् ऋतु अत्यधिक ठण्डी हुई। आइसलैण्ड के प्राचीन लेखों में वर्णित है कि चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शरद् ऋतु में इतनी सरदी पड़ती थी कि भेड़िये नार्वे से डेनमार्क तक चले जाते थे। पूरा बाल्टिक सागर जम गया था। दक्षिणी योरप में असाधारण आँधियाँ चलीं, फसलें नष्ट हुईं, योरपवासी दुर्भिक्ष और रोग से त्रस्त हुए।

लगभग सन् ५५० ई० निम्नतम ज्वार का वर्ष रहा। और भविष्य में यही कैफ़ियत सन् २४०० के लगभग होनी है। उपर्युक्त वर्ष के पहले और बाद की शताब्दियों में संसार को सुखकर ऋतु का सौभाग्य प्राप्त हुआ। योरपीय तट पर और आइसलैण्ड के चारों ओर के सागर पर हिम नाममात्र को ही दिखाई देता रहा। प्राचीन गाथाओं के अनुसार ग्रीनलैण्ड में फल खूब पैदा होते थे और मवेशियों की संख्या बहुत अधिक थी। नार्वे में बस्तियों की पहुँच वहाँ तक थी जहाँ तक अब हिमनद पहुँचते हैं और खुदाई से प्रत्यक्ष होता है कि उस समय नार्वे में बसनेवाले लोग शीत से अपेक्षाकृत बहुत कम त्रस्त थे।

परन्तु यह सुखकर जलवायु १३वीं शताब्दी से बिगड़ने लगा और १५वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक ऋतु के अधिकाधिक बिगड़ने से योरप को असाधारण मुसीबतों का सामना करना पड़ा और ग्रीनलैण्ड की बस्तियाँ तो समाप्त ही हो गईं।

इन प्राचीन उल्लेखों से पेटरसन की यह धारणा दृढ़ हुई कि ज्वार के कारण विशाल निचली धाराओं ने आगे बढ़कर ध्रुव सागर के गहरे

जल में गड़बड़ कर दी। ऊँचे ज्वार की शताब्दियों में अटलाण्टिक महासागर के गरम जल की असाधारण विशाल मात्रा ध्रुव सागर तक हिम के नीचे-नीचे पहुँच गई। तब तब हजारों वर्गमील तक फैला हुआ हिम निचली गरमी के प्रभाव से थोड़ा-बहुत पिघला और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। इस प्रकार बर्फ की शिलाएँ असाधारण मात्रा में अटलाण्टिक महासागर में दक्षिण की ओर बहने लगीं। इससे समुद्र की सतह पर चलनेवाली धाराएँ प्रभावित हुई और तदनुकूल वर्षा तथा वायु की दिशा और तापक्रम में भी परिवर्तन हुए। न्यूफ़ाउण्डलैण्ड के दक्षिण में हिम-शिलाओं ने खाड़ी-धारा से टक्कर ली और उसे पूर्व की ओर कुछ और मोड़ दिया, जिस कारण ग्रीनलैण्ड, आइसलैण्ड, स्पिट्ज़बर्जन और उत्तरी योरप उसके उष्ण जल के प्रभाव से वंचित हो गए।

ध्रुव प्रदेश की ये घातक दुर्व्यवस्थाएँ १८ शताब्दियों पश्चात् ही आती हैं; परन्तु पेटरसन के मतानुसार ऋतु-परिवर्तन के साधारण प्रदर्शन ९, १८ या ३६ वर्ष के अन्तर से भी होते रहते हैं। ये परिवर्तन भी ज्वार-चक्र के संक्षिप्त और साधारण परिवर्तनों के अनुकूल ही होते हैं।

उदाहरणार्थ, सन् १९०३ में पृथ्वी, चाँद और सूर्य ऐसी स्थिति में पहुँचे कि ज्वार का आकर्षण सर्वोच्च सीमा से कुछ ही कम रहा। फलतः ध्रुव प्रदेश में स्मरणीय हिम-विस्फोट हुए। स्कैंडिनेविया के मछेरों को काड, हेरिंग और अन्य मछलियाँ अपने जलक्षेत्र में नहीं मिलीं। बेरेंट्स सागर का अधिकांश मई मास तक हिम की मोटी पर्त से ढका रहा। सन् १९१२ में ग्रहों की प्रायः वैसी ही स्थिति रही, जिस कारण हिम का आधिक्य रहा और 'टाइटानिक' नामक जहाज हिमशिला से टक्कर खाकर नष्ट हो गया।

अपने ही जीवनकाल में हमने आश्चर्यजनक ऋतु-परिवर्तन देखे हैं और इसे समझने के लिए हमें आटो पेटरसन के विचारों के अनुसरण

की इच्छा होती है। लगभग सन् १६०० से ध्रुव प्रदेश के जलवायु में परिवर्तन होना प्रारम्भ हुआ है। सन् १६३० के लगभग यह परिवर्तन आश्चर्यजनक रूप में प्रत्यक्ष होने लगा और अब इस परिवर्तन का प्रभाव ध्रुव प्रदेश के दक्षिणी और समशीतोष्ण भागों तक पहुँचने लगा है। संसार के हिमानी-शिखर की प्रगति उष्णता की ओर है।

सन् १६४० में योरप और एशिया का पूरा उत्तरी तट ग्रीष्म ऋतु में हिम से पहले की अपेक्षा कहीं अधिक मुक्त रहा। इस शताब्दी के पाँचवे दशक में पश्चिमी स्पिट्जबर्जन से कोयले की लदाई सात महीने तक होती रही, जब कि शताब्दी के प्रारम्भ में यह द्वीप हिम से तीन महीने ही मुक्त रह पाता था। सन् १६२४ से १६४४ तक ध्रुव सागर के रूसी भाग में हिम-शिलाओं का क्षेत्र लगभग ४ लाख वर्गमील घट गया।

सुदूर उत्तरी प्रदेशों में पहली बार बहुत-से ऐसे नये पक्षी दिखाई देने लगे हैं, जिनका पहले कोई उल्लेख नहीं मिलता। ग्रीनलैंड के दक्षिण से जो बहुत-से पक्षी अब ग्रीनलैंड पहुँचने लगे हैं उनमें वे नाम भी शामिल हैं जो अँग्रेजी में क्लिफ स्वालो, बाल्टीमोर ओरियल और कनाडा में वार्बलर कहलाते हैं। आइसलैंड तक वे पक्षी पहुँचने लगे हैं जिनका पहले वहाँ के निवासियों को पता न था। इनमें ये पक्षी भी शामिल हैं जिनके अँग्रेजी नाम हैं स्काइलार्क, स्कारलेट ग्रासबीक और श्रश।

सन् १६१२ में जब काड मछली पहली बार ग्रीनलैंड के तट पर दिखाई दी तो उस समय वहाँ के एस्किमो और डेन निवासी इससे परिचित न थे। सन् १६३० तक यह मछली उनका मुख्य आहार बन गई और उसके तेल से उनके चूल्हे तथा दीपक जलने लगे। आइसलैंड के मछेरों का व्यवसाय अत्यधिक उन्नति पर है और उनके जहाज अब बेरेंट्स सागर तक पहुँचने लगे हैं। इस क्षेत्र से उन्हें प्रतिवर्ष २ अरब पौंड तो केवल काड मछलियाँ ही मिलने लगी हैं। संसार के किसी भी

जलक्षेत्र से कभी एक ही मेल की मछली इतनी अधिक नहीं पकड़ी गई थी।

ध्रुव प्रदेश और उससे लगे भागों में शीत के कम होने पर पौधों को उगने और बढ़ने का अधिक समय मिलने लगा है, जिस कारण वार्षिक फ़सल से उपज बढ़ने लगी है। नार्वे में अच्छी फ़सलें नियमानुकूल प्रतिवर्ष मिलने लगी हैं। कदाचित् ही किसी वर्ष में ऋतु बोआई के प्रतिकूल होती हो। उत्तरी स्कैंडिनेविया में अब पेड़ों की सीमा पहले से कहीं ऊपर पहुँच गई है।

ज्वारों के कालचक्र में वर्तमान स्थिति का हिसाब लगाना बड़ा रोचक विषय है। मध्य-युग के अन्त में बड़े ज्वारों के साथ हिमपात, आँधियों और बाढ़ों की जो मुसीबतें हमारे पूर्वजों पर आईं, उन्हें बीते पाँच शताब्दियाँ हो गईं। मध्य-युग के प्रारम्भ में ज्वार निर्बलतम रहे, जिस कारण उस समय के हमारे पूर्वजों को सुखकर जलवायु का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उतने ही निर्बल ज्वारों का जमाना आज से ४०० वर्ष बाद आनेवाला है। इस कारण हमारी प्रगति सुखकर जलवायु की ओर है, ज्वार की शक्ति में उतार-चढ़ाव होता रहेगा परन्तु प्रगति पृथ्वी की उष्णता की ही दिशा में है।

स्वतंत्रता का संरक्षक

(जस्टिस ओलिवर वेंडल होम्स की जीवनी)
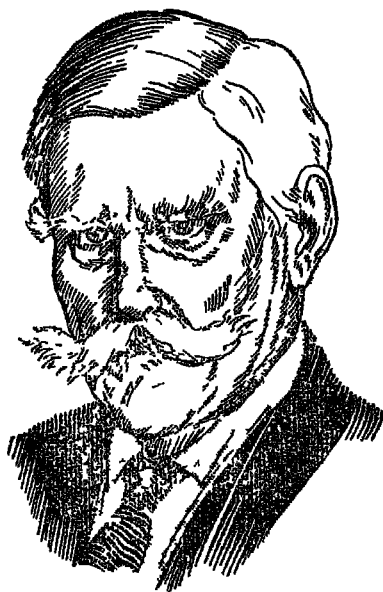
(कैथरीन ड्रिंकर बोवेन की पुस्तक 'यांकी फ्राम ओलम्पस' का सार)

जस्टिस होम्स की जीवनी अमरीका के एक ऐसे गौरवशाली सपूत की कहानी है, जिसका पूरा जीवनकाल युद्ध और शान्ति की महत्त्वपूर्ण घटनाओं से परिपूर्ण रहा। इस जीवनी में अमरीका के सुप्रीम कोर्ट का भी अत्यन्त सजीव चित्रण मिलता है।

स्वतन्त्रता का संरक्षक

बोस्टन नगर में १५ जून, १८४० को कुमारी अमेलिया जैक्सन का डॉ० ओलिवर वेंडल होम्स से शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। उस समय डॉ० होम्स ३० वर्ष के थे और उनकी प्रसिद्धि डाक्टर और शिक्षक की हैसियत से तो थी ही, बोस्टन के कवियों में भी उन्हें ऊँचा पद मिल चुका था। सरकार ने दस वर्ष पहले कई युद्धों के विजेता युद्ध-पोत 'कांस्टीच्यूशन' को नष्ट करने की सूचना प्रकाशित की थी, क्योंकि यह बहुत पुराना हो गया था। इस पर सरकार से क्रुद्ध होकर उन्होंने एक कविता प्रकाशित की थी जिसका राष्ट्र भर में असीम स्वागत हुआ था। कविता के कुछ अंशों का भावार्थ इस प्रकार है :

पताका बहुत दिनों तक फहराती रही, उसे आकाश में फहराते देखकर न जाने कितनी आँखें चमक उठती थीं। अब इस जल-पोत की जीर्ण-शीर्ण पताका फाड़कर फेंक दो।

क्यों न उसका जीर्ण ढाँचा लहरों में ही डुबो दिया जाये। उसकी गर्जना विशाल सागर को कम्पित कर चुकी है; क्यों न वहीं उसकी समाधि हो। मस्तूल पर उसकी पावन पताका ठोंक दो, सभी पालों को खोलकर उसे सागर के बिजली, आँधी, और तूफान के देवताओं को समर्पित कर दो !

जब बोस्टन के 'एडवर्टाइजर' नामक पत्र में 'ओल्ड आयर्नसाइड्स' के शीर्षक से उपर्युक्त कविता प्रकाशित हुई और जनमत 'कांस्टीच्यूशन'

के नष्ट किये जाने के खिलाफ भड़क उठा, तो घबराकर सरकार ने आदेश दे दिया कि जहाज को सुरक्षित रखा जाये।

अमेलिया के पिता न्यायाधीश जैक्सन ने नव-दम्पति को मान्टगोमरी प्लेस में एक घर दहेज में दिया था। विवाह के पश्चात् दोनों वहीं जा बसे। पातिव्रत धर्म के निर्वाह में अमेलिया होम्स सदैव ही आदर्श रूप में सजग रही, विवाह के ८ महीने २८ दिन पश्चात् ही डॉ० होम्स ने अपने पुत्र ओलिवर वेंडल होम्स के जन्म की सूचना अपने मित्रों को दी।

वेंडल का बाल्यकाल सभी बच्चों जैसा रहा; वह बहुत ही स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट और चंचल था। बोस्टन की शरद् में हिमवर्षा हुआ करती है। अतएव श्री डिक्सवेल के लैटिन स्कूल में शरद् के तीसरे पहर छुट्टी की घण्टी बजते ही बालक वेंडल अपने सहपाठियों के साथ हिम पर स्केटिंग करने के लिए भाग निकलता। यदि गहरी हिम जम जाती तो बीकन पहाड़ी के शिखर तक अपनी स्लेज घसीटकर चढ़ा ले जाता और बोस्टन कामन से फिसलते हुए समुद्र-तट तक पहुँच जाता।

पिट्सफील्ड के निकट बर्कशायर पहाड़ियों में इनका पारिवारिक घर था जहाँ वेंडल गर्मी की छुट्टियाँ अपने छोटे भाई नेड या बहन अमेलिया के साथ खेल-कूद में बिताता या घर के सामने लगे चीड़ के पेड़ पर चढ़कर एकान्त में अपनी कोई प्रिय पुस्तक पढ़ता रहता। मि० लांगफेलो और मि० नथेनियल हाथर्न उनके पड़ोसी ही थे।

● ● ●

वेंडल के ददिहाल और ननिहाल के सभी लोगों ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त की थी, अतएव यह पहले से ही निश्चित था कि वेंडल भी हारवर्ड के विद्यार्थी होंगे।

विश्वविद्यालय में उस समय विद्यार्थियों की संख्या लगभग ४०० थी। सभी विषय अनिवार्य थे। प्रातःकाल छः बजे लकड़ी और पानी की बाल्टी लेकर नौकर उनका द्वार खटखटाता था और रात को नौ

बजे सोने की घण्टी बजती थी। इतने समय के भीतर कोई घण्टा वेंडल के लिए फुरसत का न था। पुराने ढंग की पढ़ाई रटाई पर ही आधारित थी। वही ढंग इस विश्वविद्यालय का भी था। पाठ्य-पुस्तक रटकर ही परीक्षा में सफलता सम्भव होती थी। पाठ्य-पुस्तक की या शिक्षक की किसी बात पर शंका का समाधान करने का अवसर किसी विद्यार्थी को प्राप्त न था।

विद्यार्थियों पर अनुशासन वैसा ही था जैसा उन पाठशालाओं में होता था, जहाँ विद्यार्थियों के रहने का भी प्रबन्ध रहता था। अपने कमरे की खिड़कियों से चिल्लाना मना था। इकट्ठा होना भी मना था। कॉलेज की सीमा के भीतर गाली बकने पर विद्यार्थी दंडित होते थे। बर्फ के गोले फेंकना या मित्रों से हाथापाई करना भी मना था।

हर विद्यार्थी का बहुत-सा समय अपने कमरे को गरम रखने के प्रयत्न में खराब होता था। जब अत्यधिक ठंड होती थी तो विद्यार्थी चूल्हे में तोप का गोला गरम करके एक बर्तन में रख देते थे, और उसकी लाली से गर्म वायु बहुत प्रिय हो जाती थी। विद्यार्थियों को पता लग गया था कि बर्फ की तह बाहरी शीत को कमरे के भीतर आने से रोकती है। इस कारण वे खिड़कियों के बाहरी चौखटों को पानी से तर कर देते थे जिससे शीत में उन पर बर्फ की तह जम जाती थी, और वह शीत को कमरे के भीतर आने से भली प्रकार रोक लेती थी।

तो भी वेंडल को कॉलेज की जीवन-चर्या बहुत-कुछ पसन्द आई। बहुधा हेस्टी पुडिंग क्लब के सहयोगी सदस्यों के साथ हिम से ढके फ्रेश पांड पर स्केटिंग होती थी। इसके बाद ढेरों बियर पी जाती थी और सीपों का मांस खाया जाता था। लैटिन स्कूल में फैनी डिक्सवेल पढ़ाती थीं। तबीयत आने पर चाय के लिए टहलते हुए गार्डन स्ट्रीट पर वह उनके पास चले जाते थे। 'आटोक्रैट आफ दि ब्रेकफास्ट टेबिल' नामक उपन्यास के कारण इस जीवन-चर्या में विघ्न पड़ गया।

जेम्स रसेल लावेल की 'अटलांटिक मन्थली' नामक नई पत्रिका में स्थानीय घटनाओं पर मधुर व्यंग्य सहित अब डॉ० ओलिवर होम्स की लेख-माला निकलने लगी थी। वेंडल के पिता ही 'आटोक्रैट' के विधाता थे और लेखक तथा उसके परिवार से सम्बन्धित बातों में ही लेखक को अपनी पुस्तक की सामग्री मिलती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि वेंडल घर में बात करने से डरने लगे, कि कहीं उनके पिता अपनी पुस्तक में ऐसी बातें भी प्रकाशित न कर दें जिन्हें वह छिपाना चाहते थे।

कॉलेज की पढ़ाई के दो वर्ष पश्चात् वेंडल होम्स अपनी कक्षा में तीसवें स्थान पर ही उत्तीर्ण हुए।

डॉक्टर होम्स गरजे, "तीसवाँ ! यह स्थान कैसा है ?"

अपनी गर्दन हिलाकर अमेलिया होम्स ने कहा, "लड़का अभी अट्ठारह वर्ष का ही है। लोहे की छड़ के समान पतला है। मैंने कल उसे दीवार के सहारे नापा था। छः फुट तीन इंच से कुछ ऊपर ही है। मेरा खयाल है कि अभी बाढ़ पर है। बाढ़ में शक्ति का व्यय होता है। इसलिए यदि पढ़ाई में कुछ पीछे रह गया, तो घबराने की क्या बात।"

पिता का इस प्रकार घबराना आवश्यक न था। अगले शरद् के मध्य-काल तक यकायक वेंडल को दर्शन के अध्ययन के प्रति भारी रुचि हो गई। अफ़लातून के मत का खण्डन करने के लिए उन्होंने पन्द्रह पृष्ठों का एक निबन्ध भी लिख डाला।

अपने इस उत्साह-जनित प्रयास की आलोचना के लिए वेंडल उसे रैल्फ वाल्डो इमर्सन नामक अपने परिवार के एक हितैषी के पास ले गये। निबन्ध पढ़ने के बाद प्रसिद्ध दार्शनिक ने अपना सिर हिलाकर कहा, "जब किसी बादशाह को अपनी गोली का निशाना बनाओ तो उसे मारकर ही दम लो।"

वडल होम्स इस आलोचना से उत्तेजित होकर अपने काम पर वापस गये। जीवन में पहली बार उन्होंने अपने मस्तिष्क से काम लेना

प्रारम्भ किया। वह समय का खयाल न करके गम्भीरता के साथ और श्रमपूर्वक अध्ययन करने लगे। उन्हें समय की याद न रहती, और जब रात्रि के भोजन का समय होता या घर के प्रवेश-द्वार के निकट रात के बारह बजे का घण्टा सुनाई देता तो वह बहुत चकित हो जाते। जब परीक्षा के वार्षिक फल जोड़े गये, तो वेंडल होम्स उच्च पद से उत्तीर्ण होकर अमरीका की प्रमुख शैक्षिक उपाधि 'फाई बीटा काप्पा' के अधिकारी हुए।

● ● ●

शीघ्र ही वेंडल और उनके सहपाठी कहीं अधिक महत्वपूर्ण कामों में फँस गये। सन् १८६० में जिस दिन संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट का चुनाव हुआ, तो मतदान के लिए उनकी अवस्था १६ महीने कम थी। देश ने थोड़े ही बहुमत से लिंकन को प्रेसिडेंट के पद के लिए चुना। वसन्त तक बहुत दिनों का झगड़ा गृह-युद्ध में परिवर्तित हो गया। १२ अप्रैल, १८६१ को संघीय सेनाओं ने फ़ोर्ट समटर पर गोलाबारी की। तीन दिन बाद लिंकन ने ७५,००० नागरिक सैनिकों की भरती की अपील प्रसारित की।

न्यू इंगलैण्ड गार्ड के चौथे बटालियन में भरती होकर वेंडल होम्स ने अपना आसमानी रंग का पतलून पहना, उस पर गहरा नीला कोट चढ़ाया और लाल टोपी पहनी। इस प्रकार सुसज्जित होकर उन्होंने अपने पिता का गर्वपूर्ण आशीर्वाद लिया और २४ अप्रैल को फ़ोर्ट इंडेपेंडेंस में हाज़िरी देने के लिए रवाना हो गये?

बटालियन में हारवर्ड के जो लड़के भरती थे, उन्हें कैम्ब्रिज वापस आकर दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित होने का मौका दिया गया।

वेंडल होम्स अपनी कक्षा के कवि थे; उनकी कक्षा का वार्षिकोत्सव कक्षा-दिवस कहलाता था। उत्सव में उन्होंने अपनी कविता सुनाई, जिसके पश्चात् होलवर्दी हाल के सामने एम्स के पुराने पेड़ों के नीचे

नृत्य हुआ। भूरे वस्त्र पहने और गले में रक्त वर्ण का शृङ्गार किये वेंडल की प्रणयिनी फैनी बाउडिच डिक्सवेल बाँके दर्शकों से इतनी बुरी तरह घिरी थी कि वेंडल को उससे बात करने का मौका न मिला। प्रफुल्ल होने पर वह कितनी सुन्दर लगती थी। एक माला से गुलाब का फूल तोड़कर वेंडल ने भीड़ के मध्य फैनी की ओर फेंक दिया। अकस्मात् उसे आभास हुआ कि कितनी प्रिय नारी से उसका विछोह हो रहा है। वह मूर्तिवत् खड़ा रह गया और अपने आँसू रोक न सका।

● ● ●

कुछ ही सप्ताह के भीतर बीसवीं मसाचुसेट्स पैदल सेना में होम्स की अफ़सर के पद के लिए सिफ़ारिश की गई। जुलाई में युवक लेफ्टिनेण्ट होम्स ने तीन वर्ष तक सेवा करने का वचन दिया और बोस्टन के आठ मील दक्षिण रेडविल स्टेशन पर ट्रेन से उतरकर घास का मैदान पार करके वहाँ पहुँचा, जहाँ पहली कम्पनी के सफेद तम्बू धूप में चमक रहे थे।

पहली कम्पनी प्रारम्भ में छोटी ही थी। तो भी प्रबन्ध की दृष्टि से लेफ्टिनेंट होम्स के लिए वह जरूरत से ज्यादा बड़ी थी। उन्हें कोई अनुभव न था, और वह घबराये हुए भी थे। स्वयं आज्ञा देने के बजाय वह अपने बड़ों से सुझाव लेने के अधिक आदी थे। जब कभी नानटुट के लोग भर्ती होने आते तो होम्स प्रार्थना करते कि ये लोग उनकी कम्पनी में न आवें। ये सब किसान युवक स्वतन्त्र रहे थे। साधारण अमरीकियों की भाँति वे भी यह मत बनाये हुए थे कि जब किसी व्यक्ति के दैनिक श्रम का समय समाप्त हो जाये तो उसे इच्छानुसार घूमने और बिना किसी अफ़सर की अनुमति के अपना पैसा व्यय करने का अधिकार रहे। जब ड्रिल समाप्त होती तो बिना किसी की अनुमति लिये ये लोग मैदान पार मिल विलेज नामक कस्बे की ओर चल देते और वहाँ मद्य-पान में मस्त रहते।

तीन महीने पश्चात् प्रशिक्षण समाप्त होने पर बीसवीं सेना पोटोमैक नदी की एडवर्ड्स फेरी से दो मील दूर एक गेहूँ के खेत में पड़ाव डाले हुए थी। नदी पार वर्जिनिया में विद्रोही सैनिक दबे पैरों पेड़ों की आड़ में चल रहे थे। उनके निशाने सही होते थे; कभी-कभी पहरे पर तैनात सिपाही वापस नहीं आता था, क्योंकि गोली का निशाना बनाकर वह मार दिया जाता था। इस प्रकार लड़ाई प्रारम्भ हो गई।

जब अन्ततः लड़ाई का हुक्म आया तो बीसवीं कम्पनी के सिपाही चार पुरानी और दरार पड़ी नावों द्वारा अँधेरे-ही-अँधेरे नदी को पार कर गये। रात का आधा समय इस प्रकार बीता। प्रातःकाल एक खेत की ऊँची घास में छिपे वे सेना की बाकी टुकड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। घने पेड़ों के पीछे छिपे हुए वैरी सैनिक भी वैसी ही प्रतीक्षा में लगे।

सैनिकों के अपनी-अपनी जगह पर मुस्तैद होने पर आज्ञा पाते ही होम्स की कम्पनी ने जंगल की दिशा में गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया।

अकस्मात् जंगलियों की भाँति जोर से चिल्लाते हुए विद्रोहियों ने धावा बोल दिया। होम्स ने दो बार भी गोली नहीं चलाई थी कि एक ठंडी गोली उनके पेट में आ लगी। जब वह साँस लेने योग्य हो गये तो आगे की ओर बढ़ने लगे। निकट ही दोनों दलों में मारकाट हो रही थी। एक घुटना टेककर होम्स ने गोली चलाई। दूसरी गोली फिर आई और इस बार वह उसके सीने में लगी। वेंडल गिर पड़े, उन्होंने उल्टी की और अपनी आँखें बन्द करके लेट गये। उनकी छाती में भयानक पीड़ा हो रही थी। उनके कोट की जेब में अफीम की एक शीशी थी। सावधानी से अपना हाथ उठाकर अफीम की शीशी तक पहुँचने की उन्होंने कोशिश की। उनका सीना तर था और चिपचिपा हो रहा था। वह मूर्छित हो गये।

• • •

चिन्ता से विक्षिप्त होकर बोस्टन के अधिकांश नागरिक समाचार की प्रतीक्षा करने लगे। समाचार-पत्र 'पोस्ट' का कहना था कि वर्जिनिया में एक लड़ाई हो चुकी है, परन्तु उसमें न तो विजय का जिक्र था, न हार का और न घायलों या मृतकों के नाम ही थे। श्रीमती होम्स मुँह लटकाये घर के भीतर चुपचाप चक्कर लगाती रहीं। लड़ाई के पाँच दिन बाद ही एक मित्र का तार पहुँचा जिसमें यह सूचना थी : वेंडल की छाती में गोली लगी थी, लड़ाई के अस्पताल में भरती थे और चंगे हो रहे थे। शीघ्र ही उन्हें फ़िलाडेल्फिया के अस्पताल भेज दिया जायेगा।

उसी दिन 'पोस्ट' ने बाल्स ब्लफ की लड़ाई का परिणाम प्रकाशित किया। डाक्टर होम्स घर के ऊपरी खण्ड में बैठे थे, रंज के मारे श्वेत पड़ गये और पत्र लेकर नीचे पहुँचे तो पत्नी से मुलाकात न हो सकी। उत्तरी राज्यों के लिए यह बहुत भारी हार थी। पत्रों की टिप्पणी इसी प्रकार थी कि यह भयंकर भूल अपराध से बढ़कर थी। सैनिकों को पीछे हटकर नदी पार करनी पड़ी। तेज बहाव में वे तैरने की कोशिश करते और सहायता माँगते। घायलों से भरी एक नाव उलट गई और उस पर के सब लोग डूब गये। नदी का जल रक्त से लाल दिखने लगा। नावों पर पैर रखते ही सैनिक फिसलकर घायलों पर गिर पड़ते। बचाने का कोई प्रबन्ध न था; न नावें थीं, न बेड़े थे।...

ज्यों ही वेंडल चलने योग्य हुए उनके पिता डॉ० होम्स उन्हें साथ लाने फिलाडेल्फ़िया गये। बोस्टन को जानेवाली गाड़ियों पर छः जगहें किराये पर डॉ० होम्स ने ले ली थीं और उन पर गद्दा बिछवा दिया था। वेंडल बाल-बाल बच गये थे। गोली उनका सीना पार कर गई थी, परन्तु हृदय और फेफड़े बिलकुल बच गये थे। डॉ० होम्स ने एक मित्र को लिखा, "वेंडल मौत के मुँह से बाल-बाल बचे हैं।"

● ● ●

शरद के मध्यकाल तक वेंडल का घाव भर गया। अभी निर्बलता के कारण मुख की ज़र्दी नहीं गई थी; परन्तु आँखों से शून्यता गायब थी; थकान के समय या कभी-कभी रात ही को उनमें यह शून्यता दिखाई देती थी।

२३ मार्च को वेंडल के नाम आज्ञा आई कि कैप्टेन होकर उन्हें वर्जिनिया राज्य में हैवंटन नामक स्थान पर अपनी रेजीमेंट में फिर पहुँचना है।

प्रायद्वीप के उत्तर और पश्चिम में स्टोनवाल जैक्सन को खोजकर उसे रिचमण्ड तक खदेड़ देने के प्रयत्न में वेंडल के सैनिकों को कीचड़ में सनी हुई अपनी हलके नीले रंग की वर्दियाँ पहने बन्दूकें और झोले घसीटते दलदल और उलझी झाड़ियाँ पार करनी पड़ीं। वर्षा होने लगी; सैनिक दिन में पानी में भीगते रहते और रात को पानी बरसते में सो जाते। बल्लियों पर उन्होंने अपने बिस्तर बनाये; लाठियों पर हलके छप्पर डाले; तो भी वर्षा से बच न सके। यह कैफ़ियत मई से बराबर कई मास तक जारी रही। नित्य नमी और धूप में चलते-चलते कैप्टेन होम्स को ऐसा लगता था, मानो उनकी सब शक्तियाँ जवाब देती जा रही हैं। केवल धैर्य और दृढ़ निश्चय की मूक पाशविक शक्ति उनके अधिकार में रह गई थी।

उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के सैनिक एक-दूसरे से जंगलों और खेतों में बन्दूक, पिस्तौल और संगीन से लड़ते। कभी-कभी आमने-सामने लड़ाई होती और दोनों एक साथ गिरते। चार महीने की निरन्तर लड़ाई में संघ के १६,००० सैनिक प्रायद्वीप में मारे गये या लापता हो गये।

सितम्बर में पोटोमैक पर स्थित सेना ने ऐन्टिएटम नामक स्थान पर एक भीषण लड़ाई लड़ी जिसमें बहुत रक्तपात हुआ। युद्ध-क्षेत्र से रात ही को तार गये। कैप्टेन होम्स फिर घायल हो गये। इस बार गोली गर्दन में लगी।

घायलों की सेवा का समुचित प्रबन्ध न था। जब अगले दिन डा० होम्स फिलाडेल्फिया पहुँचे तो वेंडल का उन्हें पता न लगा। बेचारे पागलों की तरह अपने बेटे की खोज में निकल पड़े। रेल पर सफर करके और किराये की घोड़ा-गाड़ियों पर युद्ध-क्षेत्र का मीलों तक चक्कर लगाते और भटकते रहे। छः दिन तक इसी प्रकार भटकते-भटकते मैरी-लैंड राज्य के हैगर्सटाउन में संघ के एक हमदर्द के घर उन्हें वेंडल का पता लगा।

थोड़े ही समय के भीतर वेंडल घर वापस पहुँच गये और डा० होम्स के अनुभव की पूरी कहानी 'अटलाण्टिक' पत्रिका में प्रकाशित हुई। डा० होम्स ने अपने इस लेख का शीर्षक रखा था: 'कैप्टेन की खोज।' न्यू इंगलैंड के प्रत्येक घर में यह कहानी सब सदस्यों को पढ़कर सुनाई गई; प्रायः सभी विद्यार्थियों ने इसे पढ़ा और सभी व्याख्यानों में इसका जिक्र हुआ।

परन्तु अपनी गर्दन पर पट्टी बांधे उपर्ले खण्ड में पड़े कैप्टेन वेंडल हठपूर्वक चुप रहे। उन्हें लोगों की लड़ाई की कहानी सुनने की इच्छा बहुत अनुपयुक्त मालूम होती थी। जो दर्शक घायल वीर से मिलने आते वे सिर हिलाते घर जाते। कैप्टेन होम्स विचारपूर्वक परन्तु उदासीन भाव से कहते रहते, "युद्ध? युद्ध तो संगठित नीरसता है।"

● ● ●

१५ नवम्बर को वेंडल के पास फिर आज्ञापत्र आया। वह छः सप्ताह ही घर पर रहे थे। उनकी ३ वर्ष की सेवा की अवधि का आधे से अधिक भाग अभी पूरा होना बाकी था। छः महीने बाद जब वह अपनी सैनिक टुकड़ी चांसलर्सविल की सड़क पर ले जा रहे थे, उस समय वह तीसरी बार घायल हुए—इस बार एड़ी में। एड़ी के फटे अस्थि-बन्धन और पुट्ठे उन्हें वर्षों तक कष्ट देते रहे।

बोस्टन में एक बार फिर उन्हें चंगे होने के लिए रहना पड़ा। दिन-

प्रतिदिन उनके मित्रों के घायल या मृत शरीर नगर में लाये जाते और इस प्रकार लड़ाई में मारे जाने या घायल होनेवालों की संख्या वह दु:खपूर्वक बढ़ते देखते। जब मृतकों को बर्फ में बन्द करके लाने का प्रबन्ध हुआ तो समाचार-पत्रों ने बड़े गर्व से इस प्रबन्ध की सूचना दी। जनवरी १८६४ में जब वह ब्रिगेडियर-जनरल राइट के एडी-कांग होकर युद्धक्षेत्र में पहुँचे तो पुरानी बीसवीं कम्पनी प्राय: सब ही नष्ट हो चुकी थी। इस रेजीमेंट में शुरू में सिपाहियों की जितनी संख्या थी, प्राय: उतनी ही संख्या अब मृतकों या घायलों की हो गई थी।

उसी वसन्त में ग्राण्ट प्रधान सेनापति नियुक्त हुए, और मई में सेना ने रैपीडन नदी पार करके विल्डरनेस नदी की उलझी झाड़ियों, कीचड़ और परिप्लावित धाराओं के मध्य लड़ाई लड़ी। इसी प्रकार स्पाट्सिलवानिया, नार्थ अन्ना और कोल्ड हार्बर पर लड़ाइयाँ हुईं। कोल्ड हार्बर की लड़ाई में होम्स ने नौ हजार सैनिकों को तीन घण्टों के भीतर गिरते देखा और तब भी वैरी की किलेबन्दी बहुत कुछ सुरक्षित रही।

१८६४ के ग्रीष्म में होम्स की भरती की अवधि पूरी हुई, और बोस्टन कामन पर एक उत्सव के पश्चात् वह तीन साल की सेवा पूरी कर चुकनेवाले अन्य साथियों सहित बीसवीं रेजीमेंट की सेवा से मुक्त कर दिये गये। उन्हें लेफ्टिनेंट-कर्नल की उपाधि मिली और चांसलर्सविल की लड़ाई में वीरतापूर्वक लड़ने का उल्लेख उनके प्रमाणपत्र में किया गया।

सैनिक जीवन की समाप्ति के बहुत दिनों पश्चात् होम्स ने कहा, "सैनिक की हैसियत से मैंने कोई मार्के का काम नहीं किया।"

यह सही था, परन्तु यह भी सही है कि वर्जिनिया के क्षेत्र की प्राय: सभी लड़ाइयों में वह सम्मिलित रहे और इन वर्षों में सैनिक धर्म और उससे उत्पन्न दर्शन उनके जीवन का स्थायी अंग बन गया। सार्वजनिक वक्तव्यों में, निजी वार्तालाप में भी, होम्स बार-बार उन पाठों का जिक्र करते जो उन्होंने भीषण रक्तपात के बीच एंटिएटम की लड़ाई

और स्पाट्सिलवनिया की किलेबन्दी की रक्षा करते हुए प्राप्त किये थे।

● ● ●

अगस्त में एक दिन प्रातःकाल होम्स ने अपने पिता के अध्ययन-कक्ष का द्वार खटखटाया और उनसे निवेदन किया, "मैं कानून पढ़ने जा रहा हूँ।"

तीन वर्ष तक उनका जीवन घर के बाहर ही बीता था। वह धरती पर सोते थे और अपने जिन हाथों से लोगों को मारते थे उन्हीं हाथों से वह लोगों की जानें भी बचाते थे। अब उन्हें अपनी रुचि के अनुसार जीवन व्यतीत करने का मौका मिला। दर्शन के अध्ययन के प्रति उनकी रुचि गहरी होती गई थी। वह मनुष्य की जीवनचर्या के अन्तरतम उद्देश्यों और शासन के सिद्धान्तों का गहरा अध्ययन करना चाहते थे।

डाक्टर होम्स ने गर्दन उठाकर अपने बेटे की ओर देखा। कई वर्ष हो चुके थे जब चिकित्सा सीखने जाने के पहले उन्होंने कानून का अध्ययन किया था और उन्हें उससे घृणा हो गई थी। बोले, "वेंडल, कानून का अध्ययन किस काम का? वकील बड़ा आदमी नहीं हो सकता।"

वेंडल होम्स को अपने पिता का यह वाक्य याद रहा। जब वह नब्बे वर्ष के हो गये, तब भी मौके पर उस वाक्य को दोहराने में न चूकते। परन्तु उस समय भी वेंडल जानते थे कि यद्यपि संयुक्त राज्य के जान आडम्स, जेफर्सन, मेडीसन और मुनरो जैसे महापुरुष कानून में प्रशिक्षित हो चुके थे, तो भी अमरीकी लोग वकीलों पर सदैव अविश्वास ही करते रहे। उनकी दृष्टि में इन लोगों की निषिद्ध कमाई चतुरता और कपट पर अवलंबित थी।

हारवर्ड के कानूनी विद्यालय को स्थापित हुए अभी पचास वर्ष नहीं पूरे हुए थे। वकीलों के दफ़्तरों में प्रचलित कार्य-पद्धति के अनुसार काम

सिखाने के अतिरिक्त कोई और प्रशिक्षण इस विद्यालय से प्राप्य न था। भरती की कोई कैद न थी, शरद् ऋतु में कभी भी विद्यार्थी भरती हो सकता था, और साथियों के पास बैठकर पढ़ाई पूरी करने का प्रयत्न कर सकता था। होम्स कानून के कालेज में भरती हो गये और राबर्ट मोर्स नामक वकील के दफ़्तर में उन्होंने एक-दो घण्टे नित्य की नौकरी भी कर ली।

कानून के विद्यालय में दूसरे वर्ष की पढ़ाई शुरू करते-करते होम्स पाठ्यक्रम पर स्वतन्त्र दृष्टि से विचार करने लगे और उन्हें उसमें बहुत-सी खामियां दिखाई दीं। सन् १८६५ तक कानूनी शिक्षा नीरस नियमों के ढेर के रूप में थी। जिस रूप में कानून विद्यार्थी के सामने लाये जाते थे, उससे उनका मनुष्य के जीवन तथा संस्थाओं से कोई सम्बन्ध प्रत्यक्ष नहीं होता था। वर्ष-प्रतिवर्ष वही पुरानी पुस्तकें पढ़ाई जातीं, वही पुराने नियम रटकर याद किये जाते। नगर के एक सफल वकील को वेंडल ने यह कहते सुना कि कानून निर्जीव अन्याय का एक संगठित रूप मात्र है।

साधारण नाविकों को जहाज के संचालन में दिशासूचक यंत्र, नक्शे और पतवार की जरूरत होती है; परन्तु अन्वेषकों को अपनी खोज में नक्शे और प्रकाशगृह कब नसीब हुए हैं। साधनों के न होने पर निर्बल हताश होकर बैठ रहते हैं, परन्तु सशक्तों के सामने साधनों का अभाव एक कष्टदायक चुनौती के रूप में बना रहता है। कानून के विषय में होम्स ने अपनी खोज प्रारम्भ की तो साधनों के अभाव को उन्होंने चुनौती के रूप में ही स्वीकार किया। वह कानून की एक सर्वथा नई व्यवस्था की खोज में थे। उन्हें पुस्तकों में वह व्याख्या नहीं मिली पर वह घबराये नहीं। उन्होंने निश्चय किया कि वह स्वयं ही नई व्याख्या के विधाता होंगे।

● ● ●

प्रकट रूप में जब राष्ट्र समर के प्रभाव से मुक्त हो रहा था, तब होम्स की जीवनचर्या साधारण गति से चालू थी। विद्यालय की पढ़ाई पूरी करके वह वकील हुए, और कस्बे के बाहर एक दफ़्तर में उन्हें नौकरी मिल गई। वह मुकदमों की परिश्रम से तैयारी करते, तो भी न्यायालय में उनकी तबीयत न लगती।

संध्या होने पर ही उनका वास्तविक जीवन प्रारम्भ होता। चिकित्सा में डाक्टर होम्स का विलियम जेम्स नामक एक विद्यार्थी था। उसका कहना था कि आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं हुआ जिसने वेंडल जितनी मेहनत के साथ कानून का अध्ययन किया हो।

केंट ने 'कमेंटरीज आन अमेरिकन लॉ' नामक एक पुस्तक लिखी थी। अपनी फ़ुरसत के समय वेंडल ने उसका एक नया संस्करण तैयार करने का निश्चय किया। अमरीका के लिए यह अपने किस्म का पहला काम होनेवाला था। इतनी गम्भीर और गहरी आलोचना पहले कभी नहीं हुई थी। सन् १८४७ में केंट की मृत्यु के बाद से उसकी 'कमेंटरीज' के पाँच संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। होम्स ने पूरी पुस्तक का समयानुकूल संशोधन करने का निश्चय किया।

अध्ययन में वह जितने ही आगे बढ़े, उतने ही वह उसमें डूबते गये। ऐसा लगता था कि इस नये वकील के उस झोले में, जिसमें उसकी पांडुलिपि रखी जाती थी, सारी सृष्टि रखी हुई है। प्रतिरात उसे वह ऊपर्ले खण्ड पर अपने कमरे में ले जाते, प्रातःकाल उसे उतार लाते और भोजन के समय सदर दरवाजे के सहारे उसे सँभालकर खड़ा कर देते। घर के सब सदस्यों को आदेश था कि यदि आग लग जाये तो पाँडुलिपि को बचाने का अवश्य प्रयत्न किया जाये।

ज्यों ही वेंडल का भाई नेड कानून के विद्यालय से उत्तीर्ण हुआ, दोनों युवकों ने मिलकर अपना दफ़्तर खोल लिया। दूकान का नाम था 'होम्स, एण्ड होम्स', परन्तु साझे में नेड की दिलचस्पी अपेक्षाकृत अधिक थी, वेंडल की दृष्टि में तो आफ़िस का काम उनके वास्तविक

काम में बाधा ही डालता था। और यह काम था केंट की 'कमेंटरीज' का संशोधन।

जितना समय बीतता गया उतने ही वह अपने अध्ययन में गहरे डूबते गये। कुछ निर्बल हुए और मिजाज भी चिड़चिड़ा हो गया। अपनी माँ के कड़े आदेश से वह कभी-कभी संध्या के समय घूमने चले जाते और जब कभी किसी भीड़ में उनका आधा घंटा भी बीत जाता तो वह भाग निकलने के लिए व्याकुल हो जाते और घर वापस पहुँच-कर अपने काम में लग जाते।

पिछले वर्षों में कैम्ब्रिज की कुमारी फैनी डिक्सवेल के साथ वेंडल अकसर अपना मन बहलाते थे। जब वह हारवर्ड में थे तो प्रायः प्रति-दिन वह डिक्सवेल के घर जाकर कुछ समय बिताते थे। कानून की पढ़ाई के समय से उनकी इस लड़की से बहुत घनिष्ठता रही थी। उन्हें अपने विचार फैनी के सामने प्रकट करने की आवश्यकता न पड़ती थी, उनके बोलने के पहले ही वह उनके मन की बात बूझ लेती थी। आगे चलकर फैनी अकसर उनकी बहन अमेलिया से चाय या भोजन पर मिलने आने लगी। परन्तु अब अमेलिया का ब्याह हो गया था, इसलिए फैनी के पास होम्स-परिवार में जाने का कोई बहाना न रह गया था। सप्ताह बीत जाते और वेंडल तथा फैनी एक-दूसरे से मिल न पाते। सबसे बड़ी मुसीबत यह थी कि अपने काम की धुन में उन्हें पता भी न लगा कि दूसरी ओर क्या हो रहा है।

उनके एक प्रिय चाचा ही अन्ततः आवश्यक कार्यवाही के लिए तैयार होकर उनसे बोले, "वेंडल, तुम्हारी क्या कैफ़ियत है, तुमने इधर फैनी की ओर ग़ौर से देखा भी नहीं? वह तुमसे प्रेम करती है।"

वेंडल बिलकुल स्तब्ध हो गये। उनके मुँह से बोल न निकला और वह सोचने लगे कि क्या फैनी सचमुच उनसे प्रेम करने लगी है। संस्मरण-मग्न होने पर उन्हें कुछ वाक्यों की याद आई: "क्या वेंडल विचारों में ही मग्न रहते हैं, प्रिय-जनों की उन्हें चिन्ता नहीं है?"...

"वेंडल होम्स, मुझे अकसर सन्देह होता है कि भला तुम किसी से प्रेम भी करते हो ?"

१७ जून, १८७१ के दिन दोनों का विवाह हुआ। हनीमून के लिए समय न था। फैनी का कहना था कि चांस्लर कैंट भावुकता की ओर से उदासीन ही हैं।

दोनों पहले तो अपने माता-पिता के साथ रहे, परन्तु ज्यों ही उनके पास पैसा हुआ, उन्होंने नं० १० बीकन स्ट्रीट के दवाखाने के ऊपर के कमरे किराये पर ले लिये।

दोनों तीस वर्ष के हो गये थे, परन्तु अपने जीवन में पहली बार माता-पिता के घोंसले से निकलकर आर्थिक और पारिवारिक दृष्टि से स्वतन्त्र हुए थे। स्वेच्छानुसार वे भीतर-बाहर आ-जा सकते थे, और उनसे कोई प्रश्न करनेवाला न था। जब वह अपने पिता के पास रहते थे तो घर से निकलते समय पिता उनसे पूछते थे कि कहाँ जा रहे हो। अब ऐसे जीवन से वह कुछ चकित हुए जिसमें वह टोपी पहनकर घर से निकल जाते और उन्हें कोई टोकता भी नहीं।

प्रायः प्रतिरात फैनी और वेंडल भोजन के लिए टहलते हुए पार्कर हाउस जाते। अकसर उन्हें मित्र मिलते जो उनके साथ भोजन करते। फैनी भूरे रंग का नया लम्बा कोट पहनती, जिसमें बादामी रोयेंदार चमड़े की गोट लगी हुई थी, और हाथ में वह रोयेंदार चमड़े का मफ-लर लिये रहती। उसकी टोपी में रक्त-वर्ण का कुछ शृङ्गार भी होता, वेंडल का खयाल था कि अपनी पत्नी जैसी सुशील और गम्भीर कोई नारी उन्होंने देखी न थी। अकसर भोजन के पश्चात् उनके मित्र घण्टे-दो-घण्टे के लिए उनके साथ घर चले आते। नव-दम्पति शान्तिपूर्वक रहते हुए भावी जीवन की नींव के निर्माण में व्यस्त रहते थे।

कई वर्षों तक इसी प्रकार वेंडल स्वाध्याय में व्यस्त रहे। कैंट का संशोधित संस्करण अन्ततः पूरा हुआ और प्रत्येक विद्वान् उसकी मान्यता का समर्थक हुआ। शीघ्र ही वेंडल ने दूसरे मौलिक काम का बीड़ा

उठाया और हारवर्ड के 'लॉ-रिव्यू' में उनके लेख और आलोचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। दफ्तर के द्वार से निकलते ही उनकी थकान समाप्त हो जाती, वह व्यग्रता से पहाड़ी पर अपने अध्ययन-कक्ष पहुँचने के लिए चढ़ते चले जाते, मानो उनका दैनिक-कार्य समाप्त नहीं बल्कि शुरू होनेवाला हो।

कानूनी जीवन के इस दोहरे दबाव को देखकर फैनी अकसर आश्चर्य करती कि वेंडल होम्स जैसा स्वस्थ और सशक्त पुरुष भी कब तक इतने भार को सहन कर सकेगा। वह सदैव से दुबले-पतले थे, परन्तु उनके रंग में सुर्खी और ताजगी थी। घुड़सवारों की भाँति उन्होंने अपनी मूँछें बढ़ने दीं। सदैव सैनिक की भाँति तनकर खड़े होते, बोलते या चलते। उनकी गहरी भूरी आँखें निश्चय की भावना से चमकती रहतीं।

● ● ●

सन् १८८० के प्रारम्भ में बोस्टन की लावेल इंस्टीच्यूट से होम्स को अगले शरद् में बारह व्याख्यान देने का निमन्त्रण मिला। इस योजना से उन्हें अपने विषय का आवश्यक आधार मिला। प्रायः पन्द्रह वर्षों से अध्ययन की विशाल सामग्री की छँटाई और जाँच वह करते आ रहे थे। अधिकांश समय उनका कोई विशेष उद्देश्य नहीं रहा था। वह केवल खोज में तल्लीन रहे। अब उन्हें व्याख्यान देने थे और ये व्याख्यान संकलित होकर पुस्तकाकार प्रकाशित होने थे, तो इनमें उनका वह सब अध्ययन मूर्त होना था जो उन्होंने मानव-अधिकार सम्बन्धी कानून के सम्बन्ध में किया था। उनकी अवस्था ३९ वर्ष थी और उनका विश्वास था—अन्धविश्वास ही सही—कि यदि किसी पुरुष को प्रसिद्ध होना है तो चालीस वर्ष के पहले ही उसे प्रसिद्ध होना चाहिए।

यह विचार दिन-रात उन्हें आगे की ओर ठेलता रहा। लावेल व्याख्याता की हैसियत से वह वकीलों और विधान के प्राध्यापकों के सामने बोलेंगे। उस दृढ़ निश्चय से, जो उन्होंने गम्भीर अध्ययन के

पश्चात प्राप्त किया था, वह उनके सामने इस आशय का सिद्धान्त प्रस्तुत करेंगे—और यह बात उनके सामने पहली बार प्रस्तुत होगी—कि अच्छे न्यायाधीश को अपने निर्णय के लिए यह नहीं देखना है कि उसे नज़ीरें कौन-सी मिलती हैं, बल्कि यह देखना है कि वर्तमान में समाज का भला किस बात में है।

वे दिन भी आने थे, जब न्यायाधीश की हैसियत से होम्स को अपने सिद्धान्तों के अनुसार निर्णय सुनाने के मौके मिले। इस समय तो उन्होंने यत्नपूर्वक इन सिद्धान्तों को व्याख्यानों ही में प्रस्तुत किया। विधान को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हुए उन्होंने कोई नियम या विश्वास कार्य-कारण कड़ी से जोड़े बिना प्रस्तुत नहीं किया। दिन-रात एक हो गए। अध्ययन में डूबते चले गए, वज़न घटने लगा, मुख उतरा दिखाई देने लगा। मित्रगण उनके स्वास्थ्य के विषय में चिन्तित होने लगे।

तो भी किसी प्रकार व्याख्यान दिये गए, पुस्तक पूरी हुई और छपने गई। चालीसवीं वर्षगाँठ के पाँच दिन पहले वेंडल अपनी पत्नी फैनी के साथ बीकन स्ट्रीट से पैदल अपने पिता के घर पहुँचे। वेंडल की बगल में बादामी जिल्द की एक नई पुस्तक थी। नाम था 'कामन लॉ'। पुस्तक उन्होंने अपने पिता के कर-कमलों में भेंट की। पुस्तक के पहले सादे पन्ने पर 'पिता को पुत्र की भेंट' के शब्द लिखे थे।

सात वर्ष की अवस्था से वेंडल को अपने पिता के सब प्रकाशनों की एक-एक प्रति भेंट के रूप में मिलती रही थी। पहली बार भेंट ने अपनी दिशा बदली।

होम्स के लिए यह स्मरणीय दिवस था। ४० वर्ष की अवस्था में उनकी प्रतिभा का प्रकाशन हुआ। अपने ज्ञान और विश्वास को प्रकाशित करने का उन्हें पहला अवसर मिला था।

मान्यता उन्हें तुरन्त ही नहीं मिली। विद्वानों ने भी उनकी पुस्तक सर्वसम्मति से स्वीकार नहीं की। एक प्रसिद्ध पुस्तकालय की समिति ने तो उसे अपने पुस्तकालय में इसलिए जगह नहीं दी कि वह अत्यधिक

मौलिक थी। परन्तु विधान में दीक्षित विद्वानों के मध्य उनका आदर अवश्य होने लगा। लंदन के 'स्पेक्टेटर' पत्र की आलोचना थी कि सर हेनरी मेन की 'एंशेंट ला' (प्राचीन विधान) के पश्चात् वैधानिक चिंतन पर यह सबसे अधिक मौलिक प्रकाशन है।

होम्स स्वयं जानते थे कि यह पुस्तक उनकी प्राथमिक सफलता की ही प्रतीक थी। वर्षों के अध्ययन से ज्ञान का द्वार ही उनके लिए खुल पाया था। आगे चलकर उनका कहना हुआ कि ज्ञान-प्राप्त व्यक्ति को संघर्ष ही में जगह मिलती है।

● ● ●

सन् १८८२ की आठवीं दिसम्बर के दिन होम्स को सूचना मिली कि मसाचुसेट्स राज्य के गवर्नर ने उन्हें अपने राज्य के सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया है।

कुछ ही महीने पहले वह हारवर्ड लॉ स्कूल के प्राध्यापक नियुक्त हुए थे। तो स्वीकृति की कोई समस्या न थी क्योंकि मसाचुसेट्स के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने की तो वह आकांक्षा ही करते रहे थे।

एक मित्र ने उनसे कहा, "होम्स, अभी तक मानव-अधिकार-सम्बधी विधान और न्यायाधीश के कर्त्तव्य के सम्बन्ध में तुम्हारे कुछ दार्शनिक विचार ही थे। अब तुम्हें इन विचारों को कार्यान्वित करने का मौका मिला है।"

जब न्यायालय में आकर होम्स बैठे तो उनकी अवस्था ४१ वर्ष थी और सात न्यायाधीशों के मध्य वह अवस्था में सबसे छोटे थे। बाकी छः न्यायाधीश वकालत कर चुके थे, सर्वोच्च न्यायालय में किसी पद पर काम कर चुके थे या राज्य की विधान-सभा के सदस्य रह चुके थे। अनुभव के मार्ग से ही वे उस पद तक पहुँचे थे। विधान का रूप और

न्याय की व्यवस्था का अध्ययन करके केवल होम्स ही उस पद पर नियुक्त हुए थे।

तो भी सन् १८८३ में न्यायालयों में दूरदर्शी न्यायाधीशों की आवश्यकता थी। सामाजिक परिवर्तन बहुत बड़े पैमाने पर हो रहे थे। असाधारण शीघ्रता से संयुक्त व्यवसाय अब निजी व्यापारियों और व्यवसायियों की जगह ले रहा था और परिवर्तन के साथ बहुत-से अन्याय तथा कष्ट भी लगे हुए थे। उस देश में जहाँ होम्स के यौवन में ग्राम्य-जीवन का वातावरण था, अब वहाँ नये-नये नगर तेजी से बढ़ रहे थे, मिलें बढ़ती जा रही थीं, उनके निकट लोग ऊँचे-ऊँचे मकान बनवाने लगे थे और संघर्ष अत्यधिक बढ़ गया था।

यह परिवर्तन नहीं था, क्रांति थी। होम्स इसे पहचान गए थे, उन्होंने मानव-अधिकार सम्बन्धी विधान का मौलिक अध्ययन किया था। उन्होंने राज्यों के निर्माण और उनके पतन के कारणों का अध्ययन किया था। जब सामाजिक परिवर्तन होता है, तो विधान को उस परिवर्तन के अनुकूल बदलना चाहिए, नहीं तो राज्य का विनाश होता है। अपनी 'कामन लॉ' नामक पुस्तक में होम्स ने बार-बार कहा था कि अच्छे न्यायाधीश को सार्वजनिक हित अथवा समय की माँग को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

जब होम्स न्यायाधीश हुए, तो जनता के सामने दो भीषण समस्याएँ थीं। मजदूरों की शिकायतें मालिकों के विरुद्ध थीं, और जनता की शिकायतें व्यापारी कम्पनियों के विरुद्ध थीं। इन्हीं दो ढंगों से व्यक्ति को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करना था। जनता ऐसे न्यायाधीशों के लिए व्याकुल थी, जिन्हें विधान का ऐतिहासिक और मौलिक ज्ञान हो, जिनकी सामाजिक धारणाएँ स्वाध्याय से परिष्कृत हो गई हों और जो प्रगति के अनुसार संविधान के अर्थ बता सकते हों।

होम्स अपने निर्णय असाधारण शीघ्रता से लिखते थे, जिस कारण अधिकांश काम भी उन्हें मिलता था। होम्स में स्थिति के मर्म तक

पहुँचने की प्रतिभा थी। ज्यों ही वकील बोलने लगता कि वह आगे झुककर ध्यानपूर्वक सुनते और पेंसिल से आवश्यक शब्द टाँक लेते। कभी-कभी पाँच मिनट भी न बीतते कि वह कुर्सी की पीठ का सहारा लेकर आँखें बन्द कर लेते। अन्य न्यायाधीश आपस में कहते कि होम्स ने अपना निर्णय कर लिया है, वकील ने अपनी बात पूरी नहीं की है, परन्तु होम्स मुकदमे की जड़ तक पहुँच गये हैं।

होम्स जब अपने निर्णय लिखकर देते थे, तो पढ़ने में वे कानूनी आडम्बरों से रहित होते थे। वाक्य छोटे-छोटे ही होते थे परन्तु विद्वत्ता और समझदारी से परिपूर्ण होते थे। न्यायालय में ऐसे व्यक्ति का प्रभाव स्फूर्ति-दायक होता ही था, उनके साथी उनसे समहत हों या न हों। एक वकील का कहना था, कि होम्स का व्यक्तित्व अन्य न्यायाधीशों को मद्य की भाँति स्फूर्त करता है और उनके विषय में यह बात एक कहावत की तरह प्रसिद्ध हो गई।

● ● ●

वर्ष बीतते गये और न्यायालय में अन्य न्यायाधीशों के साथ उनकी जगह बदलती गई। जब होम्स नये ही नियुक्त हुए थे, तो मुख्य न्याया-धीश की बाँईं तरफ सिरे पर उनकी जगह थी। क्रमशः वह मुख्य न्याया-धीश के दाहिने हाथ पर बैठने लगे। परन्तु ऐसे अवसर भी आये जब ऐसा दिखाई देता था कि उन्हें अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहने के कारण अमरीका के कानूनी विद्वानों में सर्वोच्च स्थान न मिल सकेगा।

लगभग १० वर्ष न्यायाधीश रहने के बाद एक मुकदमा उनके सामने आया, जिसमें बहुमत के विरुद्ध वह अपना निर्णय देने के लिए विवश हुए और इस प्रकार उनकी प्रसिद्धि श्रमिक-वर्ग के हितैषियों में हुई। एक मालिक के विरुद्ध अपने नौकर का वेतन रोकने का मुक-दमा चला। मसाचुसेट्स के एक कानून द्वारा किसी मालिक का अपने नौकर पर काम बिगाड़ने का आरोप लगाकर उसका वेतन रोकना या

उससे जुर्माना लेना अवैध ठहराया गया था, परन्तु न्यायालय ने कानून को अवैध बताया और मालिक का समर्थन किया। होम्स ने इस निर्णय के विरुद्ध अपनी सम्मति दी।

पाँच वर्ष पश्चात् न्यायालय के काम से छुट्टी पाकर बीकन स्ट्रीट होते हुए होम्स एक मित्र से मिलने गये। धरना देना शान्तिपूर्वक चालू था, परन्तु न्यायालय ने इस धरने के विरुद्ध आदेश दिया था। न्यायालय के लिए ऐसा निर्णय स्वाभाविक ही था; क्योंकि दस वर्ष से देश भर में हड़तालें और धरने चालू थे और इनके साथ ही हे मार्केट और होमस्टेड जैसे स्थानों पर हिंसात्मक उपद्रव भी हुए थे। परन्तु न्यायाधीश होम्स ने फिर भी बहुमत के विरुद्ध अपनी सम्मति दी थी। उनका कहना था कि यदि पूंजीपति संगठित होते हैं तो उनके मुकाबले श्रमिकों का संगठित होना भी आवश्यक और वैध है।

होम्स भली भाँति जानते थे कि उनकी सम्मति का क्या प्रभाव होगा और उनकी पदोन्नति भी कदाचित् रुक जाये, क्योंकि सर्वोच्च पदों पर बैठे अनधिकार-शक्ति प्राप्त लोगों के विरुद्ध उन्होंने अपनी सम्मति दी थी।

अपने किये पर अशान्त होकर होम्स अपने मित्र के घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने कहा, "हाल ही में मैंने एक सम्मति दी है जो सदैव के लिए मेरी पदोन्नति रोक देगी।"

होम्स को पता न था कि न्यायालय का उनके प्रति कितना आदर और स्नेह बढ़ गया था। यही पुरुष मानवाधिकार-सम्बन्धी कानून का ज्ञाता था।

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी असहमति से कभी न्यायालय का विरोध नहीं किया था; वह पूरी कोशिश करके अपनी सम्मति ऐसी भाषा में देते थे जिसमें सहयोगियों के प्रति उनका आदर परि-लक्षित होता था।

जब जुलाई १८९९ में मुख्य न्यायाधीश का देहान्त हुआ तो गवर्नर

ने तुरन्त होम्स को उनके पद पर नियुक्त किया। किसी को आश्चर्य नहीं हुआ।

होम्स की अवस्था अब ५६ वर्ष की थी। देखने में उनकी अवस्था बहुत कम मालूम होती थी। उनके स्वस्थ मुख पर वय के अनुकूल रेखाएँ अवश्य आ गई थीं; परन्तु उनकी गहरी भूरी आँखें पहले से अधिक चमकदार थीं और उनमें एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति थी, जो उनके भीतर से फूटती हुई प्रतीत होती थी, मानो यह स्फूर्ति किसी अक्षय तथा उल्लासपूर्ण स्रोत से निकल रही हो।

होम्स-परिवार का कोई सदस्य वेंडल को मसाचुसेट्स के सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान के पद पर देखने के लिए जीवित नहीं रहा। उनके भाई नेड ने वकालत में बहुत उन्नति की थी, परन्तु ४० वर्ष की अवस्था तक पहुँचने के पहले ही सन् १८८४ में उनका देहान्त हो गया था। कुछ दिनों बाद उनकी माता और उनकी बहन अमेलिया की भी मृत्यु हो गई थी। केवल डॉक्टर होम्स कई वर्षों तक और जीवित रहे। सन् १८९४ में ८५ वर्ष की अवस्था प्राप्त करके उनका देहान्त हुआ था। मरने के कुछ पहले उन्होंने अपने मित्र विलियम डीन हरवेल्स को लिखा था कि परिवार में मैं ही बचा दिखाई देता हूँ।

● ● ●

सन् १९०२ के ग्रीष्म में संयुक्त राज्य अमरीका के संघीय न्यायालय में एक जगह खाली हुई। थियोडोर रूजवेल्ट उस समय अमरीका के प्रेसिडेण्ट थे, तो ऐसा लगा कि वह रिक्त स्थान के लिए मसाचुसेट्स के मुख्य न्यायाधीश को ही याद करेंगे।

रूजवेल्ट ने देश के विधान-मंडल को अपना पहला सन्देश भेजा तो यह प्रत्यक्ष हो गया कि शासन को व्यवसाय से नये सम्बन्ध स्थापित करने हैं। पूँजीपतियों के जो बड़े-बड़े संगठन बन गये थे, उनके विरुद्ध आवाज बुलन्द होने लगी थी, और उन पर अंकुश लगाने का समय

निकट आ गया था। देश की 'मैकक्ल्यूर्स', 'कालियर्स' और 'एवरी-बाडीज़' जैसी बड़ी और नई पत्रिकाओं में श्रमिक-वर्ग के हिमायतियों ने व्यापारिक संगठनों के विरुद्ध लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 'दि शेम आफ दि सिटीज़' के शीर्षक से लिंकन स्टेफेंस के लेख प्रकाशित हो रहे थे; इडा टार्बेल स्टैंडर्ड आयल ट्रस्ट क विरुद्ध अपने आरोप तैयार कर रही थीं।

संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेंट के पद पर एक ऐसा व्यक्ति आसीन था, जिसके विषय में जनता को विश्वास था कि वह मोटे पूँजी-पतियों के विरुद्ध कुछ अवश्य करेगा। जनता चाहती थी कि रूज़वेल्ट किसी बड़ी मछली को फँसाकर दूसरों को चेतावनी दें।

देश को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। चारों ओर देखने पर रूज़वेल्ट की पकड़ में नार्दर्न सिक्योरिटीज़ कम्पनी आई जो कई रेलवे कम्पनियों के मिलने पर देश की सबसे बड़ी और नई कम्पनी बन गई थी। रूज़वेल्ट ने कानून के विषय में अपने मुख्य परामर्शदाता को आदेश दिया कि वह शर्मन ट्रस्ट-विरोधी अधिनियम के अनुसार इस कम्पनी की वैधता की जाँच करे। फरवरी, १९०२ में नार्दर्न सिक्योरि-टीज़ कम्पनी के विरुद्ध मुकदमा दायर हुआ, तो अचानक पूँजीपतियों को ऐसा लगा कि जैसे उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया गया है।

रूज़वेल्ट और होम्स मिजाज में एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत थे। सामाजिक समस्याओं और उनके हलों के सम्बन्ध में भी दोनों के विचार एक-दूसरे से भिन्न थे। तो भी निर्णय के विरुद्ध होम्स की सम्मतियाँ पढ़कर रूज़वेल्ट ने स्वभावतः समझ लिया कि केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश होने पर होम्स उनके ही आदमी होंगे और उनकी ही नीति का समर्थन करेंगे। वह जानते थे कि न्यायालय के सहयोग के बिना वह अपनी नीति में सफल न हो सकेंगे। उनका कहना था कि बड़े-बड़े मामलों में बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि केन्द्रीय न्याया-लय के न्यायाधीश अपना निर्णय एक पक्ष के अनुकूल देते हैं या दूसरे

पक्ष के। इस प्रकार ११ अगस्त, १६०२ को केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर होम्स के नियुक्त होने की सूचना प्रकाशित हुई।

पहले तो होम्स इस पदोन्नति को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। जहाँ थे वहीं वह यथेष्ट सुखी थे। वाशिंगटन में वह सहयोगी न्यायाधीश ही होते, नौ न्यायाधीशों में वह सबसे नये होते और बैठक में उन्हें फिर बायें सिरे वाला स्थान ही मिलता। पैसे का सवाल उनके सामने था नहीं, क्योंकि उनके पिता उनके लिए यथेष्ट रकम छोड़ गये थे। मसाचुसेट्स के मुख्य न्यायाधीश की हैसियत से उनका वार्षिक वेतन आठ हज़ार पाँच सौ डालर था और सफर-खर्च के उन्हें पाँच सौ डालर मिलते थे। वाशिंगटन में प्रतिवर्ष उन्हें दस हजार डालर ही मिलते।

परन्तु यदि होम्स हिचके तो उनकी पत्नी ने उत्सुकता प्रकट की। शुरू में ही फैनी ने अपनी बात साफ-साफ कह दी। वह स्वीकृति के पक्ष में थी। उसने कहा, "वेंडल, मसाचुसेट्स में जो कुछ तुम्हारी उन्नति होनी थी वह हो चुकी, तुम्हारे परिवार को अमर रहना है और तुम्हें भी। क्या तुम यहीं रुक जाओगे, क्योंकि पत्री में लिखा है कि तुम ६० वर्ष के हो गये हो?"

परन्तु निजी तौर पर वह वाशिंगटन की कल्पना से डरी हुई थी। छः वर्ष पहले वह सख्त बीमार हुई थी और तब से उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो पाया था। उसे अपने बाल कटवाने पड़े थे और तब भी उसे अपना पिछला सौंदर्य फिर न प्राप्त हो सका था। वह इतनी दुबली हो गई थी कि कमजोर दिखने लगी थी। उसके गालों की हड्डियाँ निकल आई थीं और थोड़े-से तथा सफेद बालों के नीचे उसके मुख पर कोई रौनक न रह गई थी। कभी-कभी कुछ लोग उसे वेंडल की माता समझ बैठते थे। पिछली कई शरद् ऋतुओं में वह अपने घर ही रही और वेंडल को अकेले ही बोस्टन जाना पड़ा था। केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश की पत्नी होने की हैसियत से छोटे-बड़े सामाजिक उत्सवों में उसकी उपस्थिति आवश्यक थी।

एक दिन तीसरे पहर एक मित्र आ गये और फैनी को अकेले बैठे पाया। वह तुरन्त स्वागतार्थ उठी। उसके मुख पर चिन्ता की रेखाएँ थीं और जब उसने अपने हाथ अपने सिर पर रख दिये तो इस संकेत में उसके स्वास्थ्य की दुर्दशा का व्याकुल हास्य छिपा हुआ था।

उसने कहा, "मेरी ओर देखो, मैं वाशिंगटन किस प्रकार जा सकती हूँ; मैं तो एक वीरान खेत के समान लगती हूँ।"

● ● ●

८ दिसम्बर को सोमवार के दिन शपथ लेने के लिए लम्बा काला चोगा पहने होम्स कैपिटोल के पुराने न्यायालय में जा खड़े हुए। परम्परा के वातावरण में यह प्राचीन कमरा गम्भीर और शान्त दिखता था और होम्स को देश के इस सर्वोच्च न्यायालय का ही एक न्यायाधीश होना था।

कुछ दिनों बाद जब फैनी होम्स पहली बार इस न्यायालय में दर्शक की हैसियत से पहुँची, तो न्यायालय की परम्परा के जादू ने उसे भी प्रभावित किया। अण्डाकार छत से हलका प्रकाश नीचे आ रहा था। पिछले न्यायाधीशों की संगमर्मर की मूर्तियाँ अपने आसनों से नीचे की ओर देखती जान पड़ती थीं। मंच पर सामने काले चमड़े से मढ़ी नौ ऊँची कुर्सियाँ दिखती थीं। केन्द्रीय कुर्सी पर लाल छत्र के नीचे ८७ वर्ष की अवस्था तक न्यायाधीश टैनी बैठ चुके थे, जो पचास वर्ष तक देश की सेवा करके भी जनता के अविश्वास, वैर और बुराई के पात्र हो गये थे। यहीं प्रसिद्ध डेनियल वेब्सटर और कैलहून जैसे प्रसिद्ध वकीलों की बहसें हुई थीं।

बाईं ओर कुछ आहट हुई। लम्बी काली कतार में न्यायाधीश धीरे-धीरे भीतर आये। जुलूस में सबसे आगे थे मुख्य न्यायाधीश फुलर जो ६९ वर्ष की अवस्था में भी पूर्णतया स्वस्थ थे।

अपनी सुडौल जालीदार नकाब से फैनी होम्स ने अपने सौम्य पति को न्यायाधीशों की कतार में तनकर खड़े देखा तो उनकी आँखों से हर्ष के आँसू उमड़ पड़े।

जब प्रेसिडेंट ने अपने भवन में नियमानुकूल भोजन के लिए होम्स-दम्पति को निमन्त्रित किया, तो फैनी वहाँ बहुत डरती हुई पहुँची। चुपचाप कपड़े पहने और उसी खामोशी से गाड़ी में बैठ गई। वह भूरे रंग के रेशमी कपड़े पहने थीं, और उनके सीने पर बनपशे के प्रिय फूल लगे थे, जो वेंडल ने उन्हें दिये थे। उनके ब्लाउज़ के ऊपर गर्दन को ढके हुए सुन्दर जाली का एक सख्त कालर था; उनके सीधे और सफेद बाल पीछे की ओर जूड़े में बँधे हुए थे।

नये न्यायाधीश और उनकी पत्नी का विशाल स्वागत-कक्ष में अभिवादन करते हुए प्रेसिडेंट ने शील भाव से ऐसा वार्तालाप छेड़ा जिससे दोनों उस वातावरण में घुल-मिल जायें। श्रीमती होम्स से उन्होंने साधारण प्रश्न ही किये, जैसे "आप जबसे आई तब से वाशिंगटन नगर की कुछ सैर भी आपने की, किन लोगों से आपकी मुलाकात हुई, महिलाएँ आपको भली लगीं?"

श्रीमती होम्स के मुख से एक मधुर हास्यपूर्ण उत्तर निकल गया, "वाशिंगटन में बहुत से प्रसिद्ध लोग और उनकी वे पत्नियाँ हैं जिनसे उन्होंने अपनी युवावस्था में विवाह कर लिया था।"

यह उत्तर सुनकर प्रेसिडेंट बड़े ज़ोर हँसे। श्रीमती रूजवेल्ट ने आगे बढ़कर श्रीमती होम्स का बड़े तपाक से स्वागत किया। भोज की सूचना हुई।

प्रेसिडेंट ने बड़ी शिष्टता से झुककर फैनी को निमन्त्रित किया। अपने पति की विशेष फ़िक्र न करके प्रेसिडेंट की बाँह के सहारे भोज के लिए लम्बे-लम्बे कालीनों पर जगमगाते झाड़-फ़ानूसों के नीचे सबसे आगे फैनी ने चलना प्रारम्भ किया।

होम्स बराबर अपनी पत्नी की ओर देखते रहे। इसके पहले कभी

भी वह इतनी प्रसन्नचित्त नहीं दिखाई दी थी। सुन्दर संग पाकर वह बहुत सुन्दर और प्रसन्न दिखने लगी थी।

घर लौटते समय गाड़ी में फैनी ने अपने पति से बात करनी प्रारम्भ की। उनके मुख पर शान्ति थी यद्यपि वह थकी हुई थीं। उन्होंने कहा, "वेंडल, हमें यहाँ बहुत भला लगता है। सब लोगों के आगे-आगे भोजन करने जाना मुझे किसी कारणवश अधिक सरल लगता है।"

● ● ●

दिसम्बर १९०३ में नार्दर्न सिक्योरिटीज कम्पनी के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका का मुकदमा केन्द्रीय न्यायालय में पहुँचा। सारे देश ने पूर्व की ओर देखना प्रारम्भ किया जहाँ न्यायालय की बैठक हो रही थी। यह प्रत्यक्ष था कि इस मुकदमे से रूजवेल्ट की दण्डनीति की परीक्षा होगी। जनता के सामने दो प्रश्न थे—न्यायालय रेल कम्पनियों के विशाल संगठन को अवैध ठहराकर समाप्त कर देगा या अन्य कम्पनियों के समान यह कम्पनी भी सुरक्षित रहेगी।

तीन महीने पश्चात् निर्णय तैयार हुआ। न्यायाधीश हार्लन ने बहुमत का विचार पढ़ना प्रारम्भ किया। नार्दर्न सिक्योरिटीज कम्पनी पर व्यापार का प्रतिबन्ध लगा दिया गया। न्यायालय के कमरे में कुछ हलचल दिखाई दी। सरकार की विजय हो गई थी। पाँच न्यायाधीश सरकार के पक्ष में थे और चार विरुद्ध थे। इससे जनता बहुत चकित हुई। परन्तु विषय के जानकारों को न्यायाधीश होम्स की विरुद्ध सम्मति से बहुत आश्चर्य हुआ। थियोडोर रूजवेल्ट फूले नहीं समाये। उनका कहना था कि मुकदमे के परिणाम से शासन की एक बहुत बड़ी सफलता प्रत्यक्ष हुई है, एकाधिकारों के विरुद्ध शासन की शक्ति विजयी हो गई है।

परन्तु न्यायाधीश होम्स की विरोधी सम्मति से वह बहुत अप्रसन्न हुए। वह चिल्ला पड़े, "यह व्यक्ति मेरे विरुद्ध क्यों हो गया? इससे

अधिक दृढ़ न्यायाधीश तो मैं एक केले जैसी नरम चीज़ से गढ़कर बना सकता था।"

प्रेसिडेंट की यह अक्षम्य भूल थी। होम्स को न तो जनमत के दबाव की परवाह थी न प्रेसिडेंट के क्रोध की। शर्मन ऐक्ट के विरुद्ध वह सदैव रहे थे, वह अकसर कहते थे, "शर्मन ऐक्ट न्याय के प्रतिकूल है, क्योंकि शक्तिशाली को वह दौड़ में जीतने नहीं देता।" कोई संगठन बड़ा होने के कारण ही अवैध नहीं हो जाता। अपने आचरण और कर्म ही से उसकी वैधता निश्चित होती है। उनका कहना था कि रेलों के सम्बन्ध में संगठन का बड़ा होना अनिवार्य है।

एक वर्ष पश्चात् लोकनर वाले मुकदमे में अपनी विरुद्ध सम्मति देकर उन्होंने श्रम के घण्टों को नियमित करने का अधिकारी शासन को बताया।

जब कोई न्यायाधीश ऐसा निर्णय लिखता है जिसे बहुमत प्राप्त होता है, तो उसका वचन न्यायालय का निर्णय माना जाता है; परन्तु जब वह विरुद्ध सम्मति देता है तो उसे अपने निजी विचार प्रकट करने का अवसर मिलता है। केन्द्रीय न्यायालय के काम में वैयक्तिक सम्मतियाँ बड़े महत्व की होती हैं।

लोकनर वाले मुकदमे में होम्स की विरुद्ध सम्मति वर्षों बाद बहुमत प्राप्त कर सकी और इसलिए वह देश के विधान का अंग बन सकी। मुकदमा एक विश्वास से सम्बन्धित था जिसके पक्ष में होम्स बहुत दृढ़ता से थे। वह विश्वास यह था कि संविधान के अन्तर्गत राज्यों को अपने ही सामाजिक प्रयोग करने के अधिकार प्राप्त हैं। जब ये प्रयोग राज्य के कानूनों के रूप में संघीय शासन से भिड़ते दिखाई देते हैं, तब मुकदमे का फैसला इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि केन्द्रीय न्यायालय कानून को अच्छा मानता है कि बुरा, आधार केवल यह होना चाहिए कि ऐसा कानून संविधान की दृष्टि से वर्जित है कि नहीं।

उन्हीं दिनों एक विशाल औद्योगिक समाज अपने ढंग पर विकास

कर रहा था। सभी प्रयोग संगठन की दिशा में हो रहे थे। पूँजी का संगठन हो, जैसे कि नार्दर्न सिक्योरिटीज् के मुकदमे में प्रत्यक्ष हुआ या राज्य के बनाये कानूनों द्वारा श्रमिक वर्ग स्वरक्षा का प्रयत्न करे जैसा कि लोकनर वाले मुकदमे में प्रत्यक्ष हुआ—हर हालत में प्रयोग को सफल या असफल होने का मौका मिलना चाहिए।

लोकनर वाले मुकदमे में जो विरुद्ध सम्मति दी गई, उसमें न जनवादी वक्ताओं की लफ्फाजी थी न ब्रैंडीस जैसे सुधारकों की सरगर्मी, जो श्रमिकों के शोषित होने पर क्रुद्ध था। उसमें एक विचारक ने स्पष्ट शब्दों में ठंडे हृदय से यह विश्वास प्रकट किया था कि स्वतन्त्रता का सर्वोपरि अर्थ है प्रयोग का अधिकार।

न्यायाधीश ओलिवर वेंडल होम्स का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने में जनता को बहुत समय लगा। अभी तक अमरीकी जन उनकी गणना अपने देश के बड़े न्यायाधीशों, बड़े लोगों में न कर पाये थे। परन्तु वह अपने निश्चय पर पहुँच चुके थे, शांतिपूर्वक और स्थायी रूप से। और उनका निश्चय उनके स्वाध्याय पर आधारित था। जनता को विश्वास हो गया कि जब तक वह न्यायाधीश के आसन पर रहेंगे, तब तक दृढ़तापूर्वक वह अपने निश्चय की रक्षा भी करते रहेंगे। २६ वर्ष तक वह केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश रहे और ६० वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने इस पद से अवकाश लिया।

● ● ●

केन्द्रीय न्यायालय के प्रत्येक न्यायाधीश को सरकार की ओर से एक सचिव मिलता है। होम्स प्रतिवर्ष अपना सचिव बदलते थे, हारवर्ड ला स्कूल से प्रतिवर्ष जो स्नातक निकलते थे, उनमें सर्वोपरि पद से उत्तीर्ण युवक को वह अपना सचिव नियुक्त कर देते थे। होम्स के अध्ययन-कक्ष के दोहरे दरवाजे के बाहर एक बड़ी मेज पड़ी हुई थी, जिस पर नया सचिव आकर बैठता था। महत्वपूर्ण मुकदमों की मिसिलें

पढ़ना, उनका संक्षिप्त विवरण न्यायाधीश के सामने रखना और केन्द्रीय न्यायालय के सामने पेश की जानेवाली अर्जियों की परीक्षा करना सचिव का काम था। एक ही दिन के भीतर सचिव को पता लग जाता कि न्यायाधीश को उसकी सहायता की आवश्यकता नहीं है। वह अपनी सम्मति स्वयं लिखते, नजीरों को ढूँढ लेते और अर्जियों को स्वयं पढ़ते। ये युवक अपने नये अनुभव के पश्चात् जब निश्चिन्त होते, तो अपने लिए दूसरे काम निकाल लेते। होम्स के मस्तिष्क में जीवन, विधान, दर्शन और मानव-प्रकृति के सम्बन्ध में मौलिक विचार भरे पड़े थे। बातों-ही-बातों में वह अपने विचार प्रकट करते और उनके युवक-सचिव ध्यानपूर्वक सुनते तथा सीखते।

होम्स अपने सचिवों को पुत्रवत् मानते थे; उन्हें 'सनी' या 'यंग फ़ेलो' कहकर बुलाते थे। वह उन्हें अपनी लिखी सम्मतियाँ दिखाते और मुक़दमों के सम्बन्ध में उनसे बात करते। ये युवक परिवार के बिल चुकाने जाते, घर का हिसाब रखते और अपने न्यायाधीश का विज़िटिंग-कार्ड बीसियों सरकारी अफ़सरों के घर छोड़ आते। इस प्रकार धीरे-धीरे उनके सचिवों की संख्या तीस तक पहुँची, ये लोग 'होम्स के वार्षिक संस्करण' के नाम से प्रसिद्ध हुए। आगे चलकर ये लोग ऊँचे-ऊंचे पदों तक पहुँचे। एक संयुक्त राज्य अमरीका का प्रमुख कानूनी परामर्शदाता हुआ, दूसरा इस्पात समिति का प्रधान हुआ, तीसरा न्यूयार्क की बीमा कम्पनी का प्रधान हुआ; कुछ बड़े-बड़े बैंकों के प्रधान हुए; थोड़े-से हारवर्ड लॉ स्कूल के प्राध्यापक भी हुए।

इस परिवार के सभी सदस्य काफ़ी बड़ी उम्र के थे पर उसमें युवकों जैसी असाधारण चहल-पहल रहती थी। युवक आते रहते—अकसर चाय पर या भोजन के लिए। दूतावासों के युवक अपनी सुन्दर मित्र लड़कियों को भी साथ लाते। होम्स के सचिव देखते रहते कि अधिक रात बीतने पर भी तहखाने से अटारी तक बिजली की रोशनी चमकती दिखाई देती। श्रीमती होम्स ने एक बार अपने मित्रों से कहा,

"रात के दो बजे तक आप जब चाहें किसी समय भी हमसे मिलने आ सकते हैं।"

अपने काम के प्रति भी न्यायाधीश होम्स का रुख युवकों जैसा ही रहता। युवकों की भाँति ही वह उत्सुक होते, उसी भाँति बड़ा मुकदमा सामने आने पर भय का अभिनय करते, देर होने पर उसी भाँति वह अपना अधैर्य प्रकट करते। होम्स को अपने सहयोगी ढील के भूत के वशीभूत दिखाई देते। जिस राय के लिखने में उन्हें दो सप्ताह से छः महीने तक लगते, उसे वह शनिवार और सोमवार के बीच पूरा कर देते। परन्तु उनके सहयोगी कभी-कभी उनकी सम्मतियों की संक्षिप्तता की शिकायत करते; कहते कि इस कारण वे उनकी समझ में नहीं आतीं। एक सम्मति पर टिप्पणी करते हुए न्यूयार्क के 'सन' नामक पत्र ने यह प्रश्न किया कि क्या हारवर्ड में कानूनी लोग इसी प्रकार बात करते हैं।

होम्स इस टिप्पणी से बहुत उदास हो गए। उपर्युक्त आलोचना के पश्चात् उन्होंने अपनी अगली सम्मति अपने सचिव को दिखाई, और जब वह उसका एक वाक्यांश नहीं समझ सका तो उन्होंने कठोरतापूर्वक उससे कहा, "मैं विशेषज्ञों के लिए ही लिखता हूं। जो बात तुम ढूंढ रहे हो, वह एक ही शब्द में यहाँ बता दी गई है। देख लो।" सचिव ने पाण्डुलिपि लौटाते हुए यह कहकर अपनी सहमति प्रकट की कि एक ही शब्द में पूरे वाक्य के अर्थ आ जाते हैं। वह आगे फिर अपनी शंका प्रकट करना चाहता था कि होम्स ने टोक दिया, "भगवान् बचाये! यदि तुम नहीं समझ पाते तो दूसरा मूर्ख भी नहीं समझ पायेगा।" यह कहकर उन्होंने अपनी सम्मति में एक फ़ालतू वाक्य जोड़ दिया।

● ● ●

सन् १९१४ में प्रथम महासमर छिड़ने के समय होम्स की अवस्था ७३ वर्ष की थी। अधिकांश अमरीकियों की अपेक्षा वह कम भयभीत हुए

थे। उन्हें युद्ध से घृणा थी, तीन वर्ष तक सैनिक जीवन व्यतीत करके बुढ़ापे में युद्ध-क्षेत्र की वीर-गाथाएँ सुनाने की उन्हें कभी नहीं सूझी। परन्तु उन्होंने बहुत-से समर देखे थे और इस विश्वास से सहमत न थे कि इस समर के पश्चात् कोई दूसरा समर न होगा। बहुत-से सुधारकों और दार्शनिकों ने समर की दुष्टता और मूर्खता अवश्य प्रमाणित कर दी थी, परन्तु इसी कारण यह आशा भ्रामक ही थी कि समर समाप्त हो जायेगा। होम्स ने एक बार कहा था, "जब तक मानव मृत्यु-लोक का प्राणी है, तब तक उसके भाग्य में यदा-कदा लड़ना बदा है।" समाचारपत्रों ने उन्हें इस कारण युद्ध का समर्थक कह डाला था। परन्तु उन्होंने केवल सत्य कहा था, उसका समर्थन नहीं किया था।

कैपिटोल के पुराने न्यायालय में केन्द्रीय न्यायालय का काम नियमानुसार चलता रहा। ऐसे ही समय जनवरी १६१६ में प्रेसिडेंट विलसन ने लुई ब्रैंडीस को केन्द्रीय न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया तो थोड़े समय के लिए पत्रों के मुखपृष्ठ पर समर की चर्चा समाप्त हुई। देश के एक तट से दूसरे तट तक पत्र ब्रैंडीस के पक्ष में या विरुद्ध मत प्रकट करने लगे। कोई उन्हें समाजवादी कहता तो दूसरा उन्हें अराजकतावादी बताता। हारवर्ड विश्वविद्यालय के अध्यक्ष लावेल के नेतृत्व में ५५ नागरिकों की एक समिति बनी जो ब्रैंडीस की नियुक्ति के विरुद्ध थे। सिनेट द्वारा जाँच ५ महीने तक चलती रही। ,४३ साक्षियाँ गुजरीं और बयान के पृष्ठों की संख्या १,३०० तक पहुँची।

इस संघर्ष में होम्स बराबर समझदारी के साथ खामोश रहे। वह ब्रैंडीस को तब से जानते थे जब वह ला स्कूल में पढ़ते थे। उस समय ब्रैंडीस बोस्टन के एक युवक वकील थे। कानून के अध्ययन की अवधि तीन वर्ष थी। ब्रैंडीस ने तीन वर्ष की पढ़ाई दो वर्ष में ही पूरी कर ली थी और उन्हीं दिनों उन्हें रोजी के लिए परिश्रम भी करते रहना पड़ा था। यों उनकी प्रतिभा की असाधारणता प्रत्यक्ष हो गई थी। सामाजिक अन्याय से वह बहुत प्रभावित थे। बोस्टन के निकट औद्योगिक नगरों

की बढ़ती हुई गन्दी बस्तियाँ उन्हें सुधार के लिए प्रेरित करने लगीं थीं। होम्स के समान उनके पूर्वज भी स्वातन्त्र्य-प्रिय रहे थे। उनके माता-पिता सन् १८४८ में बोहेमिया के राजनीतिक विप्लव से बचने के लिए अमरीका आये थे; और केंटुकी के लुईविल कस्बे में उनका जन्म हुआ तथा वहीं वह पले-बढ़े। जब वह १६ वर्ष के हुए तो उनके माता-पिता ने उन्हें जर्मनी के ड्रेस्डेन नगर भेज दिया कि वह किसी जर्मन विश्वविद्यालय के स्नातक होकर पढ़ाई पूरी करें। परन्तु वह वहाँ से लौट आये थे क्योंकि उनकी समझ में केंटुकी की जीवनचर्या अधिक स्वतन्त्र थी।

होम्स इस युवक की ओर बहुत आकृष्ट हुए, दोनों एक समान शील स्वभाव के थे। दोनों कुशाग्र बुद्धि और पूर्णतः स्वतन्त्र थे; दोनों में असाधारण आशावादिता थी।

ब्रैंडीस भी ऐसे विद्वान के प्रति आकृष्ट हुए जिनका सिपाहियाना ठाठ रहा था, जिन्हें सामाजिक जीवन में ऐतिहासिक महत्व प्राप्त था, जिन्हें निर्धनता और अत्याचार का कोई निजी अनुभव न था, परन्तु जिनका आन्तरिक प्रेरणा से वही दृष्टिकोण बन गया था जो ब्रैंडीस ने कटु अनुभव द्वारा ही प्राप्त किया था।

महायुद्ध के दौरान में, और तत्पश्चात् शती के तीसरे शतक में संयुक्त राज्य अमरीका में दौलत के साथ असहिष्णुता बढ़ रही थी, और इस परिस्थिति में जब होम्स और ब्रैंडीस बच्चों से मजदूरी कराने, साम्यवादियों को पकड़ने या अल्पमतावलम्बियों के अधिकारों की अवहेलना के विरुद्ध सम्मति देते थे तो या तो वे अकेले ही होते या अल्पमत में होते।

मार्च १६२१ में होम्स ८० वर्ष के हुए। जन्म-दिवस के प्रातःकाल वह न्यायालय गये। संविधान के १४वें संशोधन पर उन्हें बहुमत के विरुद्ध सम्मति देनी थी; स्टोन और ब्रैंडीस भी उनके साथ थे। समाचार-पत्रों ने इस प्रकार टिप्पणी की कि होम्स स्वस्थ सैनिक की चाल से अपनी कुर्सी तक पहुँचे और बड़ी उत्सुकता के साथ अपनी सम्मति दे दी।

तीसरे पहर ब्रैंडीस के साथ वह पैदल घर आये। आसमान साफ़ था और वायु में वसन्त का रंग था। घर पहुँचने पर फैनी को नियमानुसार उन्हें एक छोटा-सा भोज देना था, परन्तु ब्रैंडीस उदास थे। क्या न्यायालय कभी संसार की प्रगति को पहचान न सकेगा? होम्स ने हँसते हुए ब्रैंडीस से कहा, "तुम यौवन की निराशा के रोगी हो। जब अस्सी वर्ष की उम्र को पहुँचोगे, तभी तुम्हारी समझ में आयेगा कि संसार का सुधार कानून से होना नहीं, वह लोगों के अधिक सभ्य होने से ही होगा।"

ब्रैंडीस हँसे क्योंकि वह चौंसठ ही वर्ष के थे। घर पहुँचकर होम्स ने मुड़कर कहा, "ब्रैंडीस! अच्छा ही रहा; हम लोगों ने अपने सहयोगियों को अपनी समझ से कुछ कष्ट तो पहुँचाया ही।"

भीतर जाकर उन्होंने फैनी को पुकारा। जन्म-दिवस के भोज की तैयारी उन्हें दिखाई न दी। श्रीमती होम्स ने कहा, "बावर्ची बीमार है, इसलिए हम लोगों को भोजन के लिए आरलिंगटन होटल जाना होगा। श्वेत टाई अवश्य लगाओ। हम लोग जन्म-दिवस मनायेंगे अवश्य, यद्यपि मद्य-निषेध के कारण होटल में तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए हम मद्यपान नहीं कर सकेंगे।"

होम्स ने झल्लाते हुए सीढ़ी चढ़कर अपनी पोशाक बदली। उसी प्रकार झल्लाते हुए नीचे उतरे और नौकर को चिल्लाकर पुकारा और दो-चार सुनाकर उससे पूछा, "मेरे सिगार कहाँ है?"

नौकर ने हँसते हुए बैठके की ओर संकेत किया। होम्स भीतर गये। अतिशदान के सामने फैनी भूरे साटिन की बहुत बढ़िया पोशाक पहने खड़ी थीं। अपने श्वेत बालों को चारों ओर से घसीटकर उनका जूड़ा सिर के ऊपर बना लिया था, जिस कारण उनकी भौंहें भी चढ़ी दिखाई देती थीं। ८१ वर्ष की उम्र में वह पहले से अधिक छोटी और दुबली दिखाई देती थी। पन्तु उन्हें देखकर होम्स बहुत गौरवान्वित हुए, इतनी नाजुक और वूढ़ी होकर ब्लाउज के ऊपर गरदन तक जाली ओढ़े, आँखों

पर ऐनक लगाये और अपने सीने पर बनफ्शे के फूल खोंसे इस महिला की मानसिक शक्ति अब भी दस नारियों के बराबर थी। उनके मुख की असंख्य झुर्रियों के पीछे उनकी आँखों में गम्भीरता और चमक थी।

भोजन-कक्ष के द्वार खुले तो रोशनी की चकाचौंध के नीचे सफेद जामदानी, चाँदी के बर्तन और फूलों से सजी मेज़ के पास युवकों की भीड़ खड़ी दिखाई दी। होम्स यह देखकर चकित हुए कि फैनी ने उनके भूतपूर्व सचिवों को जन्म-दिवस के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किया था, जिस कारण कम-से-कम एक दर्जन युवक इकट्ठे हो गये थे।

इनमें से एक ने चिल्लाकर कहा, "हम सब तहखाने से होकर आये हैं। श्रीमती होम्स कोयले के ढेर के पास हमें एक घण्टे तक छिपाये रहीं।" होम्स कुछ देर द्वार पर स्तब्ध खड़े रहे। फिर लम्बी साँस लेकर बोले, "मैं जानता था कि यह कोई-न-कोई हरकत करेंगी।" आगे बढ़कर उन्होंने आमन्त्रितों का स्वागत किया, और एक लम्बा-सा शराब का गिलास उठाकर पूछा, "ये गिलास किस लिए जमा किये गए हैं?"

फैनी ने कहा, "शैंपेन के लिये।"

होम्स हँसकर बोले, "खिड़कियाँ बन्द कर दो। काश कि मेरे पिता मुझे इस समय देख पाते। वह सदैव मुझसे कहा करते थे कि तुम पियक्कड़ ही मरोगे।"

● ● ●

मुख्य न्यायाधीश ह्वाइट की मृत्यु के पश्चात् प्रेसिडेंट ने टैफ्ट को रिक्त पद पर नियुक्त किया। होम्स जानते थे कि उस पद पर नियुक्ति के लिए उनकी अवस्था अत्यधिक हो गई थी। यदि उनकी अवस्था कम होती तो वह अवश्य नियुक्त होते। उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा, "मुझे वास्तव में कोई चिन्ता नहीं है।"

यह सत्य था। होम्स को पद की कभी आकांक्षा नहीं रही थी।

यदि अपने सेवा-काल के अन्त तक उन्हें यह विश्वास हो जाये कि कानून के क्षेत्र में किसी प्रकार किसी मौके पर भी वह सर्वोत्तम सेवा कर सके, तो वह सन्तोषपूर्वक मर सकेंगे। पद या उपाधि से ही इस आकांक्षा की पूर्ति असम्भव होती।

८० वर्ष पार करने पर ही न्यायाधीश होम्स के महत्व का पता अमरीकी जनता को लगा। उनकी संक्षिप्त सम्मतियाँ पसन्द की जाने लगीं और विशेष रूप से निर्णय के विरुद्ध उनकी सम्मतियाँ। 'प्रमुख विरोधी' की उपाधि से वह अलंकृत हुए।

परन्तु होम्स की विरोधी सम्मतियों की सर्वोपरि प्रसिद्धि से यह प्रमाणित नहीं होता कि वह नकारात्मक विद्रोही थे। होम्स सदैव विरुद्ध सम्मति देने की विवशता पर खेद प्रकट करते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि अत्यधिक विरोध से न्यायालय की प्रतिष्ठा को धक्का लगता है। परन्तु कटु सत्य यही था कि सामाजिक जीवन के क्रान्तिकाल में बराबर होम्स को न्यायालय में अधिकांश सहयोगी ऐसे ही मिले जो इतने लकीर के फ़क़ीर थे कि वे हठधर्मी ही नहीं, अन्धे भी कहे जा सकते थे। वह विरुद्ध सम्मति देने के लिए विवश थे, क्योंकि खामोश रहने पर वह कर्तव्य-विमुख होते।

होम्स को प्रमुख विरोधी की उपाधि अपनी विरुद्ध सम्मतियों की संख्या ही के कारण नहीं मिली थी, क्योंकि उनके कुछ सहयोगी उनसे अधिक विरुद्ध सम्मतियाँ देते रहते थे। उनकी सम्मतियाँ अपने गुण के कारण प्रसिद्ध हुईं, संख्या के कारण नहीं। एक के बाद एक कई मुकदमों में वह मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित विधान, भाषण और समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता के मौलिक सिद्धान्तों के संरक्षण के लिए संघर्ष करते रहे।

टैफ्ट होम्स को 'वयोवृद्ध सज्जन' कहते थे। इन वयोवृद्ध सज्जन के शब्दों ने अमरीकी जनता को कितना प्रभावित किया और उनकी चोट कितनी गहरी थी, यह सोचकर आश्चर्य होता है। वे लोग भी, जो

कानूनी साहित्य पढ़ने की कल्पना तक नहीं करते थे, उन्हें भी इन सज्जन के वचनों की जानकारी हो गई थी। एक दिन एक पत्रकार को अपने पत्र के लिए कुछ पाठ्य-सामग्री की चिन्ता हुई तो कैपिटोल स्क्वायर के राहगीरों से उसने पूछना शुरू किया कि उन्होंने न्यायाधीश होम्स का नाम सुना है कि नहीं।

एक मिस्त्री अपना लबादा पहने बेंच पर बैठा समाचारपत्र का खेल-कूद वाला पृष्ठ पढ़ रहा था। पत्रकार ने जाकर उससे पूछा, "होम्स को जानते हो ?" मिस्त्री ने उत्तर दिया, "होम्स को पूछ रहे हो ? क्यों नहीं जानता हूँ ? वह केन्द्रीय न्यायालय का एक नौजवान न्यायाधीश है जो बूढ़ों से सदैव अपनी असहमति प्रकट किया करता है।"

● ● ●

सन् १९२९ की शरद् के उत्तरकाल में एक दिन ऐसे समय जब श्रीमती होम्स भोजन करने के लिए कपड़े पहनती थीं, उनकी नौकरानी कमरे में गई, तो उसने अपनी मालकिन को पलंग पर लेटे पाया। वह गहरी साँसें ले रही थीं और उनका मुख बिगड़ गया था। वह कहीं गिर गई थीं और किसी प्रकार पलंग तक पहुँच गई थीं। उन्होंने किसी को पुकारा नहीं था। उन्होंने कहा, "कोई बात नहीं है। मेरी ! जज साहब से कह दो कि कोई चिन्ता न करें।"

डॉक्टर आया; पता लगा कि श्रीमती होम्स की जाँघ की हड्डी टूट गई थी। डॉक्टर ने गम्भीरता से कहा, "पलस्तर चढ़ाना होगा। बचाने की पूरी कोशिश की जायेगी।" उस समय वह ८९ वर्ष की थीं। वह इतनी बूढ़ी हो गई थीं कि हड्डी का जुड़ना असम्भव हो गया था।

डॉक्टर ने कहा, "फैनी को कोई कष्ट नहीं है।" उन्हें न कोई रोग था न ज्वर। परन्तु एक दिन तीसरे पहर अपने शयन-गृह की खिड़की के पास बैठे हुए होम्स ने देखा कि उनकी पत्नी का मुख बहुत उतरा हुआ था, मानो उन्हें कोई कष्ट हो रहा हो। अपना मुख पति की ओर

करके उन्होंने धीरे से कहा, "वेंडल ! मैं थकी हुई हूँ, बहुत थकी हुई हूँ, यही बात है। अब तुम जाकर आराम करो और मैं थोड़ा-सा सो लूँ।"

अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में एक दिन तीसरे पहर पड़ोस के एक जवान वकील ने घण्टी बजाई। हब्शी नौकर ने द्वार खोला तो वकील ने उससे कहा, "मैं भीतर नहीं आऊँगा, मुझे पूछना था—"

नौकर ने कहा, "भीतर आ जाइये, जज साहब आपसे बात करना चाहेंगे, वह अकेले हैं।"

होम्स सीढ़ी से उतरकर नीचे आये। वह मखमली जैकेट पहने सिगार पी रहे थे। बोले, "वाल्टर! भीतर आ जाओ, फैनी सो रही है, वह सो रही है, वह बहुत थकी हुई है।" कुछ रुककर वह फिर बोले, "हमारी समझ में अब वह सोकर नहीं उठेगी, कभी नहीं उठेगी।"

मुख्य न्यायाधीश टैफ्ट ने इस बात के लिए हठ किया कि आरलिंगटन में सैनिकों की श्मशान-भूमि में फैनी होम्स को दफ़न किया जाये। होम्स स्वयं अपने बारे में भी यही चाहते थे कि मरने पर उन्हें भी वहीं दफ़न किया जाये परन्तु युद्ध-मन्त्री से इस बात की अनुमति माँगने में उन्हें शर्म आती थी। अब उन्हें विश्वास हो गया कि फैनी वहाँ दफ़न होगी तो वह भी उसके साथ दफ़न होंगे।

फैनी की बीमारी के समय, और इस समय भी, होम्स की दिनचर्या में कोई फ़र्क नहीं आया। सामने मौत भी खड़ी हो तो सैनिक की भाँति क्षण-प्रतिक्षण उनका जीवन चलता रहे। होम्स अपने इन्हीं दार्शनिक विचारों को कार्यान्वित कर रहे थे।

भाषण की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित एक मुकदमा—संयुक्त राज्य अमरीका बनाम श्विमर—न्यायालय के सामने आया। एक औरत को नागरिकता का अधिकार नहीं मिल रहा था, क्योंकि वह शान्तिवादी थी, और उसने यह साक्षी दी थी कि लड़ाई होने पर वह अस्त्र धारण नहीं करेगी। होम्स जानते थे कि बहुमत किस ओर होगा और उनका रोम-रोम ऐसे बहुमत के विरुद्ध था।

मई के अन्तिम सप्ताह में न्यायालय ने अपना फैसला सुनाया, और होम्स ने अपनी विरुद्ध सम्मति पढ़ी,

...यदि संविधान का कोई एक सिद्धान्त ऐसा है जिसके बारे में हम यह कह सकें कि हमें अन्य सिद्धान्तों की अपेक्षा उसके प्रति अधिक लगाव होना चाहिए तो वह है स्वतन्त्र विचार का सिद्धान्त—स्वतन्त्र विचार उनके लिए नहीं, जो हमसे सहमत हों, परन्तु उस विचार की स्वतन्त्रता भी जिमसे हम घृणा करते हैं।

जब वह अपना काम समाप्त कर चुके तो पोटोमैक नदी पार करके घूमती पहाड़ी पर चढ़ते आरलिंगटन में फैनी की समाधि के पास पहुँचे। पहाड़ी के शिखर पर ली-भवन के स्तम्भ पेड़ों के पीछे दिखाई दे रहे थे और भवन पर राष्ट्रीय झण्डा लहरा रहा था। नीचे चौड़ी नदी चमकती हुई बह रही थी।

होम्स अपनी मोटरकार से उतरे। उनका हब्शी ड्राइवर बक्ले भी उतरा और घास पर उनके पीछे-पीछे चलने लगा। कब्र के पास पहुँचने पर बक्ले एक कोने पर खड़ा होकर वह दृश्य देखने लगा जो उसे छः वर्ष तक और देखना था। जब दोनों इस स्थान पर आते, विधि हमेशा एक ही रहती। समाधि-शिला के पास जाकर होम्स गुलाब, पोस्ते और हनीसकिल के फूल समाधि पर रखते और थोड़ी देर तक चुपचाप खड़े रहते। इसी खामोशी से शिला पर अपना हाथ लगाये और अपनी उँगलियों से उसे थपथपाते, वह समाधि की परिक्रमा करते; तत्पश्चात् मुँह फेरकर पहाड़ी के नीचे पेड़ों के बीच से होते हुए वापस जाते।

● ● ●

८ मार्च, १९३१ को रविवार था। उस दिन होम्स की ९०वीं वर्ष-गाँठ थी। अपने पुस्तकालय में बैठे वह सारे देश और ब्रिटेन से प्राप्त जन्म-दिवस की बधाइयाँ पढ़ रहे थे।

उस दिन संध्या के समय उनकी मेज पर एक माइक्रोफ़ोन लगा दिया गया। साढ़े दस बजे बार एसोसियेशन के अध्यक्ष और येल लॉ स्कूल के डीन क्लार्क न्यूयार्क से बोलने को थे; वाशिंगटन से मुख्य न्यायाधीश ह्यूस बोलने को थे। होम्स को उन्हें संक्षेप में अपने उत्तर देने थे।

केम्ब्रिज में पाँच सौ लोग हाल में इकट्ठे हुए। होम्स के विषय में व्याख्यान हुए, उनके संस्मरण सुनाये गये। ठीक समय पर कमरे में पूर्ण शान्ति व्याप्त हुई और लोग लाउडस्पीकर की ओर देखने लगे। परिचित बोली सुनाई देने लगी। इस बोली में धीमापन था, कुछ थकी हुई भी थी, परन्तु बिलकुल साफ और हमेशा की तरह मधुर।

...दौड़ में घुड़सवार अपने लक्ष्य तक पहुँचने पर एकदम नहीं रुक जाते। रुकने के पहले थोड़ी-सी हलकी दौड़ हो ही जाती है। मित्रों की बात सुनने और अपनी आत्मा से कहने का मौका मिलता है कि काम पूरा हो गया है। परन्तु इतना कहते ही उत्तर मिलता है: "दौड़ तो समाप्त हो जाती है, परन्तु जब तक काम करने की शक्ति रहती है तब तक काम का अन्त नहीं होता।" दौड़ के पश्चात् हलकी चाल पर आकर घोड़ा रुकता है, परन्तु शान्त नहीं होता। प्राण रहते यह सम्भव नहीं, क्योंकि कर्म ही जीवन का धर्म है। जीवन का यही तत्व है।

दूसरे दिन सोमवार को अमरीकी जनों ने गर्वपूर्वक सुना कि समय से होम्स अपने न्यायालय पहुँचे और बहुमत के पक्ष में अपना निर्णय सुनाया। उस वसन्त ऋतु भर वह न्यायालय में लगातार उपस्थित होते रहे। उन्हें काम करते देखकर आश्चर्य होता था। एक समाचार-पत्र ने लिखा: "न्यायाधीश होम्स ने वृद्धावस्था को भी आनन्द का क्षेत्र बना लिया है। उन्हें देखकर वृद्धावस्था के प्रति निराशा नहीं बल्कि आशा की भावना जागृत होती है।"

परन्तु उनके निकट सम्बन्धी, उनके घर के लोग, जानते थे कि उनकी शक्ति सीमित ही है, क्योंकि वह शीघ्र थक जाते थे और

रात के समय काम नहीं कर सकते थे। ११ जनवरी, १९३२ के दिन जब वह बहुमत के पक्ष में अपना निर्णय सुनाने न्यायालय में आये तो दर्शकों ने उन्हें बहुत ही स्वस्थ पाया। उनके श्वेत केशों और मूँछों के मध्य उनके गाल गुलाबी दिखते थे। परन्तु जब वह पढ़ने लगे, तो उनकी वाणी काँपती हुई और हलकी लगी। पढ़ते हुए उनका सिर हिलता जाता था। जो कुछ वह बोले वह सामने पड़ी बेंचों पर बैठे लोगों को ही सुनाई दिया।

वह दिन-भर बैठे रहे। परन्तु जब साढ़े चार बजे न्यायाधीश उठे तो पेशकार की मेज पर जाकर उन्होंने कहा, "मैं कल नहीं आऊँगा।" उसी रात अपना इस्तीफा लिखकर उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसिडेण्ट की सेवा में भेज दिया। अगले दिन दोपहर के समय न्यायाधीशों ने होम्स को पत्र लिखा और चपरासी के हाथ उसे उनके पास भेज दिया। होम्स का उत्तर इस प्रकार था :

प्रिय बन्धुओ,

मुझे एक बार और आप लोगों को 'बन्धु' कहकर सम्बोधित करने का अवसर दीजिये। आपके सहानुभूति और उदारता से भरे हुए पत्र ने मेरे अन्तरतम की भावनाओं को छू लिया है। आप जैसे सज्जनों के प्रति मेरी भावना आदर और भक्ति की रही, तो आपके साथ इतने लम्बे समय तक रहने पर मेरे हृदय में आपके प्रति स्नेह भी हो गया है। अपने बचे जीवन में मुझे इस अमूल्य निधि की रक्षा करनी है, मानो सूर्यास्त में मैं सुवर्ण मिला रहा होऊँ।

सस्नेह,
ओलिवर वेंडल होम्स

• • •

पिछले दस वर्षों से घर के चिकित्सक कहते रहे थे कि काम रोकने पर न्यायाधीश का प्राणांत हो जायेगा। पर तीन वर्ष वह और जीवित रहे और उनके जीवन के ये वर्ष किसी प्रकार दुखदायक नहीं रहे। होम्स का स्वास्थ्य फिर सुधरा और वह प्रसन्नचित्त रहने लगे। होम्स के मुख पर एक अलौकिक और आकर्षक आभा दिखाई देने लगी।

कोठी के बरामदे में बैठे वह षोडश वर्षीय बेट्सी वार्डन से बातें करते, "तुमसे कोई बात करने में मुझे कोई संकोच न होगा, क्योंकि तुम अत्यधिक छोटी हो, यदि तुम को भी मुझसे बात करने में इसलिए संकोच न हो कि मैं अत्यधिक बूढ़ा हूँ।"

वर्ष के अन्त तक हारवर्ड से एक नया सचिव उनकी सेवा में भेजा गया यह सोचकर कि होम्स के सत्संग से ही युवक लाभान्वित होंगे, यद्यपि अब न्यायालय से उनका सम्बन्ध नहीं था। होम्स ने आपत्ति की, परन्तु बात करने के लिए एक युवक का घर में रहना उन्होंने पसन्द ही किया। आम तौर से नाश्ते के पश्चात् न्यायाधीश सूचना दे देते कि उन्हें दिन-भर कुछ नहीं करना है। परन्तु आधे घण्टे पश्चात् सचिव को बुला-कर कहते, "बेटे, चलो कुछ आत्मोन्नति हो जाये," और उसे कुछ पढ़ सुनाने का आदेश दे देते।

सन् १९३३ में प्रेसिडेंट का पद ग्रहण करने के कुछ दिन पश्चात् फ्रैंकलिक डी० रूजवेल्ट उनका आशीर्वाद लेने आये। उस समय होम्स अपने पुस्तकालय में बैठे प्लेटो की कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। रूजवेल्ट पूछ ही बैठे, "न्यायाधीश जी, आप प्लेटो क्यों पढ़ रहे हैं?"

होम्स ने सीधा-सादा उत्तर दिया, "प्रेसिडेंट महोदय, अपनी आत्मोन्नति के लिए।"

तीन दिन पहले, ५ मार्च को रूजवेल्ट ने बैंक बन्द करा दिये थे, सोने का आयात-निर्यात बन्द कर दिया था और देश के भीषण आर्थिक संकट पर विचार करने के लिए विधान-मण्डल का विशेष अधिवेशन बुलाया था। रूजवेल्ट ने गम्भीरतापूर्वक होम्स से कहा, "जीवित अमरीकियों

में आप सर्वोपरि हैं। आपको देश के इतिहास की आधी शती का निजी ज्ञान है। आपका उसके महापुरुषों से परिचय हो चुका है। अन्धकार का समय है। न्यायाधीश जी, अपने परामर्श से मुझे अनुगृहीत कीजिये।"

होम्स ने उनकी ओर देखकर कहा, "प्रेसिडेंट महोदय, परिस्थिति समर की-सी है। मुझे भी समर का अनुभव है। समर में एक ही नियम चलता है—व्यूह रचो और लड़ो।"

फरवरी, १९३५ के अन्तिम सप्ताह में होम्स को ठंड लग गई और शीघ्र ही वह निमोनिया में जकड़ गये। नगर-भर में खबर फैल गई कि रोग घातक है। होम्स भी जान गये और भयभीत नहीं हुए। कुछ ही सप्ताह पहले उन्होंने अपने सचिव से कहा था, "मृत्यु से क्यों डरूँ? मैंने कई बार काल के दर्शन किये हैं। जब वह आयेगा तो पुराने मित्र के समान मैं उसका स्वागत करूँगा।"

पाँचवीं मार्च की सन्ध्या के निकट पत्रकारों ने अस्पताल की एक गाड़ी उनके द्वार के सामने रुकती देखी। ऑक्सीजन देने का सामान भीतर ले जाया गया। होम्स ने आँखें खोलकर सामान को अपने पलंग के पास सजते और उसका ढक्कन अपने मुख पर लगते देखा। वह कुछ हिले और साफ शब्दों में बोले, "यह सब तमाशा क्यों?" वृद्ध को कुछ और श्वास मिल जायें, इसीलिए लोगों ने यह सब परेशानी उठाई थी।....

रात के दो बजे तक डॉक्टरों को पता लग गया कि अन्त निकट है। ऑक्सीजन की नालियाँ हटा दी गईं। होम्स अपनी आँखें बन्द किये पड़े रहे और शान्तिपूर्वक साँस लेते रहे। वसन्त का आगमन निकट था। बाग में पेड़ों की गीली डालें खड़खड़ा रही थीं और गली से पहियों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी। होम्स संसार से विदा हुए, इतनी शान्ति से कि किसी को मृत्युकाल का ठीक पता भी न चला।

सोलहवीं सड़क और हारवर्ड सड़क के चौराहे पर श्वेत स्तम्भों का आल सोल्स गिर्जाघर है। अन्तिम संस्कार की प्रार्थना वहीं पढ़ी गई।

प्रार्थना में सादगी थी। पादरी ने होम्स के शब्द ही दोहराये, "एक वीर की समाधि पर हम निश्चित अन्त की प्रत्यक्षता से दुखी नहीं होते, हम उसके साहस से स्फूर्त ही होते हैं और आनन्द के अतिरेक में हम संघर्ष के लिए अपनी-अपनी जगहों पर वापस जाते हैं।"

आर्लिंगटन श्मशान-भूमि में होम्स की समाधि की बगल में प्रेसिडेंट सहित केन्द्रीय न्यायालय के सभी न्यायाधीश हाजिर हुए। आठ पैदल सैनिकों ने एक साथ बंदूकें दागकर सलामी दी—एक-एक घाव के लिए एक-एक सलामी—बाल्स ब्लफ, ऐंटियेटम, फ्रेडरिक्सबर्ग।

एक सैनिक ने कुछ अलग खड़े होकर अपना बिगुल बजाया।

ओलिवर वेंडल होम्स

कप्तान और ब्रिवेट कर्नल

२०वीं मसाचुसेट्स वालंटियर पैदल सेना, गृहयुद्ध

संयुक्त राज्य के केन्द्रीय न्यायालय के न्यायाधीश

मार्च, १८४१ मार्च, १९३५

होम्स 'महान् विरोधी' की उपाधि से प्रसिद्ध थे। परन्तु यह उपाधि भ्रान्तिमूलक थी। महान् सिद्धान्त के पक्ष में संघर्ष करना विरोध नहीं, समर्थन है।

वर्षों पहले एक स्मारक-दिवस में बोलते हुए उन्होंने स्वयं कहा था, "भाग्य के आदेश से कोई व्यक्ति हाथ में फावड़ा लेकर नीचे की ओर देखते खोदने लगे या महत्त्वाकांक्षा के आदेश से हाथ में कुल्हाड़ी और रस्सी लिये हिम-शिखर पर चढ़ना प्रारम्भ करे—उसके बस की एक ही सफलता है और वह यह कि जो काम हाथ में ले उसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति अर्पित कर दे।"

एक आदर्श अमरीकी मज़दूर
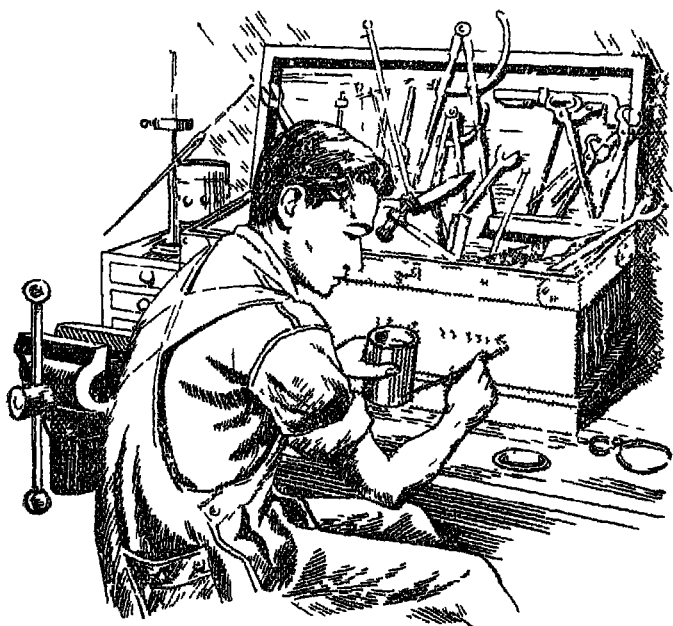
(वाल्टर पी० क्राइसलर की आत्मकथा 'लाइफ़ आफ़ ऐन अमेरिकन वर्कमैन' का सार; सहलेखक बायडेन स्पार्क्स)

प्रसिद्ध क्राइसलर मोटरों के निर्माता और इस विशाल व्यवसाय के स्वामी का अपने को 'मज़दूर' कहना सर्वथा उचित ही है। वह काम और काम करनेवालों दोनों ही को सम्मान की दृष्टि से देखते थे; अपने इसी गुण की बदौलत वह रेल के कारखाने के फर्श की सफाई करने जैसे तुच्छ काम से उन्नति करके संसार के एक विशालतम कारोबार का निर्माण कर सके।

एक आदर्श अमरीकी मज़दूर

मेरे पिता रेलवे के इंजीनियर थे। यों मशीन ही मेरे पालन-पोषण में उनकी सहायक हुई। मैं कोई भी मशीन देखता हूँ, तो उसकी बनावट और क्रिया को गहराई से जानने की मुझमें उत्कट इच्छा होती है। यह सब प्रारम्भिक जीवन से मेरे प्रशिक्षण, स्वभाव और प्रवृत्ति के समन्वय का परिणाम है।

संयुक्त राज्य अमरीका के पश्चिमी भाग में घास से ढका एक विस्तृत समतल प्रदेश है, जिसके कंसाज़ नामक राज्य में एलिस नामक एक छोटे-से कस्बे में बड़ी बस्तियों से दूर हमारा घर था। कस्बे से होकर जो रेल की लाइन जाती थी, उसमें हमें उस सभ्य संसार के कोलाहल की झलक मिलती थी, जो हमारे पूर्व में था। निकट ही रेल का एक पुल था, जिसके नीचे बहती जल-धारा के कल-कल नाद में हमें दूसरे ही प्रकार के कोलाहल की याद आती थी। धारा के नरम तट पर मैदान के जंगली पशु अपने पग-चिह्न छोड़ जाते, और कभी-कभी हमें उन जंगलियों के पद-चिह्न भी दिखाई देते, जो मोकासिन नामक विचित्र जूते पहनते थे। समतल भूमि की सभ्यता के इस सुदूर और पतले छोर पर बसे गोरों को सदैव जंगली आदिवासियों का डर लगा रहता था।

मैं एक ही वर्ष का था, जब हमारे कस्बे के उत्तर में कस्टर और उसके साथी मार डाले गये। सन् १८७८ के अन्त में, जब मैं साढ़े तीन

वर्ष का था, डिकाटुर और रालिंस जिलों के कुछ गोरों को चाइयन के जंगली आदिवासियों के एक दल ने काट डाला था। रात के समय रसोईघर की अँगीठी के चारों ओर जब हम बैठते, और हमारे पड़ोसी पास बैठे गरम-गरम कहवा प्यालों में डालकर उसे फूँक-फूँककर पीते, तब बार-बार अँगीठी के लाल अंगारों के प्रकाश में हमें ऐसी ही कहानियाँ सुनाई जातीं। पांच वर्ष की अवस्था तक चपतियाये जाने पर ही मैं दबता था और मुझे अपनी निर्बलता का आभास भी था। तो भी जब कभी शयन-गृह के भीषण अन्धकार में अकेले जाने से हिचकता तो मेरी माँ मुझे भली प्रकार आश्वासन दे देतीं कि मुझे कभी कोई जंगली न पकड़ सकेगा; और हुआ भी यही कि कभी किसी जंगली की पकड़ में मैं नहीं आया।

मेरी माँ सीमान्त प्रदेश की एक विशालकाय और सशक्त महिला थीं। घास के समतल मैदान के बसने से पहले उन्नीसवीं शती के आठवें दशक में कंसास राज्य के रेल-मार्ग पर बसे कस्बों में उनके चार पुत्र जन्मे, जिनमें मेरा नम्बर तीसरा था। अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए वह भैंसे के माँस पर गुजर करती थीं। मेरी पौत्रियों में एक की आँखें मेरी माता की आँखों से बहुत मिलती-जुलती हैं। यों कभी-कभी मुझे जान पड़ता है, मानो वह मुझे मेरी पोती की आँखों के माध्यम से देख रही हों।

मेरी माँ दिन भर परिश्रम में जुटी रहतीं और उनमें अनन्त स्फूर्ति थी। जिस घर की शासिका मेरी माँ-जैसी हो, उसमें प्रत्येक लड़के का परिश्रमी होना अनिवार्य था। जब कभी नाश्ते में हमें मकई की खीर मिलती, तो उसका पूरा श्रेय मेरी माता को प्राप्त होता। वही सोडे के पानी में मकई भिगोकर उसका पीला छिलका उतारतीं और मकई उगाती भी वही थीं।

कस्बे में कोई नाई न था। आवश्यकता पड़ने पर हमारा रसोईघर ही नाई की दुकान हो जाता। पिता की हजामत मेरी माँ बनाती

थीं और वही उनके बाल भी काटती थीं। जो चीज़ हमें बिना खर्च किये मिल सकती थी, उसके लिए हम अपना पैसा कभी न खर्च करते थे। मेरे पिता की खाल काफ़ी कड़ी थी, होनी चाहिए भी थी, तभी तो सोडा और चर्बी से तैयार किया हुआ घर का साबुन वह सहन कर पाते थे।

हमारा घर क्या था, रेल की कच्ची-पक्की गुमटी थी। जाड़े में उसकी दरारों से बर्फ भीतर टपकती। परन्तु माताजी को इस गुमटी पर ही गर्व था, क्योंकि वह उनके पति हैंक क्राइसलर का निजी घर था। पड़ोसी घास मिली मिट्टी के ढेलों से बने घरों में रहते थे, इसलिए मेरी माँ उन्हें अपना घर दिखाकर गौरवान्वित होती थीं। मेरे पिता-जी रेल के कर्मचारी थे, जिस कारण रेल का कुछ कोयला उन्हें मोल मिल जाता था। एलिस में बसे बहुत-से लोगों को जलाने के लिए *गोबर के उपले ही नसीब थे।*

यूनियन पैसिफिक रेलवे कम्पनी के एक छोर से दूसरे छोर तक मेरे पिता हेनरी क्राइसलर अपने डिवीजन के सर्वोत्कृष्ट इंजीनियर माने जाते थे। अकसर पिताजी बाहर जाते तो उनके भोजन की बालटी लटकाये मैं उनके साथ चलता। वह अपने साथ छः कारतूसों के एक पिस्तौल के अतिरिक्त और कुछ नहीं रखते थे, जो उनके कोट के नीचे लटकता रहता था।

कभी-कभी पिताजी इंजिन पर बिठाकर मुझे अपने साथ ब्रुकलिन तक ले जाते। जिस गद्देदार तख्ते पर मैं सिकुड़कर बैठता, वह इंजिन की दौड़ में उछलता-काँपता रहता और चिनगारियाँ मेरे मुख पर पड़ती रहतीं। सैर के आनन्द में मग्न मैं घण्टों हँसता ही रहता; दौड़ समाप्त होने पर जब इंजिन रुकता और मैं उतरता तो लम्बी लगातार हँसी की थकान मेरे मुख पर छा जाती।

एलिस से तीन लड़के मिस कार्टराइट से पियानो बजाना सीखने सप्ताह में एक बार भेजे जाते थे। इनमें मैं भी था। उनके एक दर्जन

शिष्यों में डेला फोर्कर नाम की एक लड़की थी। यदि उसका आकर्षण न होता तो कदाचित् इस शिष्यता से मैं विद्रोह ही कर बैठता।

अवस्था के बारह वर्ष पूरे करने पर मुझे छोटे-छोटे पुष्प-चित्रित बधाई-पत्र बेचने का काम मिला। यह मेरा पहला काम था। चाँदी के गहने बेचने के लिए एक विज्ञापन छपा तो नकली चमड़े के काले बक्स में उन्हें रखकर मैं एलिस के प्रत्येक घर बेचने पहुँचा। ढक्कन खोलकर दिखाते ही बिक्री होने लगती। औरतों को खाने-पीने की चीजों से अधिक चाँदी के जेवर प्रिय थे।

दूध दुहने का काम मैं अपने भाई एड के साझे में करता था। नाराज होने पर माँ बालों के ब्रश से बच्चों की मरम्मत करती थीं। जब एड इतना बड़ा हो गया कि माँ की धमकी उस पर बेकार होने लगी तो गायों को दुहने, गोशाला साफ करने और चारा जमा करने तथा भटक जानेवाले मवेशियों को ढूँढ़कर लाने का काम मुझे ही करना पड़ने लगा। टीन की बड़ी बालटी लेकर घर-घर मुझे दूध और क्रीम भी बेचनी पड़ती। एलिस में कोई वेतन पाने के पहले दाम न देता था। इस प्रकार महीने पर मैं क्वार्ट (तीन पाव) पीछे ५ सेंट इकट्ठा करता, जिसमें एक सेंट अपना कमीशन काट लेता।

हमारे कस्बे में यह सिद्धान्त मान्य था कि लड़कों को शरारत करने से रोकने के लिए उन्हें काम में लगाये रखना आवश्यक है। मेरे पिता हम बच्चों के प्रति यथेष्ट उदार थे। परन्तु चूँकि माता-पिता रात-दिन स्वयं काम में जुटे रहते थे इसलिए वह अपने लड़कों को बेकार मँडराते देना उनके चरित्र के लिए हानिकारक समझते थे। मैं हाई स्कूल का विद्यार्थी ही था जब मेरा भाई एड यूनियन पैसिफिक के कारखाने में काम सीखने के लिए भरती कर दिया गया। जब गर्मी की छुट्टियाँ हुईं तो जार्ज हेंडरसन की किराने की दुकान में मैं दस डालर मासिक वेतन पर लगा दिया गया, जहाँ मुझे प्रातःकाल छः बजे से रात के साढ़े दस बजे तक काम करना पड़ता था। जब हाई स्कूल की पढ़ाई समाप्त

करने पर दूसरी छुट्टियाँ आईं, तो दुकानदार ने मेरा वेतन बढ़ाकर चौदह डालर कर दिया।

मेरे पिता मुझे आगे पढ़ाना चाहते थे। परन्तु मुझे मशीन का काम सीखने की धुन थी और मैं कालेज में भरती होने के विरुद्ध था। घर बैठकर मैंने अपनी बात मनवानी चाही। मेरे हीले-हवालों से तंग आकर पिताजी ने मुझसे एक बार कह दिया, "तुम मशीन का काम नहीं सीख सकते, यही मुझे तुमसे कहना है। मेरी सिफारिश बिना काम सीखने के लिए तुम्हारी भरती नहीं हो सकती और मुझे तुम्हारी सिफारिश करनी नहीं।"

तो भी मुझे यूनियन पैसिफिक के कारखाने में झाड़ू लगाने का काम मिल ही गया। वहाँ का फर्श बहुत टूटा-फूटा और तेल से चिकना रहता था। मैंने फर्शों की वह सफाई की जो कभी नहीं हुई थी। फुरसत मिलने पर मजदूरी के फुटकर काम भी कर लेता। कारखाने के काम में मुझे दिलचस्पी थी। मैं इंजिनों और उनके पुरजों को खुलते देखता था। जो मिस्त्री इन पुरजों को समझते थे उनको मैं श्रद्धा की दृष्टि से देखता। दस घण्टे परिश्रम करने पर मुझे रेल-कम्पनी से एक डालर मजदूरी मिलती थी। छः महीने पश्चात् साहस करके मैं मिस्त्रियों के जमादार एडगर एस्टरब्रुक की सेवा में पहुँचा और सहायता की प्रार्थना की।

एडगर ने प्रसन्न होकर कहा, "वाल्ट, तुम्हीं ऐसे व्यक्ति हो जिसे अपनी सेवा से मशीन का काम सीखने के लिए भरती किये जाने का अधिकार हो गया है। तुम अपने काम पर सदैव मुस्तैद रहे और कभी तुमने पेट के दर्द का बहाना नहीं किया। मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगा, लेकिन इसी शर्त पर कि तुम निश्चित रूप से मशीन मिस्त्री बनने के लिए तैयार हो।"

उतावली के कारण काँपते स्वर में मैंने कहा, "जी हाँ, मैं तैयार हूँ।" एस्टरब्रुक ने मेरे पिता को राजी कर लिया। इस प्रचार ४ वर्ष के लिए

मैं कारखाने में मशीन का काम सीखने के लिए भरती हुआ। मेरा वेतन प्रति घण्टा ५ सेण्ट से प्रारम्भ हुआ। झाड़ू देकर मुझे इससे दूना मिलता था। परन्तु अपने नये काम से मैं बहुत खुश था।

● ● ●

उन दिनों कुशल कारीगर की पहचान यह थी कि वे अपने ही औजार काम पर ले जाते थे। अच्छे कारीगर को दूसरे के बनाये और तपाये औजारों पर भरोसा न होता था। परन्तु मुझे अपने औजार इसलिए स्वयं ही बनाने पड़े कि मेरे पास औजार मोल लेने के लिए पैसा न था।

मेरा पहला औजार था एक परकाल जिससे चार इंच तक का व्यास नापा जा सकता था। मैंने इस बात को समझ लिया था कि मेरे औजार जितने ही बढ़िया होंगे उतनी ही कारखाने के काम में मुझे सफलता मिलेगी। मैं वे सब काम करने को उत्सुक था, जो पुराने कारीगर करते आ रहे थे। जिस बड़े खराद पर इंजिन के पिस्टन राड खरादे जाते थे, उस पर भी सहायता देने की अनुमति प्राप्त करने का मुझे साहस हुआ।

वर्षों पश्चात् जब न्यूयार्क में मैंने क्राइसलर भवन बनवाया तो वेध-शाला के लिए निर्मित उसके ७२वें खण्ड पर शीशे के एक केस में मेरे उन सब औजारों की प्रदर्शनी हुई, जो मैंने काम सीखने के प्रारम्भिक दिनों में बनाये थे। मुझे विश्वास है कि जो भी गौर और समझदारी से इन औजारों को देखेगा, उसे अमरीका के विकास के विषय में वह वास्तविक ज्ञान प्राप्त होगा जो न्यूयार्क के वैभव की चकाचौंध में सम्भव नहीं।

इन्हीं दिनों मैंने बर्फ पर चलने योग्य पहिये लगे जूतों की जोड़ी और बन्दूक बनाई। जिस इंजिन को पिताजी चलाते थे उसका २८ इंची एक चालू नमूना भी मैंने बनाया। मैंने यह काम उतने ही ध्यान से किया, मानो चतुर शिल्पी की भाँति मैं कोई प्रतिमा बनाने में लगा

होऊँ। जब नमूने का इंजिन तैयार हो गया, तो उसकी दौड़ के लिए मैंने पटरियाँ बनाकर सहन में बिछाईं। फिर इंजिन ने सहन भर में चक्कर लगाने का तमाशा दिखाया। इंजिन की छोटी सीटी बजने पर पिता की गर्वपूर्ण हँसी देखते ही बनती थी।

मैं कारखाने में प्रति सप्ताह ६० घण्टे से कम काम न करता था। काम सीखते दो वर्ष पूरे नहीं हुए थे कि मैं एक कठिनाई में पड़ गया। दूसरे वर्ष मुझे १० सेंट प्रति घंटे के हिसाब से वेतन मिलता रहा। कुछ ही सप्ताह के भीतर तीसरा वर्ष प्रारम्भ होने पर मुझे १२½ सेंट की दर से वेतन मिलने को था। अपनी आवश्यकता भर को मेरी आय यथेष्ट थी। घर ही में खाता और सोता था। और मेरे अधिकांश कपड़े माँ ही तैयार कर देती थीं।

एक दिन मैं ग्रीज और ऊन के कचरे से भरी हुई नली पर झुका किसी काम में व्यस्त था कि मेरे मुँह पर कीचड़ का भारी छींटा पड़ा। मैकग्रैथ नामक एक आदमी ने गन्दे पानी के हौज में एक चिथड़ा भिगो-कर मेरे मुँह पर मार दिया था। क्रुद्ध होकर ग्रीज में सने ऊन का ढेर हाथ में लिये मैं उसके पीछे दौड़ा। एक द्वार से निकलकर उसने उसे बन्द कर दिया। मैं जानता था कि वह बाहर ज्यादा देर नहीं मँडरा-येगा, क्योंकि उसे फोरमैन गस न्यूबर्ट के दफ्तर की ओर जाना पड़ता। इसलिए ढेर हाथ में लिये खड़ा रहा, मेकग्रैथ द्वार खोले कि मैं उस पर ढेर चिपका दूँ। इतने में धीरे से कुण्डी खुली और मैंने दोनों हाथ के ढेर एक-एक करके अन्दर आनेवाले के मुँह पर मार दिये। गजब हो गया। वह आदमी जिसके मुँह पर मैंने ग्रीज में सना ऊन का ढेर फेंक-कर मारा था वह मैकग्रैथ नहीं बल्कि फोरमैन न्यूबर्ट था।

अपना मुँह साफ़ करने से पहले ही उसने मुझे काम पर से अलग कर दिया। मैं समझा मानो मुझे संसार से ही निकाल दिया गया हो, क्योंकि काम सीखने के महत्व के आगे संसार में और सब कुछ मेरी दृष्टि में तुच्छ था। मालूम नहीं, मेरे भाई या पिता ने एस्टरब्रुक से मेरी

सिफारिश कर दी हो। हुआ यह कि थोड़े ही दिन बाद मिस्त्रियों के अफसर ने मुझे बुला भेजा। जब मैं उनकी ऊनी कपड़े से ढकी मेज के सामने जाकर खड़ा हुआ तो उन्होंने मुझ पर एक लेक्चर झाड़ दिया और मैंने सविनय अपना पश्चाताप प्रकट किया। एस्टरब्रुक साहब बहुत लम्बे-चौड़े थे। जब वह हँसते थे तो उनकी जेबी घड़ी की चेन ऊपर-नीचे हिलती थी। जब मैंने उनकी चेन को इस प्रकार हिलते देखा तो आशा बँधी। उनका आदेश पाकर मैं न्यूबर्ट साहब के पास गया और रोते-रोते उनसे क्षमा-याचना की। इस भय ने मेरा बहुत भला किया। कई वर्ष पश्चात् हमारी संस्था से वेतन पानेवाले व्यक्तियों की सूची में कंसास नगर से गस न्यूबर्ट का नाम सम्मिलित हुआ। तब तक वह बहुत बूढ़े हो चुके थे।

● ● ●

आर्थर डार्लिंग नामक एक कर्मचारी इंजिन के नीचे के काम में मेरा सहायक था। एक रात अपना काम रोककर उसने सावधानी से चारों ओर देखा और चुपके से मेरे कान में कहा, "मैं शहर की ओर जा रहा हूँ।"

मैं बूढ़े का सहायक था और भक्त भी। इसलिए मैंने उसे चेतावनी दी, "बेहतर है कि न जाइयेगा।" परन्तु वह तो जाने पर आमादा ही था। आदेश देकर चल दिया, "इन कपाटों का काम निपटा दो।"

इंजिन की कर्षण-शक्ति कपाटों की सच्ची स्थिति पर अवलम्बित रहती है। अब भी पलंग पर लेटे-लेटे दूर पर चलते इंजिन की आवाज से मैं बता सकता हूँ कि उसके कपाट ठीक लगे हैं कि नहीं। यह जानकारी और मशीनों, धातुओं और कारीगरों के बारे में असंख्य दूसरी बातों की जानकारी मुझे तेल की कालिख से सने इस बूढ़े मिस्त्री डार्लिंग से ही प्राप्त हुई, जिसके लिए मैं अभी तक उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। उसकी बताई हुई एक बात स्मरणीय है, और वह यह कि कपाट का काम

प्रारम्भ करने के पहले अनुकूल छेदों के निशान अवश्य बना लो। कोई कहे भी कि उसने आवश्यक निशान बना लिये हैं, तो भी स्वयं जाँच कर लो।

मुझे खयाल आता है कि अगले महीनों में उसे कपाट लगाने के तीन काम भी नहीं करने पड़े। मैं उसका काम कर लेता था और उसकी रक्षा भी कर लेता था, जिस कारण उसका मुझ पर स्नेह बढ़ गया। इस प्रकार कपाटों के जमाने में मेरा अनुभव अधिकांश दूसरे कारीगरों से बढ़ गया।

हमारी रेलगाड़ियों में वायु-संचालित ब्रेकों के लगने के पहले मैंने वेस्टिंगहाउस के नये आविष्कार का अध्ययन करके उसे इंजिन में लगाना भी सीख लिया था। इसलिए जब यूनियन पैसिफिक ने वायु-संचालित ब्रेक खरीदे, तो डिवीजन के इंजिनों में उन्हें लगाने का काम मेरे सुपुर्द हुआ। तब प्रशिक्षण के लिए मेरी भरती का अन्तिम वर्ष था और मेरा वेतन १५ सेंट प्रति घण्टा था।

इसके पश्चात् भाप से रेलगाड़ियों को गरम करने का आविष्कार चालू हुआ। तब तक कोयले की अँगीठियों से ही रेलगाड़ियाँ गरम रखी जाती थीं। नई बातों के सीखने का मैं सदैव से उत्सुक था। सो सम्बन्धित पत्रिकाओं से पत्र-व्यवहार द्वारा और अन्य ढंगों से भी, मैंने इस नये सामान को लगाना भी सीख लिया। इस कारण मुझे यह काम भी मिल गया। मुझे उन्नति करने का जोश था। सोचता, "हे ईश्वर, मैं २२ वर्ष का हो गया और अभी तक एलिस में ही पड़ा हूँ।" मुझे संसार में आगे बढ़ने की उत्कट अभिलाषा थी।

अपने हृदय की इस प्रेरणा को स्वीकार करके कि संसार भर में मेरी डेला फोर्कर के जोड़ की दूसरी लड़की नहीं है, मैंने प्रणय के सम्बन्ध में भी अपनी उम्र को देखते हुए कहीं अधिक समझदारी का परिचय दिया। हम दोनों की सगाई पक्की हो गई। परन्तु डेढ़ डालर दैनिक की कमाई पर हमारा ब्याह किस प्रकार होता? डेला के पिता

की गिनती कस्बे के बड़े दुकानदारों में थी। अपनी छोटी-सी आय के आधार पर मैं किस प्रकार उसे अपने पिता का संरक्षण छोड़ने के लिए राजी करता।

यूनियन पैसिफिक की नौकरी छोड़कर अचेसन, टोपेका एण्ड सांता फ़े की फर्म में न्यूबर्ट साहब अधिक वेतन पर काम करने लगे थे। इसके बहुत पहले उन्होंने मुझे क्षमा भी कर दिया था। हो सकता है कि उनके एलिस से चले जाने पर ही मैंने उनके अनुसरण का निश्चय किया हो। मेरा प्रशिक्षण समाप्त होने को था कि मेरे माता-पिता को दूसरे कस्बे में काम ढूँढने की मेरी पागलों जैसी योजना का पता लगा। मैं इतना बड़ा हो गया था कि माँ अपने ब्रश की मार से मुझे अब राजी नहीं कर सकती थीं; इसलिए उन्होंने समझा-बुझाकर घर पर ही रहने के लिए राजी करना चाहा। उन्होंने चेतावनी दी कि जितना बढ़िया खाना मुझे घर पर मिलता था, उतना मुझे बाहर नसीब न होगा।

परन्तु मैंने अपना निश्चय दृढ़ कर लिया था। न्यूबर्ट साहब को लिख दिया था, और काम दिलाने का वचन भी उन्होंने मुझे दे दिया था। उन्होंने अपने वचन का निर्वाह किया। कंसाज के वेलिंगटन नगर में सांता फ़े कारखाने के एक विभाग के हेड मिस्त्री शेरवुड के नाम परिचय-पत्र लिखकर उन्होंने मुझे वहाँ काम दिलवा दिया। घोड़ा-गाड़ी मे दिन भर की यात्रा थी। इसलिए माँ ने भोजन से भरी एक टोकरी मेरे साथ कर दी।

● ● ●

शेरवुड साहब ने मेरा परिचय-पत्र पढ़कर कहा, "तुम तो अभी लड़के ही हो। इतना जल्दी मिस्त्री कैसे हो गये? क्या उमर है?" मैंने अवस्था में एक वर्ष बढ़ाकर कहा, "मैं २३ वर्ष का हूँ।"

"तो अनुभव तुम्हें थोड़ा ही होगा। मशीन में कपाट जमा सकते हो?"

"जी हाँ, कपाट का काम कर सकता हूँ; न्यूबर्ट साहब को मेरे काम से सन्तोष था ही।"

इंजिनों की सफाई और मरम्मत के सम्बन्ध में पच्चड़ और नाल लगाने का काम भी उतना ही कठिन है। उन्होंने मुझसे पूछा, "पच्चड़ और नाल लगा सकते हो ?"

"जी हाँ।"

शेरवुड साहब बोले, "जब तुम दो सप्ताह तक काम कर लोगे, तब हम तुम्हारे वेतन का फैसला करेंगे।"

"बहुत अच्छा, परन्तु यदि मुझे अपने काम का सर्वोच्च वेतन नहीं मिलेगा तो मुझे काम की जरूरत नहीं।"

"बहुत ढीठ मालूम होते हो।"

मैंने निवेदन किया, "जी नहीं, मैं कुशल मिस्त्री ही हूँ।"

शेरवुड साहब ने अपनी मूँछ पर हाथ फेरा, साथ ही अपनी मुस्कराहट छिपाई और प्रधान फोरमैन बिल हार्ट की सेवा में पहुँचने का मुझे आदेश दिया। मेरा आचरण हार्ट को कदाचित् बुरा लगा हो। वह बोले, "कपाट जमा सकते हो ? अच्छा, काम पर जाओ।" और एक नये मेल के इंजिन की ओर संकेत किया जिसे मैंने कभी देखा न था। मैं काम पर गया और लगा छेद के निशान बनाने। हार्ट ने अपने मैले हाथ के संकेत से अधैर्यपूर्वक कहा, "नहीं, नहीं, फिर से निशान लगाने की जरूरत नहीं। मैं कल ही लगा चुका हूँ।"

मेरी कारीगरी का प्रथम दिवस था, वयोवृद्ध आर्थर डार्लिंग का परामर्श मैं इतनी जल्दी कैसे भूल सकता था। अतएव फोरमैन की नाराजगी की परवाह न करके मैंने तुले शब्दों में उत्तर दिया, "हार्ट साहब, हो सकता है कि आपने निशान बना लिये हों, परन्तु यदि मुझे कपाट जमाने हैं तो छेद के निशान भी मुझे ही लगाने होंगे।"

जब मुझ पर झल्लाकर हार्ट चला गया तो निकट खड़ा एक नवयुवक सहयोगी दबी जबान से बोला, "हजरत स्वयं तो कपाट जमा नहीं

सके, यद्यपि कल बहुत प्रयत्न करते रहे और बदनाम करने के लिए अब तुम्हें इस काम पर लगा गये हैं।"

"ऐसी बात है ?" कहकर मैं इंजन की जाँच करने चला। ड्राइवर की कैबिन में देखा कि इंजन को पीछे ले जानेवाले यन्त्र के क्वाड्रैंट स्लाट का प्लग गायब है। प्लग ढूँढ़कर छेद में फिट कर दिया और हँसने लगा। इसके पश्चात् कपाट निकाले और उन्हें देखकर फिर वहीं जमा दिया। मैं जान गया कि सब अपनी जगह पर हैं। शीघ्र ही इंजन के पहिये मैंने रोलरों से हटा लिये और हार्ट को सूचना दी कि मैं दूसरे काम के लिए प्रस्तुत हूँ।

वह फिर गरजा, "क्या कहा ? तुम यह कहना चाहते हो कि इतनी ही देर में तुमने सब कपाट जमा दिये ? क्राइसलर, यदि आग जलने पर इंजन ढंग से नहीं चला तो निकाल दिये जाओगे।"

इंजन की भट्ठी तुरन्त गरम की गई। मैं जानता था कि इंजन चलेगा और वह चलने लगा। थोड़ी देर बाद शेरवुड ने मुझे बुला भेजा और इंजन के विषय में पूछा। भेद की बात मैंने हार्ट को नहीं बताई थी; मिस्त्रियों के अफसर को मैंने प्लग की बात समझा दी। बहुत खुश हुआ। मैं वायु-ब्रेक के काम पर लगा दिया गया और अपने काम का सर्वोच्च वेतन मुझे मिला।

घर से स्वतन्त्र जीवन की जो उमंग सभी नवयुवकों में होती है, वही मुझमें भी कुछ समय तक रही, परन्तु शीघ्र ही वह क्षीण होने लगी। माता की चेतावनी के अनुसार उनके बनाये भोजन की याद करने लगा। अपना कोई घर न था, सो डेला फोर्कर की याद आती। परन्तु अब काम के लिए रेलवे लाइन के किनारे बसे डेन्वर, चाइयन, लरामी, रालिंस जैसे कस्बों की खाक छाननी थी। अकसर थका और भूखा ही सोता। इन वर्षों के अपने जीवन के कारण मैं इस बात को कभी नहीं भूला कि काम की तलाश में देश भर की खाक छानते फिरने में कितना कष्ट होता है।

अन्ततः डेन्वर ऐंडरियो ग्रैंड वेस्टर्न रेलरोड के साल्ट लेक सिटी वाले कारखाने में मुझे सन् १६०० में एक काम मिला जिसे मैं एक वर्ष तक करता रहा, और कुछ पैसे भी बचा सका। मैंने निश्चय कर लिया था कि अब मेरा जीवन घुमंतू न रहेगा; यद्यपि जब कभी इंजन की वेदनामय सीटी सुनता तो डेला की याद में मुझे अपने एकाकी जीवन का हल मिल जाता। हम पाबंदी से एक-दूसरे को पत्र लिखते थे और अगर कभी मुझे पत्र लिखने में देर भी हो गई तो वह कभी घबराई नहीं क्योंकि वह जानती थी कि मेरे घुमंतू जीवन का हम दोनों की महत्वाकांक्षाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था। एक दिन वह भी आया जब मैंने लिखा कि मैं घर पहुँच रहा हूँ। विवाह की तिथि तय करो। हमारा विवाह मेथाडिस्ट गिर्जाघर में हुआ। उस समय मेरी अवस्था थी २६ वर्ष।

हमारा दाम्पत्य जीवन साल्ट लेक सिटी में ६० डालर प्रति मास पर प्रारम्भ हुआ। गुमटी के मिस्त्री की हैसियत से मुझे प्रति घण्टे ३० सेंट अर्थात् दस घण्टे दैनिक परिश्रम के ३ डालर मिलते थे। जब कभी ओवरटाइम काम करता तो आय बढ़ जाती और मैं अपने को भाग्यशाली मानता। गर्मियों भर हम किराये के एक छोटे-से पुराने घर में रहे। सीधी छत के मकानों की एक कतार बन रही थी। वह पूरी भी न हो पाई थी कि हमने उसमें एक घर किराये पर ले लिया और वहाँ पहुँचकर किश्तों पर १७० डालर का सामान लेकर उसे सजा लिया।

साधारण जीवनचर्या के मध्य एक दिन सौभाग्य का भी आया। मैं उन दिनों पत्र-व्यवहार द्वारा इंजीनियरिंग सीखने में लगा था। गुमटी में काम कर रहा था कि जमादार जान हिकी एक तार हाथ में लिये भागता-भागता फोरमैन सैम स्मिथ के पास पहुँचा और बोला, "स्मिथ, स्पेशल गाड़ी के ४६ नम्बर के इंजन का पिछला सिलेण्डर फट गया है।"

स्मिथ ने कहा, "यही एक इंजन है जो डेन्वर वाली गाड़ी यहाँ से ले जाने के लिए मिल सकता है।"

हिकी बोला, "यह तो जानता हूँ। पर क्या समय के भीतर इसकी मरम्मत हो सकेगी ?"

"देखूँगा, यहाँ एक युवक है। आशा है, वह यह काम कर सकेगा।" दो घण्टे चालीस मिनट तक काम में जुटे रहने के बाद मैंने स्मिथ को पुकारकर कहा, "इंजन तैयार है। ले जा सकते हो।"

हिकी ने अपने पहले जैसे लहजे में कहा, "क्राइसलर, मैं मान ही नहीं सकता था कि कोई कारीगर यह काम इतना शीघ्र कर लेगा।"

लगभग पाँच महीने बाद मास्टर मिस्त्री के दफ्तर से मेरी पुकार हुई। हिकी ने मुझे गुमटी की फोरमैनी का काम दिया।

अब मुझे भी एक दफ्तर मिला। दीवार में वह एक बड़ा-सा ताक जैसा ही था, परन्तु उसमें कपड़े से ढकी सुन्दर मेज थी और उस पर टेलीफोन भी था। ९० श्रमिक मेरी निगरानी में थे। उन्हीं दिनों मेरी पहली सन्तान, थेल्मा का जन्म हुआ।

● ● ●

एक ही क्षण में अतीत के सम्पूर्ण चित्र की झलक दिमाग में घूम जाने के लिए कोई पानी में डूबना ही जरूरी नहीं है। उन दिनों काम मुश्किल से मिलते, और काम से निकाले जाने की आशंका सदैव बनी रहती थी। मैं २७ वर्ष का था, बीवी थी, एक बच्चे का बाप भी था। जितने घण्टे मैं परिश्रम करता उनसे अधिक मेरी पत्नी भोजन पकाने, सफाई करने, कपड़े धोने और बच्चे की सेवा में लगाती। ९० डालर प्रतिमास की आमदनी पर हम दोनों अपने को बहुत भाग्यशाली मानते थे।

इस वैतनिक सेवा के दौरान में एक बार कारखाने के प्रधान अधिकारी ने मुझे झिड़की से भरा एक पत्र भेजा। मुझे याद नहीं आती

कि किस अपराध के कारण मुझे उसकी डाँट खानी पड़ी; परन्तु मुझे भली प्रकार याद है कि पत्र के पाते ही क्रोध के मारे मैं पागल हो गया। मैं भी इस पत्र का मुँहतोड़ जवाब लिख सकता था और मैंने लिखा भी। बुलाया गया, परन्तु तीन-चार दिन बाद। मिलने के लिए दफ्तर की ओर जले कोयले से बिछे मार्ग पर चलते हुए सोचता रहा कि अधिकारी ने बुलाने में इतने दिन क्यों लगाये। परन्तु लड़ने के लिए तैयार, सीना फुलाये, अधिकारी के दफ्तर का द्वार खोलकर भीतर घुसा।

"आओ वाल्ट," उसने कहा, "मैं इधर नये इंजन के डिजाइनों का अध्ययन कर रहा था, और इनके बारे में बात करनी है।" बात करते-करते वह मेरे काम की तारीफ भी करते जाते। इस प्रकार उन्होंने मुझे भली प्रकार शान्त कर लिया। यदि वह चिल्लाते तो मैं भी चिल्लाने के लिए तैयार था। परन्तु उन्होंने मुझे अपने मधुर वार्तालाप से हरा दिया। प्रशंसा से आरम्भ होनेवाला उपदेश सुनने को कौन नहीं तैयार हो जायेगा। मुझे भली भाँति हराकर वह अपनी बात पर आये।

"वाल्ट, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारा भविष्य बहुत उज्ज्वल है। यदि कभी तुम्हें कोई बात बुरी लगे तो आवेश में आकर अपने भविष्य को खतरे में न डालो। कभी-कभी मुझे भी ऐसा पत्र मिल जाता है जिसे पढ़ते ही मेरा खून खौलने लगता है। जानते हो, तब मैं क्या करता हूँ ?"

इतना कहकर अपने मेज की निचली दराज से उन्होंने मेरा पत्र निकाल लिया। मैं शर्म से पानी-पानी हो गया। वह मुस्कराते हुए बोले, "बौखलाने वाले पत्रों को मैं यहाँ तीन-चार दिन तक पड़ा रहने देता हूँ। जब मुझे विश्वास हो जाता है कि अब मैं बिलकुल शान्त हूँ, तो इन्हें निकालकर मैं फिर पढ़ता हूँ।" फिर वह मुस्कराकर बोले, "यदि तुम इसी प्रकार मेरे पत्र को कुछ समय तक पड़ा रहने देते और

शान्त होकर ही पढ़ते तो तुम मुझे समझ पाते और अपने को भी। अब, बेटे, मेरी सीख याद रखो।"

मैंने क्षमा-याचना की और उनकी सीख गाँठ बाँधी। तब से आवेश में मैंने किसी पत्र का उत्तर दिया ही नहीं। ईश्वर जाने, कितने ही तैश दिलानेवाले पत्र मेरे पास आये पर मैंने बराबर उन सबको अपनी मेज की निचली दराज के हवाले किया। वयोवृद्ध हिकी के स्मरण मात्र से मैं शान्त हो जाता हूँ।

बेहतर नौकरी मिलने पर मैं हिकी साहब के पास गया। उन्नति का वास्तविक अवसर सामने आया था। हिकी साहब ने स्वीकृति का परामर्श दिया, और शीघ्र ही मैं कोलोरेडो दक्षिणी रेल-रोड के कोलोरेडो राज्य में ट्रिनीडाड वाले कारखाने का मुख्य फोरमैन नियुक्त हुआ। एक वर्ष के भीतर मैं दो डिवीजनों का मास्टर मिकैनिक नियुक्त हुआ और मेरा मासिक वेतन १४० डालर तक पहुँचा। उस समय यह वेतन मेरे लिए बहुत था। मेरे नीचे खलासी, कारीगर, बढ़ई, जैसे कर्मचारियों की संख्या लगभग एक हजार थी। मैं उनका 'बुजुर्ग' था, यद्यपि मेरी अवस्था ३० वर्ष की भी नहीं थी।

मेरी पदोन्नति जार्ज काटर की कृपा से हुई थी। कुछ समय बाद वह फोर्टवर्थ डेन्वर सिटी रेल-रोड के मुख्य सुपरिटेंडेंट होकर चले गये और उन्होंने मुझे बुलाया। टेक्साज-राज्य का चिल्ड्रेस नामक स्थान तब एक उजाड़ ग्राम मात्र था। उन्होंने चाहा कि वहाँ मैं एक कारखाने का निर्माण करूँ और सामान लगाकर उसे चालू करूँ। चिल्ड्रेस में किराये पर एक कोठरीनुमा घर ही नसीब था, जिसमें पलस्तर तक न था। मैं यह काम हाथ में लेना चाहता था। परन्तु डेला से घर की बात कहते डरता था—कैसे एक बच्चे की माँ उसके भीतर रह सकेगी। मैंने उससे चिल्ड्रेस की चर्चा की।

जिन दिनों मैं तेल-मिट्टी से सने मिस्त्री से बेहतर न था, तब मेरी पत्नी मेरा अनुसरण करती रही, इस संस्मरण से मैं जितना गौरवान्वित

और सन्तुष्ट होता हूँ, उतना अपनी पदोन्नति से नहीं। मेरी बात सुनकर उसने उत्तर दिया, "प्यारे, मेरी चिन्ता न करो। अपनी उन्नति के लिए जहाँ भी जाओगे, वहीं मैं सुखी रहूँगी।" यों हम चिल्ड्रेस पहुँचे।

नया कारखाना बनकर तैयार होते ही शिकागो ग्रेट वेस्टर्न रेल-रोड के आयोवा राज्य में स्थित ओलवाइन नामक स्थान से मुझे मास्टर मिकैनिक की जगह के लिए अकस्मात् एक तार मिला। वेतन २०० डालर प्रतिमास से प्रारम्भ होने को था, और तरक्की की गुंजाइश थी। कार्टर साहब ने मुझे मंजूरी की सलाह दी। मैंने उनकी बात मान ली। इस ओलवाइन बर्निस में हमारे दूसरे बच्चे का जन्म हुआ। आयोवा पहुँचने के १५ महीने के भीतर मैं मुख्य मास्टर मिकैनिक नियुक्त हुआ और तीन महीने बाद इंजनों का सुपरिटेंडेंट बना दिया गया। रेल की नौकरी में कारीगरों के लिए यह सर्वोच्च पद था। मैं सीखता जा रहा था और मेरी महत्वाकांक्षा का ठिकाना न था। मेरा वेतन अब ३५० डालर प्रतिमास तक पहुँच गया।

● ● ●

यह सन् १९०८ की बात है, और यहीं से मेरे जीवन में एक मोड़ आया। उस वर्ष मैं शिकागो की मोटरकार प्रदर्शनी में गया, और वहाँ मैंने इंजन से चलनेवाली सफरी कार देखी। उस पर हाथी दाँत जैसा सफेद रंग चढ़ा था, उसके गद्दे और उनकी झालरें लाल थीं। फुटबोर्ड पर औजारों का सुन्दर बकस लगा था, और उसकी बगल में गैस के टैंक से सामनेवाले लैंपों में रोशनी होती थी।

चार दिनों तक मैं इस प्रदर्शनी में मँडराता रहा, और मोटरकार के प्रति ऐसा ही आकृष्ट रहा, मानो वह लाल परी का कोई गीत सुना रही हो। उस पर दाम लिखे थे—५,००० डालर नक़द। भाव-ताव की गुंजाइश न थी। मेरे पास केवल ७०० डालर थे। सच पूछो, तो मैंने अपने से पूछा तक नहीं कि कार खरीदने के लिए कर्ज लेना होगा या

जेल जाना पड़ेगा। मेरे सामने यही प्रश्न था कि इतनी रकम जुटाऊँ कहाँ से। कार खरीदने के लिए दिवालिया होकर मुझे जेल जाना होगा —यह मैंने अपने से पूछा नहीं। किससे कर्ज माँगूँ—यही चिन्ता थी।

एक महाजनी संस्था का रैल्फ वान वेखटेन नामक उप-प्रधान मेरा मित्र था। जिस होटल में रेल के अधिकारी जलपान करने जाया करते थे वहाँ मैंने उसे घेरा। परन्तु कार मुझे इतनी प्रिय थी कि ४,३०० डालर की रकम उधार लेने के लिए मैंने अजीब-सी उक्तियाँ उसके सामने प्रस्तुत कीं। मैंने उसके सामने देश के उस भविष्य का चित्र प्रस्तुत किया जब यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति के पास निजी कार होगी।

उसे इन उक्तियों की आवश्यकता न थी। उसने कहा, "वाल्ट, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को लाओ जो जमानत ले ले।"

शिकागो ग्रेट वेस्टर्न रेलवे का डिवीजनल सुपरिटेंडेंट, विलियम बाउडिन कासी, हम दोनों का मित्र था। मैंने पूछा, "जमानत के लिए बिल कासी कैसा रहेगा?" उत्तर मिलने पर कासी ने जमानत कर दी। और अपनी पहली कार की खरीदारी के लिए मुझे समुचित रकम उधार मिल गई। सैर करने के लिए मुझे कार की जरूरत न थी; मुझे तो *उसके कल-पुर्जों की पूरी जानकारी प्राप्त करनी थी।*

वर्षों पश्चात् वान वेखटेन एक महाजन-संस्था का सदस्य बना, जिसके ५ करोड़ डालर विलीज ओवरलैंड कम्पनी में फँस गये थे। रकम की निकासी के लिए संस्था के नेता मेरे पास पहुँचे और १० लाख डालर प्रतिवर्ष के ठेके पर उद्धार का काम मुझे सुपुर्द किया। जब ठेके की लिखा-पढ़ी पक्की हो गई, तो इस पुराने मित्र ने मुझे अपने पहले मैत्री-निर्वाह की याद दिलाई और कहा कि यदि वह उस समय मुझे सहायता न करता, तो आज मैं उसकी संस्था का उद्धार करने योग्य न होता।

मैंने ओलवाइन के अहाते को मोटरगराज बना डाला। मैं प्रतिरात उसमें काम करता और शनिवार के तीसरे पहर से रविवार का पूरा दिन उसके काम में जुटा रहता। मैंने बार-बार कार के सब पुर्जे खोल

डाले और फिर जोड़ लिये। तीन महीने के अनवरत अध्ययन और प्रयोग के पश्चात् मैंने एक शनिवार को डेला से कहा कि कार यात्रा के लिए तैयार है।

तब तक मेरी कार के इंजिन की आवाज से पड़ोसी भली-भांति परिचित हो गये थे। परन्तु किसी प्रकार खबर फैल गई कि उसकी यात्रा की परीक्षा होगी। सो ज्यों ही मैंने उसे यात्रा के लिए गराज से निकाला कि तमाशा देखने के लिए अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गई। पहली बार जुते जंगली घोड़े के समान मेरी विशाल खुली कार उछलने-कूदने लगी। तमाशाई हू-हू चिल्लाने लगे। ज्यों ही वह तेजी से आगे चली, एक गढ़े में लुढ़की और अन्ततः पड़ोसी की वाटिका तक पहुँचकर उसके पहिये धुरे तक कीचड़ में फँस गये। घोड़ों की जोड़ी की सहायता से हमने उसे किसी प्रकार कीचड़ से निकाला।

मुझे फिर मोटर चलाते देख लोग मुझ पर हँसते और मैं सुनता रहता। इस बार मैं मोटर को ढाल पर चढ़ा ले गया; और फिर उसे लुढ़कने दिया। मुझे एक कोने पर मोटर को घुमाना था, परन्तु घुमाने से जंजीर की कड़ियाँ लड़तीं। अतएव मैंने उसे फिर चढ़ाई की ओर किया, दो ही पहियों के सहारे। जब मोटर फिर समतल सड़क पर पहुँची तब हम कस्बे के बाहर देहात में आ गये। कुछ सौ गज सामने मैंने एक गाय को सड़क की ओर दौड़ते देखा। मैं कार की चाल धीमी न कर सका, केवल पहिये मोड़कर किसी प्रकार गाय की टक्कर से मोटर को बचा सका।

अन्ततः मैं २० मील की चाल से ओलवाइन वापस पहुँचा। पड़ोसियों ने कार को अहाते के भीतर धकेलने में मेरी सहायता की। मैं थकान के मारे काँपने लगा था। मेरे कपड़े पसीने से तर हो गये थे। इस प्रकार मैंने मोटर चलाना सीख लिया।

● ● ●

मैं सात वर्षों से लिखा-पढ़ी द्वारा मशीन इंजीनियरी का काम सीख रहा था। ३४ वर्ष की अवस्था प्राप्त करते-करते मैं समझ गया कि मैं जिस काम में लगा था उसके सर्वोच्च पद पर पहुँच चुका हूँ। रेल की नौकरी में वेतन कम था और यहाँ इंजीनियर को शासनीय पदों पर तरक्की देने की प्रथा न थी। हमारे अब तीन बच्चे थे। हमारा पुत्र वाल्टर पी० क्राइसलर ओलवाइन में ही जन्मा था।

पुराने ढंग के रेल-कर्मचारी दल का सैम फेल्टन नामक एक व्यक्ति शिकागो ग्रेट वेस्टर्न रेलवे का प्रधान हो गया था। मैं रात-दिन रेल की पटरी दुरुस्त रखने में लगा रहता। एक दिन उसने जरा-सी बात पर मुझे शिकागो बुला भेजा। उसे मुझ पर चिल्लाते अधिक समय न बीता था कि मैंने अपना इस्तीफा उसे तुरन्त दे दिया, और दफ्तर के बाहर निकल आया। बिल कासी और अन्य मित्रों को उसने मुझे समझाने भेजा। परन्तु मैंने तो रेल की नौकरी से मुक्त होने का निश्चय कर लिया था।

अपने मित्र अमेरिकन लोकोमोटिव कम्पनी के प्रधान वाल्डो एच० मार्शल के सौजन्य से मैं इस कम्पनी के पिट्सबर्ग वाले कारखाने का सुपरिंटेंडेंट नियुक्त हुआ। बाल्य-काल में तरह-तरह की चीजें बनाने में जो आनन्द मुझे मिलता था वह वयस्क-जीवन के निर्माण-कार्य में पहले का सौ गुना हो गया। मशीन से माल तैयार करने में भी सृजन का वही आनन्द मिलता है, जो कवियों को काव्य-रचना से प्राप्त होता है। हमारे कारखाने की निकासी पिछले तीन वर्षों की अपेक्षा अधिक होने लगी और लाभ भी दिखाई देने लगा। डेढ़ वर्ष में मैं कम्पनी के कारखाने का संचालक नियुक्त हो गया।

अमेरिकन लोकोमोटिव कम्पनी के डाइरेक्टर और महाजन जेम्स जे० स्टारो ने एक दिन मुझे न्यूयार्क में तलब किया। उन्होंने मेरा इस प्रकार स्वागत किया, "आओ, तुम्हींने तो हमारा घाटा देनेवाला पिट्सबर्ग-कारखाना लाभप्रद बना दिया है।" फिर उन्होंने मुझसे पूछा,

"तुमने कभी मोटर बनाने के काम के विषय में भी विचार किया है ?" मैंने कहा, "बहुत काफी, मैं तो थोड़े-बहुत अन्तर से, इस काम में पाँच वर्ष से लगा हूँ ।"

वह बोले, "देखो, जनरल मोटर्स कम्पनी पर रकम लगाने की जो समिति बनी है, उसका मैं प्रधान हूँ । यदि तुम्हें दिलचस्पी हो, तो मुझे आशा है कि मिशिगन राज्य के फ्लिट में स्थित बुइक मोटर कम्पनी के कारखाने का प्रबन्धक मैं तुम्हें नियुक्त करा सकता हूँ । मोटर-निर्माण का भविष्य बहुत उज्ज्वल है और उपयुक्त व्यक्ति को उन्नति का दिव्य अवसर है ।"

एक सप्ताह पश्चात् बुइक मोटर कम्पनी के प्रधान चार्ल्स डबल्० नाश ने फ्लिट में अपना कारखाना दिखाने के लिए मुझे निमन्त्रित किया । अमेरिकन लोकोमोटिव कम्पनी के उप-प्रधान मैकनाटन साहब ने अपने यहाँ रोकने के लिए मुझे बहुत कुछ समझाया । मुझे प्रतिवर्ष ८,००० डालर मिलने लगे थे । उन्होंने मेरा वेतन बढ़ाकर १२,००० कर दिया । तो भी नये काम की उत्सुकतावश मैंने नाश का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया ।

बुइक मोटर का कारखाना देखकर मैं चकित हो गया । उन्नति की सैकड़ों बातें मुझे तुरन्त ही दिखाई दे गईं । मैंने अपने मन में उत्साहित होकर कहा, "यदि संचालन का अवसर मुझे मिल जाये तो काम की रौनक कितनी बढ़े ।"

अगले दिन चार्ल्स नाश ने मुझसे मेरे निर्णय के बारे में पूछा ।

"नाश साहब, मैं यहाँ आना चाहता हूँ । मुझे विश्वास है कि मैं इस कारखाने के लिए उपयोगी होऊँगा ।"

कुछ बातचीत के बाद जब मैंने उन्हें अपनी आय बताई तो उनका उत्साह ठण्डा होता दिखाई दिया । बोले, "इस व्यवसाय में तो अभी हम इतना ऊँचा वेतन दे नहीं पाते ।" वह भाव-ताव नहीं कर रहे थे । सन् १६११ तक फ्लिट में १२,००० डालर वेतन बहुत था ।

"नाश साहब, आप देंगे क्या ?"

वह थोड़ी देर तक सोचते रहे। मुझे १२,००० डालर मिल रहे थे तो जो लोग मुझसे प्रसन्न थे, उनसे मुझे तोड़ने के लिए इस रकम से बढ़े वेतन ही का आकर्षण आवश्यक था। अकस्मात् वह तनकर बैठ गये और बोले, "क्राइसलर साहब, ६,००० डालर से अधिक देने की हमारी सामर्थ्य नहीं।"

"नाश साहब, मुझे मंजूर है।"

नाश साहब चकरा गये।

● ● ●

हमारे चौथे बच्चे जैक का जन्म पिट्सबर्ग में हुआ। जिस पद को छोड़कर मैंने एक नये और कच्चे व्यवसाय में घुसने का निश्चय किया था, उसमें मुझे सर्वोच्च सम्मान और सुख प्राप्त था। परन्तु मेरे पूर्वजों को खोज की जो उमंग थी, उसने ही मुझे सपरिवार फ्लिट-यात्रा के लिए प्रेरित किया।

मोटर-निर्माण के क्षेत्र में मैंने उपयुक्त समय पर प्रवेश किया। उस वर्ष ही चार्ल्स एफ़० केटरिंग कैडिलक कार में सेल्फ-स्टार्टर लगाने में सफल हुआ था। बिजली की सहायता से रोशनी हो, पेट्रोल जलने लगे और मोटर चालू हो—इन सब आविष्कारों से इस व्यवसाय का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो गया। मोटरों के सम्बन्ध में जो भी भविष्य-वाणियाँ हुई थीं, वे सब चरितार्थ होने लगी थीं।

परन्तु अधिकांश मोटरों के निर्माण पर लागत बहुत बैठती थी। इसलिए बुइक के कारखाने में अपव्यय की रोकथाम मैंने प्रारम्भ की और काम के गुण और मात्रा के हिसाब से पारिश्रमिक की दरें नियत कीं, जो प्रयोग इसके पहले कभी नहीं किया गया था। लकड़ी की भाँति धातु की भी काट-छाँट चीर-फाड़ जारी थी। धातु पर ये प्रयोग अधिक सरल किये जा सकते थे। सो मैंने कर दिखाये, और कम-से-कम

समय में अच्छे-से-अच्छे काम के सफल प्रयोग चालू किये, जिससे मोटरों की निकासी ४५ प्रतिदिन से बढ़कर ७५ तक पहुँची। फिर बड़े पैमाने के उत्पादन के सिद्धान्तों के आधार पर हमने आमूल संशोधन किया, जिससे दैनिक उत्पादन बढ़कर २०० मोटरों तक पहुँच गया।

हम उत्पादन बढ़ाने लगे तो हेनरी फोर्ड ने एक मशीन का आविष्कार किया जो काम में आनेवाले पुर्जों को एक मशीन से दूसरी मशीन को ले जाती थी। इस आविष्कार का हमने अनुसरण किया। विश्वास कीजिये, जिन पच्चीस वर्षों के भीतर मोटर-निर्माण से सम्बन्धित नित्य नये आविष्कार होते रहे वे हम सबके लिए बड़े स्फूर्तिदायक रहे जो व्यवसाय में व्यावहारिक रूप से लगे थे।

मैंने ब्युइक कारखाने के प्रबन्धक के पद पर तीन वर्ष तक काम किया और चार्ल्स नाश मुझे वही वेतन देता रहा, जिस पर मैं नियुक्त किया गया था। एक दिन नाश के दफ्तर गया और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन करने के लिए मैंने अपनी बँधी मुट्ठी मेज पर रखकर कहा, "चार्ल्स, मुझे अब २५,००० डालर प्रतिवर्ष मिलने चाहिए।"

वह चीख-सा पड़ा, "वाल्टर!"

मैं कहता गया, "कहने के पहले मैंने यथेष्ट प्रतीक्षा कर ली है। जब मैं यहाँ आया था तब १२,००० डालर पा रहा था। मैंने ६,००० पर यह काम मंजूर किया, और तुमने मुझे तरक्की नहीं दी है। मुझे २५,००० मिलें, नहीं तो मैं छोड़कर चल दूँगा।"

शान्त होकर बोला, "वाल्टर, यह एक ऐसी बात है, जिस पर मुझे स्टारो साहब से परामर्श करना आवश्यक होगा।" जब कुछ दिनों बाद स्टारो साहब फ्लिन्ट आये तो उसने अपना वचन पूरा किया। दफ्तर में बुलाये जाने पर अपनी माँग मैंने फिर पेश की। स्टारो ने कहा, "वाल्टर, उत्तेजित होना आवश्यक नहीं। तुम्हें इच्छानुसार २५,००० डालर अवश्य मिलेंगे।"

"बहुत अच्छा, धन्यवाद। इस सिलसिले में इतना और कह दूँ

कि अगले वर्ष ५०,००० डालर लूँगा।" उस समय मेरी अवस्था ४० वर्ष थी। जब मैं घर पहुँचा तो तरक्की का वास्तविक आनन्द मुझे तभी हुआ, जब बात सुनकर मेरी गृहिणी चिल्ला उठी, "प्यारे, मैं जानती थी कि तुम तरक्की करा ही लोगे।" शाबाशी के इन्हीं शब्दों से मेरी अभिलाषाएँ पूरी हुईं।

● ● ●

सन् १९१५ की बात है, और यही वर्ष जनरल मोटर्स के लिए अन्य बातों में भी घटनापूर्ण रहा। इस कम्पनी का प्रतिभाशाली निर्माता विलियम सी० ड्यूरन्ट किसी प्रकार उस पर अपने अधिकार से वंचित हो गया था। तीन वर्ष अलग रहने के पश्चात् शेयरहोल्डरों की बैठक में सम्मिलित होकर उसने शान्तिपूर्वक यह प्रमाणित कर दिया कि वह कम्पनी का वास्तविक अधिकारी है। नाश को इस्तीफा देना पड़ा और ड्यूरन्ट जनरल मोटर्स का प्रधान हो गया।

एक दिन ड्यूरन्ट मेरे दफ्तर में आकर बोला, "क्राइसलर साहब! मैं आपको बुइक मोटर कम्पनी का प्रधान बनाना चाहता हूँ।"

उन दिनों नाश और स्टारो के सहयोग से मैं पैकार्ड आटोमोबाइल कम्पनी को खरीदने के विषय में लिखा-पढ़ी कर रहा था। इसलिए मैंने उत्तर दिया, "ड्यूरन्ट साहब, आपसे साफ कह दूँ कि जिस सौदे की बात हो रही है वह पट जायेगा तो मुझे यह नौकरी छोड़नी होगी।"

ड्यूरंट ने कहा, "तुम्हें यहाँ बनाये रखने के लिए मैं तुम्हें ५ लाख डालर प्रति वर्ष दूँगा।"

यह इतनी बड़ी देन थी कि कुछ क्षण तक मैं निर्वाक् होकर निर्णय न कर सका।

एक कागज देकर वह बोले, "तो बात पक्की रही।"

कागज पर लिखा सौदा वेतन के विषय में उनके वचन से भी

अधिक आकर्षक था। सौदे की शर्तें ये थीं कि प्रतिमास मैं १०,००० डालर नकद लूँ और अपने कन्ट्रैक्ट के दौरान में प्रति तीन वर्ष पश्चात् बाकी रकम नकद लूँ, या शेयरों के रूप में उस भाव पर जो कंट्रैक्ट लिखने के समय हो। मुझे शेयर लेना ही पसन्द था।

● ● ●

चार्ल्स एफ० केटरिंग की मोटर-व्यवसाय में प्रतिभापूर्ण सूझ थी। उसने ही मोटर में बिजली का पेट्रोल-शक्ति से चमत्कारक गठबंधन किया था। हमें इस व्यक्ति की आवश्यकता प्रतीत हुई। बुइक के प्रधान और जनरल मोटर्स के प्रथम उप-प्रधान की हैसियत से मैंने केटरिंग को डेट्रायट लाना चाहा। मैं जानता था कि ऊँचे वेतन का जादू उस पर न चल सकेगा; केवल काम ही उसकी प्रतिभा के अनुकूल होना चाहिए। मैंने उससे कहा, "जनरल मोटर्स की इन्जीनियरिंग से जितनी मशीन-सम्बन्धी या वैज्ञानिक समस्याएँ होंगी, उनके हल करने का दायित्व तुम्हें सँभालना है।" इस पद का दायित्व सँभालने के लिए वह राजी हो गया।

आधुनिक व्यवसाय के सहकारी संगठन द्वारा मानव ने विपुल सृजनात्मक शक्ति को जन्म दिया है। कोई व्यावसायिक संगठन त्रुटि-मुक्त नहीं—यों तो कोई भी मानव-कृति त्रुटि-मुक्त नहीं—परन्तु कम्पनी-संगठन और आधुनिक व्यवसाय के निन्दक पहले कोई ऐसा संगठन बतावें जिसने अमरीकी व्यवसाय की अपेक्षा अधिक मानव-सेवा की हो। संयुक्त राज्य अमरीका में धन की व्यापकता थोड़े से प्रमुख व्यक्तियों के कारण नहीं है; प्रमुख श्रेय उस संगठन को, उस कार्य-प्रणाली को है जिसके माध्यम से व्यावसायिक संगठन में विविध प्रखर बुद्धियों को एक-दूसरे से सहयोग का मौका मिलता है।

पहले महासमर के पश्चात् विलियम सी० ड्यूरंट ने अत्यन्त लम्बी-चौड़ी योजनाएँ बनाईं और इस नीति में शीघ्र ही उनसे मेरा मतभेद

हो गया। मुझे सन्देह हुआ कि ड्यूरंट की नीति पर चलने से कच्ची बुनियादों पर बड़े भवन तेज़ी से बनेंगे, तो पतन निश्चित है। मतभेद के कारण मैंने जनरल मोटर्स से इस्तीफ़ा दे दिया।

अब मैं अवकाश ले सकता था। मेरी अवस्था ४५ वर्ष की थी और मैं लखपती हो गया था। मेरे सामने कोई योजनाएँ न थीं। दौलत का मज़ा ही लेना था—भविष्य कितना आकर्षक था।

वर्षों तक परिश्रम के कारण प्रातःकाल ६ बजे उठने की आदत बन गई थी। अधिकांश समय घर में मँडराते ही बीतता था। एक दिन डेला ने कहा, "चाहती हूँ किसी काम में लगो।"

मैं ज़ोर से हँसकर बोला, "शायद लग जाऊँ।"

● ● ●

सन् १९२० की बात है। मुझे पता लगा कि विलीज़-ओवरलैंड कम्पनी का काम बिगड़ रहा है। एक समिति ने मुझे उसका काम सँभालने को कहा। परन्तु मैं विलीज़-ओवरलैंड की कीचड़ में फँसना नहीं चाहता था। यदि कम्पनी का दिवाला निकल जायेगा तो मेरी कितनी बदनामी होगी। परन्तु समिति के सामने मैंने यह शर्त रखी कि मैं १० लाख डालर प्रतिवर्ष पर कम्पनी का काम दो वर्ष तक हाथ में लूँ और प्रबन्ध पर मेरा पूरा अधिकार रहे। जिन महाजनों ने कम्पनी को ५ करोड़ डालर उधार दिये थे, उन्होंने विलीज़ को मेरी शर्त मानने का परामर्श दिया। फलतः मैं न्यूयार्क पहुँचा।

विलीज़ कम्पनी ने एक हवाई जहाज़ के कारखाने, एक फसल काटने की मशीनों के कारखाने और इनसे सम्बन्धित अन्य कई धन्धे अपने ऊपर लाद रखे थे। लाभ कहीं भी न था। परन्तु उसकी मोटर-कारों की अपेक्षा उसके हवाई जहाज़ और ट्रैक्टर अधिक चल रहे थे। कम्पनी की रक्षा के लिए उससे अच्छी कारें निकलनी ज़रूरी थीं।

मैंने मोटर की कारीगरी के तीन जादूगरों को इकट्ठा करने का

निश्चय किया—फ्रेड एम० जेडर, ओवेन स्केल्टन और कार्ल ब्रियर। तीनों मोटरें बनाने की जानकारी में एक-दूसरे के पूरक थे। मैंने एक नये मेल की मोटर के निर्माण का निश्चय किया और इन तीनों युवकों को अपनी कल्पना के अनुसार डिजाइन बनाने का काम सुपुर्द किया।

इन्हीं दिनों मेरे महाजन मित्रों ने एक अन्य मुसीबत से उन्हें बचाने को मुझसे कहा। इस बार मैक्सवेल कम्पनी मुसीबत में थी। उन्होंने विलीज को इस बात के लिए राजी किया कि विलीज-ओवरलैंड का उद्धार करते हुए मैं मैक्सवेल का भी पुनस्संगठन करूँ। यों मैं मैक्सवेल की पुनस्संगठन तथा प्रबन्ध समिति का प्रधान हुआ।

अगले वर्ष की बहुत-सी रातें मैंने न्यूयार्क और डिट्रायट के मध्य रेल-यात्रा में बिताईं। मैक्सवेल में उनकी २ करोड़ ६० लाख डालर की रकम बचाने के लिए मैंने महाजनों को उसमें १ करोड़ ५० लाख और लगाने के लिए राजी किया। फिर मैंने मैक्सवेल कार का एक नया डिजाइन बनवाकर उसे ५ डालर के मुनाफ़े में ९९५ डालर पर बेचना प्रारम्भ किया। कार की सन्तोषजनक बिक्री हुई और कम्पनी की हालत बहुत-कुछ सुधर गई।

सन् १९२२ में विलीज-ओवरलैंड के साथ मेरा कंट्रैक्ट समाप्त हुआ। महाजनों ने कम्पनी बन्द करके लेना-देना निपटाने के लिए उसे न्यायालय के सुपुर्द कर दिया था।

मैक्सवेल में अब हमने एक नई कार के निर्माण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। एक पुरानी कार के भद्दे से हुड के भीतर हमने भारी दबाव की शक्ति से संचालित इंजन छिपा दिया। जब दो बड़ी और बढ़िया कारों के बीच और उनके बराबर हमने इस भद्दी कार को परीक्षा के लिए खड़ा किया तो एक तमाशा बन गया। सीटी बजते ही हमारी कार चौराहे पर खड़े सिपाही को पार कर गई जबकि खूबसूरत और बड़ी कारें अपना दूसरा गियर ही बदल रही थीं।

यह तय किया गया कि यदि यह तैयार होकर आशानुसार काम

करे तो इस नवजात मशीन का नाम 'क्राइसलर' रखा जाये। इसके पश्चात ही खबर आई कि जिन दो बैंकों ने काम चालू करने के लिए हमारी कम्पनी को ५५,२०,००० डालर उधार देने का वचन दिया था, उन्होंने अपना निर्णय रद्द कर दिया है।

इस बुरी ख़बर के बाद दूसरी खबर यह भी आई कि न्यूयार्क में जो मोटर-प्रदर्शनी होनेवाली थी, वह उन मॉडलों के प्रदर्शन के लिए जगह न दे सकेगी, जो बनकर बिकने न लगी हों। इस प्रकार हमारी क्राइसलर कारें बहिष्कृत हुईं। हमने आशा लगाई थी कि इनकी नई बनावट और बढ़ी शक्ति से हम दर्शकों को प्रभावित कर सकेंगे, और बढ़ती बिक्री के आधार पर बकों से अपने व्यवहार का उद्धार भी कर सकेंगे। हमारी पूँजी में बहुत टोटा आ गया था, और बिना अतिरिक्त पूँजी के क्राइसलर कारों की निकासी बढ़ाना असम्भव प्रतीत होता था। काम शुरू होने के पहले ही विनाश का भूत हमारे सामने आ खड़ा हुआ था, और हम सबकी बुरी हालत थी।

अकस्मात् मैंने जो को पुकारा। यह था जे० ई० फील्ड्स जो आगे चलकर क्राइसलर कारपोरेशन का उप-प्रधान हुआ। मैंने कहा, "जो, जाओ और कमोडोर होटल का हॉल किराये पर ले लो। हमारी प्रदर्शनी अवश्य होगी।" मोटर-प्रदर्शनी न्यूयार्क के ग्रैंड सेंट्रल पलस में होने को थी। परन्तु हम जानते थे कि व्यावसायिक लोग निकटस्थ होटल में इकट्ठा होते रहते हैं; इस वर्ष कमोडोर होटल की बारी थी।

यद्यपि प्रदर्शनी में हम नहीं थे। पर उसका आकर्षण हमने चुरा लिया। प्रातःकाल से रात तक क्राइसलर कारों के चारों तरफ भीड़ जमा रहती। जो लोग मोटरों के पारखी थे, वे भारी दबाव के इंजन का महत्त्व समझते थे। परन्तु हमारी कार के निर्माण के पहले वे इसे दौड़ के प्रतियोगियों का शौक मात्र समझते थे। यहाँ वह जन-साधारण के उपयोग की वस्तु बनकर अन्य कारों से होड़ करने के लिए प्रस्तुत थी।

महाजन हमारे पास पहुँचे। कुछ सप्ताहों तक बेतरह भाव-ताव के बाद चेज़ सिक्योरिटीज़ कारपोरेशन ने हमें ५०,००,००० डालर उधार दिये। मैक्सवेल कम्पनी—यद्यपि मन में मैंने उसका नामकरण क्राइसलर कारपोरेशन कर लिया था—अब ख़तरे के बाहर थी। हमारे पास पूँजी थी, बिकनेवाली कार थी और जागरूक संगठन था।

सन् १६२५ की मोटर-प्रदर्शनी में क्राइसलर के लिए जगह का कोई प्रश्न न था। एक वर्ष ही में हमने ३२,००० बेच ली थीं और मैक्सवेल की बिक्री में भी हम लाभ उठा चुके थे। वर्ष के प्रारम्भ में हम पर ५०,००,००० डालर का कर्ज़ था। उसके अन्त तक भारमुक्त होकर हमें ४१,१५,००० डालर लाभ के मिले।

सन् १६२५ में मैक्सवेल कम्पनी का नाम क्राइसलर कारपोरेशन कर दिया गया। सन् १६२७ तक मोटरें बनाने में हमारा पाँचवाँ स्थान हुआ और हम १,६२,००० मोटरें बेच सके।

● ● ●

सन् १६२६ में मैंने निर्णय किया कि मेरे पुत्रों पर उनके ही पसन्द के व्यवसायों के संचालन का दायित्व होना चाहिए। उनका पालन-पोषण न्यूयार्क में हुआ था, और कदाचित् वे वहीं रहना चाहते थे। अतएव न्यूयार्क में ही एक भवन के निर्माण का विचार जन्मा। योरप की सैर में पेरिस के एक आश्चर्य की याद आई। मैंने भवन-निर्माताओं को आदेश दिया, "हमारा भवन आइफल-टावर से भी ऊँचा बने।" इस प्रकार ७७ खण्ड का क्राइसलर-भवन बनना प्रारम्भ हुआ। भवन बन जाने पर मेरे पुत्र वाल्टर ने उसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया।

मैंने कहा, "बेहतर है कि भवन की जानकारी प्राप्त करो। यह तुम्हारा ही है, मेरा नहीं।"

"पिताजी, कहाँ से जानकारी प्रारम्भ करूँ?"

"तहखाने से प्रारम्भ करो, फ़र्शों पर झाड़ू लगाओ, दफ्तरों को

साफ़ करो; जो काम दूसरे करते हैं, उन्हें करना स्वयं सीखो।" उसने ऐसा ही किया और धीरे-धीरे सब सेवाओं का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करके भवन का प्रबन्ध करने योग्य हो गया।

● ● ●

इस शती के चौथे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में हमें मन्दी का सामना करना पड़ा। तंगी के कई महीनों में हमें अपने कारखाने का काम ६० प्रतिशत काटना पड़ा, क्योंकि कारों की माँग घट गई थी। हमें खर्च में बहुत-सी कटौतियाँ करनी पड़ीं; परन्तु स्थिति कितनी भी निराशाजनक रही, अन्वेषण-विभाग पर हमने अपना व्यय नहीं घटने दिया। हमारे अनुसंधानालयों ने इन अंधकारमय दिनों में निर्माण-सम्बन्धी जो-जो आविष्कार किये, उनके चालू होने पर १९३६ और १९३७ में कारों की माँग खूब बढ़ी। इस बिक्री के कारण जो लाभ हुआ वह हमारी कम्पनी को ऋण-मुक्त करने में सहायक सिद्ध हुआ।

परन्तु इस व्यवसाय में पूँजी और मशीन से बढ़कर महत्त्व श्रमिकों का है। सन् १९३७ में क्राइसलर की वेतन-सूची में ७६,००० श्रमिक दर्ज थे। जो मुझे जानते हैं, वे कभी इस बात को मानने को तैयार न होंगे कि मैंने कभी भी इनके आभार को भुलाया हो।

व्यवसाय के मेरे नाम से सम्बन्धित होने पर मैं अपने को गौरवान्वित अवश्य मानता हूँ, परन्तु मैं इतना मूर्ख नहीं जो मैं यह समझूँ कि यह संस्था मेरे ही कारण सफल है। यदि हमारी इंजीनियरिंग ऊँचे स्तर की है, तो इसका श्रेय ज़ेडर और उसके सहयोगियों को है। हमारी कारों का निर्यात बढ़ा है, तो इसका श्रेय हमारे उप-प्रधान डब्लू० लेडयार्ड मिचेल को है। कोई भी बड़ी व्यावसायिक संस्था हो, उसका संचालन और विकास एक ही उद्योग में निष्ठापूर्वक लगे व्यक्तियों की मनसा-वाचा-कर्मणा लगन का प्रतिफल होता है।

यह मुझे सर्वोत्तम ढंग से तब प्रत्यक्ष हुआ, जब मैं डेट्रायट की बैठक

में अपने से छोटे लगभग एक दर्जन सहयोगियों के मध्य सम्मिलित था। संचालन संस्था के प्रधान के नाते मैं बैठक का पितामह था। गर्द और गन्दगी से रक्षा के लिए एप्रन बांधे मेरा श्रमिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। के० टी० केलर का प्रारम्भिक जीवन भी, जो सन् १९३७ में क्राइसलर कारपोरेशन के प्रधान थे, ऐसा ही था। वही कैफ़ियत जेडर, स्केल्टर और ब्रियर की थी। मिचेल तथा उनके बहुत से अन्य सहयोगी इसी प्रकार निम्न श्रेणी के श्रमिक जीवन से आगे बढ़कर व्यवसाय के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचे हैं। सीधे-सादे शब्दों में हम सब अमरीकी श्रमिक ही हैं।

दीर्घायु का संकल्प

(डॉ० आर्नल्ड ए० हुशनेकर की पुस्तक

"दि विल टु लिव" का सार)

इस पुस्तक में, जो अपने ढंग की निराली पुस्तक है, यह बात बड़े स्पष्ट रूप से समझाई गई है कि हमारे विचारों तथा हमारी भावनाओं का हमारे स्वास्थ्य पर और हमारे जीवन की अवधि पर कितना गहरा असर पड़ सकता है।

इस पुस्तक के लेखक डॉ० हुशनेकर, बर्लिन के फ्रीडरिख विल्हेल्म विश्वविद्यालय के स्नातक हैं; उन्होंने इस पुस्तक में अपने कथन की पुष्टि में अपने २५ वर्ष के डॉक्टरी के अनुभव से अत्यन्त प्रभावशाली दृष्टान्त दिये हैं।

एक प्रख्यात शल्य-चिकित्सक डॉ० फ्रांसिस पी० कारिगन ने इस पुस्तक पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा है, "यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे हर समझदार आदमी पढ़कर अपने स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए लाभ उठा सकता है। इस पुस्तक में ऐसी आधारभूत समस्याओं को हल किया गया है जिनका असर हर आदमी पर पड़ता है।"

दीर्घायु का संकल्प

एक वयोवृद्ध महिला ने, जो अपना जीवन शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त करने में व्यतीत कर चुकी थीं, एक बार अपनी एक भयानक बीमारी का हाल सुनाया जो उन्हें अपनी अधेड़ अवस्था में हो गई थी। वह जीवन और मृत्यु के बीच हचकोले खा रही थीं, अर्ध-चेतना की अवस्था में उनके हाथ-पाँव ढीले पड़ गये थे; इतने में उन्होंने अस्पताल के कमरे के बाहर अपने दो सहयोगियों को आपस में बात करते सुना।

एक ने दूसरे से बहुत दृढ़तापूर्वक कहा, "यदि हम रोगिणी के पास तक पहुँच सकें, यदि हम उसे विश्वास दिला सकें कि संसार में उसकी बड़ी जरूरत है, तो इसका बचना भी सम्भव होगा।"

शब्द उसके कान तक पहुँचे। उस समय जीवन की विनाशक और रक्षक शक्तियों का सन्तुलित संघर्ष चल रहा था। इन शब्दों ने जीवन के पक्ष में रोगिणी के दृढ़ निश्चय को जाग्रत किया। जिस समय निरुत्साह और निराशा के कारण उसकी प्राण-शक्ति क्षीण हो रही थी, उसी समय उसके सहयोगी की हार्दिक सदिच्छा से उसे आश्वासन मिला और वह विनाशक शक्तियों से संघर्ष करने के लिए स्फूर्त हुई।

यदि जीवित रहने की हमारी इच्छा हार्दिक है, यदि हम किसी विशेष उद्देश्य से जीवित रहना चाहते हैं, तो जीवित रहने का संकल्प हमें रोग से संघर्ष करने में आवश्यक शक्ति प्रदान करता है। हममें

से प्रत्येक के अन्तस्तल में दो सशक्त स्वाभाविक प्रेरणाएँ काम करती रहती हैं—एक तो जीवित रहने की प्रबल भावना और दूसरी आत्म-हत्या की इच्छा। जीवित रहने की सशक्त प्रेरणा को हमारी ये इच्छाएँ संबल प्रदान करती हैं जिनका संकेत निर्माण, खोज और कार्यपूर्ति की ओर रहता है। इस सिद्धान्त को चिकित्सक सादर स्वीकार करते हैं जब रोग के अपनी चरम-सीमा तक पहुँचने पर वे कहते हैं, "हम जो कुछ कर सकते थे वह हम कर चुके, बाकी रोगी के हाथ में है।"

आत्महत्या की इच्छा समझ में कठिनाई से आती है, परन्तु इसके अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। जब हम किसी के विषय में कहते हैं कि वह अपना ही सबसे बुरा वैरी है, तो यह बात हम सब के लिए विशेष स्थिति में थोड़ी-बहुत सत्य हो जाती है।

यदि कोई व्यक्ति अपने हृदय पर गोली चलाने के लिए प्रस्तुत हो, तो सरलता से समझ में आ जाता है कि वह अपनी आत्महत्या करना चाहता है, दूसरा व्यक्ति रोग द्वारा अपने को धीरे-धीरे मारता है। यह बात कठिनाई से समझ में आती है। परन्तु होता आम तौर से यही है।

एक बूढ़ा आदमी आँतों के घाव का रोग लेकर मेरे पास चिकित्सा के लिए आया। उसका कहना था कि उसका रोग तीस वर्ष पुराना है। वह रोगमुक्त हो जाये, जीवन में उसकी यही एक आकांक्षा थी।

मैंने पूछा, "मान लो, तुम चंगे होकर कल अपनी नींद से उठो—फिर क्या करोगे?"

उसने उत्तर दिया, "मैं जीवन का सुख भोगूँगा।"

मैंने फिर हठपूर्वक पूछा, "कैसे? करोगे क्या?"

घबराकर उसने उत्तर दिया, "कैसे? मैं अन्य लोगों की भाँति सुख मनाऊँगा।"

इससे अधिक वह कुछ बता नहीं सका। उसके सामने कोई योजना न थी, कोई उद्देश्य न था, किसी महत्त्वपूर्ण काम की पूर्ति के लिए उसे कोई प्रेरणा प्राप्त न थी। तीस वर्ष तक उसका जीवन रोग ही में बीता

था। व्यवसाय में उसके सहयोगी उसकी सेवा करते रहे, परिवार के सदस्य उसे अपनी सेवा से सब प्रकार का सुख पहुँचाने का प्रयत्न करते रहे, क्योंकि उनकी समझ में वह रोगी था। जब वह अपने दफ़्तर से घर लौटता तो गरम शोरवे का प्याला उसकी प्रतीक्षा में उसे तयार मिलता। यदि उसकी आँतों के घाव अच्छे हो जाते, तो गरम शोरवे का प्याला उसके सामने आना बन्द हो जाता, जो उसके प्रति परिवार के प्रेम का प्रतीक था। नहीं, आँतों में घावों का बना रहना उसके लिए ज़रूरी था। प्रेम की प्यास, वे सेवाएँ जो उसके प्रति प्रेम की प्रतीक थीं, उस दृढ़ निश्चय की अपेक्षा उसके लिए अधिक आवश्यक थीं जो उसे रोग-मुक्ति की ओर प्रेरित करता, ताकि वह यथाशक्ति वयस्क जीवन में समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह कर सके। आँतों के घाव के अधिकांश पुराने रोगियों की भाँति पहले वह भावनाओं की अपरिपक्वता का रोगी हुआ, फिर उसे आँतों का रोग लगा। उसने विनाशक स्वभाव के प्रहार की दिशा स्वयं अपनी ही ओर मोड़ ली थी।

बहुत-से रोगी चिकित्सकों के दवाखानों की खाक छानकर भी चंगे नहीं होते, उनकी कितनी भी चिकित्सा हो। उनके रोग के लक्षण बहुत-से होते हैं और विचित्र भी। कुछ कमजोरी का अनुभव करते हैं, कुछ को नींद नहीं आती, कुछ को टाँगों, कन्धों और पीठ में दर्द हुआ करता है। कुछ घबराये हुए और निराश रहते हैं। परन्तु इन सबके रोग-विवरण में एक बात की व्यापकता रहती है—ये सब अवर्णनीय और निरंतर थकावट से परेशान रहते हैं।

वे बहुधा ईर्ष्या के साथ किसी ऐसे व्यक्ति का ज़िक्र करते हैं जिसे अथक कार्यशक्ति प्राप्त है, जो खूब खाता है और हज़म करता है, जो तुरन्त सो जाता है और ताजा उठता है। फिर अपने बारे में दुःखपूर्वक कहते हैं, "मेरी हालत यह है कि सोते समय जितना थका होता हूँ उससे अधिक थकान मुझे जागने पर जान पड़ती है।"

ये थके स्त्री-पुरुष यह नहीं समझ पाते कि क्रियाशील पुरुष अधिक

शक्ति का निर्माण नहीं करता, वह केवल प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना जानता है। इनकी शक्ति बालू में बहती नदी के समान बिखरती चलती है। परन्तु शक्ति लुप्त नहीं होती। भौतिक विज्ञान का नियम है कि शक्ति नष्ट नहीं होती। तो फिर वह कहाँ जाती है?

चिकित्सा-विज्ञान के उपलब्ध साधनों से चिकित्सक रोग की परीक्षा करते रहते हैं। एक चिकित्सक कहता है कि पित्त का विकार है। दूसरे को नासूर के लक्षण दिखते हैं। तीसरे की दृष्टि में शरीर किसी विशेष भोज्य का विरोधी है। परन्तु रोगी की एक रोग से मुक्ति हो पाती है तो किसी प्रकार सदैव वह दूसरा रोग अपने लिए तैयार कर लेता है।

इन लोगों में बुराई की कौन बात है? ऐसा तो नहीं है कि इनकी शक्तियाँ किसी आन्तरिक संघर्ष में क्षीण होती रहती हैं?

● ● ●

आन्तरिक संघर्ष से ग्रस्त पुरुष गृहयुद्ध से पीड़ित देश के समान होता है। उसे अपने ही भीतर के विद्रोहियों से लड़ना पड़ता है। वह सहायता के लिए चिकित्सक के पास पहुँचता है तो आम तौर से चिकित्सक भी अपने को उतना ही असहाय पाता है जितना कि रोगी स्वयं होता है। रोग से मुक्ति तभी सम्भव होती है जब रोगी और चिकित्सक एक-दूसरे के सहयोग से आन्तरिक संघर्ष के कारण और उसके परिणाम की खोज करने में सफल हों।

एक दिन एक रोगिणी मेरे पास आई और अपनी कुर्सी के सिरे पर बैठकर चिंतित भाव से बोली, "मैं बहुत-से चिकित्सकों को दिखा चुकी हूँ। जान पड़ता है, मेरा कोई इलाज नहीं है।"

वह १४ वर्षों से बीमार थी। वह स्त्री-रोगों, हृदय और मस्तिष्क के विशेषज्ञों तथा शल्य-चिकित्सकों के पास हो आई थी। प्रत्येक चिकित्सक ने उसके रोग का अलग-अलग निदान बताया था। कोई चिकित्सक उसे रोग के एक लक्षण से मुक्त करने में सफल हुआ, तो

दूसरा लक्षण प्रत्यक्ष हो गया। उसे चक्कर आते थे, हृदय में धड़कन होती थी, सिर या पेट में पीड़ा होती थी।

वह विवाह के पहले कभी बहुत बीमार नहीं हुई थी। इसलिए मैंने उससे गार्हस्थ्य-जीवन और पति के सम्बन्ध में प्रश्न किये।

उसने बताया कि उसके पति बहुत भले आदमी हैं। वह वकील थे। अपना काम लगन के साथ करते थे और उनकी आदतों में संयम था। सप्ताह में चार रात वह बाहर जाते थे—अपने क्लब की बैठक में या ताश खेलने के लिए। उनके दो बच्चे थे और विवाह के १४ वर्षों के भीतर वह गर्भावस्था में ही चंगी होने का अनुभव कर सकी।

हमने उससे अपने पति के साथ उसके यौन-सम्बन्ध की भी बात की। उसे यौन-सुख का यथेष्ट अनुभव नहीं हुआ था। गर्भावस्था के प्रारम्भ में कभी-कभी कदाचित् उसे यह सुख प्राप्त हुआ हो। तबसे कई वर्ष तक वह यौन-सुख से वंचित रही थी।

अपनी रोगिणी के व्यक्तित्व की खोज करने पर मुझे प्रत्यक्ष हुआ कि उसने अपने को यौन-अनुभव से तो वंचित रखा ही था, सृजन की किसी भी दिशा में उसने दिलचस्पी नहीं दिखाई थी।

उसे कला या अध्ययन की ओर कोई रुचि नहीं रही थी। वह अपने पति के साथ उनके सामाजिक जीवन में भी सम्मिलित नहीं हुई, क्योंकि ताश खेलने की उसने कभी फिक्र नहीं की थी और बहुत-से लोगों के बीच उसे थकान का अनुभव होता था।

जब वह अपने दांपत्य जीवन की बात करने लगी, तो उसे स्वयं ही पता लगा कि उसका यह जीवन-मार्ग प्रायः नीरस और सुख-रहित रहा था। उसने स्त्री और माता के कर्तव्य का सच्चा निर्वाह किया था, परन्तु सृजन की सक्रिय और सस्नेह प्रेरणा से वह वंचित रही। प्रकट रूप में वह दांपत्य जीवन का दायित्व स्वीकार करती रही, परन्तु उसका अन्तस्तल इस जीवन का विद्रोही रहा।

मैंने उसे समझाया कि उसे अपना दांपत्य हृदय से स्वीकार करना

चाहिए और अपना जीवन सक्रिय रूप में उसके अनुकूल बनाना चाहिए। दांपत्य के निर्माण-क्षेत्र से—संभोग से लेकर सामाजिक सत्संग तक—वह विमुख और अलग रही थी। परिस्थिति से सहयोग न करने के परिणामस्वरूप उसके अन्तस्तल ने एक विद्रोही शक्ति को जन्म दे दिया था जो उसके सुख और स्वास्थ्य पर आघात करने लगी थी और उसका प्राणांत भी कर सकती थी।

इस रोगिणी को पता लगा कि उसका विकृत दांपत्य ही उसके दुःख का कारण है और उसके अनेक शारीरिक कष्ट आत्म-हत्या के ही विभिन्न रूप हैं, और इस बात का पता लगते ही उसने भावी जीवन के सम्बन्ध में निर्णय कर लिया और उसका स्वास्थ्य क्रमशः सुधरने लगा। अपने नये मार्ग पर वह दृढ़तापूर्वक चलती रही, तो अच्छे परिणाम भी उसके सामने आने लगे। तीन महीने के पश्चात् उसे शारीरिक शक्ति का अनुभव होने लगा। धीरे-धीरे उसकी सृजनात्मक शक्तियाँ भी विकसित होने लगीं। अपने पति और बच्चों के प्रति जिन कर्त्तव्यों का निर्वाह करने के लिए वह अपने को विवश समझती थी, उन्हीं में उसे नये अवसरों के सुन्दर दृश्य दिखाई देने लगे।

उसने मुझसे कहा, "जिन परिस्थितियों से मैं घबरा जाती थी, उनका मैं अब सहर्ष सामना करने लगी हूँ, दांपत्य-जीवन को सुखी बनाने के मार्ग मुझे दिखाई देने लगे हैं।"

और जब मैंने सहयोग के लिए उसके पति को बुलाया तो उसे कहना पड़ा कि पहली ही बार दोनों को गार्हस्थ्य-जीवन का वास्तविक आनन्द मिलने लगा है।

प्रायः हम सबको कभी-न-कभी प्रकट रूप में किसी शारीरिक श्रम के बिना भी थकान का अनुभव हुआ है। तो भी हम जानते हैं कि साधारण स्त्री-पुरुष भी बहुत देर तक कठिन तथा अनवरत परिश्रम करते रहते हैं और अधिक थकते भी नहीं। उदाहरणार्थ, लन्दन पर जर्मनों की भीषण बमबारी के दौरान में वहाँ के निवासियों की नींद

हराम हो गई और प्रतिरात उन्हें तहखानों की भीड़ में इकट्ठा होना पड़ता था। अतएव यह सन्देह किया जाने लगा कि इस परेशानी में उनके मध्य किसी महामारी का प्रकट हो जाना सम्भव है। परन्तु विस्टन चर्चिल का बयान है, "वास्तव में इस कठिन शरद् के दौरान में लन्दनवासियों का स्वास्थ्य औसत से अधिक अच्छा रहा। जब आत्मिक शक्ति जाग्रत होती है, तो कष्ट की सहनशक्ति भी असीम हो जाती है।"

यदि उत्साह से उन्हें प्रेरणा मिलती रहती है और जो कुछ वे करते हैं उसमें उन्हें आस्था रहती है, तो सभी जगह प्रतिदिन लोग अपने-अपने कामों में शिथिलता का अनुभव किये बिना लगे रहते हैं।

किसी आंतरिक समस्या के हल न होने से भावना पर बहुत दिनों तक दबाव पड़ता रहता है। कभी-कभी विनाश के लक्षण अकस्मात् प्रकट हो जाते हैं। परन्तु ज्यों ही रोगी को भावनाओं के दबाव से मुक्ति मिलती है और रोगी को जीवन का प्रोत्साहन मिलता है त्यों ही चमत्कारक स्वास्थ्य-लाभ दिखाई देने लगता है। इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि ऐसा लाभ ओषधि की ही बदौलत होता है।

मेरे दवाखाने के सामने सड़क के पार एक पुरुष अपने कमरे में पड़ा मर रहा था। मैं उसे देखने के लिए बुलाया गया। उसका अपना पुराना चिकित्सक कहीं बाहर गया हुआ था। रोगी की अवस्था ६०-७० के बीच थी, वह ओषधि का विशेषज्ञ था और नगर के चिकित्सकों में उसे ऊँचा स्थान प्राप्त था।

उसका भाई मुझे द्वार पर मिला और बड़ी उग्रता से उसने याचना की, "डॉक्टर साहब, कल प्रातःकाल तक आप अवश्य रोगी को जीवित रखिये जब तक विवाह की रस्म पूरी न हो जाये। जब तक यह अपने पुत्र का कानूनी अस्तित्व पक्का न कर लें, तब तक इन्हें मरना न चाहिए।"

तब मुझे पता लगा कि अपने चरित्र के लिए प्रसिद्ध इन महाशय का अपने घर की नौकरानी से २० वर्ष से अधिक का सम्बन्ध था।

परन्तु सामाजिक आचरण का उल्लंघन स्वीकार करके इन्हें इस स्त्री से विवाह करने का साहस नहीं हुआ था। इन्होंने अपने पुत्र के पालन-पोषण की यथेष्ट व्यवस्था अवश्य कर दी थी, और वह उस समय विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था ताकि वह अपने पिता का ओषधि-सम्बन्धी धन्धा चला सके। परन्तु कानून की दृष्टि में अपने पिता का पुत्र न घोषित होने पर उसे अपने पिता का नाम और धन्धा विरासत में नहीं मिल सकता था।

रोगी के हृदय का रोग अपनी चरम सीमा पर था। मैं रात भर उसके रोग से लड़ता रहा। मुझे कुछ संतोष तभी हुआ जब फेफड़ों में द्रव पदार्थ की आवाज़ बंद हुई। जब पादरी विवाह कराने आया तो रोगी को इतना होश आ चुका था कि वह विवाह की रस्म में भाग ले सकता।

अब चमत्कार की बात सामने आई। वह ओषधि-विक्रेता दो वर्ष और जीवित रहा और उसने अपने लड़के को विश्वविद्यालय का स्नातक होते भी देख लिया। बूढ़े का स्वास्थ्य बहुत अच्छा तो नहीं हो सका, परन्तु वह इतना ठीक अवश्य रहा कि कुछ घण्टे अपना धन्धा देख सके और अपने लड़के को ग्राहकों से परिचित करा सके। इस प्रकार संतोष और शान्ति के वातावरण में उसका देहान्त हुआ।

मौत से इतनी लड़ाइयाँ लड़कर, जिनमें कभी हार हुई कभी जीत, रोगी बूढ़ा पहले मरने के लिए राजी हुआ और फिर जीवित रहने का उसने निश्चय किया, कारण मेरी समझ में आता है। निस्सन्देह वर्षों तक कड़े सामाजिक नियम के उल्लंघन में अपने को असमर्थ पाकर वह आंतरिक उलझन में रहा। अपने लड़के को स्वीकार करने के संतोष से वंचित होने पर उसे अपनी विफलता का बहुत ही कटु अनुभव हुआ।

ज्यों ही उसके भाई ने आवश्यक निर्णय के लिए उसे विवश किया कि उसके सामने जीवन का एक नया आदेश और सन्देश आ गया। पुत्र की सर्वोच्च शिक्षा पूरी होने और धन्धे में उसके भली भाँति लग जाने

में उसका सहयोग आवश्यक हो गया। ओषधि ने उसके गिरते शरीर में प्राण की रक्षा अवश्य की; परन्तु ओषधि ही से उसे जीवन-दान न मिलता। यह उसे जीवित रहने के दृढ़ निश्चय से ही मिला जो उसे उस रस्म से प्राप्त हुआ जिससे विवाह सम्पन्न हुआ और उसका नाम तथा धन्धा चलाने के लिए उसे एक पुत्र मिला।

● ● ●

हम सब पर कभी-कभी अचानक बीमारी या मौत का भय सवार होता है। क्या इसके अर्थ हैं कि वास्तव में हम मरने जा रहे हैं? बिलकुल नहीं। इस भय का अर्थ केवल यह होता है कि हमारे अन्तस्तल में उस समय अपने आत्म-घातक स्वभाव से वार्त्तालाप चल रहा है। क्षणिक इच्छावश कदाचित् हम अपने बोझों और दायित्वों से मुक्त होने के लिए प्रेरित भी हो जायें, क्योंकि कोलम्बस के मल्लाहों की भाँति हम कभी-कभी थककर पीछे लौट चलने की इच्छा करने लगते हैं। हम सबके सामने थकान के क्षण आते हैं जब हमारी आशाएँ क्षीण हो जाती हैं और हमारा उत्साह भंग हो जाता है।

कठिन रोग के दौरान में मौत के निकट पहुँचने पर मनुष्य की भावना का क्या रूप हो सकता है इसका विवरण एक बार मुझे हवाई-जहाज चलानेवाली एक सैलानी युवती से मिला। महासागर के ऊपर रात के समय आकाश में अकेले उड़ते-उड़ते वह एक अनोखी तन्द्रा में मग्न हो गई। उसे ऐसा जान पड़ा मानो उसका एक मित्र और सहयोगी उड़ाका, जो महासमर में गोली का शिकार हो गया था, उसके हाथ पकड़े उसकी बगल में खड़ा कह रहा है, "मेरे साथ चलो।" उसने कहा या लड़की को ऐसा ही लगा, मानो वह सुन्दर अनन्त आकाश में चिन्ता और भय से मुक्त होकर शान्ति और सुख के वातावरण में प्रवेश कर रही है।

उसने कहा, "मुझे अब जाना है, साथ चलती हो न?" वह जभी

बैठी रही; उसका वायुयान समुद्र पर गरजता पृथ्वी से दूर और सही मार्ग से अलग जा रहा था।

अकस्मात् उसे होश आया। उसने मुझसे कहा, "यदि मैं तुरन्त ही वायुयान को मोड़ न देती तो दुर्घटना हो जाती, हमारा वायुयान महासागर में डूब जाता। पेट्रोल समाप्त होने से मरो या ज्वर से—मरने में कोई फर्क नहीं आता।"

तुलना उपयुक्त है। इस शान्त और सुचित्त युवती को अपने वायुयान में बैठे निराशा के क्षण में जो अनुभव हुआ वह प्रायः वैसा ही है जो रोगी को कठिन रोग के मध्य भीषण ज्वर की वेहोशी में होता है। जब हम आकाश और पृथ्वी के मध्य मिथ्या जगत् में मँडराते हैं और जब जीवन के सम्बन्ध, अपने प्रियजनों के चेहरे और स्वयं हमारे अपने अंग ज्वर की धुन्ध में विस्मृत हो जाते हैं, तो मन में मृत्यु की नग्न इच्छा आती है।

इस अनुभव से वापस लौटने पर रोगी अकसर, डरकर नहीं, आश्चर्यपूर्वक कहता है, "मैं तो कदाचित् मर ही गया था।" और अकसर ऐसी ही अर्द्ध-जागृति के क्षण में वह उस समय की इच्छा दुहरा देता है, "मैं तो मरना चाहता था।"

एक दिन प्रकट रूप में बिलकुल स्वस्थ एक पुरुष मेरे दवाखाने में आया और बोला, "इस समय मैं अपने को जीवित जैसा नहीं मरा जैसा मान रहा हूँ।" कुछ महीने बाद वह मर गया और अकसर हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति अचानक, किसी चेतावनी बिना, हृदय-रोग का शिकार हो जाता है। परन्तु पता लगता है कि इसके पहले ही अपने वकील से उसने वसीयतनामे के सम्बन्ध में सलाह ले ली थी या अपना नया जीवन-बीमा करा लिया था।

परन्तु हमारे अन्तस्तल में घातक स्वभाव से जो अज्ञात संघर्ष चला करता है उसका नकारात्मक परिणाम होना आवश्यक नहीं है। हम नया प्रोत्साहन लेकर आगे बढ़ते जा सकते हैं। उन लोगों में जो

स्वभावतः जीवन के लिए निश्चय करते हैं या निराश होकर हार मान लेते हैं, भेद केवल उद्देश्य और भावनात्मक स्वास्थ्य का ही जान पड़ता है।

कभी-कभी हमारे सन्देह भी रोग के विरुद्ध संघर्ष करने की आन्तरिक शक्ति क्षीण कर सकते हैं। कई वर्ष हुए एक युवक ने मेरे पास आकर अपनी बाल्यकालीन पक्षाघात-विषयक परीक्षा मुझसे करानी चाही। इस रोग के उसमें कोई लक्षण न थे और मैं यह बताने के लिए विवश हुआ कि उस रोग की सम्भावना की परीक्षा करने का कोई ज्ञात साधन नहीं है जिसका सन्देह उसे घेरे है। एक वर्ष पश्चात् वह दूसरे चिकित्सक के पास गया और उससे भी पक्षाघात-विषयक परीक्षा की माँग की। उसे फिर आश्वासन दिया गया कि उसे वह रोग नहीं है। तीसरे वर्ष उसे यह रोग भीषण रूप में हो ही गया।

ऐसे अनोखे दुश्चिन्त्य रोग का कारण काल्पनिक ही हो सकता है। तो भी एक अधिकारी विशेषज्ञ का कहना है कि सन्देह से शरीर में एक प्रकार की प्रतिक्रिया होती है जो सन्देह के विरुद्ध अत्यधिक बढ़ जाती है। अनुमान किया जाता है कि भयभीत तथा पश्चगामी व्यक्तित्व शरीर के भीतर अत्यधिक मात्रा में ए० सी० टी० एच० या उससे सम्बन्धित हारमोन तैयार करने लगता है। इस कारण आँत में घाव हो जाने की सम्भावना बढ़ जाती है या बाल्यकालीन पक्षाघात जैसे संक्रामक रोगों की छूत भी लग सकती है।

कभी-कभी असहनीय स्थिति से बचने के लिए ही रोगी असहाय अवस्था की शरण ले लेता है। एक बार कमर झुकाये, काँपते हाथों को हिलाते एक अत्यन्त रोगी पुरुष मेरे पास चिकित्सा के लिए आया, तो मैंने संयोगवश पूछ लिया कि वह बहरा कब हुआ था। उसने मुझे अंदाजे से वर्ष बताया। मैंने पूछा कि "क्या विवाह हो गया है?" उसने उत्तर दिया, "हाँ हो गया है।" मैंने पूछा, "क्या उसकी पत्नी चिल्ला-चिल्लाकर उसे कोसती थी?"

वह बोला, "क्या पूछते हैं? उसका चिल्लाना असहनीय हो गया था।"

एक योरपीय चिकित्सक ने किसी संगीत-प्रेमी बहरी स्त्री पर एक प्रयोग किया। जब वह गाने लगी, तो चुपके-से वह स्वर के साथ पियानो बजाने लगा। एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पर जाते हुए चिकित्सक भिन्न स्वर पर पियानो बजाने लगा। उस बहरी गायिका ने परिवर्तन जानने का संकेत नहीं किया और पूर्ववत् गाती रही, परन्तु नये स्वर में।

बहुत-से ऐसे बहरे मिलते हैं जो उनसे कही गई बात सुन नहीं पाते जब तक वह चिल्लाकर उन्हें न सुनाई जाये, परन्तु यदि उनके विषय में कानाफूसी हो रही हो, तो उसे वह अवश्य पकड़ लेते हैं। ऐसे बहरेपन को ढोंग बताकर उसका उपहास करना सरल है, परन्तु बहरेपन की वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता। यह केवल इस बात की चेतावनी है कि उसका बहरापन उसके घातक स्वभाव के जोर का एक परिणाम है; उसके दबाव में आकर उसने अपने शरीर की एक इन्द्रिय तो गँवा ही दी है।

अवस्था के पहले ही बुढ़ापे के लक्षण प्रत्यक्ष होने पर भी यही चेतावनी मिलती है। जब लड़खड़ाते पग और झुकी कमर का आगमन समय के पहले ही हो जाता है तो हमारी समझ में आ जाना चाहिए कि वह स्त्री या पुरुष संघर्ष से इतना शीघ्र थक गया है कि वह आत्म-घातक प्रवृत्ति का शिकार हो गया है। हम अवस्था के कारण ही बूढ़े नहीं होते, घटनाओं की प्रतिकूल भावनात्मक प्रतिक्रिया भी हमें शीघ्र बूढ़ा बना देती है। किसी पुरुष को घाटा हो जाता है और रात-ही-रात में उसके बाल सफेद हो जाते हैं। दूसरा पुरुष हानियाँ सहता रहता है, परन्तु कुछ समय तक संघर्ष करने पर उसे नई और आशाजनक दिशा दिखाई देती है तो वह फिर आगे बढ़ता है। दुर्भाग्य से संघर्ष के परिणाम में उसके मुख पर कुछ झुर्रियाँ आ जाती हैं, परन्तु वह घातक

प्रवृत्तियों से बिल्कुल दब नहीं जाता। उलटे, प्रयत्न करके वह सक्रिय उद्योग के नये मार्ग ढूँढ निकालता है।

प्रतिक्रिया के भेद पर अवस्था का प्रभाव होता नहीं दिखाई देता। एक स्त्री का पति मर जाता हैं तो वह अपने जीवन का अंत मान बैठती है और अपने संकोच, चिड़चिड़े स्वर और क्रमिक मुरझाहट से साक्षी देती जान पड़ती है कि वह मृत्यु की प्रतीक्षा में है। दूसरी स्त्री उससे बड़ी होकर भी विकास करने लगती है। वह नये पति की खोज में लगती है, कोई धन्धा प्रारम्भ करती है या ऐसे व्यसनों में लग जाती है जिनके लिए उसे पहले कोई फ़ुरसत नहीं मिलती थी। रचनात्मक रूप में वह जीवित रहने और जीवन के सुख भोगने का दृढ़ निश्चय प्रकट करती है।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि रोग द्वारा शरीर अपने को जीवन की कठिनाइयों के, एक प्रकार से, अनुकूल बना लेता है। यह अनुकूलता बहुत मँहगी पड़ती है। परन्तु ऐसी परिस्थितियाँ आती ही हैं जब बीमार पड़ना आवश्यक होता है। इस कारण शरीर को संघर्ष से कुछ फ़ुरसत मिलती है, और व्यक्ति को अपनी शक्तियों के पुनस्संगठन का, नये दृष्टिकोण बनाने का, अवसर मिलता है। ऐसी स्थितियों में बीमारी पराजय की प्रतीक नहीं होती; वास्तव में कभी-कभी तो वह हमें ऐसे कर्मों से बचा लेती है जो कदाचित् हमें अपने हित के, अपनी आन्तरिक आकांक्षाओं के, अथवा ईमानदारी या प्रतिष्ठा के किसी मौलिक सिद्धान्त के, विरुद्ध करने पड़ते, क्योंकि उस समय हमें कोई दूसरा मार्ग न दिखाई देता।

एक होनहार युवती अभिनेत्री लन्दन के एक नये तमाशे की तैयारी के दौरान में पेट की कठिन पीड़ा से अकस्मात् गिर पड़ी। आवश्यक शल्य-क्रिया के लिए वह तुरन्त अस्पताल भेज दी गई और उसके सह-योगियों तथा प्रशंसकों ने उस पर समवेदना की बौछार करनी प्रारम्भ कर दी। उन्हें कितना अफ़सोस रहा कि तमाशे से उसका नाम काटना पड़ा और सफलता की ख्याति का मार्ग उसके लिए रुक गया। परन्तु

उसके मित्रों को यह जानकर आश्चर्य हुआ होगा कि अपनी ख्याति के मार्ग के अवरोध पर खेद न करके अस्पताल पहुँचने पर एक प्रकार की मानसिक शान्ति ही उसे मिली यद्यपि पीड़ा जारी थी। वही जानती थी कि शल्य-क्रिया से उसकी प्रसिद्धि अवरुद्ध नहीं हुई, उसकी रक्षा ही हुई।

नये तमाशे की तैयारी के दौरान में उसकी घबराहट बढ़ती गई थी। उसे गलत भूमिका दी गई थी; उसकी पहली सफलता विकसित होने के बदले खतरे में पड़ सकती थी, नष्ट भी हो सकती थी। उसकी यह धारणा दृढ़ हो गई और उसकी निराशा बढ़ती गई। तमाशे में सम्मिलित रहने से उसकी प्रसिद्धि नष्ट होती; तैयारी के दौरान में भाग निकलने पर उसकी इससे अधिक बदनामी होती।

तमाशा कुछ ही दिनों बाद होने को था, जब एक रात पेट की भयानक पीड़ा से उसकी नींद खुल गई। उसने अपने को समझाया कि यह हिस्टीरिया का दौरा है, और भूलने का प्रयत्न किया। परन्तु अन्ततः उसे चिकित्सक को बुलाना पड़ा और उसने बताया कि आँत की अन्धी नली सूजी ही नहीं, फट भी गई है।

अभिनेत्री ने शारीरिक कष्ट सहन करके अपनी आँत की अन्धी नली का सहर्ष बलिदान किया, परन्तु अपनी प्रतिष्ठा बचा ली। वह बिलकुल चंगी हो गई। उसे एक नये खेल में उपयुक्त भूमिका में अभिनय करने का अवसर मिला और उसके दूसरे अभिनय से उसकी पहली सफलता पुष्ट हुई।

● ● ●

जब हम किसी मालिक या सहयोगी के विषय में कहते हैं, "उसे देखकर मेरा जी मचलाता है," तो हमारा कथन शाब्दिक अर्थ के अनुकूल ही होता है। हमें मचलाहट, पेट के दर्द या सिर में धमक का आभास होता है। देखने मात्र से जो शारीरिक कष्ट होता है वह उतना ही सही है

मिटानी वह हँसी जो मनोरंजन के कारण आती है या वे आँसू जो रंज की हालत में निकलते हैं। परन्तु जिस भावनात्मक प्रतिक्रिया के कारण हमारा शरीर प्रभावित होता है उसे बदलना हम आसानी से सीख सकते हैं।

जिस परिस्थिति से हमारी भावना पर ठोकर लगती है उसका मुकाबला करने के दो ही मार्ग हैं—उससे लड़ो या उससे भागो। निर्णय करके अपना मार्ग निश्चित करते ही हम स्वास्थ्य-लाभ के मार्ग पर आ जाते हैं। परन्तु निर्णय का कार्यान्वित होना आवश्यक है। कठिनाई का सामना हमें सत्य-कर्म से करना है।

यदि किसी इन्टरव्यू में विफल होते हो, क्योंकि डर या संदेह के कारण तुम्हारे मुख से सही बात नहीं निकल सकी, तो तुम्हारा असन्तोष और दबा क्रोध दिन के अन्त तक तुम्हारे सिर की पीड़ा का कारण हो सकता है। इसके विरुद्ध यदि डर से मुक्त होकर तुम सही कर्म में लगते हो, तो प्रभाव तुम्हारे लिए बहुत स्फूर्तिदायक हो सकता है।

मेरा एक रोगी तीसरे पहर मेरे पास आया और प्रफुल्ल मुद्रा में बोला, "मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ, वैसा ही हर्ष जो २० वर्ष की अवस्था में मुझे टेनिस का कठिन खेल पूरा करने पर होता था।"

जो हुआ था वह उसके धन्धे की कोई असाधारण बात न थी। एक सहयोगी ने उसकी प्रिय योजना का विरोध किया था। मेरे रोगी ने उसका विरोध करने के परिणाम पर विचार कर लिया था और निश्चय कर लिया था कि ये परिणाम उसे स्वीकार होंगे। अपनी ही चिन्ताओं का सामना करके उसने उनका महत्व अमान्य कर दिया और इस प्रकार वह अपनी योजना के पक्ष में लड़ने के लिए स्वतन्त्र हो गया। वह पूर्ण रूप से विश्वस्त होकर सभा में पहुँचा कि उसकी विजय होगी। संघर्ष के पश्चात् उसे अपना शरीर वैसा ही नौजवान, लचीला

और स्वस्थ लगा जैसा किसी समय किसी कठिन शारीरिक परिश्रम के पश्चात् उसे लगा करता था।

जिन कठिनाइयों का हमें जीवन में सामना करना पड़ता है, उनमें अधिकांश ऐसी होती हैं जिनमें बाहरी परिस्थितियाँ उतनी बाधक नहीं होतीं जितनी कि आन्तरिक शक्तियाँ, जिनसे परामर्श करना, जिन्हें सही राह पर लाना, आवश्यक रहता है। इनकी हम परवाह नहीं करते या इन्हें हम दबा देते हैं, तो यही हमारा मार्ग अवरुद्ध करती हैं।

कभी-कभी जब परिस्थिति के सही मूल्यांकन के संघर्ष में हार निश्चित दिखाई पड़े, तो भागने का ही मार्ग श्रेयस्कर होता है। भागना स्वाभाविक है और स्वस्थ भी। जंगली पशु हर आक्रमण से वीरतापूर्वक लड़ने के लिए अपने को विवश नहीं मानता। ज्ञात वैरी का सामना होने पर वह अपना निर्णय इसी आधार पर करता है कि लड़ने पर वह जीतेगा या हारेगा। ऐसी परिस्थिति में, जो अपने मान की न हो, भाग जाना कायरता नहीं, स्वरक्षा है। हमें किसी परिस्थिति से सफलतापूर्वक भाग निकलने पर उतना ही संतोष होना चाहिए, जितना उससे सफलतापूर्वक लड़ने में। दोनों ही मार्ग मान्य हैं, परिस्थिति का सही मूल्यांकन ही निर्णय का आधार होना चाहिए।

● ● ●

हम किस प्रकार इस परिस्थिति से भागें जिससे हम लड़ नहीं सकते? यथेष्ट आत्म-चिंतन के पश्चात् एक रोगिणी को पता लगा कि जब वह अपनी सास से मिलने जाती थी, तभी उसके सिर और कमर में दर्द होने लगता था। बुढ़िया अपने लड़के पर अधिकार पाने के लिए संघर्ष-शील थी। वह प्रेम का दिखावा ही करती रही, और भीतर-ही-भीतर वह पत्नी के प्रति अपने बेटे के स्नेह पर आघात करती रही। हमारी

रोगिणी माता-पुत्र के इस संघर्ष की निर्दोष शिकार थी। वह अधिकार जमाना चाहती थी और लड़का स्वतन्त्र रहना चाहता था।

युवती पत्नी ने देखा कि न तो वह अपनी सास से लड़ सकती है, न अपने दांपत्य को खतरे में डाले बिना वह अलग ही रह सकती है। हर हालत में पति अपनी माता और पत्नी के बीच निर्णय करने के लिए विवश हो जाता।

वह परिस्थिति से भाग नहीं सकती थी तो उसके भावनात्मक प्रभाव से मुक्त होने का उसने प्रयत्न प्रारम्भ किया। अपने को शान्त रखने के लिए बटुए में एक प्रकार की ओषधि रखने लगी। जब कभी कुढ़न या ग्लानि उसके हृदय में उमड़ती तो कमरे के बाहर जाकर एक गोली मुँह में डाल लेती। गोली की सहायता से सास के सामने वह शान्त रहती और अपने को उदासीन रख पाती। उसे अपने पति के स्नेह का अधिक विश्वास हो गया, क्योंकि माता के प्रति स्नेह की प्रतिद्वन्द्विता से उसने अपने को मुक्त कर लिया था। वह बुढ़िया को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगी। कुछ समय बाद उस पर तरस भी खाने लगी, विशेष रूप से तब जब उसकी सास चर्म रोग से परेशान रहने लगी जो कदाचित् उसे अपनी मानसिक व्यथा के कारण हो गया था। फलतः आन्तरिक शक्ति बढ़ने पर वह अपने पति की ज्यादा अच्छी सहधर्मिणी हो सकी और दोनों में स्नेह के बन्धन इतने पुष्ट हो गए कि माता के प्रति लड़के का अपरिपक्व स्नेह उसमें बाधा डालने योग्य न रहा।

दूसरा उदाहरण है एक युवक दाँतसाज का जो अमीर रोगियों की सेवा के लिए बने एक बड़े फैशनेबुल चिकित्सालय में सहायक के काम पर लगा था। उसने शिकायत की कि अपनी नौकरी से वह दुखी है। उसके पित्ताशय में कष्ट था, उसे चक्कर आते थे, कभी-कभी बेहोश हो जाता था और यह प्रत्यक्ष था कि वह ऐसे काम में नहीं लगा रह सकता था जिसके प्रति उसका विरोध रोग के रूप में प्रकट होने लगा था।

वह लेखक बनना चाहता था। परन्तु उसे अपनी पत्नी और बच्चे की परवरिश भी करनी थी। मैंने उसके रोग की आवश्यक चिकित्सा की परन्तु साथ ही उसे परामर्श दिया कि वह कोई अधिक रोचक काम ढूँढ़े।

उसने अपनी समस्या हल कर ली। वह सपरिवार एक कस्बे में जाकर बस गया जहाँ राजधानी की अपेक्षा बहुत कम व्यय से गुजर चल सकती थी। उसका घर छोटा है और उसमें उसने कोई सामान भी नहीं लगाया है। उसने रोगियों को देखने के लिए सीमित घण्टे रखे हैं—इतने ही कि गुजारे भर की आय उसे हो जाये। बचे समय में वह पढ़ा-लिखा करता है। उसके पहले उपन्यास का अच्छा स्वागत हुआ और दूसरा पूरा होने के पहले ही अच्छे दामों एक प्रकाशक के हाथ बिक गया है। जीवनचर्या की सरलता उसे खलती नहीं। यह युवक अब स्वस्थ है और सुखी भी।

ऐसी समस्याएँ जीवन में बहुत कम आती हैं जिनका हल मिल ही न सके। आम तौर से हम हल की खोज में इसलिए विफल होते हैं कि सही हल मानने के लिए राजी नहीं होते—और वह हल है स्थिति से सामंजस्य की सक्रिय व्यवस्था; सही हल मानने से इन्कार करने पर हम आत्मघात ही की ओर झुकते हैं।

● ● ●

हममें अधिकांश अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं परन्तु अपनी शक्तियों का सर्वोत्तम उपयोग हम नहीं कर पाते। प्रधान कारण यह है कि हम उन आन्तरिक प्रेरणाओं की परवाह नहीं करते जो हमें इधर-उधर ले जाती हैं।

बेहतर प्रबन्ध कैसे हो? किस प्रकार हम अपनी जीवनचर्या का सुधार करें जिससे हमारी आन्तरिक शक्तियों का सदुपयोग हो सके और हम अधिक-से-अधिक सुखी और सम्पन्न हो सकें?

उत्तर है कि हम दीर्घायु के संकल्प का विकास करना सीखें।

दीर्घायु का संकल्प इतना प्रबल होता है कि उसकी रक्षा के सम्बन्ध में हमारे निश्चिन्त रहने की आशंका है। परन्तु हम देख चुके हैं कि इस बहुमूल्य जीवन-शक्ति को अवरुद्ध करने के लिए हमारे भीतर घातक शक्तियाँ भी हैं। इन शक्तियों के विरुद्ध जीवन-शक्ति की जागरूक रक्षा न करने से यह क्षीण होकर नष्ट हो सकती है, तभी तो हम देखते हैं लोगों को समय के पहले मरते, अपाहिज जीवन व्यतीत करते या आत्म-हत्या करते।

दीर्घायु का संकल्प कई शक्तियों के समन्वय से प्राप्त होता है। संचरणशील हिमशिला का आठवाँ भाग ही जल के ऊपर दिखाई देता है। इसी प्रकार दीर्घायु की इच्छा-शक्ति का भी अधिकांश हमारी चैतन्यता के अन्तस्तल में छिपा रहता है। अनजाने ही हम उसे निर्बल करके नष्ट कर सकते हैं। परन्तु उसे हम सशक्त कर सकते हैं, सींचकर उसका विकास भी कर सकते हैं—और यह सब अपनी चैतन्यता के सदुपयोग से।

हमारे जीवन में भारी मुसीबतें आती ही हैं। पहली आवश्यकता यह है कि हम अपने मानसिक स्वास्थ्य की यथाशक्ति रक्षा करते हुए ही इन मुसीबतों को पार करें। परेशानियों के जमाने में हमें प्रतिदिन कुछ ऐसा समय निकाल लेना चाहिए जिसमें हम सुचित्त और शान्त रह सकें। इस उद्देश्य से जो मार्ग आम तौर से चुने जाते हैं उनमें मन को शान्ति नहीं मिलती, केवल उसके प्रभाव में हम अपनी चिंताओं को कुछ भूल जाते हैं। पुरुष मदिरापान करते हैं, घुड़दौड़ या जुआ खेलते हैं, या रात भर ताश खेलते रहते हैं; स्त्रियाँ बाजार चली जाती हैं—दुकानों-दुकानों भाव-ताव करने। परन्तु ये मनोरंजन प्रतिक्रिया के रूप में अपनी अलग ही व्याधियों को जन्म देते हैं। क्या हम सच्चे हृदय से कह सकते हैं कि मनोरंजनों से हमें वह ताजगी मिलती है जिसे लेकर हम चिन्तायुक्त परिस्थिति का बेहतर सामना करने योग्य हों?

सही मार्ग के सुझाव इस प्रकार हैं। जब चिन्ता का दबाव बढ़े तो हवाखोरी के लिए निकल जाओ, ठंडा जल पिओ, किसी छोटे बच्चे के साथ खेलने लगो, या घर के किसी काम में लग जाओ। यदि शरद् हो और धूप अच्छी लगती हो तो बाहर निकलकर कुछ देर तक धूप खाओ या अकेले टहलने निकल जाओ। यदि घर के बाहर जाना उचित न जान पड़े तो खिड़की से झाँकना ही प्रारम्भ कर दो। चिन्ताएँ तो घर के भीतर ही हैं। बाहर सभी अपनी-अपनी धुन में मस्त दौड़ते, चलते, बातें करते दिखाई देंगे। विशाल विश्व की पृष्ठभूमि में तुम्हें अपनी चिन्ताओं की न्यूनता समझ में आने लगेगी।

दोपहर के भोजन के समय दैनिक चिंताओं से मुक्त होने का अवसर मिलता है। परन्तु जिस प्रकार आम तौर से यह समय बिताया जाता है उससे चिन्ता-मुक्ति नहीं होती। एक महाशय को भोजन के पश्चात् बदहजमी की शिकायत रहने लगी, यद्यपि वह भोजन के पश्चात् कुछ दूर चलकर ही काम के लिए अपनी मेज पर बैठते थे। इनकी आदत झुककर चलने की पड़ गई थी, मानो संसार भर का बोझ इन पर ही लदा हो। उनका चिन्तित मुख भी पृथ्वी को ही देखता रहता था।

मैंने इनसे कहा, "आप पैदल तो दफ्तर जाते ही हैं, कितने कबूतरों को आप न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू में उड़ते देखते हैं, इसकी सूचना मुझे देते रहिये।"

मेरी बात सुनकर पहले तो वह चकराये, परन्तु तुरन्त ही संकेत उनकी समझ में आ गया। वह प्रयत्न करने के लिए राजी हो गये।

मैंने उनको छः वर्ष तक नहीं देखा। फिर एक छोटी-सी तकलीफ लेकर वह मेरे पास आये और प्रसन्नतापूर्वक सूचना दी, "मैं कबूतरों को नित्य गिनता रहता हूँ।"

शरीर और मन को मनोरंजन की भी भूख लगती है। इस भूख की अवहेलना होने पर दीर्घायु का संकल्प डगमगा जाता है। यदि चिंता के वातावरण में हम सोते नहीं, भोजन में संयम नहीं रखते, काम के

अत्यधिक दबाव और थकान के लक्षणों की परवाह नहीं करते और अपने को निर्बल होने देते हैं, तो फिर भारी मुसीबत को हम निमन्त्रण ही देते हैं अपनी घातक प्रवृत्तियों की सहायता ही करते हैं।

आत्मघात का सबसे अधिक चिन्तित करनेवाला रूप यह है कि हम उसके दबाव से जितना भी मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं हमें उतनी ही नई और हानिकारक भूखें लगती हैं—एक प्याला मदिरा और हो, एक सिगरेट और पी लें, चाकलेट कुछ और खा लें, नींद की एक और गोली ले लें। परन्तु यदि हम भली भाँति समझ जायें कि मदिरा, सिगरेट या नींद की गोली से समस्या हल नहीं होती, केवल अस्थायी भुलावा ही मिलता है, तभी स्वरक्षा का सही मार्ग मिलता है। एक बार भी आन्तरिक भावनाओं का सही विश्लेषण हो सके, तो आत्मघाती इच्छाओं की तृप्ति के बौद्धिक मार्ग निकाले जा सकते हैं। चिंता और श्रम के वातावरण में दीर्घायु के संकल्प को समर्थ और सशक्त करने का यही अर्थ है।

● ● ●

परन्तु इसके आगे हमारे सामने जीवन-क्रम की एक दूरदर्शी योजना भी होनी चाहिए। यह है दीर्घायु के दृढ़ निश्चय का सब उचित ढंगों से विकास करना जिससे हम अपना जीवन अधिक-से-अधिक सम्पन्न और सुखी बना सकें।

मान लो, बहुत से अन्य लोगों की भाँति, तुम्हारे हृदय में संरक्षित जीवन व्यतीत करने की आन्तरिक कामना है। परन्तु तुम्हें यही लोग नापसन्द हैं जिनसे तुम स्नेह और संरक्षण की आशा करते हो, क्योंकि तुम अपने में आश्रित रहने की कामना का अस्तित्व बुरा समझते हो। मान लो तुम अपने व्यक्तित्व की इस कमजोरी को स्वीकार कर लेते हो, तो तुम्हें स्नेह की आवश्यकता है। इसे चाहते क्यों हो? माँगने पर स्नेह मिलना तभी निश्चित है जब स्वयं स्नेह का दान करो।

स्नेह-दान सीखना भी किसी नई कला को सीखने के समान है। पहले हम घबराते हैं, कदाचित् डरते भी हैं, वर्षों से बनी आदत को एक ही संकेत से, कभी-कभी के परामर्श से, नहीं बदल सकते। परन्तु कृतज्ञता की आशा किये बिना ही निस्संकोच स्नेह-दान से बदले में स्नेह मिल जायेगा। एक बात पर विश्वास रखो—ज्यों ही तुम स्नेह की आवश्यकता को पहचानकर स्वीकार करते हो वैसे ही तुम स्वतन्त्रता के मार्ग पर पहुँच जाते हो। और जब तुम चिन्तामुक्त हो जाओगे, तो आँतों में घाव तो होगा ही नहीं।

जिस प्रकार हम शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं उसी प्रकार हम अपने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करते रहें और अपनी मानवीय शक्तियों का विकास करते रहें तो बीमारी और असामयिक मृत्यु से हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। यही हमारी दीर्घायु के संकल्प के आधार हैं। यदि हम जीवन के लिए प्रयत्न करते रहते हैं तो हमें मृत्यु से भय-भीत नहीं होना चाहिए।

हमें उस माता की भाँति न बन जाना चाहिए जो अपने बच्चों के जीवन में इतनी लीन हो जाती है कि जब बच्चों को उसकी जरूरत नहीं रहती, तो उसके पास कोई व्यसन नहीं रह जाता; या ऐसे पुरुष की भाँति जो अपनी नौकरी में ही व्यस्त रहता है और सेवामुक्त होने पर जीवन के उद्देश्य से अपने को बिलकुल हीन पाता है। यदि हम अपनी शक्तियों का सर्वांगीण विकास करते रहें; अपने को केवल मातृत्व, पितृत्व या वैतनिक सेवा के दायित्वों के भीतर ही सीमित न रखें, तो हमारे सामने जीवन के उद्देश्य तब भी बने रहेंगे जब हम वैतनिक सेवा और मातृत्व या पितृत्व के दायित्व से मुक्त हो जायेंगे।

हमारी वर्षगाँठें युवावस्था की अवधि को पीछे धकेलती जाती हैं, तो दीर्घायु के संकल्प को भी क्षीण होते हुए शरीर से चुनौती मिलती जाती है। परन्तु क्या शरीर क्षीण होता है? या हमारी आदतें, हमारी विचारशैलियाँ, पतनशील होती हैं?

वृद्धावस्था के भौतिक लक्षणों के सम्बन्ध में शरीर-विज्ञान-वेत्ता रबनर ने बीस वर्ष हुए एक महत्त्वपूर्ण बात कही थी। रबनर को पता लगा कि आदमी आम तौर से अपनी वृद्धावस्था में ही पहुँचकर नहीं बूढ़ा होने लगता। शारीरिक बुढ़ापे के प्रथम लक्षण वयस्क जीवन के प्रारम्भ ही में प्रत्यक्ष होने लगते हैं, जब पढ़ाई समाप्त करके व्यक्ति अपनी पसन्द के व्यवसाय में लग जाता है।

रबनर का कहना है कि कम अवस्था से ही शारीरिक बुढ़ापे के लक्षण तभी दिखने लगते हैं जब व्यक्ति का मानसिक दृष्टि-क्षेत्र संकुचित हो जाता है, वह अपने को रोजी के धन्धे के भीतर ही सीमित कर लेता है और अपने मानसिक विकास की ओर से बिलकुल लापरवाह हो जाता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक ओलिवर वेंडल होम्स का कहना था कि लकड़ी के समान विद्या को भी तभी काम में लाना चाहिए जब वह पुरानी हो जाये, उसमें अनुभव की पुष्टता आ जाये। परन्तु डॉ० होम्स का यह कदापि तात्पर्य न था कि उसे कभी काम में लाया ही न जाये। जब तक विद्या अनुभव के संयोग से परिपक्व हो और बुद्धिमानी में परिवर्तित हो जाये, तब तक अधिकांश लोग सीखना और उसे काम में लाना बन्द कर देते हैं। अधिकांश वयस्कों का जीवन, विद्या से नहीं, पुरानी आदतों से ही प्रेरित रहता है।

पहाड़ों पर चढ़ने का व्यसन कठिन है, खतरनाक है, इसलिए वह नौजवानों के लिए ही है। परन्तु जो पुरुष पहाड़ों पर चढ़ता रहता है, वह वृद्धावस्था तक भी इस व्यसन से रस लेता रहता है, ६०-६५ के बहुत से लोग पहाड़ की चढ़ाई का आनन्द लेते रहते हैं।

जिन मांस-पेशियों से हम काम लेते रहते हैं वे बहुत पुरानी होकर ही बूढ़ी होती हैं, परन्तु मस्तिष्क से काम लिया जाता रहे तो उसका बूढ़ा होना कभी भी जरूरी नहीं। इस विचार से ज्ञान और आनन्द का मार्ग अवरुद्ध होता है कि २०-२५ वर्ष की अवस्था तक पहुँचने पर

सीखने की शक्ति समाप्त हो जाती है, यह विचार आत्मघाती भी है, और बुढ़ापे को निमन्त्रित ही करता है।

जब हम सीखना बन्द कर देते हैं, जब हम नई बातों में दिलचस्पी लेना बन्द कर देते हैं, तो हम बूढ़े होने लगते हैं।

जब हम अपने शरीर से काम लेना बन्द कर देते हैं, तो भी हम बूढ़े होने लगते हैं। शरीर-विज्ञान के अनुसार कोई ऐसी अवस्था निश्चित नहीं है जब हमें क्रियाशीलता का अन्त कर देना चाहिए। इसलिए कोई ऐसी अवस्था नहीं जब हमारा अपने को बूढ़े समझना जरूरी हो।

जिन कलात्मक व्यसनों और हुनरों को हम वयस्क होने पर लापरवाही से त्याग देते हैं, वही जीवन-मार्ग के अन्धकारमय भाग में हमें संबल देने योग्य हो सकते। यदि हम इन्हें उस भविष्य के लिए पड़ा रहने दें जब हमें इनमें लगने की फुरसत हो, तो समय के पहले ही हम बुढ़ापे को निमन्त्रित करेंगे। जब हम बड़ी अवस्था तक पहुँचते हैं, जब जीवन के कठिनतम संघर्ष समाप्त हो जाते हैं और अपने परिश्रम के फल भोगने के लिए हमें फुरसत मिलती है, तो हो सकता है कि भोगने के लिए कोई फल ही न रह जायें। हमने तो इन्हें बहुत पहले से मुरझा जाने दिया है। जीवन-अवधि बढ़ाने का यही अर्थ होता है कि हम अधिक जीवित नहीं रहते, अधिक देर से मरते ही हैं।

डॉ० हैरी बेंजामिन ने 'अमेरिकन मेडिसिन' नामक पत्रिका में ठीक ही कहा है कि जीवन में वर्ष जोड़ने की नहीं, वर्षों में जीवन लाने की ही समस्या है।

प्रतिष्ठा और बुद्धिमानी बुढ़ापे के ही सौभाग्य में है। कुछ लोग ऊँची अवस्था पाकर भी सठियाते नहीं, जीवन के अन्तिम दिवस तक वे अपनी प्रतिष्ठा और बुद्धिमानी की रक्षा करने में सफल होते हैं। क्या कारण है? आश्चर्य तो और भी होता है जब अपने "बुढ़ापे के सौन्दर्य" में ये अपनी शारीरिक शक्तियाँ भी सुरक्षित रख पाते हैं। वे देख और सुन तो लेते ही हैं, उनके मस्तिष्क सहिष्णु ही नहीं, दयालु

ग्रौर जागरूक भी बने रहते हैं। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, इसीलिए स्मरणीय भी होते हैं।

हममें बहुतेरे किसी ऐसे ही वयोवृद्ध सम्बन्धी या पारिवारिक हितैषी के स्वभाव की याद करके कृतकृत्य होते हैं, ऐसे महापुरुषों का आशीर्वाद पाकर हम कृतज्ञ होते हैं, यद्यपि हमारी समझ में नहीं आता कि उनके इन गुणों का क्या आधार था।

कारण बिलकुल समझ में आता है। मेरी धारणा है कि वही नर-नारी सुन्दरतापूर्वक बुढ़ापे तक पहुँचते हैं जिन्होंने मानसिक परिपक्वता प्राप्त कर ली है। हो सकता है कि ऐसे व्यक्ति को जन्म से ही अच्छी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ मिली हों या उसका लालन-पालन अच्छे वातावरण में हुआ हो। यह भी संभव है कि जन्म और वातावरण की मुसीबतों या जवानी की भीषण कठिनाइयों पर उसने अपने ही उद्योग से विजय प्राप्त की हो। यदि हमें इनके जीवन-चरित्र का पूरा विवरण मालूम हो जाये तो मुझे विश्वास है कि हमें उनकी उस मानसिक परिपक्वता के आधार का भी पता लग जायेगा जिसने उनके बुढापे को दिव्यता प्रदान की है।

मेरी धारणा है कि प्रतिष्ठा और बुद्धि सहित बूढ़े होने के लिए हमें पहले अपना विकास करना चाहिए। हमें उन निर्बलताओं से मुक्त होना चाहिए जो बचपन से हमारे साथ रही हैं। उन्हें छिपाने से या यह आशा करने से कि समय पाकर ये आप-ही-आप दूर हो जायेंगी, काम न चलेगा। इच्छा-शक्ति द्वारा हमें जीवन के सिद्धान्तों के अनुकूल बनकर मानसिक परिपक्वता प्राप्त करनी होगी।

दीर्घायु के लिए—उससे पूरा आनन्द लेने के लिए भी—हमें उन शक्तियों को समझना पड़ेगा, उन पर नियन्त्रण करना पड़ेगा, जो आयु की अवधि घटाती हैं। कोई भी अवस्था हो, दीर्घायु के संकल्प का विकास करने के लिए समय निकालना आवश्यक है।

....बच्चों से गोदी भरी रहे
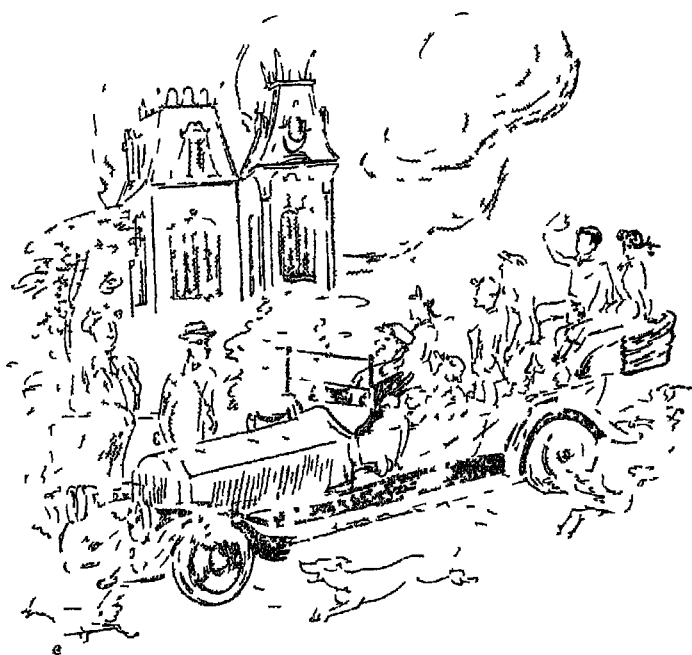
(फ्रैंक बी० गिलब्रेथ और अर्नेस्टीन गिलब्रेथ केरी की पुस्तक 'चीपर बाई द डज़न' का सार)

गिलब्रेथ परिवार में बारह बच्चे थे—छः लड़के और छः लड़कियाँ। बच्चों के पिता को समय का पूरा सदुपयोग करने और हर काम सलीके से करने की धुन थी और उनका विश्वास था कि इतने बड़े परिवार का संगठन भी एक बड़े कारखाने के ढंग पर किया जा सकता है। इन्हीं बारह बच्चों में से एक भाई और एक बहन ने इस पुस्तक में अपने इस रोचक परिवार का चित्रण किया है।

. . . बच्चों से गोदी भरी रहे

पिताजी लम्बे थे, उनका सिर बड़ा, जबड़े भारी और गरदन मोटी थी। वह दुबले नहीं माने जा सकते थे, क्योंकि तौल में वह ढाई मन से कुछ अधिक ही थे। परन्तु उन्हें अपनी सफलता पर, अपनी पत्नी पर, अपने परिवार पर, अपनी व्यावसायिक योग्यता पर, पूर्ण आत्म-संतोष रहता था।

पिताजी को असीम स्वाभिमान प्राप्त था। जितनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए वह प्रस्तुत होते थे, उसके सफल निर्वाह की भी उनमें सन्तुलित क्षमता थी। जर्मनी के ज़ाइस या अमरीका के पियर्स-ऐरो जैसे विशाल कारखानों में पहुँचकर भी यह घोषणा करने का दम रखते थे कि वह २५ प्रतिशत उत्पादन बढ़ा सकते हैं। जो-कुछ कहते थे, उसे कर भी दिखाते थे।

उनकी सन्तानों की—हम भाई-बहनों की—संख्या एक दर्जन तक क्यों पहुँची, इसका एक कारण था हमारे पिताजी का यह विश्वास कि जो-कुछ वह अपनी पत्नी के सक्रिय सहयोग से करेंगे उसमें दोनों अवश्य सफल होंगे।

पिताजी दूसरों को जो उपदेश देते थे उस पर स्वयं भी हमेशा अमल करते थे और यह बता सकना असम्भव था कि उनका कम्पनी का वैज्ञानिक व्यवस्था का काम कहाँ पर समाप्त होता था और उनका पारिवारिक जीवन कहाँ से आरम्भ होता था। घर हो या बाहर, वह

कार्य-कुशलता के विशेषज्ञ थे। वह अपनी वास्कट के बटन नीचे से ऊपर लगाते, ऊपर से नीचे नहीं। क्योंकि नीचे से ऊपर बटन लगाने में उन्हें तीन ही सेकण्ड लगते थे जबकि ऊपर से नीचे बटन लगाने में उन्हें सात सेकण्ड लगते थे। वह हजामत बनाने बैठते तो दाढ़ी में साबुन दो ब्रशों से लगाते क्योंकि ऐसा करने में वह हजामत में १७ सेकण्ड की बचत कर लेते थे। न्यूजर्सी राज्य के मांटक्लेयर नगर में हमारा घर वैज्ञानिक व्यवस्था का एक विद्यालय जैसा था जहाँ माता-पिता के सहयोग से जो कुछ हम करते थे उससे हम अपने समय का वैज्ञानिक ढंग से सदुपयोग करते थे। समय और शक्ति की बरबादी की गुंजाइश वहाँ न थी।

जब हम बच्चे घर के बरतन साफ करते तो पिताजी हमारी हरकतों के चलचित्र उतारते, यह अध्ययन करने के लिए कि किस प्रकार हम बरतन धोयें जिससे कम-से-कम समय में, कम-से-कम परिश्रम करके, हम अच्छे-से-अच्छा काम कर सकें। उन्होंने हमारे स्नान-घरों में रोज के काम के चार्ट लगा दिये थे जिनमें अपने दाँत साफ करने पर, नहाने पर, बाल सँवरने पर, बिस्तर बिछाने पर और घर की पढ़ाई पूरी करने पर रोज हर बच्चे को सुबह और रात को उस काम के खाने में हस्ताक्षर करना पड़ते थे। यह एक प्रकार का सैनिक अनुशासन अवश्य था, परन्तु एक दर्जन बच्चों के साथ इस प्रकार का अनुशासन आवश्यक भी था, नहीं तो घर की सूरत पागलखाने जैसी हो जाती।

कुछ लोग कहा करते थे कि पिताजी के बच्चे इतने अधिक थे कि उन्हें सबका पूरा पता न रहता था। पिताजी स्वयं उस समय की एक घटना सुनाया करते थे जब एक बार माताजी उन्हें घर की रखवाली के लिए छोड़ गई थीं। जब वह लौटकर आईं तो उन्होंने सबकी खैरियत पूछी।

पिताजी ने उत्तर दिया, "किसी से कोई तकलीफ नहीं हुई, केवल

एक के अतिरिक्त जो उधर खड़ा है। परन्तु चपत खाकर वह भी ठीक रास्ते पर आ गया है।"

माताजी किसी भी दुर्घटना में अपना धैर्य नहीं खोती थीं।

उन्होंने कहा, "यह हमारा बच्चा नहीं है, यह तो पड़ोसी का है।"

कभी-कभी हमारा हुल्लड़ सीमा से बाहर हो जाता। एक बार हम सब अपनी ननिहाल पहुँचे। नाना मोलर का आदेश हुआ, "तुम लोग कोशिश करके केवल दो घण्टे के लिए अपना शोर इतना कम कर दो कि एक हल्की गरज जैसा ही जान पड़े। तुम्हारी नानी के लिए आराम करना सचमुच बहुत जरूरी है।"

पिताजी काम लेने में सख्त अवश्य थे, परन्तु उन्हें बच्चों को काम में लगाये रखना आता था। बाल-बुद्धि का आदर करना भी वह जानते थे। उनकी धारणा थी कि अधिकांश वयस्क लोग विद्यालय छोड़ते ही, या उसके पहले से ही, सोचना बन्द कर देते हैं। पिताजी का आग्रह था कि बच्चे शीघ्र ही प्रभावित होते हैं और उनकी जिज्ञासा बहुत तीव्र रहती है। यदि हम उन्हें छोटी ही अवस्था से अपने अनुशासन में ला सकें तो उनके प्रशिक्षण का हमें असीम क्षेत्र मिल जाये।

बच्चों के प्रेमी होने ही के कारण उन्हें अच्छी संख्या में संतानोत्पादन की लालसा रही। बारह संतानें पाकर भी वह पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं हुए। कभी-कभी हम सबको देखकर वह माताजी से कहते :

"लिली, कोई चिन्ता की बात नहीं। तुमने यथाशक्ति अपना काम किया।"

जब कभी पिताजी कहीं बाहर से लौटकर मोड़ पर पहुँचते तो परिवार के सब सदस्यों को इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाते। आदेश था कि सीटी सुनते ही सब काम छोड़कर दौड़ते हुए इकट्ठा हो जायें, नहीं तो कठिन दण्ड के भागी होंगे। सीटी सुनते ही गिलब्रेथ-परिवार के सब बच्चे घर और सहन के कोने-कोने से दौड़ते आते। वह सदैव अपने पास एक घड़ी रखते थे जो किसी भी समय चलाई और रोकी जाकर

मिनट और सेकंड बता सकती थी। कभी-कभी वह इस घड़ी को यह परीक्षा करने के लिए हाथ में ले लेते कि कितने शीघ्र हम सब इकट्ठा हो सकते थे। छः सेकंड हमारा सबसे कम समय था।

पिताजी ऐसे मौकों पर भी बच्चों को इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाते जब उन्हें यह पता लगाना होता कि किसने उनका उस्तरा छुआ है या मेज़ पर उनकी स्याही गिराई है। जब काम बाँटना होता या बच्चों को इधर-उधर दौड़ाना होता, तो भी वह सीटी द्वारा हम सबको जमा करते। परन्तु आम तौर से कोई इनाम देने के लिए ही वह सीटी बजाते और सबसे बढ़िया भेंट उसको ही मिलती जो उनके सामने सबसे पहले पहुँच जाता। हमें पहले से कभी भी सूचना न रहती कि अच्छी खबर मिलेगी कि बुरी, पिटेंगे कि इनाम पायेंगे।

कभी- कभी हम सदर दरवाज़े पर इकट्ठा होते तो वह कड़े शब्दों की बौछार से आरम्भ करते।

गुर्राते हुए वह बोलते, "देखूँ तो तुम्हारे नाखून। साफ हैं ? दाँतों से इन्हें कुतरते रहे हो ? नाखून काटने की जरूरत है ?"

इसके पश्चात् लड़कियों को चमड़े के केस में रखा हुआ नाखूनों की सफ़ाई का पूरा सामान दिया जाता और लड़कों को चाकू।

या वह गम्भीर मुद्रा में हम सबसे हाथ मिलाते और हाथ के हाथ से हटने पर हमारे हाथ में एक-एक चाकलेट आ जाती। या वह पेंसिल के विषय में पूछते और एक दर्जन ऐसी पेंसिलें हम सब को बराबर से बाँट देते जो चाकू लगाये बिना काम देती रहती हैं।

और जब हम उनके गले में बाँहें डालकर उन्हें देर से आने का उलाहना देते, तो उनका हृदय भर आता और वह कोई उत्तर देने के बजाय हमारे बाल बिखरा देते और हमारे चूतड़ों पर एक-एक थप मार देते।

● ● ●

जब पिताजी ने मांटक्लेयर वाला मकान मोल लिया तो उन्होंने बताया कि वह अकिंचन बस्ती में एक झोपड़ी जैसा है। उन दिनों हम प्राविडेंस नामक कस्बे में रहते थे। जब मोटर पर हम प्राविडेंस से मांटक्लेयर के लिए रवाना हुए तो दीमकों की हर गुमटी वह हमें दिखाते गये।

किसी टुटहे मकान को दिखाकर वह कहते, "देखो, ऐसा ही है हमारा नया मकान। बस उसमें टूटी खिड़कियाँ कुछ ज्यादा हैं और सहन भी कुछ छोटा ही है। इतने बड़े परिवार के पालन-पोषण में ही मेरी सब आय समाप्त हो जाती है। ज्यादा हैसियत नहीं। ऐसे ही घर में निर्वाह करना होगा।"

जब मांटक्लेयर पहुँचे तो वह हमें उस कस्बे के सबसे रद्दी भाग में ले गये और एक खंडहर के सामने गाड़ी रोक दी जिसमें किसी फकीर का भी गुजर न होता।

माताजी ने आशा की मुद्रा में कहा, "मज़ाक कर रहे हो न ?"

"खराबी क्या है ? क्या तुम्हें पसन्द नहीं ?"

अर्नेस्टीन बोली, "यह बहुत ही गन्दा घर है। मैं तो इस घर के पास भी न फटकूँगी।"

मर्था बोली, "मैं इसकी तरफ आँख उठाकर भी न देखूँ।"

लिल तो सिसकने ही लगी।

माताजी प्रसन्नता की मुद्रा में बोलीं, "यदि पुताई हो जाये और जहाँ छेद हैं वहाँ तख्ते लगा दिये जायें, तो बुरा न रहेगा।"

पिताजी हँसकर जेब में अपनी नोटबुक टटोलने लगे।

यकायक वह चौंककर बोले, "बच्चो, ज़रा ठहरो। गलत पते पर आ गया। चलो सब लोग मोटर पर बैठो। मैं भी सोच रहा था कि जब मैंने पिछली बार इस घर को देखा था, तब से अब यह अधिक उजड़ा क्यों दिखाई देता है।"

इस बार हमें वह ईगिल राक वे नामक सड़क के ६८वें मकान के सामने ले गये। मकान पुराना अवश्य था, परन्तु ताजमहल जैसा सुन्दर

लगता था—१४ कमरे और दुमंजिला कोठा; बाग में एक बारहदरी, मुर्गीखाना, अंगूर की बेलों के कुंज, गुलाब की झाड़ियाँ और दो दर्जन फलों के पेड़ कोठी के सहन में। हम समझे कि पिताजी फिर हमें चिढ़ाने की धुन में हैं।

वह बोले, "यही मकान तुम्हारे लिए है। मैंने पहले तुम्हें इसका सही विवरण नहीं दिया और दूसरी जगह तुम्हें इसीलिए ले गया कि तुम इसे देखकर प्रसन्न हो जाओ, और नुक्ताचीनी न करने लगो।"

● ● ●

मांटक्लेयर के घर में पहुँचने के एक वर्ष पहले ही पिताजी ने अपनी पहली मोटरकार खरीद ली थी। पेचीदा मशीनों के काम करने के ढंग में उन्नति के सुझाव देकर ही यह अपनी रोजी कमाते थे, परन्तु मोटर-कार की मशीनरी को समझने की कोशिश उन्होंने कभी नहीं की। जब हैंडिल लगाते तो वह झटका मारता, जब मशीन के भीतरी भाग की जाँच करते तो वह उनके मुँह पर मोबिल-आयल का छिड़काव करती, जब गियर बदलते तो वह भयंकर गर्जना करती। पियर्स-ऐरो कारखाने की बनी गाड़ी में दो रबड़ के भोंपू लगे थे और एक बिजली का। पिताजी जब किसी से आगे गाड़ी निकलना चाहते हों सभी को एक साथ बजा देते।

सच तो यह है कि पिताजी को मोटर चलाना आता ही न था। परन्तु वह मोटर को तेजी से ही दौड़ाते थे। उनकी दौड़ से हम सब तो भयभीत होते ही थे, परन्तु माताजी विशेष रूप से भयभीत हो जातीं थीं।

दाँत भींचकर धीमे स्वर में वह पिताजी से कहतीं, "फ्रैंक, इतना तेज न चलाओ।" परन्तु पिताजी सुना अनसुना कर देते।

स्वरक्षा के लिए हमें कई व्यवस्थाएँ चालू करनी पड़ीं।

हम लोग अपने में से किसी को बाईं ओर की सड़कों से आनेवाली

मोटरों पर नजर रखने के लिए तैनात करते। दूसरे को इसी प्रकार दाई ओर की चौकसी सुपुर्द करते। और तीसरा पीछे की सीट में बैठकर शीशे की खिड़की से पीछे से आनेवाली मोटरों की खबर रखता।

माताजी की बगल में और सामने की सीट पर बैठे बच्चों का काम था कि जब हमारी कार को सामने वाली कार के आगे निकलना हो तो वे पिताजी को सूचना दें।

चौकसी करनेवाला चिल्लाता, "आप आगे बढ़ा सकते हैं।"

पिताजी चिल्लाते, "अपना हाथ निकालकर संकेत करो।"

आदेश सुनते ही माताजी और गोद के बच्चे को छोड़कर हम सब अपने ग्यारह हाथ मोटर के बाहर दोनों ओर निकाल देते—सामने की सीट से, पीछे की सीट से और बीच में पड़ी बच्चों की कुर्सियों से। हम कहीं चूकते नहीं थे, तो भी पिताजी की कार मुण्डेरों से रगड़ती हुई, मुर्गियों को कुचलती हुई और पौधों को गिराती हुई आगे बढ़ती।

कार का हुड खुलने पर ही हम सब उसमें समा पाते थे। इस प्रकार जब हमारी कार किसी अपरिचित गाँव से होकर गुजरती तो वहाँ के निवासियों के लिए हम एक तमाशे का दृश्य बन जाते। राह-गीर बगल की गलियों में इकट्ठा हो जाते और बच्चे कन्धों पर चढ़कर हमारा तमाशा देखने का आग्रह करते।

यदि कोई पिताजी से हँसी में पूछता, "भाई साहब, ये गाजरें आपने कैसे उगाईं, जरा हमें भी तो तरकीब बताइये।"

तो पिताजी उससे ऊँचे स्वर में कहते, "ये! ये तो थोड़े ही हैं। तुमने वे तो अभी देखे ही नहीं हैं जिन्हें मैं घर पर छोड़ आया हूँ।"

"साहब, इन सब बच्चों को आप खिलाते-पिलाते कैसे हैं?"

पिताजी एक क्षण सोचते। फिर पीछे की ओर मुड़कर इस प्रकार कहते मानो यह बात उनकी समझ में अभी-अभी ही आई हो और वह उसे सभी लोगों को सुनना चाहते हों:

"आप को मालूम होना चाहिए कि दर्जन के हिसाब से ये हमें सस्ते पड़ते हैं।"

इतना सुनते ही गोष्ठी के सब सदस्य हँस पड़ते और पिताजी का यही उद्देश्य होता था। जब चुंगी के फाटक पर पहुँचते, सिनेमा देखने जाते या गाड़ी अथवा नाव के टिकट लेते तो दर्जन का भाव-ताव अवश्य करते।

चुंगी के फाटक पर तैनात आदमी के बारे में अगर वह यह भाँप लेते कि वह आयलैंड का है, तो उससे कहते, "क्या मेरे आइरिशमेन दर्जन के हिसाब से सस्ते पड़ते हैं?"

"आयलैंड के अलावा और कहाँ के हो सकते हैं। ईश्वर तुम्हारा भला करें। आयलैंण्डवाले ही इतने लाल बालों वाले बच्चे पैदा करके पाल सकते हैं। खुशी से आगे बढ़िये।"

आगे बढ़ते हुए माताजी पिताजी पर छींटा कसतीं, "यदि यह व्यक्ति जान जाता कि तुम स्कॉटलैंण्ड के हो तो वह डंडा लेकर तुम्हारी कंजूस खोपड़ी पर चिपका देता।"

नित्य-कर्म के लिए माता-पिता पेट्रोल पम्प के शौचालयों को गन्दा समझते थे। चूँकि पेट्रोल पम्प के शौचालय इस्तेमाल करने का कोई सवाल नहीं उठता था इसलिए जब कभी हम मोटर पर बाहर जाते तो हम सब शौच से निवृत्त होने के लिए जंगल की शरण लेते। पिताजी की मोटर की बेतहाशा दौड़ से या तो हम सहम जाते थे, अथवा हम १४ व्यक्तियों के शौच के समय एक-दूसरे से अलग थे। हर सूरत में हमें जहाँ भी कोई उपयुक्त कुंज दिखाई देता, वहीं हम रुक जाते।

पिताजी झल्ला कर कहते, "कोई पेड़ खोजने की इतनी चिन्ता तो कुत्ते भी नहीं करते।"

• • •

लड़कपन में पिताजी की आकांक्षा इमारत के इंजीनियर बनने की थी और उनकी विधवा माता चाहती थीं कि वह मसाचुसेट्स की इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नालोजी में भरती हो जायें। परन्तु हाई स्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने तक उनकी समझ में आया कि उनका परिवार इतनी ऊँची पढ़ाई का खर्च बरदाश्त न कर सकेगा। अतएव अपनी माता से परामर्श लिये बिना ही वह मेमार की सहायता के लिए बेलदारी करने लगे।

पिताजी ने जब निर्णय कर ही लिया तो हमारी दादी गिलब्रेथ ने भी उनका निर्णय स्वीकार किया। संयुक्त राज्य अमरीका के प्रसिद्ध प्रेसिडेंट लिंकन का जीवन लोहे की रेल की पटरियों की कटाई ही से प्रारम्भ हुआ था।

उनकी माता ने इतना अवश्य कहा, "परन्तु यदि तुम्हें बेलदार ही होना है तो भगवान् के लिए किसी अच्छे की बेलदारी करना।"

काम के पहले सप्ताह ही में पिताजी ने ईंटें बेहतर ढंग से और शीघ्र जोड़ने के इतने सुझाव दे डाले कि मिस्त्री ने उन्हें निकाल देने की बार-बार धमकी दी।

मिस्त्री ने उन्हें डाँटा, "तुम यहाँ काम सीखने आये थे तो ईश्वर के लिए हमें सिखाने का प्रयत्न न करो।"

ऐसी गोलमोल धमकियों से पिताजी कभी विचलित नहीं हुए। उनकी तो बस एक ही धुन थी कि काम करते समय हाथ किस तरह चलाये जायें कि समय सबसे कम लगे। अतएव वर्ष के भीतर ही वह एक ऐसा पाड़ बाँधने में सफल हुए जिसके सहारे वह जुड़ाई के काम में सबसे तेज माने जाने लगे। उनके पाड़ का सिद्धान्त यह था कि ईंट और गारा उस स्तर पर रहें जिस पर दीवार बन रही हो। अन्य मेमारों को ईंट और गारे के लिए झुकना पड़ता था।

मिस्त्री ने झिड़की दी, "तुम फुर्तीले नहीं हो, तुम इतने सुस्त हो कि ठीक से बैठ नहीं सकते।"

परन्तु मिस्त्री ने पिताजी के पाड़ के ढंग के सभी पाड़ बँधवाये और उन्हें सुझाव दिया कि अपने पाड़ का नमूना वह मेकैनिक्स इंस्टीच्यूट को भेज दें। थोड़े ही अरसे के भीतर मिस्त्री की सिफारिश से पिताजी अपने चुने हुए आदमियों के मिस्त्री बना दिये गए। काम में उन्होंने इतनी तेजी दिखाई कि वह सुपरिटेंडेंट नियुक्त हुए। और फिर स्वयं ठेकेदारी करने लगे। २७ वर्ष की अवस्था तक पहुँचने पर तीन नगरों में—न्यूयॉर्क, बोस्टन और लन्दन में—उनके दफ्तर खुल गये।

कैलिफोर्निया राज्य के ओकलैंड नामक नगर के एक सम्पन्न घराने में हमारी ननिहाल थी। उन्नीसवीं शती के अन्तिम दशक में संयुक्त राज्य अमरीका के सम्पन्न परिवारों की लड़कियाँ आवश्यक संरक्षण में योरप की सैर के लिए निकलती थीं। ऐसी ही एक सैर में मेरी माता की पिताजी से मुलाकात हो गई थी।

जब पिताजी कैलिफोर्निया गये और माताजी के घरवालों ने उन्हें परिवार से मिलने के लिए चाय पर बुलाया तो उस समय एक कारीगर बैठक में नया आतिशदान बना रहा था। पिताजी जब उस कमरे से होकर ले जाये गये तो कारीगर को काम करते देखकर रुक गये।

वार्तालाप के ढंग पर पिताजी ने प्रारम्भ किया, "ईंट जोड़ना भी एक रोचक काम है। मुझे यह सरल ही नहीं, अत्यन्त सरल जान पड़ता है। मालूम नहीं कारीगर क्यों कहते हैं कि यह कोई हुनर का काम है। मैं शर्त बदता हूँ कि कोई भी व्यक्ति यह काम कर सकता है।"

माताजी के पिता ने कहा, "गिलब्रेथ साहब, इधर आइये। हमारी चाय बरामदे में ही होगी।"

परन्तु पिताजी को चाय की चिन्ता न थी। न्यू इंगलैंड के निवासियों के खास लहजे में वह कहते गये, "काम ही क्या है—ईंट उठाओ, उस पर कुछ गारा चढ़ाओ और उसे आतिशदान पर रखते चलो।"

मेमार ने घूमकर पूरब से आये हुए इस हट्ट-कट्टे सजीले जवान को ऊपर से नीचे तक घूरा।

पिताजी ने उस व्यक्ति पर अपनी कृपादृष्टि डालते हुए कहा, "भले आदमी, तुम पर कोई लांछन की बात नहीं है।"

मेमार बिगड़कर बोला, "कहते हो काम सरल है, जरा हाथ लगाकर देखो तो।" और उसने अपनी कन्नी पिताजी के हाथ में बढ़ा दी।

पिताजी ऐसी चुनौती की प्रतीक्षा ही में थे। उन्होंने हंसकर कन्नी हाथ में ली। उन्होंने ईंट उठाई, हाथ में ठीक ढंग से रखी, कन्नी को चक्कर देकर उस पर गारा उन्होंने बिछाया, ईंट जगह पर रखी, फालतू गारा घसीट लिया; दूसरी ईंट उठाई, उसे हाथ में लिया और गारा उस पर बिछाने ही को थे कि मेमार ने आगे बढ़कर अपनी कन्नी उनसे वापस ले ली।

पिताजी की पीठ पर सस्नेह थपकी देकर वह बोला, "बस इतना ही काफी है, पुराने उस्ताद हो। पूरब के बाँके हो सकते हो, परन्तु तुमने जीवन-काल में हजारों ईंटें बिछाई हैं। तुम इस बात से इनकार भी करोगे तो नहीं मानूँगा।"

पिताजी ने अनमने भाव से एक उजले रूमाल से अपने हाथ साफ कर लिये और बोले, "भले आदमी, काम बिलकुल सरल है।"

हमने माताजी से पूछा, "इस पर आपके परिवार के सदस्यों ने पिताजी के बारे में क्या राय कायम की ?"

पिताजी इस समय अतीव प्रसन्न मुद्रा में थे। माताजी ने पिताजी की ओर कनखियों से देखते हुए कहा, "मेरी समझ में तो कभी कुछ आया नहीं, परन्तु मेरे घरवाले इन्हें देखकर बहुत खुश हुए। मेरे पिता ने कहा कि ईंटें जोड़कर इन्होंने कोई तमाशा नहीं दिखाया। तुम्हारे पिता ने इसी ढंग से उन सबको प्रत्यक्ष कर दिया कि अपने हाथ के परिश्रम से ही यह अपनी रोजी कमाते हैं।"

● ● ●

माता कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान लेकर स्नातक ही नहीं हुई थीं, सर्वोच्च नम्बर पाने पर उन्हें 'फाई बीटा काप्पा' की संयुक्त राज्य अमरीका की सर्वोच्च शैक्षिक उपाधि भी मिली थी। यों माताजी ने मनोवैज्ञानिक होकर और पिताजी ने कोई भी काम करते समय हाथों की क्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर आपस में निर्णय किया कि दोनों प्रबन्ध के मनोविज्ञान के नये क्षेत्र और बच्चों से भरे-पूरे परिवार के मनोवैज्ञानिक प्रबन्ध के पुराने क्षेत्र का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें। उनका विश्वास था कि जो सिद्धान्त कारखाने में सफल हो सकते हैं वही घर में भी कार्यान्वित हो सकते हैं। इसीलिए माता-पिता ने स्वामी-सेवक बोर्ड के ढंग पर एक परिवार-परिषद् का निर्माण किया।

हर रविवार को तीसरे पहर इस परिषद् की बैठक होती थी। कभी-कभी इसमें चीखने-चिल्लाने की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाती थी। परन्तु इस बैठक में अच्छे निर्णय भी होते थे। पारिवारिक खरीदारी समितियाँ नियमानुसार निर्वाचित होकर भोजन, वस्त्र और आराइश तथा खेल के सामान की खरीदारी का प्रबन्ध करती थीं। उपयोगिता समिति नल और बिजली के दुरुपयोग पर एक सेंट का जुर्माना लगाती थी। योजना समिति योजना के अनुसार काम की पूर्ति की देखभाल करती थी। जेब खर्च की मात्रा परिषद् से नियत होती थी और दण्ड तथा पुरस्कार देना भी परिषद् का ही काम था। खरीदारी समिति ने एक दुकान तय कर ली थी जहाँ वह बनयायन से बेसबाल के दस्ताने तक सभी वस्तुएँ थोक भाव पर खरीदती थी, एक दूसरी समिति फलों और तरकारियों के डब्बे सीधे कारखाने से बड़ी मात्रा में खरीदती थी।

परिषद् से ही काम की पूर्ति के ठेके नीलाम होते थे। एक बार लिल बहन आठ ही वर्ष की थी कि ४७ सेंट पर सहन के पिछले भाग में एक लम्बी ऊँची जाली को रंगने की बोली उसके नाम छूटी, क्योंकि

पारिश्रमिक की मात्रा उसकी ही सबसे कम थी। नियमानुसार उसे काम मिल गया।

मानाजी ने पिताजी से कहा, "लड़की इतनी छोटी है कि अकेले इतना भारी काम न कर सकेगी इसे अकेले यह काम न दो।"

पिताजी ने कहा, "हुश, उसे धन का मूल्य और वचन का पालन सीखना है, उसे अकेले ही काम करने दो।"

लिल को काम पूरा करने में १० दिन लगे। वह प्रतिदिन स्कूल के पश्चात् काम करती और शनिवार तथा रविवार को दिन भर काम में लगती। उसके हाथों में फफोले पड़ गये और कई रात वह इतनी थक गई कि उसे नींद नहीं आ सकी। पिताजी भी इतने चिंतित हुए कि वह भी नहीं सोये। परन्तु वह उसे अपने वचन का निर्वाह करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे।

जब लिल अपना काम पूरा कर चुकी तो पिताजी के सामने रोती हुई आई और बाली, "काम पूरा हो गया है। आशा है आप सन्तुष्ट हैं। अब मुझे अपने ४७ सेंट मिल सकते हैं?"

पिताजी ने रकम गिनी और बोले, "बेटी, रो मत। तुम अपने पिता को जो कुछ भी समझो, मैंने यह तुम्हारे भले ही के लिए ही किया। अपने तकिये के नीचे तुम्हें मेरे स्नेह का प्रतीक मिलेगा।"

तकिये के नीचे उसे स्केटों की एक सुन्दर जोड़ी मिली।

● ● ●

एक दिन पिताजी दो ग्रामोफोन और उनके साथ रिकार्डों के बंडल लिये घर पहुँचे। सदर सीढ़ी पर पहुँचते ही उन्होंने हमें इकट्ठा करने के लिए सीटी बजाई और हमने उन्हें सामान उतारने में सहायता दी।

बोले, "बच्चो, मैं तुम्हारे लिए बहुत बढ़िया तमाशे की चीज लाया हूँ। दो ग्रामोफोन हैं और इन पर लगाने के लिए ये सब प्यारे-से रिकार्ड हैं।"

"परन्तु हमारे पास, पिताजी, एक ग्रामोफोन तो है ही।"

"मैं जानता हूं, परन्तु वह ग्रामोफोन नीचे के कमरों के लिए ही है, अब उपर्ले खण्ड में दो ग्रामोफोन लगेंगे। कितना आनन्द रहेगा। एक ग्रामोफोन लड़कियों के स्नानगृह में लगेगा, दूसरा लड़कों के स्नानगृह में। नगर में हमारा ही ऐसा घर होगा जिसके प्रत्येक स्नानगृह में ग्रामोफोन बजा करे। और जब तुम नहा रहे होगे, या मंजन कर रहे होगे या किसी अन्य काम से स्नानगृह में होगे तब अपना ग्रामोफोन खोल दोगे।"

ऐन ने पूछा, "ये रिकार्ड कैसे हैं ?"

पिताजी ने कहा, "ये रिकार्ड बड़े रोचक हैं। इनमें तुम्हें फ्रान्सीसी और जर्मन भाषा के पाठ सुनने को मिलेंगे। इन पाठों को ध्यानपूर्वक सुनना आवश्यक नहीं है। केवल रिकार्डों को बोलने दो। सुनते-सुनते बहुत-कुछ सीख जाओगे।"

"सच !"

पिताजी ने अब कूटनीति और मनोविज्ञान का मार्ग छोड़ दिया और बोले :

"चुप रहो और सुनो। मैंने इस सामान पर १६० डालर खर्च किये हैं और तुम्हें इससे काम लेना है। यदि ये दोनों ग्रामोफोन प्रातः-काल तुम्हारे उठने के समय से नाश्ते के समय तक नहीं बजते रहेंगे, तो तुम्हें अपनी सफाई मेरे सामने पेश करनी होगी।"

थोड़े दिनों ही के भीतर हम कच्ची-पक्की फ्रान्सीसी और जर्मन भाषाएँ बोलने लगे। दस वर्ष तक हमारे मांटक्लेयर भवन के उपर्ले खण्ड पर ग्रामोफोन अपने पाठ हमें पढ़ाते रहे।

इन्हीं दिनों पिताजी रेमिंगटन टाइपराइटर कम्पनी के परामर्श-दाता नियुक्त हुए और काम करते समय शरीर के अंगों की क्रिया के आधार पर उन्होंने संसार का सबसे तेज टाइपिस्ट तैयार करने में सहायता दी।

पिताजी ने एक दिन कहा, "कोई भी व्यक्ति तेज टाइप करना सीख सकता है। मैं तो एक बच्चे को भी 'टच सिस्टम' से दो सप्ताह में टाइप करना सिखा सकता हूँ।"

दूसरे दिन वह एक नया टाइपराइटर ले आये और उसके साथ एक सुनहरा चाकू तथा इंगरसोल घड़ी भी। उन्होंने यह सामान खोलकर उसे खाने की मेज पर सजा दिया। सूचना दी कि दो सप्ताह में जो टाइप करने में सबसे तेज निकलेगा उसे टाइपराइटर इनाम में मिलेगा। अवस्था में छोटे-बड़े का खयाल करके अवधि और तेजी का मात्रा-भेद कर दिया जायेगा। इन आधारों पर चाकू और घड़ी का इनाम बँटेगा।

बिल ने पूछा, "डैडी, आप 'टच सिस्टम' से टाइप करना जानते हैं ?"

"मैं सिखाना ही जानता हूँ। दो सप्ताह में बच्चे तक को सिखा सकता हूँ। कहते हैं कि प्रसिद्ध गवैये कारूसी का संगीत-शिक्षक स्वयं नहीं गा सकता था। तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया ?"

बिल ने कहा, "मालूम तो होता है।"

पिताजी ने कागज पर टाइपराइटर के की-बोर्ड का नक्शा बना लिया था। टाइपराइटर छूने की अनुमति तब तक किसी को नहीं मिली, जब तक हमने सब अक्षरों को आगे-पीछे रट नहीं लिया और अक्षरों से उँगलियों का सम्बन्ध हमें याद नहीं हो गया। याद कराने के लिए हमारी उँगलियाँ रंगीन खड़िया से रंग दी गईं। छोटी उँगलियाँ नीली हो गईं, तर्जनियाँ लाल कर दी गईं और इसी प्रकार बाकी दो-दो उँगलियों को भी अलग अलग-अलग रंग मिले। यही रंग नक्शे के अक्षरों को भी मिल गये। दो दिन के भीतर रंग के अनुसार अपनी उँगलियाँ नक्शे के अक्षरों पर रखना हमने याद कर लिया। अर्नेस्टीन सबके आगे बढ़ गई और उसे टाइपराइटर पर बैठने का सबसे पहला मौका मिला। उसने बड़े आत्म-विश्वास से अपनी कुर्सी टाइपराइटर के

सामने लगा ली और हम सब बड़ी उत्सुकता से उसे घेरकर खड़े हो गये।

वह रुआँसी होकर बोली, "डैडी, यह उचित नहीं, आपने तो अक्षरों को सादी टोपियों से छिपा दिया है।"

सिखाने के लिए अब टाइपराइटर के अक्षरों पर सादी टोपी चढ़ाने का चलन हो गया है, परन्तु यह विचार पहली बार पिताजी के मस्तिष्क में आया था और उन्होंने रेमिंगटन कम्पनी को आर्डर देकर टोपियाँ बनवाई थीं।

पिताजी ने कहा, "तुम्हें देखने की आवश्यकता नहीं, केवल कल्पना कर लो कि टाइपराइटर का की-बोर्ड उसी प्रकार रँगा है जिस प्रकार नक्शा रँगा हुआ था और जैसे नक्शे पर उँगलियाँ तुम चलाती थीं वैसे ही यहाँ भी चलाओ।"

अर्न ने प्रारम्भ तो धीमा ही किया, परन्तु जब उंगलियाँ स्वभावत: एक 'की' से दूसरी 'की' पर कूदने लगीं, तो उसकी टाइपिंग की रफ्तार बढ़ने लगी। पिताजी एक हाथ में पेंसिल और दूसरे हाथ में नक्शा लिये उसके पीछे खड़े रहे। जब कभी वह भूल करती तो उसके सिर पर पेंसिल की नोक पड़ती।

"मारिये नहीं, डैडी, चोट लगती है।"

"चोट देना आवश्यक है। तुम्हारा सिर तुम्हारी उंगलियों को भूल करने से बचाये, यही आदेश मैं उसे देता रहता हूँ।"

दो सप्ताह समाप्त होते-होते छ: वर्ष से ऊपर के सभी बच्चे और माताजी 'टच सिस्टम' से टाइप करना भली प्रकार सीख गईं। पिताजी तो अर्नेस्टीन को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सम्मिलित करना चाहते थे, यह दिखाने के लिए कि एक छोटी लड़की टाइप करने में कितनी तेज है। परन्तु माताजी ने उनका प्रस्ताव बात-ही-बात में रद्द कर दिया।

माताजी ने कहा, "आपका यह विचार जरूरत से ज्यादा अच्छा है। अर्नेस्टीन के स्नायु उत्तेजित हैं और बच्चे अभी से ही काफी

घमण्डी हो गये हैं। प्रतियोगिता में भरती होना इनके लिए हानि-कारक हो सकता है।"

● ● ●

पिताजी के मतानुसार खाने में समय की बरबादी रोकना सम्भव नहीं था। यही धारणा उनकी नित्यकर्म तथा कपड़े पहनने के सम्बन्ध में थी। वह प्रत्येक क्षण का सदुपयोग चाहते थे। अतएव भोजन के समय वह कुछ शिक्षा अवश्य देते रहते थे। उनका मौलिक नियम था कि किसी ऐसे विषय पर बात न हो जो सबकी दिलचस्पी की न हो। और पिताजी को ही यह निर्णय करने का अधिकार था कि कौन विषय सबकी दिलचस्पी का हो सकता है।

एन ने एक बार प्रारम्भ किया, "सच कहूँ, हमारी इतिहास की कक्षा में एक महामूर्ख लड़का है।"

अर्नेस्टीन ने पूछा, "क्या वह आकर्षक भी है?"

पिताजी बोल पड़े, "यह विषय सबकी दिलचस्पी का नहीं है।" मार्ट ने कहा, "मुझे दिलचस्पी है।" पिताजी ने सूचना दी, "परन्तु मैं तो बिलकुल ऊब जाता हूँ। यदि एन ने इतिहास की कक्षा में दो सिर का कोई लड़का देखा होता तो यह बात सबकी दिलचस्पी की हो सकती थी।"

आम तौर से भोजन प्रारम्भ होने पर माताजी तो मेज के एक सिरे से भोजन की तश्तरियाँ बाँटा करतीं और पिताजी दूसरे सिरे पर उस दिन के वार्तालाप का विषय निश्चय करते।

एक दिन आपने सूचना दी, "आज मुझे एक इंजीनियर मिला जो हाल ही में भारत से लौटकर आया है।" हम जानते थे कि जब तक भोजन चलेगा, तब तक भारत के विषय में मामूली बातें भी उनकी दृष्टि में सबकी दिलचस्पी की होंगी और न्यूजर्सी राज्य के मांटक्लेयर की घटनाएँ उनके किसी मतलब की न होंगी। हाँ, प्रगति के अध्ययन

से सम्बन्धित कोई भी बात उनकी दृष्टि में असाधारण रूप से सबकी दिलचस्पी की हो सकती थी।

एक दिन भोजन के समय पिताजी ने सूचित किया, "मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूँ कि कैसे जबानी ही दहाई संख्याओं का गुणनफल बताया जा सकता है।"

एन ने कहा, "यह कोई सबकी दिलचस्पी की बात नहीं है।"

पिताजी ने शान्तिपूर्वक आदेश दिया, "जो समझते हैं कि यह बात सबकी दिलचस्पी की नहीं है वे भोजन की मेज़ से उठ जायें। इतना बता दूँ कि आज भोजन के बाद मुँह मीठा करने के लिए सेब की बर्फी मिलेगी।"

अब कौन जाता!

पिताजी ने कहा, "जान पड़ता है कि सभी को दिलचस्पी है। इसलिए मैं बताये देता हूँ कि गुणनफल जबानी कैसे निकाला जाता है।"

बच्चों की समझ को देखते हुए उनकी बात पेचीदा अवश्य थी और २५ तक सब अंकों के वर्गफल याद करने आवश्यक थे, परन्तु पिताजी धीरे-धीरे आगे बढ़े और दो महीनों के भीतर बड़े बच्चों ने यह खेल सीख लिया।

जितनी देर माताजी खाना निकाल-निकालकर तश्तरियों में सजाती थीं, उतनी देर पिताजी जबानी गुणनफल पूछते जाते थे।

"उन्नीस गुणा सत्रह?"

"तीन सौ तेइस।"

"सही; शाबाश, बिल।"

"बावन गुणा बावन?"

"सत्ताइस सौ चार।"

"ठीक; शाबाश, बेटी मर्था।"

उन दिनों डैन पाँच वर्ष का था और जैक तीन वर्ष का। एक रात भोजन के समय पिताजी ने डैन से २५ तक के वर्गफल पूछने

प्रारम्भ किये। याद ही करने की बात थी, जबानी सवाल नहीं लगाने थे।

पिताजी ने पूछा, "सोलह गुणा सोलह?"

माताजी के पास ऊँची कुर्सी पर बैठा जैक तुरन्त उत्तर बोल उठा, "दो सौ छप्पन।"

पहले तो पिताजी झल्लाये क्योंकि वह यह समझे कि बड़े बच्चे उसे बता रहे हैं।

वह बोले, "मैं डैन से पूछ रहा हूँ। बड़े बच्चो, तुम अपना तमाशा न दिखाओ।" तब उन्होंने प्रश्न दुहराया।

पिताजी ने धीरे से पूछा, "बेटा जैकी, तुमने क्या कहा था?"

"दो सौ छप्पन।"

पिताजी ने एक सिक्का अपनी जेब से निकाला और गम्भीर हो गये।

"मैं तो बड़े बच्चों से ही जबानी हिसाब के प्रश्न पूछता था। क्या तुमने वर्गफल रटे हैं?"

जैकी समझा नहीं कि उसने भला किया कि बुरा, परन्तु उसने गरदन हिला दी।

"यदि बेटा जैकी तुम बता सको कि सत्रह गुणा सत्रह क्या होता है, तो यह सिक्का तुम्हारा।"

जैक ने कहा, "जरूर, डैडी, दो सौ नवासी।"

पिताजी ने सिक्का उसे इनाम में दे दिया और माताजी की ओर बड़े गर्व से देखा।

बोले, "हम इस बच्चे का बेहतर पालन-पोषण करेंगे।"

• • •

मांटक्लेयर में हमारा परिवार सबसे बड़ा था। हमारे बाद ब्रूस परिवार का नम्बर आता था जिसमें आठ बच्चे थे। माताजी और श्रीमती ब्रूस में घनिष्ठ मित्रता थी। एक बार किसी राष्ट्रीय संतति-संयम संस्था से सम्बन्धित न्यूयार्क की एक महिला वहाँ एक शाखा खोलने के लिए

आईं तो किसी ने मजाक में उनसे श्रीमती ब्रूस का जिक्र कर दिया।

माताजी की सखी ने श्रीमती मेबेन से कहा, "आपसे सहयोग करने में मुझे बहुत प्रसन्नता होती; परन्तु आप देखती हैं कि मेरे स्वयं बहुत से बच्चे हैं। अतएव मांटक्लेयर में सन्तति-संयम के प्रचार का नेतृत्व करने योग्य मैं न हो सकूंगी। हाँ, इस योग्य मैं एक अन्य महिला को जानती हूँ। उनका घर यथेष्ट बड़ा है जहाँ गोष्ठियाँ सम्भव होंगी। आप श्रीमती फ्रैंक गिलब्रेथ से मिलिये। उन्हें सार्वजनिक सेवा में रुचि है और वह ऊँची शिक्षा भी प्राप्त कर चुकी हैं।"

जब यह महिला माताजी से मिलीं और उनसे कहा कि आप मांट-क्लेयर में सन्तति-संयम का प्रचार करें, तो माताजी ने निश्चय किया कि इस मज़ाक़ में पिताजी को सम्मिलित कर लेना चाहिए और उन्हें बुला लिया।

जब माताजी ने इन महिला को पिताजी का परिचय दिया तो पिताजी बोले, "आप एक उदात्त लक्ष्य की सेवा में लगी हैं। मुझे आपसे मिलकर बहुत खशी हुई।" फिर बड़े कमरे में पहुँचकर उन्होंने हम सब को इकट्ठा करने की सीटी बजाई। सीटी बजते ही चारों ओर से भागते हुए कदमों की गूँज आने लगी। दरवाज़े फटाफट बन्द हुए। सीढ़ियों से फिसलने की नौबत आ गई। कमरा भर गया और हम बगल के बैठके में भरने लगे।

पिताजी ने अपनी स्टाप-वाच जेब में रखते हुए कहा, "नौ सेकण्ड ही लगे। रिकार्ड से तीन सेकण्ड कम।"

श्रीमती मेबेन बोलीं, "धन्य हैं ये देवदूत! ये हैं कौन? शीघ्र बताइये। यह कोई स्कूल है क्या? नहीं...ये तो आप दोनों के चित्र जान पड़ते हैं।" माताजी की ओर देखकर बोलीं, "आप कितनी बेचारी हैं।" और इतना कहते-कहते वह चल दीं।

● ● ●

हम अपनी गर्मियाँ मसाचुसेट्स के नांटुकेट नगर में बिताते थे। वहाँ पिताजी ने एक टुटही कुटी तथा दो प्रकाशगृह मोल लिये थे और प्रकाश-गृहों को इस प्रकार हटा दिया था कि दोनों कुटी के दो ओर हो गये थे। एक प्रकाशगृह को वह और माताजी दफ्तर और छोटे बच्चों के शयनगृह के काम में लाते थे। दूसरे में तीन बड़े बच्चों के सोने का प्रबन्ध था। वह कहते थे कि माताजी को देखकर उन्हें एक बुढ़िया की याद आती थी जो ऐसे ही घर में रहती थी। इसलिए उन्होंने कुटी का नाम 'शू' (जूता) रख दिया था।

नांटुकेट काड अन्तरीप के सिरे पर एक द्वीप पर स्थित है। जब हमने वहाँ जाना प्रारम्भ किया तब टापू तक मोटर ले जाना मना था। इसलिए हम अपनी पियर्स-ऐरो मोटर को मसाचुसेट्स राज्य के न्यू बेडफोर्ड नगर के एक गराज में छोड़ देते थे। कुछ समय पश्चात् मोटर ले जाना वर्जित नहीं रहा, तो हम कार को 'गे हेड' या 'संकटी' जहाज पर ले जाते थे जो द्वीप तक चला करते थे।

जहाज हो या मोटर, सबसे बड़ी समस्या मर्था की कैनरी पक्षियों की रहती, जिन्हें उसने अपने सण्डे स्कूल में अच्छा पाठ पढ़ने पर इनाम में पाया था। पिताजी के अतिरिक्त ये पक्षी हम सबको प्यारे थे। वह कहते थे कि इनकी गन्ध इतनी बुरी होती है कि सैर का मजा किरकिरा हो जाता है।

एक बार यात्रा में जहाज के पिछले भाग पर फ्रेड पिंजड़ा लिये खड़ा था, और पिताजी कार को जहाज पर चढ़ा रहे थे। किसी प्रकार तार की खिड़की खुल गई और चिड़ियाँ उड़ गईं। पहले वे किनारे पर पड़े लट्ठों पर बैठीं, फिर फुदककर एक गोदाम की छत पर पहुँच गईं। जब पिताजी मोटर को ठिकाने से लगाकर जहाज की छत पर आये तो उन्होंने तीन छोटे बच्चों को सिसकते देखा।

उन्होंने इतना शोर मचाया कि कप्तान ने सुन लिया और पिताजी के निकट पहुँचकर उसने पूछा :

"गिलब्रेथ साहब, अब क्या परेशानी है ?"

पिताजी ने देखा कैनरी पक्षियों से पीछा छुड़ाने का अच्छा मौका है। बोले, "कुछ नहीं, कप्तान साहब आप जहाज जब चाहें छोड़ दें।"

कप्तान ने हठपूर्वक कहा, "कोई मुझे जहाज छोड़ने का आदेश नहीं दे सकता।" वह फ्रेड की ओर झुककर बोला, "क्यों बेटा, क्या बात है ?"

फ्रेड चिल्लाया, "मेरी कैनरियाँ उड़ गई।"

कप्तान बोला, "मैं बच्चों का रोना सहन नहीं कर सकता।" और अपने स्थान पर पहुँचकर आवश्यक आदेश देने लगा।

चार मल्लाह केकड़ों के जाल लेकर गोदाम की छत पर चढ़ गये, तो चिड़ियाँ छत से तटवर्ती घाट पर पहुँच गईं, वहाँ से उड़ीं तो जहाज के रस्सों पर जा टिकीं, पीछा किये जाने पर गोदाम की छत पर फिर जा पहुँचीं; और अन्ततः गायब हो गईं। कप्तान ने हार मानकर कहा :

"गिलब्रेथ साहब, अफसोस है, जान पड़ता है कि कनरियों को लिये बिना ही जहाज छोड़ना पड़ेगा।"

पिताजी प्रसन्नतापूर्वक बोले, "आपकी बड़ी मेहरबानी है।"

अगले दिन जब हम अपनी कुटी में बस गये, तो कप्तान से फ्रेड के नाम हमें एक डिब्बा मिला। डिब्बे के ऊपर कुछ छेद बने थे।

पिताजी उदास होकर बोले, "बताने की जरूरत नहीं। गन्ध से ही मुझे पता लग गया है।" मिठाई हमें कैनरी से अधिक प्रिय थी।

पिताजी ने नांटुकेट पहुँचने के पहले हमें वचन दे दिया था कि यहाँ कोई पढ़ाई-लिखाई न होगी, भाषा के रिकार्ड नहीं बजेंगे, पाठ्य-पुस्तकें नहीं होंगी। उन्होंने अपने वचन का पालन किया, यद्यपि हमें पता लग गया कि हमारी अनुपस्थिति में उन्होंने हमें परोक्ष रूप में पढ़ाने की व्यवस्था कर ली थी।

उदाहरण के लिए, एक दिन तार के संकेतों की बात आई जिसे

मोर्स कोड कहते हैं; एक दिन दोपहर को भोजन के समय आपने सूचना दी :

"अध्ययन बिना ही तुम यह कोड सीख जाओगे।"

हमने कहा कि जब तक स्कूल न खुले तब तक हम कुछ नहीं सीखेंगे, कोड भी नहीं।

पिताजी ने कहा, "मेहनत की कोई बात ही नहीं। जो पहले सीख जायेंगे उन्हें इनाम मिलेंगे। जो नहीं सीखेंगे, उन्हें न सीखने का अफसोस होगा।"

भोजन के पश्चात् काले रंग का एक डिब्बा और छोटा-सा ब्रश लेकर वह शौचालय में घुस गये और उसे भीतर से कसकर बन्द कर लिया।

शौचालय की बैठक के सामने ही उन्होंने वर्णमाला के सामने कोड-चिह्न रंग से बना दिये। बैठो तो सामने ही दो फुट के फासले पर तुम्हें कोड के चिह्न दिखाई दें। आँखें बन्द करने पर ही इन चिह्नों से मुक्ति सम्भव थी।

अगले तीन दिन तक वह अपने ब्रश और पेंट से काम लेते रहे। कुटी के प्रत्येक कमरे में जहाँ भी उन्हें सफेदी पुती मिली, शयन-गृहों की छतों के नीचे भी, मोर्स कोड के चिह्न उन्होंने रंग दिये। बरामदे और भोजन-गृह में कोड के गुप्त सन्देश भी उन्होंने पेंट कर दिये।

हमने उनसे पूछा, "डैडी, ये सन्देश कहते क्या हैं?"

भेद की मुद्रा में बोले, "बहुत-सी बातें हैं, भेद की और हास्य की भी।"

हमने कागज के टुकड़ों पर मोर्स कोड के चिह्नों की नकल कर ली। फिर इस कागज की सहायता से पिताजी द्वारा रंग से लिखे गये संदेशों का अनुवाद करने में हम जुट गये। पिताजी चिह्न अंकित करने में जुटे रहे, मानो उन्हें हमारा ध्यान ही न था। परन्तु उन्होंने कोई भूल नहीं की।

एक सन्देश के संकेत-चिह्नों का अर्थ लगाया तो हमारी भूलें हमारे उपहास का कारण बनीं।

एन बोली, "पिताजी के श्लेष भी कितने बेढब हैं। यह वाक्य तो देखो। इसी को तो पिताजी हास्य की बात कहते हैं—बी इट एवर सो बंबुल देर्स नो प्लेस लाइक कोंब (आशय यह था कि कब्र से बढ़कर कोई जगह नहीं, वह कितनी भी मामूली हो। परन्तु यदि मोटे अक्षरों में छपे तीन शब्दों के रूप होते बि, अम्बुल और टोंब तो वाक्य निरर्थक न होता।)

हमने एक वाक्य और टटोल लिया, "ह्वेन इगोराट्स इज़ ब्लिस टिज़ फाली टु बि ह्वाइट (आशय यह था कि यदि मूढ़ता से आनन्द मिलता हो तो बुद्धिमान होना मूर्खता है। परन्तु यदि मोटे अक्षरों में छपे दो शब्दों के रूप होते इग्नोरेंस और वाइज़ तो वाक्य निरर्थक न होता।)

एक और था, "टू मैगाट्स वर फाइटिंग इन डेड अर्नेस्ट। "परन्तु माताजी ने पिताजी से यह वाक्य मिटवा दिया।

पिताजी झेंपते हुए हँसे और बोले, "अच्छी बात है, मालकिन, परन्तु वाक्य का प्रयोजन तो सिद्ध हो ही गया है।"

इसके बाद प्रायः प्रतिदिन पिताजी एक कागज के टुकड़े पर मोर्स कोड में अंकित सन्देश भोजन की मेज़ पर छोड़ देते। यह सन्देश इस प्रकार होता, "जो सबसे पहले इसे पढ़ ले वह मेरे कमरे की खूँटी पर टँगे मेरे लिनेन के जाँघिये की दाहिनी जेब टटोले।"

जाँघिए की जेब में इनाम की कोई वस्तु होती—कोई मिठाई होती, या पच्चीस सेंट का सिक्का होता, या कूपन होता जिसे लेकर चाकलेट का शरबत पिया जा सकता था।

पिताजी की योजना के अनुसार हम लोग कुछ ही सप्ताहों के भीतर मोर्स कोड थोड़ा बहुत जान गये। इतना जान गये कि मक्खन की प्लेट पर काँटे बजाकर हम एक-दूसरे को अपने सन्देश देने लगे।

जब हम एक दर्जन भाई-बहन इस प्रकार अपने-अपने सन्देश प्रसारित करने लगते तो हमारा यह सारा मिला-जुला शोर असहनीय हो जाता था।

दीवारों की लिखाई हमें कोड सिखाने में इतनी सफल हुई कि उसी ढंग पर उन्होंने हमें ज्योतिष सिखाने का निश्चय किया। सबसे पहले उन्हें हममें आवश्यक जिज्ञासा पैदा करनी थी। इसलिए कैमरे के स्टैंड पर उन्होंने एक दूरबीन लगा दी। वह इसे रात के समय सहन में लगा देते और तारों की ओर देखते। हम उन्हें घेर लेते और माँग करते कि हमें भी दूरबीन से देखने दिया जाये।

वह कहते, "मुझे तंग न करो। बच्चो, मुझे जान पड़ता है कि दोनों तारे एक-दूसरे से लड़ जायेंगे। नहीं, नहीं, ये कितने निकट हैं।"

हम हठ करते, "डैडी, हमें देखने का मौका दीजिये।"

अन्ततः विवशता की मुद्रा बनाये वह हमें दूरबीन से देखने का मौका देते। शनि के चारों ओर का घेरा हमने देख लिया। बृहस्पति के तीनों चाँद देख लिये और अपने चाँद के ज्वालामुखी भी हमें दिखाई दे गये।

तत्पश्चात् नक्षत्रों, नीहारिकाओं और सूर्यग्रहणों के लगभग सौ फोटोग्राफ उन्होंने फर्श के निकट दीवार पर टाँग दिये। उन्होंने बताया कि यदि ये चित्र ऊपर यथास्थान लगते तो छोटे बच्चे उनसे लाभान्वित न हो पाते।

दीवार में कुछ जगह बच रही तो पिताजी के मस्तिष्क में उसे भरने के लिए यथेष्ट सामग्री थी। उन्होंने ग्राफ पेपर का एक बड़ा-सा ताव लगा दिया जिस पर एक हजार लकीरें ऊपर से नीचे और दूसरी एक हजार लकीरें दायें से बायें एक-दूसरे को काटती थीं। यों उसमें दस लाख छोटे-छोटे वर्ग बन गये।

पिताजी बोले, "तुम अकसर लोगों से दस लाख की बात सुनते हो; बहुत कम लोगों ने दस लाख चीजों को एक ही साथ देखा होगा। यदि

किसी के पास दस लाख डालर हैं तो जितने यहाँ वर्ग हैं, उतने ही उसके पास डालर हैं।"

बिल ने पूछा, "डैडी, आपके पास दस लाख डालर हैं ?"

पिताजी कुछ उदासी से बोले, "नहीं बेटा, मेरे पास दस लाख बच्चे हैं। किसी-न-किसी समय हमें दो निधियों में से एक का चुनाव करना होता है।"

● ● ●

पिताजी और माताजी दोनों प्रारम्भ से ही बड़े परिवार के इच्छुक थे और कदाचित् ही कोई ऐसा वर्ष खाली गया हो जब उन्हें एक शिशु न प्राप्त हुआ हो। अपने विवाह के दिन ही दोनों ने एक दर्जन की योजना पक्की कर ली थी और उतने ही मिले—छः लड़के और उतनी ही लड़कियाँ। परन्तु इतने बच्चे होने में १७ वर्ष लगे। पिताजी को कुछ खेद रहा कि जुड़िया या अधिक बच्चे एक साथ नहीं जन्मे। उन्हें इस बात में बिलकुल सन्देह नहीं था कि बड़े परिवार के पालन में सबसे अधिक खूबी तभी रहती है जब किसी प्रकार एक साथ बच्चों का जन्म हो जाये।

अन्तिम बच्चे के जन्म के पहले माताजी कभी प्रजनन के लिए अस्पताल नहीं गईं। बारहवीं संतति जेन को जून १९२२ में जन्म लेना था जब हमें नांटुकेट में रहना था। माताजी ने प्रण कर लिया था कि ग्रीष्म ऋतु में उनके किसी बच्चे का जन्म न होगा, क्योंकि वहाँ का प्रबन्ध दकियानूसी था। अतएव वह नांटुकेट अस्पताल में भरती होने के लिए राजी हो गईं।

माताजी दस दिन तक अस्पताल में रहीं, तो पिताजी बहुत दुखी रहे।

अस्पताल में माताजी से मिलने गये तो बोले, "मैं चाहता हूँ कि जब तक यथेष्ट पुष्ट न हो जाओ तब तक यहीं ठहरो।" साथ ही यह भी

कह गये, "जब घर आओगी तभी मेरा मन लगेगा। तुम्हारी गैरहाजिरी में मुझसे कोई काम पूरा नहीं होता।"

माताजी को अस्पताल का प्रबन्ध बहुत अच्छा लगा। बोलीं, "बारहवें शिशु के जन्म तक मुझे इस अनुभव के लिए रुकना पड़ा कि प्रजनन के लिए अस्पताल घर के मुकाबले में कहीं अधिक अच्छा रहता है।"

जब पिताजी गोद-भरी माताजी के साथ घर पहुँचे, तो अवस्था के हिसाब से उन्होंने हम सबको एक कतार में खड़ा किया। पालने में पड़ी जेन सबके अन्त में थी।

फिर खुद सैनिक अफ़सर की भाँति कतार का मुआयना करके गर्वपूर्वक बोले, "मैं कह सकता हूँ कि यह भीड़ देखने में बुरी नहीं है। लिली, लो इन्हें सँभालो। अब पूर्ण विराम लगता है। तुमने यह सोच लिया है न कि अगले वर्ष तुम्हें इस पालने की जरूरत नहीं होगी ?"

माताजी ने कहा, "मैं भी यही सोच रही थी। अब तो यह फालतू ही होगा।"

पिताजी ने उनकी कमर में बाँह डाल दी और माताजी की आँखों में आँसू आ गये।

● ● ●

एन के हाई स्कूल की सर्वोच्च कक्षा में पहुँचने के समय तक पिताजी की यह धारणा पुष्ट हो गई कि होठों में लाली लगानेवाली और छोटे मोजे पहननेवाली उस जमाने की लड़कियाँ तबाही के ही मार्ग पर जाती हैं।

वह पूछा करते, "आजकल की लड़कियों को हो क्या गया है ? वे जानती नहीं कि उनकी क्या गति होगी जो महीन रेशम के मोजे और घुटने के ऊपर तक छोटा साया पहने घूमती फिरती हैं ?"

जब हमारी बड़ी बहनें वयस्क होकर समवयस्क लड़कों से मिलने

लगीं तो पिताजी उनके साथ रहने की हठ करने लगे। यदि वह स्वयं साथ न जा सकते तो अपनी जगह छोटे भाई फ्रैंक या बिल को उनके साथ कर देते।

अर्नेस्टीन ने एक दिन पिताजी से कहा, "जब हमें किसी मित्र से मिलना होता है तो हमारे साथ किसी का होना बुरा लगता ही है। तिस पर मोटर की पिछली सीट पर छोटा भाई ऐंठता और हँसता साथ चले, तब तो असहनीय हो जाता है। पता नहीं, स्कूल के लड़के हमें क्यों तंग करते हैं।"

पिताजी ने कहा, "तुम्हें पता नहीं भी है तो मुझे अवश्य ही है। इसीलिए तो हम साथ रहते हैं।"

बहनों ने माताजी से शिकायत की। एन ने कहा, "पिताजी की भाँति सन्देहशील होने पर हमारा तो सर्वनाश है, इसके अर्थ हैं यौवन का दुरुपयोग।" परन्तु माताजी ने पिताजी का ही पक्ष लिया।

जब कहीं नाच होता तो दीवार के सहारे पिताजी अकेले बैठ जाते, वाद्य यन्त्रों से बहुत दूर और अपने कागज़ देखते रहते। पहले तो किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। परन्तु कुछ महीनों पश्चात् वह नाचघर के स्थायी सदस्य मान लिये गये और लड़के-लड़कियाँ, अपनी व्यवस्था के प्रतिकूल, उन्हें खिलाने-पिलाने लगीं। और पिताजी किसी भी मंडली में हों, आकर्षक होने में वह चूके नहीं।

एक रात एन ने देखा कि एक भीड़ पिताजी को घेरे हुए है, सो उसने अपनी बहन अर्नेस्टीन के कान में कहा, "देखती नहीं, क्या हो रहा है? पिताजी तो हाई स्कूल के नाचघर के बाँके बन गये हैं।"

अगले दिन रविवार को हम सब भोजन के लिए इकट्ठे हुए तो पिताजी ने हमारे साथ न रहने का निश्चय प्रकट किया। अपनी लड़कियों से बोले, "अभी तक मैं धाय की तरह तुम्हारे साथ रहा। अब यह काम असहनीय हो गया है। इन लोगों ने मुझे अपना तमाशा बना लिया है। लड़के मेरी पीठ थपथपाते हैं और लड़कियाँ मेरे गाल नोच-

कर मुझसे अपने साथ नाचने का प्रस्ताव करती हैं। मुझे इन्होंने एक खुरपेंची परन्तु निर्दोष मूर्ख मान रखा है।"

फिर माताजी को सम्बोधित करके बोले, "मालकिन, तुम्हारा कोई कसूर नहीं, परन्तु हमारी मुसीबत बहुत कम हो जाती, यदि हमारे पुत्र ही पुत्र होते।"

कोई काम करने के लिए हाथों को किस ढंग से चलाना सबसे अधिक उचित होता है—इस विशेष ज्ञान का प्रचार करने के लिए वह चित्र भी तैयार कराया करते थे। इन चित्रों और उनके साथ के लेखों के कारण कभी-कभी हमें अपने मित्रों के बीच या विद्यालय में स्वरक्षा के लिए विवश होना पड़ता था, विशेष रूप से तब जब हमारे अध्यापक इन लेखों से हमारे स्नानगृह में लगे हुए चार्टों, भाषा के रिकार्डों और पारिवारिक परिषद के निर्णयों के उद्धरण सुनाते। हम लजाते और घबराते और भगवान् से मनाते कि पिताजी जूते बेचते होते और हमसे भिन्न उनके एक-दो ही बच्चे होते तो हम अधिक भाग्यशाली होते।

चलचित्र का एक छायाकार नांटुकेट आकर हम लोगों से मिला और उसने चलचित्र बनाने की एक योजना पिताजी के सामने रखी। छायाकार पर विश्वास करके वह राजी भी हो गये। कुटी के बाहर समुद्र-तट के निकट उगी हुई घास पर खाने की मेज़ और कुर्सियाँ लगा दी गईं, क्योंकि छायाकार ने कहा कि वहाँ प्रकाश की समुचित सुविधा उसे मिलेगी। मक्खियों के बीच हमने भोजन किया और छायाकार हमारा चलचित्र लेता रहा। सिनेमाघरों में जिस शीर्षक से चित्र प्रदर्शित किया गया वह था: समय का सदुपयोग करनेवाले फ्रैंक बी० गिल-ब्रेथ, सपरिवार भोजन करते हुए। जितना समय हमें भोजन में लगा उसका दसवाँ भाग चलचित्र के प्रदर्शन में लगा। इसका प्रभाव दर्शकों पर इस प्रकार पड़ा कि मेज़ पर हमने दौड़ लगाई, चारों ओर तश्तरियों को तेज़ी से इधर-उधर किया, भेड़ियों के समान भोजन चट किया और ४५ सेकंड के भीतर मेज़ से भाग भी गये। चित्र की पृष्ठ-

भूमि में घर के कपड़े सूख रहे थे, जिनमें बहुत-सी बच्चों की तिकोनियाँ भी थीं। यह पृष्ठभूमि भी छायाकार के मतलब की थी। नांटुकेट के ड्रीमलैंड थियेटर में हमने यह चलचित्र देखा और हास्य-नाटक से अधिक हँसी के फव्वारे छूटते देखे। प्रत्येक दर्शक घूमकर हमारी ओर देखता था।

हम दोहराते रहे, "हे भगवान्, यह चलचित्र मांटक्लेयर में न दिखाया जाये, नहीं तो हमारा स्कूल जाना असम्भव हो जायेगा।"

हमारे यहाँ कभी-कभी मेहमान भोजन करने बैठ जाते। पिताजी का सिद्धान्त था कि मेहमान तभी सुखी होते हैं जब उनके साथ परिवार के सदस्यों-जैसा बर्ताव हो। माताजी का कहना था और अन्ततः पिता जी को भी उनसे सहमत होना पड़ा, कि वही मेहमान हमारे यहाँ घर जैसे सुख का अनुभव कर सकता है जिसके एक दर्जन संतानें हों और जो स्वयं भी समय के सदुपयोग के विशेषज्ञ हों।

पिताजी के आदर-सत्कार में बनावट और उलझन का अभाव रहता और हम सब उनका अनुकरण करते।

एक बार कोलम्बिया विश्वविद्यालय की एक प्राध्यापिका हमारी मेहमान हुईं। खाने पर वह देर से पहुँचीं, तो हम लोगों का साथ देने के लिए वह भोजन करने में शीघ्रता करने लगीं; फ्रेड ने उनसे कह दिया,' "सुअर की भाँति चकोतरा न चबाइये। यदि हम जल्दी भोजन समाप्त कर लेंगे तो आपकी प्रतीक्षा करते रहेंगे।"

किसी अन्य मेहमान से डैन एक बार कह बैठा, "मुझे अफ़सोस है कि जब तक आप सेम की तश्तरी समाप्त न कर लेंगी, तब तक फल और मिठाई आपके पास नहीं पहुँचेगी। पिताजी इस बात की अनुमति नहीं देते। वह कहा करते हैं, जितना प्रतिदिन हमारे घर में फिंक जाता है उतने में बेलजियम में एक परिवार सप्ताह भर गुजर करता है।"

एक बार बात काटकर लिल बोल उठी, "पिताजी, फ्रेमनविल साहब जो-कुछ कह रहे हैं, क्या वह आपकी समझ में सबकी दिलचस्पी की बात है ?"

माता-पिता, अधिकांश मेहमान भी, हँसकर हमारी इन बदतमीज़ियों को टाल देते थे।

कभी-कभी भोजन के पश्चात् पिताजी का पेट गड़गड़ाता और जब कोई मेहमान न होता, तो हम उन्हें चिढ़ाते। इसलिए अगली बार पेट गड़गड़ाने पर वह घबराहट का दिखावा करते और हममें से किसी की ओर देखते। एक बार बिल की ओर देखकर बोले, "बिल माफ करो, इस समय मेरा गाने का कोई इरादा नहीं है।"

एक दिन रसेल एलन नामक एक नौजवान इंजीनियर रात के समय हम लोगों के साथ भोजन करने आये। मेज़ के सामने ऊँची कुर्सी पर बैठे जैक ने भोजन करते-करते इतनी ज़ोर की डकार ली कि आश्चर्य से सबने अकस्मात् बात बन्द कर दीं। सबसे चकित तो जैक था ही। घबराहट का उसने भी दिखावा किया और अपने मेहमान की तरफ़ हाथ बढ़ाकर पिताजी की तरह बोला: "एलन साहब, माफ़ कीजिये, इस समय मेरा इरादा गाने का नहीं है।"

जब मेहमान उपस्थित न होते तो पिताजी हमारी भोजन-क्रिया के अनुशासन में लगते। जब कभी उनके निकट बैठा हुआ कोई बच्चा ज़रूरत से बड़ा कौर मुँह में रखता तो पिताजी अपनी मुड़ी उँगली की ठोकर दोषी के सिर पर जमाते।

माताजी विरोध करतीं, "फ्रैंक, सिर पर न मारा करो।"

पिताजी की उँगलियाँ भी चोट से दुखतीं। उन्हें रगड़कर कहते, "ठीक कहती हो। पीटने के लिए शरीर के मुलायम भाग भी तो हैं।"

यदि दोषी मेज़ के दूसरे छोर पर माताजी के निकट हुआ और पिताजी का हाथ वहाँ तक न पहुँच सका, तो खोपड़ी के दण्ड के लिए वह संकेत करते। माताजी ने कभी हम पर सख्ती नहीं की और न कभी धमकी ही दी। अतएव वह पिताजी के संकेत की परवाह न करतीं। तब पिताजी दोषी के निकट बैठे बच्चे की ओर देखते और दण्ड देने का आदेश देते। कहते, "मेरे आशीर्वाद के साथ।"

किसी की कोहनी यदि मेज़ पर रखी होती तो उसकी कलाई पकड़-कर उसका हाथ उठाकर इतने जोर से मेज पर पटक दिया जाता कि तश्तरियाँ नाच उठतीं।

खोपड़ी और कोहनी में चोट पहुँचाने का परिवार में चलन-जैसा हो गया। केवल माताजी इससे अलग रहतीं। छोटे-से-छोटे बच्चे को इस प्रकार का दण्ड देना आता था और बदला पाने की उसे चिन्ता न रहती थी। क्योंकि यह सब तो पिताजी के आदेश से ही होता था। भोजन के दौरान में बराबर हम एक-दूसरे को, अपने मौके के लिए, ताकते रहते। पिताजी को अपनी कोहनी की फ़िक्र रहती, परन्तु कभी-कभी वह भी भूल जाते थे। किसी की कोहनी पटकने पर दण्ड देनेवाला गौरवान्वित होता था। अगर पिताजी की कोहनी पटकने का मौका किसी को मिल गया, तब समझ लीजिये उसने सब पर बाजी मार ली।

जब पिताजी इस प्रकार पकड़ जाते तो बहुत परेशानी दिखाते। ऐसा जताते मानो उन्हें बहुत पीड़ा हुई हो। दांत भींचकर सी-सी करते, कोहनी रगड़ते और कहते कि अब भोजन के लिए उनकी बाँह बेकार हो गई है।

घर में पिताजी का दफ़्तर बच्चों से भरा रहता और जब कभी निपुणता के विशेषज्ञ की हैसियत से समुचित फ़ीस लेकर वह किसी कारखाने का निरीक्षण करने जाते तो अकसर हाथ में पेंसिलें और नोटबुकें लिये हम उनके पीछे लग लेते। इसलिए जब कभी हम वर्ष में एक-दो बार उनके निरीक्षण का अभिनय करते तो पिताजी बहुत खुश होते और ऐसे अवसरों पर माता-पिता दोनों छुट्टी-सी मनाते।

फ्रैंक अपनी कमर पर दो तकिये बांधे और अपने सिर के पीछे चटाई की हैट रखे पिताजी का अभिनय इस प्रकार करता कि हम उनके नेतृत्व में कारखाने का निरीक्षण कर रहे हैं। सीने पर रुई की पोटलियां और सिर पर फूलदार हैट रखकर अर्नेस्टीन माताजी की नकल करती। एन कारखाने के मैनेजर का और बाकी बच्चे स्वाभाविक अभिनय करते।

एक-दूसरे के पीछे और सटे हम दो बार कमरे का चक्कर लगाते, जैसे हम कारखाने में घुस रहे हों। मैनेजर के रूप में एन पिताजी की भूमिका में फ्रैंक का स्वागत करती और उससे हाथ मिलाती।

मैनेजर की भूमिका में एन कहती, "बड़े दिन की बधाई। देखिये आपके पीछे कौन लोग अन्दर आये हैं। ये आपके बच्चे हैं? आप निरीक्षण करने आये हैं या बच्चों को सैर कराने?"

माताजी की भूमिका में अर्नेस्टीन गरम होकर कहती, "ये बच्चे मेरे हैं, और हम बच्चों को सैर कराने नहीं लाये हैं।"

पिताजी की भूमिका में फ्रैंक मुस्कराकर कहता, "आपको मेरे ये छोटे मंगोल पसन्द हैं? दर्जन के हिसाब से सस्ते पड़ते हैं, जानते हैं आप? रखूँ सबको आपके पास?"

एन कहती, "इन्हें आप घर ही में रखिये। इनसे कहिये कि हमारी मशीनों पर कूद-फाँद न करें।"

इस अभिनय में कदाचित् ही कभी कुछ फ़र्क हुआ हो।

तमाशे के पश्चात् पिताजी जोंस और बोंस दो चारणों का अभिनय स्वयं ही करते। अपने निचले होंठ को बाहर निकालकर और हाथों को घुटनों तक लटकाकर वह कमरे में चक्कर लगाते।

देहाती अंग्रेजी में उनका अभिनय होता। जोंस की भूमिका में वह बोंस से पूछते, "जानते हो तरबूज में पानी कहाँ से आता है?"

और बोंस की भूमिका में जोंस को उत्तर देते, "मैं नहीं जानता, तुम तरबूज में पानी किस तरह पहुँचाते हो?"

"और तुम इन्हें बसंत में क्यों बोते हो?" इतना कहकर पिताजी अपने घुटने एक-दूसरे से लड़ाते, अपने मुख के सामने दोनों बाँहों को जोड़ते और हास्य की मुद्रा में "याक! याक!" कहते-कहते अपना सिर दाहिने-बाँये मटकाते।

तमाशा समाप्त होने पर पिताजी अपनी घड़ी देखते और डाँटने लगते, "सोने का समय न जाने कब का हो चुका है। क्यों मेरे बनाये

नियमों का पालन नहीं किया जाता ? बड़े बच्चों को एक घण्टे पहले सो जाना चाहिए था और छोटों को तीन घण्टे पहले।"

माताजी की बाँह में हाथ डालकर कहते, "अभिनय करते-करते मेरा गला मेंढक के समान पड़ गया है। मीठे ठंडे चाकलेट और आइस-क्रीम सोडा से ही तृप्ति संभव है। बच्चो, तुम सो रहो। मालकिन, हम-तुम दुकान चलें। गले के कारण झपकी आना भी असम्भव है।"

हम चिल्ला उठते, "पिताजी, हमें भी ले चलिये। हमारे गले भी मेंढक जैसे पड़ गये हैं, हम एक झपकी भी सोने के लिए तैयार नहीं।"

अनिच्छा का दिखावा करके वह अन्ततः हमें अपने साथ ले जाने के लिए राजी हो जाते। वह बुड़बुड़ाकर कहते, "१५-१५ सेंट की तेरह बोतलें सोडे की। भविष्य सामने साफ़ दिखाई दे रहा है। कुछ आगे बढ़ने पर निर्धन-गृह की शरण लेनी होगी।"

● ● ●

हम बच्चों को पता न था, परन्तु वर्षों से पिताजी को हृदय का रोग था और बड़ी लड़कियों के कॉलिज जाने की अवस्था तक पहुँचते ही डा० बर्टन ने उनसे कह दिया कि मृत्यु निकट आ गई है। हमें जान पड़ा कि पिताजी दुबले हो गये थे। २५ वर्ष में पहली बार वे ढाई मन से कम हो गये थे। वह हँसते थे कि उन्हें अपने पैर फिर दिखलाई देना कैसा अजीब-सा लगता था। उनके हाथ कुछ काँपने लगे थे और उनके चेहरे का रंग कुछ पीला पड़ गया था। कभी-कभी जब बड़े लड़कों के साथ बेसबाल खेलते या बाब तथा जेम के साथ फ़र्श पर लोट लगाते तो अकस्मात् यह कहकर रुक जाते कि बहुत हो चुका, अब थक गया हूँ। जब उठकर चलते तो उनके पैर कुछ लड़खड़ाते।

वह ५५ वर्ष के ही थे कि उनमें बुढ़ापे के लक्षण प्रत्यक्ष होने लगे। निस्संदेह हमें यह कभी पता न था कि मौत से पहले ही वह मरने की तैयारी कर चुके होंगे।

बाब और जेन के जन्म के पहले ही उन्हे अपने हृदय की खराबी का पता लग गया था। उनकी माताजी से इस विषय पर बात भी हुई, वैधव्य की संभावना पर भी चर्चा रही।

पिताजी के मन की बात माताजी जानती थीं। उन्होंने पतिदेव से कहा, "बारह बच्चों से उतनी ही तकलीफ होती है जितनी दस से हो सकती है। अतएव मुझे तो अपने निश्चय की पूर्ति करनी है।"

हृदय रोग भी उनके इस निश्चय का एक कारण था कि घर का संगठन निपुणता के आधार पर हो, जिससे निगरानी बिना भी उसका संचालन हो सके और बड़े अपने से छोटों का दायित्व-भार सँभाल सकें। वह जानते थे कि माताजी पर दायित्व का भार पड़ना है और वह यथा-सम्भव यह भार हलका करना चाहते थे।

डॉ० बर्टन ने पिताजी से कहा, "अन्त कल हो या छः महीने बाद। काम बन्द करके आराम करो तो अधिक-से-अधिक एक वर्ष और।"

पिताजी ने कहा, "यह न समझो कि मैं घबरा जाऊँगा, मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ।"

घर जाकर बोस्टन के मस्तिष्क विशेषज्ञ को उन्होंने पत्र लिखा, जिसमें हारवर्ड विश्वविद्यालय को अपना मस्तिष्क दान करने का वचन दिया। इसके पश्चात् मृत्यु का विचार एकदम मन के बाहर कर दिया। आठ महीने पश्चात् विश्व शक्ति सम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय प्रबन्ध सम्मेलन क्रमशः इंगलिस्तान और चेकोस्लोवाकिया में होने थे। पिताजी ने दोनों में बोलने का निमन्त्रण स्वीकार किया। योरप-यात्रा के तीन दिन पहले उनकी मृत्यु हुई।

न्यूयार्क जानेवाली गाड़ी की प्रतीक्षा करते-करते उन्होंने स्टेशन से माताजी को फोन किया। बातचीत के बीच ही में माताजी ने धमाके की आवाज सुनी और फोन की बात बन्द हो गई।

शनिवार का प्रातःकाल था। छोटे बच्चे सहन में खेल रहे थे। अधिकांश बड़े बच्चे खरीदारी समिति के सदस्यों की हैसियत से

खरीदारी के लिए बाजार गये हुए थे। छः-सात पड़ोसी अपनी-अपनी मोटरों पर हम सबको इकट्ठा करने के लिए निकल पड़े।

उन्होंने प्रत्येक से कहा, "तुम्हारी मां ने तुम्हें बुला भेजा है। कोई दुर्घटना हो गई है।"

जब हम घर पर पहुँचे तो पिताजी की मृत्यु का समाचार मिला। सड़क के किनारे १५ या २० मोटरें खड़ी थीं। जैक पगडंडी के निकट छत पर बैठा था। आँसू पोंछते-पोंछते उसका मुँह मैला हो गया था।

सिसकते हुए वह बोला, "हमारे डैडी मर गये।"

पिताजी हमारे व्यक्तित्व के अंश थे और उनकी मृत्यु से इस अंश की भी मृत्यु हो गई।

पिताजी की मृत्यु के बाद माताजी में विशेष परिवर्तन हुआ। उनकी आकृति बदल गई और उनका रहन-सहन भी। विवाह के पहले माता-जी के सब निर्णय माता-पिता की ओर से होते थे। विवाह के पश्चात् ये निर्णय उनके पतिदेव की ओर से होने लगे। पिताजी ही का सुझाव था कि उनके एक दर्जन बच्चे हों और दोनों निपुणता के विशेषज्ञ बनें। यदि उनकी दिलचस्पी टोकरियाँ बुनने या मस्तिष्क-विज्ञान में होती तो वह अपने पति का उसी प्रकार अनुसरण करतीं।

जब तक पिताजी जीवित रहे तब तक माताजी मोटर तेज़ी से चलाने से डरती रहीं और हवाई जहाज से भी। रात में अकेले चलने से भी वह घबराती थीं। जब बादल गरजें और बिजली कड़के तो काम बन्द करके वह किसी अँधेरी कोठरी में घुस जायें। जब भोजन के समय कोई बात बिगड़ जाती तो वह रो पड़तीं और भोजन-गृह से हट जातीं। सार्वजनिक सभाओं में बोलना पड़ता तो डरते-डरते ही बोलतीं।

अकस्मात् वह भय से मुक्त हुईं क्योंकि उन्हें डरानेवाला अब कोई न रह गया था। अब कोई भी दुर्घटना उन्हें विचलित नहीं कर सकती थी, क्योंकि सबसे भीषण दुर्घटना का उन्हें अनुभव हो चुका था। इस घटना के पश्चात् हममें से किसी ने भी उन्हें रोते नहीं देखा।

पिताजी की मृत्यु के दो दिन बाद जब मृतात्मा को चढ़ाये गये फूलों की सुगन्ध अभी घर में बसी ही हुई थी कि माताजी ने परिवार परिषद की बैठक बुलाई और हमसे कहा कि यदि हम सब सहायता करें तो वह हमारे पिताजी के काम को जारी रखें। वह बोलीं :

"यदि मेरी वापसी तक तुम घर के प्रबन्ध का जिम्मा लो तो मैं उसी जहाज से यात्रा पर चली जाऊँ जिससे तुम्हारे पिता के जाने की तजवीज थी। मैं उनकी ओर से लंदन और प्राग में भाषण दूँगी। मेरा विचार है कि यही तुम्हारे पिता की इच्छा थी, पर निर्णय तुम्हें करना है।"

अर्नेस्टीन और मर्था ऊपर के खंड पर पहुँचकर माताजी का सामान बाँधने लगीं। एन भोजन बनाने रसोईघर में चली गई। फ्रैंक और बिल पुरानी मोटरों के दुकानदारों से अपनी मोटर का सौदा करने के लिए नगर की ओर चल पड़े।

लिल ने लड़कों को पुकारकर कहा, "उनसे कहो कि बदले में एक ठेला ले आयें; यह मोटर तो पिताजी के अतिरिक्त किसी और के लिए चलती नहीं।"

● ● ●

किसी ने एक बार पिताजी से पूछा, "आखिर आप समय की बचत किसलिए करना चाहते हैं? आप बचे समय का क्या करेंगे?"

पिताजी ने उत्तर दिया, "काम के लिए यदि तुम उसे सबसे अधिक पसन्द करते हो; नहीं तो शिक्षा, सौन्दर्य की रसानुभूति, कला अथवा आनन्द के लिए।" फिर अपने चश्मे के ऊपर से झाँकते हुए हास्य की मुद्रा में आपने जोड़ दिया, "मदिरा की प्याली पीकर नशे में धुत्त होने के लिए ही सही यदि तुम्हारा दिल वहीं लगता है।"